

अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका**नवीन सामाजिक शोध**

संस्थापक प्रधान संपादक
स्व. डॉ. जी. सी. सक्सेना

● — ●

प्रधान संपादक
राजेन्द्र सक्सेना

● — ●

प्रबंध सक्सेना
अभिजीत सक्सेना

● — ●

संपादक
श्रीमति सविता सक्सेना

● — ●

उप संपादक
डॉ. संजय अग्रवाल (चिकित्सक)

डॉ. संतोष धुर्वे (समाजशास्त्री)

डॉ. विजय दुबे (वाणिज्य) ग्वा.

● — ●

वरिष्ठ शोध अधिकारी
डॉ. ममता गावशिन्दे

● — ●

शोध अधिकारी
डॉ. अनुपमा सुरेश

डॉ. ममता दुबे (ग्वा.)

● — ●

सलाहकार मंडल
राजेश सक्सेना

● — ●

वर्ष - 9 अंक - 12 (कुल अंक 108) फरवरी 2018

R.N.I. M.P.HIN/2009/29572

ISSN-0975-4431

संपादकीय कार्यालय: 25, रूप नगर कॉलोनी, जे.के. रोड

भोपाल-462 023 (म.प्र.) दूरभाष : 09300279796, 09425704990

E-mail : naveensamajikshodh@yahoo.com

website : www.naveensamajikshodh.com

विदेशों में क्षेत्रीय कार्यालय : (विदेशी विषय विशेषज्ञ संपादक)

1. डॉ. राम भारद्वाज चिकित्सक

पो. बॉ. नं. 161, पोस्टल कोड नं. 119, सहम सुल्तानेट ऑफ ओमान

2. प्रो. डॉ. सुधाकर कोटा अर्थशास्त्री

प्रोफेसर इकोनॉमिक्स एण्ड मार्केटिंग, स्काईलाईन युनिवर्सिटी, शारजाह, यूएई

3. कविता शुक्ला असिस्टेंट प्रोफेसर,

111, शेख रशीद बिल्डिंग, शेख जायेद रोड, यूएई, दुबई

4. डॉ. प्रिंस डेविड दंत चिकित्सक

11, अेलब्रेस्ट एवेन्यू, माउंट रास्किल, ओकलेण्ड 1041, न्यूजीलेण्ड

5. श्री सजग चतुर्वेदी

स्टेनफोर्ड, यूनिवर्सिटी, थाईलैण्ड

6. श्रीमति ऋति चतुर्वेदी, कनाडा

7. श्रीमति प्रतिभा, कनाडा

8. डॉ. उमेश रस्तोगी, लंदन

सहयोग राशि : देश में : साधारण अंक 100/- वार्षिक : 1000/-

आजीवन सदस्यता : 10000/-

विदेशों में : साधारण अंक : 18 डॉलर, वार्षिक : 180 डॉलर

सारे भुगतान (मनीऑर्डर/चेक/ड्राफ्ट) नवीन सामाजिक शोध के नाम से लिये जायेंगे।

चेक पे भुगतान करने पर रू. 30/- अतिरिक्त भेजें।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक : राजेन्द्र सक्सेना द्वारा एम.आई. ऑफसेट वर्क्स

91, रशीदिया स्कूल के पास, बरखेड़ी, भोपाल द्वारा मुद्रित एवं 25, रूप नगर कॉलोनी

जे.के. रोड, भोपाल-462 023 (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक - श्रीमति सविता सक्सेना।

सभी लेखों में लेखकों के अपने मौलिक विचार हैं। संपादक अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। हमारा संपादक मंडल पूर्णतः अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। विवाद की स्थिति में सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।

इस अंक में

नवीन सामाजिक शोध

1. ग्राम पंचायत.....**डी.एन यादव - 6**
2. शिक्षा में छिपा है महिला.....**नीलिमा चटर्जी- 14**
3. IMPLICATIONS OF**Farooq Ahmad Ganice*-20**
4. Corporate Social**Dr. Vijay Dubey -31**
5. Girish Karnad's Naga.....**Dr. Monika Ratnaparkhi-45**
6. Girish Karnad's The Fire.....**Dr. Monika Ratnaparkhi-51**
7. The Hungry Tide:as a.....**Dr.Mukta Saxena-55**
8. RAIN WATER HARVESTING**Ankur Verma-60**
9. JOB SATISFACTION AND ITS.....**DR. SHWETA SHUKLA-66**
10. Road Transportation**Dr. Papia Chaturvedi-80**
11. Social Media and Its.....**Seema Rani-87**
12. भारतीय हस्तशिल्प: वस्त्र.....**डॉ. केतकी त्रिवेदी-97**
13. जहाँकदर चुगताई की.....**डॉ. मुबशिशरह अरह -103**
14. जहाँकदर चुगताई की शायरी.....**डॉ. मुबशिशरह अरह-108**
15. Analysis of export**RAHUL JAIN -115**
16. सूचना-प्रौद्योगिकी.....**डॉ.रंजीता टेकाम-125**
17. भारतीय दलीय व्यवस्था में.....**डॉ. अनामिका रावर्त-130**
18. शेरशाह सूरी मुगलकाल.....**डॉ सैय्यद इफ्तखार-136**
19. ईचौपाल की अवधारणा.....**अर्चना शर्मा-143**
20. Goods and Services.....**Dr,Santosh yadav- 148**
21. भारतीय सामाजिक उन्नयन.....**संजय कुमार अग्रवाल- 156**
22. DESIGN OF RAIN WATER.....**Ankur Verma- 160**
23. Limnological studies.....**Rekhanjali Pandey- 172**
24. मलेरिया नामक संक्रामक रोग.....**मधु जड़िया,- 180**
25. Significance of**Dr.Bhawna Thakur, - 198**
26. Benisagar Dam, Jaraha,**Rekhanjali Pandeyv- 202**
27. युवाओं में बढ़ती नशाखोरी.....**नारायण अहिरवार- 210**
28. मध्यप्रदेश के वाणिज्यिक आर्थिक एवं.....**डॉ.मेघा पाठक- 216**
29. UNCOVERING VALUE'.....**DR. USHAK. NAIR-224**
30. THE STUDY ON ISSUE &.....**Dr. Amruta Muley- 229**
31. The Role of NGO.....**Dr. Amruta Muley- 235**
32. A Comparative Study on Merger &.....**Dr.Sapna Kasliwal-240**
33. शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं.....**डॉ.टीना जैन-250**
34. महिला उद्यमिता विकास.....**डॉ.टीना जैन-255**
35. विरांगना महारानी दुर्गावती.....**डी.एस पवार-260**
36. भारतीय बजट एक.....**मनोज कुमार सिन्हा-267**
37. सामाजिक उपन्यासों की.....**डॉ. नगमा खान-272**
38. Acquisition of language.....**Nivedita Ganawa -275**
39. literature Review of Investors perception.....**Minakshi Ingle-279**

सलाहकार मंडल

- प्रो. डॉ. आई.एस. चौहान पूर्व कुलपति, बरकतउल्लाह एवं भोज विश्वविद्यालय भोपाल-म.प्र. । फोन: 0755-2424777
- प्रो. डॉ. विनोद पी. सक्सेना, पूर्व कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र. । फोन 0755-2628055
- प्रो. डॉ. संतोष कुमार श्रीवास्तव पूर्व कुलपति डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर-म.प्र.
- प्रो. डॉ. राजपाल सिंह सदस्य सलाहकार यूजीसी (उच्च शिक्षा) भारत सरकार मो. 9425028689
- ,डॉ.आर.एम श्रीवास्तव पूर्व प्रार्चय, मोतीलाल विज्ञान महा विद्यालय भोपाल मध्यप्रदेश मानव मो.9826286410 अधिकार आयोग भोपाल-म.प्र. मो. 9826225266

संपादक मंडल

- प्रो. संजय एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, पीपुल्स मेडीकल कालेज
- प्रो. अलका डेविड, विभागाध्यक्ष गृह विज्ञान शा. सरोजनी नायडू कालेज
- प्रो. अरविंद चौहान, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
- प्रो. आर. शंकर, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र भारतीदर्शन विश्वविद्यालय, तिरुचरापल्ली-तमिलनाडु (620024)
- प्रो. परवेज अहमद अब्बासी, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, बी.एन.एस.जी. विश्वविद्यालय, सूरत, गुजरात।
- प्रो. डॉ. कामिनी जैन, प्राचार्य शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिपरिया।
- प्रो. आभा चौहान, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग जम्बु एण्ड कश्मीर .।
- डॉ. वंदना बक्शी, सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग एक्सिलेंस कालेज, कोलार रोड भोपाल।
- डॉ. दिनेश परमार, अनुवांशिकी विभाग, ब.वि. भोपाल।
- डॉ. आरती श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग शासकीय कॉलेज नरसरुल्लागंज।
- डॉ. जितेन्द्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, फैकल्टी आफ कामर्स एंड मैनेजमेंट जी.जी.डी.एस.डी. (पीजी) कालेज पलवल।
- डॉ. अनुपमा सुरेश, सहा. प्राध्यापक, भेल कॉलेज, भोपाल।
- डॉ. कायनात तंवर, विक्रम युनिवर्सिटी, उज्जैन।
- डॉ. विपिन व्यास, व्याख्याता, लिमनोलॉजी ब.वि. भोपाल।
- श्री अजय बिसारिया, व्याख्याता, हिन्दी विभाग, अ.मु.वि. अलीगढ़-उ.प्र.।
- डॉ. विश्वनाथ मिश्रा, पूर्व प्राचार्य (समाजशास्त्र) कालीचरन पी.जी. कालेज, लखनऊ।
- इंजि. रोहन गुप्ता, एम-2/5 बी.डी.ए. कालोनी, लालघाटी, भोपाल।
- रेनु चोइधरानी सहायक प्राध्यापक भौतिक शास्त्र बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय

संपादकीय

परिचय

बड़ादेव (सृजन करने वाली शक्ति), दुल्हा दुल्ही देव (शादी विवाह सूत्र में बाँधने वाला देव), पंडा पंडिन (रोग दोष का निवारण करने वाला देव), बूड़ादेव (बूढाल पेन) कुलदेवता या पुरखा, जिसमे उनके माता पिता को भी सम्मिलित किया जाता है, नारायण देव (सूर्य) और भीवासू गोंडों के मुख्य देवता हैं। इनके अतिरिक्त ग्रामों में ग्राम देवता के रूप में खेरमाई (ग्राम की माता), ठाकुर देव, खीला मुट्वा, नारसेन (ग्राम की सीमा पर पहरा देने वाला देव), ग्राम के लोगों की सुरक्षा, फसलों की सुरक्षा, पशुओं की सुरक्षा, शिकार, बीमारियों और वर्षा आदि के भिन्न भिन्न देवी देवता हैं। इन देवताओं को बकरे और मुर्गे आदि की बलि देकर प्रसन्न किया जाता है। गोंडों का भूत प्रेत और जादू टोने में अत्यधिक विश्वास है और इनके जीवन में जादू टोने की भरमार है। किंतु बाहरी जगत? के संपर्क के प्रभावस्वरूप इधर इसमें कुछ कमी हुई है। अनेक गोंड लंबे समय से हिंदू धर्म तथा संस्कृति के प्रभाव में हैं और कितनी ही जातियों तथा कबीलों ने बहुत से हिंदू विश्वासों, देवी देवताओं, रीति रिवाजों तथा वेशभूषा को अपना लिया है। पुरानी प्रथा के अनुसार मृतकों को दफनाया जाता है, किंतु बड़े और धनी लोगों के शव को जलाया जाने लगा है। स्त्रियाँ तथा बच्चे दफनाए जाते हैं।

आस्ट्रोलायड नस्ल की जनजातियों की भाँति विवाह संबंध के लिये गोंड भी सर्वत्र दो या अधिक बड़े समूहों में बंटे रहते हैं। एक समूह के अंदर की सभी शाखाओं के लोग %भाई बंद% कहलाते हैं और सब शाखाएँ मिलकर एक बहिर्विवाही समूह बनाती हैं। कुछ क्षेत्रों से पाँच, छह और सात देवताओं की पूजा करनेवालों के नाम से ऐसे तीन समूह मिलते हैं। विवाह के लिये लड़के द्वारा लड़की को भगाए जाने की प्रथा है। भीतरी भागों में विवाह पूरे ग्राम समुदाय द्वारा संपन्न होता है और वही सब विवाह संबंधी कार्यों के लिये जिम्मेदार होता है। ऐसे अवसर पर कई दिन तक सामूहिक भोज और सामूहिक नृत्यगान चलता है। हर त्यौहार तथा उत्सव का मद्यपान आवश्यक अंग है। वधूमूल्य की प्रथा है और इसके लिए बैल तथा कपड़े दिए जाते हैं।

युवकों की मनोरंजन संस्था – गोतुल का गोंडों के जीवन पर बहुत प्रभाव है। बस्ती से दूर गाँव के अविवाहित युवक एक बड़ा घर बनाते हैं। जहाँ वे रात्रि में नाचते, गाते और सोते हैं; एक ऐसा ही घर अविवाहित युवतियाँ भी तैयार करती हैं। बस्तर के भांडिया गोंडों में अविवाहित युवक और युवतियों का एक ही कक्ष होता है जहाँ वे मिलकर नाचगान करते हैं।

गोंड खेतिहर हैं और परंपरा से दहिया खेती करते हैं जो जंगल को जलाकर उसकी राख में की जाती है और जब एक स्थान की उर्वरता तथा जंगल समाप्त हो जाता है तब वहाँ से हटकर दूसरे स्थान को चुन लेते हैं। किंतु सरकारी निषेध के कारण यह प्रथा बहुत कम हो गई है। समस्त गाँव की भूमि समुदाय की संपत्ति होती है और खेती के लिये व्यक्तिगत परिवारों को आवश्यकतानुसार दी जाती है। दहिया खेती पर रोक लगने से और आबादी के दबाव के कारण अनेक समूहों को बाहरी क्षेत्रों तथा मैदानों की ओर आना पड़ा। किंतु वनप्रिय होने के कारण गोंड समूह शुरू से खेती की उपजाऊ जमीन की ओर आकृष्ट न हो सके और धीरे धीरे बाहरी लोगों ने इनके इलाकों की कृषियोग्य भूमि पर सहमतिपूर्ण अधिकार कर लिया। इस दृष्टि से दो प्रकार के गोंड मिलते हैं – एक तो वे हैं जो सामान्य किसान और भूमिधर हो गए हैं, जैसे राजगोंड, रघुवल, डडवे और कतुल्या गोंड। दूसरे वे हैं जो मिले जुले गाँवों में खेत मजदूरों, भाड़ झोंकने, पशु चराने और पालकी ढोने जैसे सेवक जातियों के काम करते हैं।

गोंडों का प्रदेश गोंडवाना के नाम से भी प्रसिद्ध है जहाँ 15वीं तथा 17वीं शताब्दी के बीच गोंड राजवंशों के शासन स्थापित थे। किंतु गोंडों की छिटपुट आबादी समस्त मध्यप्रदेश में है। उड़ीसा, आंध्र और बिहार राज्यों में से प्रत्येक में दो से लेकर चार लाख तक गोंड हैं। असम के चाय बगीचोंवाले क्षेत्र में 50 हजार से अधिक गोंड आबाद हैं।

ग्राम पंचायत की अवधारणा

डी.एन यादव
असि. प्रोफेसर
समाज शास्त्र विभाग
शा. महाविद्यालय, नसरुल्लागंज

परिचय एवं इतिहास,

वैदिक काल में भी पंचायतों का अस्तित्व था। ग्राम के प्रमुख को ग्रामणी कहते थे। उत्तर वैदिक काल में भी यह होता था जिसके माध्यम से राजा ग्राम पर शासन करता था। बौद्धकालीनग्रामपरिषद् में "ग्राम वृद्ध" सम्मिलित होते थे। इनके प्रमुख को "ग्रामभोजक" कहते थे। परिषद् अथवा पंचायत ग्राम की भूमि की व्यवस्था करती थी तथा ग्राम में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में ग्रामभोजक की सहायता करती थी। जनहित के अन्य कार्यों का संपादन भी वही करती थी। स्मृति ग्रंथों में भी पंचायत का उल्लेख है। कौटिल्य ने ग्राम को राजनीतिक इकाई माना है। "अर्थशास्त्र" का "ग्रामिक" ग्राम का प्रमुख होता था जिसे कितने ही अधिकार प्राप्त थे। अपने सार्वजनिक कर्तव्यों को पूरा करने में वह ग्रामवासियों की सहायता लेता था। सार्वजनिक हित के अन्य कार्यों में भी ग्रामवासियों का सहयोग वांछनीय था। ग्राम की एक सार्वजनिक निधि भी होती थी जिसमें जुर्माने, दंड आदि से धन आता था। इस प्रकार ग्रामिक और ग्रामपंचायत के अधिकार और कर्तव्य सम्मिलित थे जिनकी अवहेलना दंडनीय थी। गुप्तकाल में ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई था जिसके प्रमुख को "ग्रामिक" कहते थे। वह "पंचमंडल" अथवा पंचायत की सहायता से ग्राम का शासन चलाता था। "ग्रामवृद्ध" इस पंचायत के सदस्य होते थे। हर्ष ने भी इसी व्यवस्था को अपनाया। उसके समय में राज्य "भुक्ति" (प्रांत), "विषय" (जिला) और "ग्राम" में विभक्त था। हर्ष के मधुबन शिलालेख में सामकुंडका ग्राम का उल्लेख है जो "कुंडघानी" विषय और "अहिछत्र" भुक्ति के अंतर्गत था। ग्रामप्रमुख को ग्रामिक कहते थे।

ग्राम पंचायत एक परिचय

73वें संविधान संशोधन के अनुसार त्रिस्तरीय पंचायती राज में प्रारम्भिक स्तर की संस्था "ग्राम पंचायत" सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। ग्राम पंचायत ही निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक ऐसी संस्था है जिसे जनता के आमने-सामने हो कर जवाब देना पड़ता है तथा अधिकांश कार्यकलापों के लिए निर्णय लेने हेतु पहले उनकी सहमति लेनी होती है।

ग्राम पंचायत का स्वरूप

ग्राम पंचायत का क्षेत्र बिहार पंचायत राज अधिनियम, 2006 के प्रावधानानुसार लगभग 7,000 की जनसंख्या पर जिला दंडाधिकारी (डी0एम0) द्वारा घोषित किया जाता है। ग्राम पंचायत में एक या एक से अधिक गाँव (राजस्व गाँव) शामिल हो सकते हैं। मुखिया संबंधित ग्राम पंचायत के सभी मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से बहुमत के आधार पर निर्वाचित होते हैं। ग्राम पंचायत के प्रतिनिधि प्रत्यक्ष रूप से मतदाताओं द्वारा बहुमत के आधार पर निर्वाचित होते हैं। लगभग पाँच सौ की आबादी पर एक प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र (वार्ड) का गठन होता है और प्रत्येक वार्ड से एक ग्राम पंचायत सदस्य निर्वाचित होता है। सभी वार्ड सदस्य अपने बीच से ही एक उप मुखिया का बहुमत से चुनाव करते हैं। इस मतदान में मुखिया भी भाग लेते हैं। मुखिया, उपमुखिया और सभी वार्ड सदस्यों को मिलाकर ग्राम पंचायत का गठन होता है। ग्राम पंचायत का कार्यकाल प्रथम बैठक से पाँच वर्ष तक का होता है।

ग्राम पंचायत के कार्य

ग्राम पंचायतों का मुख्य कार्य ग्रामीण विकास में सहयोग करना तथा ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम सभा में निर्णय की प्रक्रिया में आम आदमी को जोड़ना है। बिहार पंचायत राज अधिनियम, 2006 के अनुसार ग्राम पंचायतों को निम्न कार्य आवंटित किए गए हैं :-

- संसाधनों के प्रबंधन व उत्पादन संबंधी कार्य
- ग्रामीण व्यवस्था व निर्माण संबंधी कार्य
- मानवीय क्षमता वृद्धि संबंधी कार्य
- कृषि तथा कृषि विस्तार
- सामाजिक और फार्म वनोद्योग, लघु वन उत्पाद, ईंधन और चारा
- पशुपालन, दुग्ध उद्योग व मुर्गी पालन
- मछली पालन
- खादी, ग्राम तथा कुटीर उद्योग
- ग्रामीण स्वच्छता एवं पर्यावरण
- ग्रामीण गृह निर्माण
- पेयजल व्यवस्था
- सड़क, भवन, पुल, पुलिया, जलमार्ग
- विद्युतीकरण एवं वितरण
- गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत
- जनवितरण प्रणाली
- सार्वजनिक संपत्ति का रख-रखाव
- बाजार तथा मेले
- ग्रामीण पुस्तकालय तथा वाचनालय
- खटालों, कांजी हाऊस तथा ठेला स्टैण्ड का निर्माण एवं रख-रखाव

कसाईखानों का निर्माण एवं रख-रखाव
 सार्वजनिक पार्क, खेलकूद का मैदान आदि का रख-रखाव
 सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ादान की व्यवस्था
 झोपड़ियों एवं शेडों का निर्माण तथा नियंत्रण
 सामान्य कार्य के अधीन योजना बनाना एवं बजट तैयार करना, अतिक्रमण हटाना तथा बाढ़-
 सुखाड़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय आम जन को सहायता प्रदान करना, गाँव के अनिवार्य

सांख्यिकी आँकड़ों को सुरक्षित रखना

धर्मशालाओं, छात्रावासों एवं अन्य जैसे ही संस्थानों का निर्माण एवं उसका रख-रखाव करना
 शिक्षा, प्राथमिक व माध्यमिक स्तर तक
 वयस्क तथा अनौपचारिक शिक्षा
 लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
 महिला व बाल विकास
 गरीबी उन्मूलन (गरीबी हटाना)
 कमजोर वर्गों विशेष रूप से अनुसूचित जाति तथा जनजाति का कल्याण
 सामाजिक, सांस्कृतिक तथा खेलकूद को बढ़ावा देना
 शारीरिक एवं मानसिक रूप से निःशक्त व्यक्तियों के लिए सामाजिक कल्याण
 उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त समय-समय पर सरकार द्वारा जो कार्य पंचायत को सौंपे जायेंगे, वह उन्हें
 कार्यान्वित करेगी।

मुखिया की जिम्मेदारियाँ

ग्राम सभा और ग्राम पंचायत की बैठकें आयोजित करना और उनकी अध्यक्षता करना।
 बैठकों का कार्य-व्यवहार संभालना और उनमें अनुशासन कायम रखना।
 एक कैलेण्डर वर्ष में ग्राम सभा की कम-से-कम चार बैठकें आयोजित करना।
 पूँजी कोष पर विशेष नजर रखना।
 ग्राम पंचायत के कार्यकारी प्रशासन की देख-रेख।
 ग्राम पंचायत में कार्यरत कर्मचारियों की देख-रेख और दिशा नियंत्रण करना।
 ग्राम पंचायत की कार्ययोजनाओं प्रस्तावों को लागू करना।
 नियमानुसार रखी गई विभिन्न रजिस्ट्रों के रख-रखाव का इंतजाम करना।
 ग्राम पंचायत द्वारा तय किए टैक्सों, चंदों और फीसों की वसूली का इंतजाम।
 विभिन्न निर्माण कार्यों को कार्यान्वित करने का इंतजाम करना, और
 राज्य सरकार या एक्ट अथवा किसी अन्य कानून के अनुसार सौंपी गई अन्य जिम्मेदारियों और
 कार्यों को पूरा करना।

पंचायतों को वित्तीय सहायता एवं अन्य साधन

बिहार पंचायत राज अधिनियम 2006 के प्रावधानों के अन्तर्गत गठित राज्य वित्त आयोग द्वारा की
 गई अनुशंसा (जिसे सरकार ने स्वीकृत कर अधिसूचित कर दिया हो) के आधार पर प्रत्येक पंचायत को

राज्य कोष से सहायता अनुदान प्राप्त करने का अधिकार है।

ग्राम पंचायत, पंचायत समिति तथा जिला परिषद अपने-अपने क्षेत्राधिकार की स्थानीय सीमाओं के अन्तर्गत अधिनियमानुसार सरकार द्वारा निर्दिष्ट अधिकतम दर के तहत करधुल्क लगा सकते हैं। राज्य वित्त आयोग की अनुशंसा पर ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद करधुल्क संग्रहण सरकार के निदेशानुसार कर सकता है।

ग्राम पंचायत, पंचायत समिति एवं जिला परिषद क्रमशः ग्राम पंचायत के नाम से ग्राम पंचायत निधि, पंचायत समिति के नाम से पंचायत समिति निधि एवं परिषद के नाम से जिला परिषद निधि का गठन करते हैं, और जमा खाते में अपनी अपनी राशियाँ जमाद्वय कर सकते हैं।

बजट

बजट में संभावित सभी आय एवं व्यय का वार्षिक आकलन होता है, जिसमें प्रस्तावित कार्यक्रम का वित्तीय विवरण प्रकट होता है। पंचायती राज संस्थाओं के लिए बजट उसके एक वर्ष के कार्यक्रम का स्वीकृत दस्तावेज है। कोई भी व्यय बिना बजट के अनुमोदन के नहीं हो सकता।

अधिनियम में ग्राम पंचायत के बजट का प्रावधान है, जिसके आलोक में प्रत्येक ग्राम पंचायत अपना वार्षिक बजट अर्थात् आय एवं व्यय का वार्षिक बजट तैयार करेगी और बैठक में उपस्थित सदस्यों के बहुमत से इसे अनुमोदित कराएगी। उस बैठक के लिए अन्य बैठकों की भाँति कम-से-कम कुल सदस्यों के 50 प्रतिशत सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। अधिनियम के आलोक में बजट एवं एकाउंट्स रूल का गठन प्रक्रियाधीन है। नियमावली के गठन तक बिहार ग्राम पंचायत लेखा नियमावली, 1949 के आलोक में मुखिया द्वारा अगले वित्तीय वर्ष के लिए फारम संख्या- 6 में बजट प्राक्कलन तैयार किया जाएगा एवं प्रतिवर्ष 15 फरवरी तक स्वीकृत कराया जाएगा। वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से प्रारम्भ होकर अगले वर्ष 31 मार्च तक का होता है।

लेखा

लेखाकरण ऐसी पद्धति है जिसका प्रयोग किसी भी संगठन के लेन-देन संबंधी कार्यों का रिकॉर्ड रखने, इन्हें वर्गीकृत करने और इन्हें सारणीबद्ध रूप से सम्प्रेषित करने के लिए किया जाता है। ग्राम पंचायतों को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न स्रोतों से निधियों की प्राप्ति होती है। पंचायतों के लिए जरूरी है कि वह लेखाकरण संबंधी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुव्यवस्थित लेखाकरण प्रक्रिया का अनुसरण करें।

पंचायती राज संस्थाओं में स्वस्थ, बेहतर एवं पारदर्शी लेखा प्रणाली लागू करने के उद्देश्य से पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा पंचायतों के लिए मॉडल एकाउंटिंग सिस्टम निर्धारित किया गया है। इसमें सरल प्रपत्र निर्धारित किए गए हैं। मॉडल एकाउंटिंग सिस्टम कम्प्यूटराईज्ड प्रणाली है। इस प्रणाली में सूचना एवं संचार तकनीक के माध्यम से वित्तीय प्रतिवेदन बनाने में सुविधा होगा।

राज्य सरकार ने अधिसूचना संख्या- 4868 दिनांक- 05.07.2010 द्वारा बिहार पंचायत राज अधिनियम, 2006 की धारा-30, 58 एवं 85 के तहत राज्य के ग्राम पंचायतों, पंचायत समिति एवं जिला परिषदों द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक तथा पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार के निर्धारित मॉडल एकाउंटिंग सिस्टम प्रपत्र में 01.04.2010 से लेखा संधारण का निर्णय लिया गया है।

मुखिया के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव

मुखिया को ग्राम पंचायत के मतदाताओं की विशेष तौर से बुलाई गई बैठक में साधारण बहुमत (अर्थात् कुल मतदाताओं का 50 प्रतिशत) से अविश्वास मत पारित कर हटाया जा सकता है। ऐसी विशेष बैठक हेतु ग्राम पंचायत के कुल मतदाताओं का न्यूनतम पाँचवा भाग यानि 20 प्रतिशत मतदाता एक आवेदन में हस्ताक्षर करके जिला पंचायत राज पदाधिकारी से अनुरोध करेंगे। जिला पंचायत राज पदाधिकारी बैठक की नोटिश जारी होने की तिथि के 15 दिन के अंदर विशेष बैठक आयोजित करेगा। बैठक की अध्यक्षता जिला पंचायत राज पदाधिकारी द्वारा की जाएगी। परन्तु अविश्वास प्रस्ताव मुखिया के निर्वाचित होने (प्रथम बैठक यानि शपथ ग्रहण) के प्रथम दो वर्षों तक तथा ग्राम पंचायत के कार्यकाल के अंतिम छः महीनों के शेष रहने के दौरान नहीं लाया जा सकता है। नियमानुसार मुखिया का अविश्वास प्रस्ताव यदि पारित नहीं होता है तो अगले एक वर्ष की कालावधि के भीतर पुनः अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जा सकता है।

उप मुखिया के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव

उप मुखिया को ग्राम पंचायत की विशेष तौर पर इस प्रयोजन से बुलाई गई बैठक में मुखिया सहित निर्वाचित कुल ग्राम पंचायत सदस्यों की संख्या में से साधारण बहुमत से हटाया जा सकता है। ऐसी विशेष बैठक बुलाने हेतु ग्राम पंचायत के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या के कम-से-कम एक तिहाई सदस्यों के हस्ताक्षर से आवेदन मुखिया को दी जाएगी। आवेदन प्राप्त होने की तिथि से सात दिनों के अंदर मुखिया ग्राम पंचायत कार्यालय में इस प्रस्ताव पर विचार हेतु विशेष बैठक बुलाकर उस बैठक की अध्यक्षता करेगा। मुखिया की तरह ही उप मुखिया के विरुद्ध भी पदावधि (प्रथम बैठक यानि शपथ ग्रहण) के पहले दो वर्षों तथा कार्यकाल के अंतिम छः महीनों के दौरान अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जा सकता है। नियमानुसार उप मुखिया का अविश्वास प्रस्ताव यदि पारित नहीं होता है तो अगले एक वर्ष की कालावधि के भीतर पुनः अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जा सकता है।

मुखिया उप मुखिया को सरकार द्वारा हटाया जाना

अधिनियम के प्रावधानानुसार सरकार के विचार में यदि कोई मुखिया अथवा उप मुखिया बिना समुचित कारण के तीन लगातार बैठकों में अनुपस्थित रहने या जान बुझकर इस अधिनियम के अधीन अपने कार्यों एवं कर्तव्यों को करने से इंकार या उपेक्षा करने, शक्तियों का दुरुपयोग करने, कर्तव्यों के निर्वहन में दुराचार का दोषी पाए जाने या शारीरिक और मानसिक रूप से अक्षम होने, किसी अपराधिक मामले का अभियुक्त होने के कारण छः माह से अधिक फरार हो जाने का दोषी हो तो ऐसे मुखिया या उप

मुखिया को स्पष्टीकरण हेतु समुचित अवसर प्रदान करने के उपरांत सरकार हटा सकती है। निहित शक्तियों के दुरुपयोग या अपने दायित्वों के निर्वहन में दुराचार का दोषी पाए जाने के फलस्वरूप हटाये गए मुखिया या उप मुखिया हटाये जाने की तिथि से पंचायत निकायों के किसी भी निर्वाचन में अगले पाँच वर्षों तक उम्मीदवार होने का पात्र नहीं होगा। शेष आरापों के आधार पर हटाया गया मुखिया या उप मुखिया या ग्राम पंचायत सदस्य के रूप में उसकी शेष अवधि के दौरान पुनः निर्वाचन का पात्र नहीं होगा।

ग्राम पंचायत के सदस्यों का त्याग—पत्र

ग्राम पंचायत का कोई भी सदस्य ग्राम पंचायत के मुखिया को स्वयं लिखकर अपनी सदस्यता से त्याग—पत्र दे सकता है। सदस्य त्याग—पत्र देने की तिथि से सात दिनों के अंदर अपना त्याग—पत्र स्वयं लिखकर वापस मुखिया से ले सकता है। यदि सदस्य सात दिनों के अंदर त्याग—पत्र वापस नहीं लेता है तो उसका पद त्याग—पत्र की तिथि से सात दिन की समाप्ति पर रिक्त हो जाएगा।

मुखिया की शक्तियाँ, कृत्य और कर्तव्य निम्न हैं :—

ग्राम सभा एवं ग्राम पंचायत की बैठक आयोजित करना और उसकी अध्यक्षता करना।

बैठक का कार्य—व्यवहार संभालना और उनमें अनुशासन कायम रखना।

ग्राम पंचायत के अभिलेखों का समुचित संधारण का उत्तरदायी होगा।

ग्राम पंचायत की वित्तीय और कार्यकारणी प्रशासन के लिए सामान्यतः उत्तरदायी होगा

ग्राम पंचायत के कर्मचारियों तथा पदाधिकारियों और वेसे कर्मचारियों, जिनकी सेवा किसी अन्य पदाधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत के अधीन सौंपी गई हो, के कार्यों पर प्रशासनिक नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण रखना।

अधिनियम से संबंधित कार्यों को करने के लिए या एतद् द्वारा प्राधिकृत कोई आदेश करने के प्रयोजनार्थ ऐसी शक्तियों का प्रयोग करेगा और ऐसे कार्यों का निष्पादन करेगा तथा ऐसे कर्तव्यों का निर्वहन करेगा जिनका प्रयोग, निष्पादन या निर्वहन अधिनियम अथवा इसके अधीन बनाई गई नियमावली के अधीन ग्राम पंचायत द्वारा किया जा सके। परन्तु मुखिया ऐसी शक्तियों का प्रयोग, ऐसे कार्यों का निष्पादन या ऐसे कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करेगा, जिन्हें इस अधिनियम के अधीन बनाई गई नियमावली की अपेक्षानुसार केवल ग्राम पंचायत द्वारा ही अपनी बैठक में प्रयोग करने, निष्पादन करने या निर्वहन करने की अपेक्षा हो।

ऐसी अन्य शक्तियों का प्रयोग, ऐसे अन्य कार्यों का निष्पादन तथा ऐसे अन्य कर्तव्यों का निर्वहन करेगा, जो ग्राम पंचायत द्वारा सामान्य या विशेष प्रस्ताव द्वारा यथा निर्देशित हो अथवा इसके लिए बनाई गई नियमावली के अधीन सरकार द्वारा यथाविहित हो।

उप मुखिया की शक्तियाँ, कृत्य और कर्तव्य

उप मुखिया की शक्तियाँ, कृत्य और कर्तव्य निम्न हैं :—

मुखिया की ऐसी शक्तियों का प्रयोग, ऐसे कार्यों का निष्पादन और ऐसे कर्तव्यों का निर्वहन करेगा, जो इसके लिए सरकार द्वारा बनाई गई नियमावली के अधीन मुखिया द्वारा उसे समय—समय पर

लिखित आदेश रूप में प्रत्यायोजित किया जाए। परन्तु मुखिया इस प्रकार प्रत्यायोजित सभी या किन्हीं शक्तियों, कार्यों और कर्तव्यों को उप-मुखिया से किसी भी समय वापस ले सकेगा।

मुखिया की अनुपस्थिति में, मुखिया की सभी शक्तियों का प्रयोग, सभी कार्यों का निष्पादन एवं सभी कर्तव्यों का निर्वहन करेगा। परन्तु जैसे ही मुखिया उपस्थित हो जाये, वह अपने अधिकारों को स्वतः ग्रहण कर लेगा तथा मुखिया के सभी कार्यों का सम्पादन एवं सभी कर्तव्यों का निर्वहन आरम्भ करेगा।

ऐसी अन्य शक्तियों का प्रयोग, ऐसे अन्य कार्यों का निष्पादन तथा ऐसे अन्य कर्तव्यों का निर्वहन करेगा, जो ग्राम पंचायत सामान्य या विशेष प्रस्ताव द्वारा यथा निर्देशित करे या इसके लिए बनाई गई नियमावली द्वारा सरकार विहित करे।

पंचायत के कार्य:

ग्राम पंचायत के कार्यों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है— अनिवार्य कार्य और ऐच्छिक कार्य। सभी राज्यों में पंचायतों के ये अनिवार्य और ऐच्छिक कार्य एक जैसे नहीं हैं। अधिकांशतया सभी राज्यों में पीने के पानी की व्यवस्था, स्थानीय सड़कों और मार्गों का निर्माण और रख-रखाव, जल की निकासी का प्रबन्ध, बांधों का निर्माण, कुँआ उन्नैर तालाबों का निर्माण और रख-रखाव तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों की व्यवस्था पंचायतों के अनिवार्य कार्य हैं।

आमदनी के साधन:

पंचायतों की आमदनी के साधन मौटे तौर पर दो भागों में बाँटे जा सकते हैं—स्वयं जमा किये करो आदि से आय तथा सरकार द्वारा प्रदान किया गया धन, प्रत्येक पंचायत गृहकर और सफाई-कर लगाती हैं और जनता से वसूल करती है।

गाँव के कूड़ा-करकट, गोबर तथा मृत पशुओं की लाशों आदि की बिक्री से प्राप्त आमदनी भी पंचायतों के पास आती है। जिला प्रशासन द्वारा किये गए जुर्माने, कोर्ट फीस हरजाने के रूप में प्राप्त राशि आदि पंचायतों को प्रतिवर्ष अनुदान देती हैं।

मुखिया के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव

मुखिया के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव निम्न प्रकार से लाया जा सकता है :-
प्रत्येक मुखिया द्वारा उसी समय से अपना पद रिक्त कर दिया गया मान लिया जाएगा, यदि विशेष तौर पर इस प्रयोजन से बुलाई गई बैठक में ग्राम पंचायत के कुल मतदाताओं की संख्या के साधारण बहुमत से उसमें विश्वास न रहने का प्रस्ताव पारित कर दिया जाए। ऐसी विशेष बैठक की अध्यक्षता ग्राम पंचायत की कुल मतदाता संख्या के कम-से-कम पंचमांश मतदाताओं के हस्ताक्षर से की जाएगी और वह जिला पंचायत राज पदाधिकारी को दी जाएगी। जिला पंचायत राज पदाधिकारी अध्यक्षता प्राप्त होने की तिथि से सात दिनों के अन्तर्गत किसी स्थान पर ग्राम पंचायत की विशेष बैठक बुलाएगा। बैठक का नोटिस जारी होने की तिथि के 15 दिनों के भीतर बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक की अध्यक्षता जिला पंचायत राज

पदाधिकारी द्वारा की जायेगी।

परन्तु मुखिया की पदावधि के प्रथम दो वर्षों में ऐसा कोई अविश्वास प्रस्ताव उसके विरुद्ध नहीं लाया जाएगा। परन्तु मुखिया के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव एक बार नामंजूर कर दिये जाने पर ऐसी नामंजूरी की तिथि से अगले एक वर्ष की कालावधि के भीतर कोई नया अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जायेगा।

परन्तु यह और कि ग्राम पंचायत के कार्यकाल के अन्तिम छः माह के दौरान मुखिया के विरुद्ध कोई अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया जायेगा।

गणपूर्ति (कोरम)

ग्राम पंचायत की बैठक हेतु कितनी गणपूर्ति (कोरम) आवश्यक है?

ग्राम पंचायत की बैठक के लिए गणपूर्ति सदस्यों की कुल संख्या की आधी होगी।

ग्राम पंचायत की बैठक हेतु यदि गणपूर्ति (कोरम) नहीं होती हो तब क्या किया जायेगा?

किसी बैठक के लिए नियत समय पर यदि गणपूर्ति नहीं होती हो, या यदि बैठक आरंभ हो जाय और गणपूर्ति की कमी की ओर ध्यान आकृष्ट कराया जाय तो ऐसी स्थिति में पीठासीन पदाधिकारी एक घंटे तक प्रतीक्षा करेगा और यदि उस अवधि के भीतर भी गणपूर्ति नहीं होती हो तो पीठासीन पदाधिकारी उस बैठक को अगले दिन अथवा आने वाले किसी ऐसे दिन को ऐसे समय के लिए, जो उसके द्वारा निर्धारित किया जायेगा, स्थगित कर देगा। गणपूर्ति की कमी के चलते स्थगित ऐसी बैठक में यदि निर्धारित विषय पर विचार नहीं हो सका हो तो उसे स्थगित बैठक या बैठकों के समक्ष रखा और निष्पादित किया जायेगा जिसके लिए उसी प्रकार कुल सदस्य संख्या की आधी गणपूर्ति आवश्यक होगी।

ग्राम पंचायत की बैठक की अध्यक्षता कौन करेगा?

ग्राम पंचायत की बैठक की अध्यक्षता मुखिया और उसकी अनुपस्थिति में उप मुखिया करेगा।

पंचायतों की जवाबदेही

पंचायतें स्थानीय क्षेत्रों की प्रतिनिधि सरकारें हैं। इन संस्थानों के निर्वाचित प्रतिनिधि, जिस प्रकार अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हैं, उन सभी के लिए वे स्वयं जवाबदेह भी हैं। इनकी जवाबदेही दो स्तरों पर होती है। पंचायतों को राज्य सरकार से निधियाँ मिलती हैं। अतः वह अपनी राज्य सरकार के प्रति जवाबदेह होती है। पंचायतें लोकतांत्रिक संस्थान हैं। अतः इनकी मुख्य जिम्मेदारी उन लोगों के प्रति है जिन्होंने इन्हें चुना है। इन दोनों स्तरों पर इनकी जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए पंचायतों को अपनी गतिविधियों के संबंध में बेहद सजग रहना है।

सन्दर्भ—:

- 1- [http%//www-dictionary-com/browse/jury](http://www-dictionary-com/browse/jury)
- 2- <http%//www-njcourts-gov/jury/indeÛ-html>
- 3- <http%//www-uscourts-gov/services&forms/jury&service>

शिक्षा में छिपा है महिला सशक्तिकरण का रहस्य

नीलिमा चटर्जी

समाज शास्त्र विभाग सहायक प्राध्यापक

शा. वीर सावरकर महाविद्यालय, औबेदुल्लागंज

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण की जब भी बात की जाती है, तब सिर्फ राजनीतिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण पर चर्चा होती है पर सामाजिक सशक्तिकरण की चर्चा नहीं होती ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता रहा है। उन्हें सिर्फ पुरुषों से ही नहीं बल्कि जातीय संरचना में भी सबसे पीछे रखा गया है। इन परिस्थितियों में उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने की बात बेमानी लगती है, भले ही उन्हें कई कानूनी अधिकार मिल चुके हैं। महिलाओं का जब तक सामाजिक सशक्तिकरण नहीं होगा, तब तक वह अपने कानूनी अधिकारों का समुचित उपयोग नहीं कर सकेंगी। सामाजिक अधिकार या समानता एक जटिल प्रक्रिया है, कई प्रतिगामी ताकतें सामाजिक यथास्थितिवाद को बढ़ावा देती हैं और कभी-कभी तो वह सामाजिक विकास को पीछे धकेलती हैं।

शिन यह है कि सामाजिक सशक्तिकरण का जरिया क्या हो सकती हैं? इसका जवाब बहुत ही सरल, पर लक्ष्य कठिन है। शिक्षा एक ऐसा कारगर हथियार है, जो सामाजिक विकास की गति को तेज करता है। समानता, स्वतंत्रता के साथ-साथ शिक्षित व्यक्ति अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग भी करता है और राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त भी होता है। महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से शिक्षा से वंचित रखने का षडयंत्र भी इसलिए किया गया कि न वह शिक्षित होंगी और न ही वह अपने अधिकारों की मांग करेंगी, यानी, उन्हें दोगुने दर्जे का नागरिक बनाये रखने में सहूलियत होगी। इसी वजह से महिलाओं में शिक्षा का प्रतिशत बहुत ही कम है। हाल के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों एवं स्वाभाविक सामाजिक विकास के कारण शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिस कारण बालिका शिक्षा को परे रखना संभव नहीं रहा है। इसके बावजूद सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से शिक्षा को किसी ने प्राथमिकता सूची में पहले पायदान पर रखकर इसके लिए विशेष प्रयास नहीं किया। कई सरकारी एवं गैर सरकारी आंकड़ें यह दर्शाते हैं कि महिला साक्षरता दर बहुत ही कम है और उनके लिए प्राथमिक स्तर पर अभी भी विषम परिस्थितियाँ हैं। यानी प्रारम्भिक शिक्षा के लिए जो भी प्रयास हो रहे हैं, उसमें बालिकाओं के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करने की सोच नहीं दिखती। महिला शिक्षकों की कमी एवं बालिकाओं के लिए अलग शौचालय नहीं होने से बालिका शिक्षा पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है और प्राथमिक एवं मिडिल स्तर पर

बालकों की तुलना में बालिकाओं की शाला त्यागने की दर ज्यादा है। यद्यपि प्राथमिक स्तर की पूरी शिक्षा व्यवस्था में ही कई कमियां हैं।

प्राथमिक शिक्षा पूरी शिक्षा प्रणाली की नींव है और इसकी उपलब्धता स्थानीय स्तर पर होती है। इस वजह से बड़े अधिकारी या राजनेता प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था की कमियों, जरूरतों से लगातार वाकिफ नहीं होते, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था। अतः यह जरूरी है कि प्रारम्भिक शिक्षा की निगरानी एवं जरूरतों के प्रति स्थानीय प्रतिनिधि अधिक सजगता रखें। चूंकि शहरों की अपेक्षा गांवों में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की स्थिति बदतर है, इसलिए गांवों में बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने और बच्चों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने पर खास जोर देने की जरूरत है।

73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायती राज व्यवस्था के तहत निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों ने भी पिछले 10-15 वर्षों में शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। सामान्य तौर पर ऐसा देखने में आया है कि पुरुष पंचायत प्रतिनिधियों ने निर्माण कार्य पर जोर दिया क्योंकि इसमें भ्रष्टाचार की संभावनाएं होती हैं। शुरुआती दौर में महिला पंचायत प्रतिनिधियों ने भी कठपुतली की तरह पुरुषों के इशारे एवं दबाव में उनकी मर्जी के खिलाफ अलग कार्य नहीं किया। आज भी अधिकांश जगहों पर महिला पंच-सरपंच मुखर तो हुई हैं पर सामाजिक मुद्दों के प्रति उनमें अभी भी उदासीनता है। इसके बावजूद महिला पंचों एवं सरपंचों से ही सामाजिक मुद्दों पर कार्य करने की अपेक्षा की जा रही है क्योंकि सामाजिक सशक्तिकरण के लिहाज से यह उनके लिए भी जरूरी है।

स्त्री शिक्षा का महत्व

क्या आप जानते हैं स्त्री शिक्षा का महत्व?

नारी शिक्षा आवश्यकता, पहले भी स्त्रियाँ पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थीं। वह अपनी विद्वता और संस्कृतियों के लिए बहुत प्रसिद्धि और यश प्राप्त करती थीं। लेकिन समय के साथ-साथ समाज में पुरुषवादी मानसिकता अपनी जड़ें जमाती चली गई और स्त्रियों को दबाया-कुचला जाने लगा। हाल के वर्षों में समाज में एक जागृति आई है। वैचारिक स्वतंत्रता ने सामाजिक पुरुषवादी सोच की जड़ता को झकझोर डाला है और लोग स्त्री शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। हालांकि अभी भी कुछ लोग हैं जो मानते हैं कि स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की परिधि के भीतर ही होना चाहिए और स्त्री शिक्षा लाभ से अधिक हानि देती है। फिर भी, इन नकारात्मक सोचों को दरकिनार कर स्त्री शिक्षा दर दिनोंदिन बढ़ रही है। सह शिक्षा के साथ-साथ देश भर में लड़कियों की शिक्षा के लिए सैकड़ों अलग विद्यालय और महाविद्यालय भी खुले हैं, जिनमें हजारों लड़कियाँ पढ़ती हैं।

स्त्री शिक्षा का महत्व

कहते हैं, एक पुरुष को पढ़ाने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है, जबकि अगर एक स्त्री को शिक्षा दी जाए तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। स्त्री परिवार की धुरी होती है। वह माँ होती है। एक शिक्षित माँ अपने

बच्चों में शिक्षा और संस्कार तो देती ही है, उनके स्वास्थ्य का भी बेहतर ध्यान रखती है। शिक्षित स्त्री घर—परिवार का प्रबंधन अधिक कुशलतापूर्वक कर सकती है, आय—अर्जन तथा अन्य कामों के मामले में पति का हाथ बँटाती है, अपने अधिकारों और दायित्वों को बेहतर रूप से समझती है और समाज में फैली कई बुराइयों के विरोध में खड़ी हो सकती है।

अब सवाल ये पैदा होता है कि उनके लिए सहशिक्षा का वातावरण बेहतर है या अलग शिक्षा का। कई अभिभावक सहशिक्षा का विरोध करते हैं। वे कहते हैं कि लड़कियों को लड़कों से इतना घुलना—मिलना सही नहीं है। वह अपनी जगह सही हो सकते हैं, लेकिन अब वह समय नहीं, जब लड़कियों को घर के भीतर ही रहना होता था। अब उन्हें किसी न किसी काम से बाहर तो निकलना पड़ता ही है। ऐसे में लड़कों से संपर्क तो कहीं भी हो सकता है। अगर बचपन से ही उन्हें लड़कों से दूर—दूर रखा जाए तो वह अब्यावहारिक तथा अतिसंवेदनशील होने के साथ ही साथ आत्मविश्वासहीन भी हो जाएँगी। इसके अलावे, उन्हें लड़कों की प्रकृति की पहचान नहीं हो पाएगी, जो उनके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। सहशिक्षा उन्हें लड़कों के स्वभाव से परिचित कराती है, जो उनके आगे के जीवन के लिए जरूरी है। साथ ही, उनमें लड़कों से प्रतियोगिता तथा मित्रता की भावना भी जगाती है। अत्यधिक संकोच और हिचकिचाहट मिटाकर जीवन में खुलकर आगे बढ़ने का विश्वास देती है। लड़कों की ही तरह लड़कियों को भी समग्र शिक्षा मिलनी चाहिए। वह शिक्षा जिसमें उनकी रुचि हो, जो उनके भविष्य के लिए नई राह खोलती हो, साथ ही, उसे अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों का ज्ञान देती हो। जो उसे मानवता की रक्षा करने का नैतिक साहस दे। अपनी भावना व्यक्त करने की भाषा सिखाए और अपने तथा अपने परिवार और समाज का कल्याण करने का विज्ञान भी। इसके अलावा, जरूरी है कि उनकी शिक्षा में शारीरिक शिक्षा और आत्मरक्षा के गुर भी शामिल होने चाहिए। समाज स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर बना होता है। जब तक दोनों को समान शिक्षा तथा अवसर न दिया गया, तब तक समाज में संतुलन नहीं कायम होगा और सही अर्थों में विकास नहीं हो सकेगा। दोनों पक्षों की मजबूती ही समाज में वास्तविक मजबूती ला सकती है

महिलाओं को शिक्षा क्यों?— इसके लाभ

श्रनदम 15, 2017

इलंकउपद

स्त्रल शब्दों में कहा जाए तो शिक्षा प्राप्त करना हर व्यक्ति का मूलभूत मानवीय अधिकार है। परन्तु हमारे समाज में कुछ लोग ही इस बात को समझते हैं और इस साधारण बात पर घहराई से विचार करते हैं। हमें इस तथ्य से अवगत होना चाहिए कि यदि महिलाएं अशिक्षित हैं तो आबादी के लगभग आधे लोग अशिक्षित हैं। महिलाओं को शिक्षा क्यों?— इसके लाभ, एक महिला को शिक्षित करने का मतलब है, अपने परिवार और राष्ट्र को शिक्षित करना।

‘सभी के लिए शिक्षा’ भारत सरकार द्वारा जारी किए जा रहे प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है लेकिन फिर भी भारत में महिलाओं की साक्षरता दर सबसे कम है। भारत काम कर रहा है लेकिन धीमी गति से, क्योंकि हमें खुद नहीं पता है कि हमें क्या करना चाहिए। ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति की शुरुआत में सिर्फ 2 से 6: तक महिलाएं साक्षर थीं। वर्ष 1961 में साक्षरता दर 15.3: और वर्ष 1981 में साक्षरता दर 28.5: तक हो गई थी। वर्ष 2001 में साक्षरता दर 50: से अधिक हो गई थी। वर्ष 2011 में भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 65.46: तक हो गई है। इसलिए महिला साक्षरता दर में स्पष्टतः वृद्धि हुई है, लेकिन वैश्विक स्तर पर अन्य देशों की तुलना में भारत अभी भी बहुत पीछे है। भारत के सभी राज्यों की निरक्षरता दर अलग-अलग है। केरल में 86: महिलाएं साक्षर हैं, जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश में महिलाओं की साक्षरता दर सिर्फ 55 से 60: के बीच में है। यह अफसोस की बात है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर सबसे कम है। ग्रामीण राजस्थान में महिलाओं की साक्षरता दर 12: से भी कम है।

भारत में लिंग आधारित भेदभाव प्रचलित है। ऐसा आप ने देखा या सुना होगा कि समाज के निचले स्तर वाले कई माता-पिता अपने लड़के को स्कूल भेजते हैं, लेकिन लड़की को नहीं। यह भी एक समस्या है, जहाँ माता-पिता अपनी बेटियों को स्कूल नहीं भेजते हैं। दूसरी जगह में, आप ने यह भी देखा होगा कि आम तौर पर शहरी इलाकों के माता-पिता अपने लड़के को बेहतर स्कूल में भेजते हैं। यहाँ तक कि अगर लड़कियों का बेहतर स्कूल में नाम आ जाता है, तो भी उनको माता-पिता की वजह से स्कूल छोड़ना पड़ता है। लड़कियों के प्रति इस तरह का व्यवहार क्यों किया जाता है? हमें हमारी लड़की को शिक्षित न करने से होने वाले परिणामों के बारे में सोचना चाहिए। जब एक महिला अशिक्षित होती तो, अशिक्षा के कारण केवल वह ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार के साथ-साथ देश भी प्रभावित होता है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि निरक्षर महिलाओं की प्रजनन क्षमता उच्च और साथ ही मृत्यु दर अधिक होती है। यह देखा गया है कि निरक्षर महिला की तुलना में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं के मामले में शिशु मृत्यु दर आधे से भी कम हो जाती है। इस के अलावा, अशिक्षित महिलाओं के कारण बच्चे कुपोषण का शिकार होते हैं। निरक्षरता परिवार की सम्भावित कमाई की क्षमता को कम कर देती है।

स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महिलाओं को शिक्षित करना जरूरी है। एक शिक्षित महिला एक बेहतर इंसान, सफल माँ और एक जिम्मेदार नागरिक हो सकती है। महिलाओं को शिक्षित करने से निश्चित तौर पर जीवन स्तर में और घर के बाहर भी वृद्धि होती है। एक शिक्षित महिला अपने बच्चों को आगे पढ़ाई करने के लिए मजबूर करेगी जिससे बेहतर जीवन जीने की इच्छाशक्ति को भी बढ़ावा मिलेगा। महिलाओं को शिक्षित करने से उनके आत्मसम्मान में बढ़ावा और उसकी मदद से महिलाओं की प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है। एक शिक्षित महिला को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होना चाहिए। एक शिक्षित

महिला सामाजिक बुराइयों जैसे घरेलू हिंसा, दहेज माँग, कम मजदूरी आदि जैसे कारणों का विरोध कर सकती है।

देश की तरक्की में साक्षर नारी का योगदान

भारत के विकास में महिला साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि पिछले कुछ दशकों से ज्यों-ज्यों महिला साक्षरता में वृद्धि होती आई है, भारत विकास के पक्ष पर अग्रसर हुआ है। इसने न केवल मानव संसाधन के अवसर में वृद्धि की है, बल्कि घर के आँगन से ऑफिस के कैरीडोर के कामकाज और वातावरण में भी बदलाव आया है। महिलाओं के शिक्षित होने से न केवल बालिका-शिक्षा को बढ़ावा मिला, बल्कि बच्चों के स्वास्थ्य और सर्वांगीण विकास में भी तेजी आई है। महिला साक्षरता से एक बात और सामने आई है कि इससे शिशु मृत्यु दर में गिरावट आ रही है और जनसंख्या नियंत्रण को भी बढ़ावा मिल रहा है। हालाँकि इसमें और प्रगति की गुंजाइश है। स्त्री-पुरुष समानता के लिए जागरूकता जरूरी है। निरुसंदेह अंग्रेजों का शासन बहुत बुरा था, लेकिन महिलाओं की स्थिति में जो मौलिक बदलाव आए वो इसी जमाने में आए। कम से कम प्राचीन भारतीय संस्कृति में तो महिला की इज्जत थी ही। मुगलों और उससे पहले आक्रमणकारी लुटेरों के शासन के साथ ही उनकी दशा में गिरावट आई। भारत में स्त्री शिक्षाखसंपादित करें,

भारत की एक छात्रा

भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार था। मुगल काल में भी अनेक महिला विदुषियों का उल्लेख मिलता है। पुनर्जागरण के दौर में भारत में स्त्री शिक्षा को नए सिरे से महत्व मिलने लगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा सन १८५४ में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर ०.२: से बढ़कर ६: तक पहुँच गया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। १८८६ में शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन १९४७ से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिये, अधिक लड़कियों को पाठशाला में दाखिला करने के लिये और उनकी स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजनाएँ बनाएँ हैं जैसे कि निरुशुल्क पुस्तकें, दोपहर की भोजन आदि। जोन इलियोट ने पहला महिला विश्वविद्यालय खोला था। सन् १८४६ में और उस विश्वविद्यालय का नाम

बीथुने कालेज था।

सन् १८८६ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पुनर्गठन देने को सरकार ने फैसला किया। सरकार ने राज्य

कि उन्नती की लिये, लोकतंत्र की लिये और महिलाओं का स्थिति को सुधारने की लिये महिलाओं को शिक्षा देना जरूरी समझा था। भारत की स्वतंत्रता के बाद सन् १९४७ में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग को बनाया गया। आयोग ने सिफारिश किया कि महिलाओं की शिक्षा में गुणवत्ता में सुधार लिया जाए। भारत सरकार ने तुरन्त ही महिला साक्षरता की लिये साक्षर भारत मिशन की शुरुआत किया था।

सन्दर्भ:-

1. ? [Http://www-confabjournals.com/confabjournals/images/6520138351219-pdf](http://www-confabjournals.com/confabjournals/images/6520138351219-pdf)

उद्धरण योग्य अन्य पुस्तकीय संदर्भ स्रोत

जे सी अग्रवाल (१ श्रदंनंतल २००९). भारत में नारी शिक्षा. प्रभात प्रकाशन. आई०एचएस०बी०एच० ९७८-८१-८५८२८-७७-०.

E- W- भनजजमत (१८५९). थमउंसम म्कनबंजपवदरू प्जे प्चवतजंदबम, जीम भसचे दक जीम भ्पदकतंदबमे रू। ककतमे क्मसपअमतमक ठमवितम जीम बंनसजल दकै जनकमदजे वि जीम नैनुनमींददं थमउंसम ब्बससमहम, जैमसपदेहतवअम, चं, वद ज्मकेकंल म्अमदपदह, छवअमउइमत ८जी, १८५९. ज.छ. ज्ञानतज्र.

सुमन कृष्ण कांत (१ सितम्बर २००१). इक्कीसवीं सदी की ओर. राजकमल प्रकाशन. आई०एचएस०बी०एच० ९७८-८१-२६७-०२४४-२.

थमउंसम म्कनबंजपवदरू। जैजनकल वि त्तंतंस प्दकपं. ब्बेउव च्चइसपबंजपवदे. २००३. आई०एचएस०बी०एच० ९७८-८१-७७५५-२०७-२.

डॉ. जे. पी. सिंह, (१ अतपस २०१६). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. च्चस्मंतदपदह च्चअज. स्जक..

आई०एचएस०बी०एच० ९७८-८१-२०३-५२३२-२

ीजजचरूध्धिपदकपू. म्इकनदपं. बवउधंतजपबसमध्वउमद

IMPLICATIONS OF URBAN POVERTY OF A SLUM AREA OF BHOPAL DISTRICT (MADHYA PRADESH)

Farooq Ahmad Ganjee*
P.hD Research Scholar
Department of sociology and social work
Barkatullah University Bhopal

Abstract

The present study poses observed implications of urban poverty of the research study area which were found as main causes of urban poverty among the urban poor people (slums) and were found providing overwhelming consequences to the slum life. The study proposes to use descriptive research design and has based on both quantitative and qualitative data gathered from both primary and secondary sources. The study has used standard statistical and qualitative techniques for data collection and analysis. The study is carried out in slums of Bhopal city (M.P). In order to study the implications of the urban poverty, the selection of purposive sampling has been used to choose the study area among the various slum areas of Bhopal city.

The samples (300 respondents) of the study were selected from a slum area namely Vishwakarma Nagar Slum area located opposite Habibjanghai railway station of Bhopal city. The area where the samples were selected was settled on BHEL (Bharat Heavy Electricals) government of India land and mostly people of this area were migrated either from other states or from their native state (M.P). The people of the area are who live life on little income in abject poverty and living as slum in the Bhopal city. Multiple sources of data have been used for the purpose of studying. The study is, therefore, based on primary data generated from field survey, interviews, observations and informal discussions and secondary data from official records, newspapers, previously conducted studies, book publications, journal articles, and

reports and assorted other documents. After collection of the data the data was collaborated with previous and other related studies of the particular field.

Key words:-implications, overwhelming, consequences, samples, migrated, settled, informal, qualitative, quantitative, multiple.

Social Implications of Urban Poverty

The high portion of people living in the slum were observed as illiterate or having low level of education: It was often argued that illiteracy is a biggest problem and is considered main reason for poverty. The area which was surveyed for the study had majority of people with no education or having low level of education as shown in below table.

Educational status of respondents of research area

Education level	Frequency	Percentage (%)
No school	107	35.66%
I-V	39	13%
VI-IX	105	35%
Higher .S. Sc	46	15.33%
Bachelors & above	3	1.0%
Total	300	100%

(Primary source of data)

A clear picture emerges here from above data table that mostly people in the area are illiterate or having low level of education. This is found one of the causes that they get not work in to the formal sector of employment and got engaged in the unorganized sector of employment.

Lack of skill: Unskilled workers are paid very low in spite of hard work they put daily. The problem lies with the unorganized sector as owners do

not bother the way their workers live and the amount they earn. Their area of concern is just cost-cutting and more profit. Because of the number of the workers looking for a job is higher than the jobs available, unskilled workers have no other option but to work for less money. According to the present study it was found that 79.33% of respondents were working as unskilled day labours. The standard of living of unskilled labour workers was observed low in comparison to other group of workers.

Poor housing conditions: Mostly people in the study area were found living in katcha type of dwellings that is considered as the most vulnerable form of habitat, according to BMC (Bhopal municipal cooperation) report May 2013, 75.9% having katcha type houses with high residential density range. The present study was seen similar to the BMC report and discloses that a high proportion I.e. 68% of respondents was living in katcha jhupri type of dwellings, 2.66% in tin sheds and the remaining 29.33% of was found living in semi pucca/pucca dwellings. According to BMC report, there are 644 (75.94%) katcha dwellings, 113 (37.66%) semi pucca and 91(30.33%) pucca dwellings. The present study indicated 88.66% people are living in overcrowded conditions as in single room dwellings and these dwellings having poor ventilation and weak roof structure and such conditions leads to rapid spread of respiratory and skin diseases and vulnerability to inundation during the rainy season.

Dwelling type and dwelling density: The present study observed that 81% of Respondents households live in single rooms. The sizes of the dwellings were observed during the survey as some dwellings were found as 10 feet in length and 12 feet in breadth and some 12 in length 15 feet in breadth. 18% of the respondents were found having two rooms and only 1% was found having three rooms. It appears that majority of people in the area living in single rooms which is highly congested and unhealthy. This was also observed that 80.66% of respondents families live in single room dwellings with 4 to 6(180) and 6 to 8(62) members,

17.66% have two dwelling rooms with 4 to 6(21) 6 to 8(27) and 8 to 10(5) members and 1.66% have three room dwellings with 4 to 6 (1), 6 to 8 (2) and 8 to 10 (2) members. The data indicating is that the majority of urban dwellers reside in single rooms with minimum of 4 and maximum of 8 members which poses a serious concern to health, education and privacy.

Migration of poor people towards urban centers in search of work increases urban competitiveness and struggle for resources: As far the migration of poor people towards urban centers is concerned; the present study showed that 93.33% of respondents of the research study slum area migrate to this city from different rural areas of many states like UP, Bihar, Chhattisgarh, and Bengal, due to the push factor of less opportunity in the socio economic situation and also because of pull factors that existed in the more developed areas.

Reason of migration which compel the poor people to migrate towards urban centers: There are many reasons which are found through the present study who compel poor people to migrate from rural areas to urban centers, as the present study indicated that there are many reasons/causes that compel poor people to migrate towards urban centers. It was also found among the many causes like low wages, drought, flood, limited agricultural land, increased size of family but the cause of unemployment were observed most dominated which force the poor people to migrate in search of work towards urban centers.

Increase in population size: High population growth rate is one of the major causes for poverty. This further leads to high illiteracy, poor health care facilities and lack of access to financial resources. Also, high population growth affects the per capita income and makes per capita income even lower. During the present study this were observed that the family who were bigger in size living their lives in serious and abject conditions of poverty as compared to those who have

smaller families. According to the present study this was also found that increasing in the family size is one of the reasons for migration.

Problem of land tenure security: The urban poor people are generally vulnerable towards land tenure security. As these poor people when migrated from their native places to urban centers encroaching free public or government land and settle their dwellings, when the public or government authority want to free the land on which these urban poor people are settled they can't protect themselves from being evicted and once they are evicted from their dwellings they become homeless. During the survey it was found that 98% of the respondents of the study area encroached public BHEL GOI land.

Lack of facilities: If anyone in real sense wants to see inadequate facilities among people then he should go to any slum and he will find poor people in urban centers not only face inadequate facilities but lack some basic facilities. The present study has observed that the research study area lacks the access of basic facilities like inadequate water facility, lack of access to health facilities inadequate bathroom facilities, toilet facilities, drainage system facilities, lack of sanitation along with inadequate mode of waste disposal facilities and no place for playing to children which effect the life of slum poor people.

Average family size and dependent family ratio: The present study indicated that a very high proportion 79.66% of respondents is from nuclear families with 1115 members with family average size of 4.66. These families include parents, their children, and in few cases close relatives, all living together under the same roof. On the other hand a small proportion 20.33% of respondents joint families have on a family average size of 6.70 with 409 members. This poses not only greater overcrowding and absence of privacy in the small residential space but also greater economic hardships. The study also indicated that the 239 respondents of nuclear

families have an average of 3.29 dependent members per family which together add up to 787 members. On the other hand the 61 respondents of joint families have an average of 3.83 dependent members per family which taken together make up an aggregate of 234 members. The total numbers of both types of families come 1221 members, the average of which works out to 3.40 dependent members ratio which is very high for the family who living in poverty.

Fuel used for cooking: The present study observed the availability of fuel resources for cooking to the surveyed households. As it was found that there are 79% of households who use multi fuels for cooking such as kerosene, firewood, cow dung, and 18% households use gas with other fuels and 2.33% use electricity and other fuels for cooking. No doubt government is providing some basic facilities to these urban poor people on card basis but these facilities were found insufficient from the perspectives of these people. Just as the government is providing 5 liters of kerosene for 5 members of family and these people stated that 5 liters kerosene is not enough for a month for cooking purpose for a family who have five members. This was found through the present study that 32.33% living their lives without any type of card and these people are reported to buy fuel items for cooking from private stores at high costs and sometime they collect it from trees and road side bushes when they are unaffordable to buy it from private stores. The people who having BPL or Labour Cards get kerosene from government stores but in limited quantity and they also buy fuel for cooking from private stores and collect firewood from trees and road side bushes. The people of the slum also reported that they buy firewood from market in rainy season and in cold days. Those who use gases are also reported that when they are not able to pay for gas they use same method like to buy fuel from private stores and collect firewood from trees and road side bushes for cooking. Women and children are the ones who usually collect these fuels by doing so their daily life allows less time for other useful activities such as education.

Withdraw their children from schools at early and engage them in earning activities: This was also observed through this study that the poor slum people not remaining much interested with education as it was observed in the study area many people was found who withdraw their children from schools and engage them in earning works likes shoe polish, begging, selling tea at railway station and selling goods on road sides.

Corruption: Corruption and poverty unfortunately go hand-in-hand, threatening the lives of too many people. In countries where people are forced to bribe to get essential services like health and water and other facilities the toll can be horrifying. The effects of corruption are personal and they are devastating. Corruption leaves children without mothers, families without healthcare, people without food, the elderly without security, and businesses without capital. According to the present study the respondents of the research study area reported that they are paying bribes on small thing like for BPL cards, electricity connections, for ration cards and for other government facilities.

Economic Implications of Urban Poverty

Unorganized sector of employment or informal sector of employment: The people of the research study area were found in majority as engaged in unorganized sector of employment as, 124 was found engaged in unskilled labour. 6 driver, 14 tailor, 12 carpenter, 40 mason and plumber, 24 painter, whitewasher, 15 maid, 6 tea vender, 7 vegetable and fruit vender, 12 having small shop, 27 apprenticeship work, 5 having government and semi government jobs and 8 having small job in private sector, which amounts 79.33% are engaged in daily wage basis work as unskilled labours and skilled labours in the informal sector without any fixed place of work and without any fixed wages, 16% engaged in self employed occupations like small and petty business like setting up of different kind of small shops and only 4.33% was

found engaged in formal service sectors as small salaried employees. According to BMC report May 2013 that shows there are 544 persons (20.59%) who are engaged in unorganized sector, 203 (7.68%) are self employed businessmen and salaried employed are 172 (6.51%) in the area. Thus people in majority are engaged in unorganized sector of work in the study area which effecting the life of poor as they can't fulfill their basic needs of life due to irregular work and irregular income.

Income conditions of the people: The monthly income of household in the surveyed households of research study area were found lower than BPL poverty line given by Rangarajan committee because the people of the area were observed as mostly doing daily wage labour work or doing small petty trades or having small jobs either in government or in private sector. So far as the monthly income of the surveyed households is concerned that is 4963 which is very low when comparing with Rangarajan report on poverty (30th June 2014) of poverty line which is 1407 for urban areas at the rate 47 per day per capita expenditure, thus for the family of five (5) the all India poverty line as per this committee would amount to 7035 per month in urban areas. The monthly household income average of surveyed households is very low to Rangarajan committees monthly income of urban poverty line that is 7035, so the people of the area live life on little income in abject poverty living as slums in the city.

High interest rates on loans: The urban poor are unable to live on their limited earnings and are often enforced by these conditions to take loans from various sources and urban poor have limited access to formal sources of credit due to their unstable and vulnerable situations. The urban poor take loans from informal sources at higher rates of interest to survive life in the city. It s found that only few people take loans. This was also observed that the people who take loan find hindrance in repayment of their loans due to high repayment loan rates.

Cultural Implications of Urban Poverty

Dowry was observed: During the present study Dowry were observed in the study area as some people were stated that they have to pay dowry at the time of marriage of their daughters *in the form of different expensive things like furniture, TV sets, Motor bikes etc.*

Feminization of poverty: Women are the worst victim of poverty. Poverty effects women in greater number than men. The gender inequalities were seen in income pattern, during present study as they are deprived of proper diet, medicines and health treatment. The present study also observes gender inequality prevails in other aspects such as in terms of education, health and family related traditions. It was observed in the research study area that some of the people are providing education only to their male Childs because they think that male Childs can make their future better and female having no role after marriage to their parents family. This was also observed that in some families they don't allow women folk to work outside their houses because they feel scare of sexual assaults and harassments. This was also found that only two women were working as apprentice work in the study area.

Daily basis wasteful expenditure on non food items was observed one of the cause of income reduction: According to present study it was observed that urban poor people spend a small portion of their income on wasteful food items like on alcohol drinking, smoking and on paan and gutka chewing, that means reduction in the monthly income of the family at expenses of food, clothes and necessities.

Health Implications of Urban Poverty

Health issue: Poverty and poor health worldwide are inextricably linked. The causes of poor health for millions globally are rooted in political, social and economic injustices. Poverty is both a cause and a consequence

of poor health; Poverty increases the chances of poor health. Poor health in turn traps communities in poverty. Infectious and neglected tropical diseases kill and weaken millions of the poorest and most vulnerable people each year. The urban poor people of the study slum area have limited access to the city health care services as there is no health center or any type of health facility except one female health worker. The health facilities according to BMC report May 2013 are 2.5 km far from this place. The most common diseases in the area were found as malaria, diarrhea, B.P, asthma, arthritis, and several kinds of fever. Due to low economy these urban poor people of this area were found use folk medicine (traditional forms of medicine) to recover from illnesses as they know illness can depose any individual from the labour pool and can push a household into poverty.

Stable diet or dietary habits: So far as the dietary habits of respondents of the study area was concerned it was found that, their dietary habits were not healthy and balanced as it was observed poverty ridden people can't afford a healthy and balanced diet. Availability of nutritious diet at the stage when child begins to grow becomes far of dream. Rice, roti and vegetables are the normal diet they feed themselves and their diet lack in nourishment and quality.

Political Implication of Urban Poverty

Lack of political will: It was found from the study that the urban poor people of the study area get never helped by any leader not even from their local leader and they reported that even for BPL cards they have to pay bribe. These people also reported that they were only remembered at the time of elections by these leaders and when these leaders win they remember only their own self's not the poor people. During the survey these people were observed helpless and hopeless because they think that leaders may come and gone but their conditions remain always unaffected.

Conclusion

The study was taken with the intention of knowing the implications of urban poverty in slums in a slum area of Bhopal city (M.P). According to the study there were various implications of urban poverty in slums such as social, economic, cultural, health and political. Due to these implications of urban poverty the people who are living abject poverty in slums realizing themselves as they have lower status in each and every aspect of society and they feel hopeless and helpless. So to eliminate the above arising issuing implications of urban poverty in slums, the government, NGOs and private sector must come together and solve the issues and help these poor people genuinely and take them towards betterment and sustainable progress along other groups of society and change things for better.

References-:

1. BMC/Revised draft final report- volume 2-annexure may, slum free city plan for Bhopal metropolitan area :(2013)
2. Census (2011) data, GOI.
3. Madhya Pradesh, socio-economic statistical information.
4. Desai, A.R. and Pillai, S.D. (1972) Profile of an Indian slum, Bombay: University of Bombay.
5. Jains, D,T and Lavaina: (1987) survey methods in social investigation, research. New Delhi.

Corporate Social Responsibility in India

Dr. Vijay Dubey
Professor, Commerce Department
Dr. Bhagwat Sahai Government College
Gwalior

Abstract

Drawing on existing theoretical and empirical literature on the rationale behind Corporate Social Responsibility (CSR), this paper analyses the potential implications of mandated CSR under the recently enacted Companies Act, 2013 in India on firm incentives, likely responses of corporates that come under the ambit of the law, implications for resource availability and delivery of social goods, and the prospects and challenges of implementing mandated CSR. Insights into these issues are drawn by empirically examining the voluntary CSR behavior of a sample of 500 large companies listed on the Bombay Stock Exchange for the period 2003-2011 that predates the new regulation. The paper argues that notwithstanding the potential economic costs that may accompany mandated CSR, the provisions of the new Act are designed thoughtfully to balance the objectives of the corporation and its shareholders on the one hand and that of the society and its stakeholders on the other. However, addressing the challenges of implementation successfully would determine how far the objectives of the new regulations are met.

Keywords: Corporate social responsibility, firm incentives, social welfare, efficiency, regulation, Enforcement.

Introduction

India's new Companies Act 2013 (Companies Act) has introduced several new

provisions which change the face of Indian corporate business" Companies Act 2013 (Companies Act) has introduced several new provisions which change the face of Indian corporate business. One of such new provisions is Corporate Social Responsibility (CSR). The concept of CSR rests on the ideology of give and take. Companies take resources in the form of raw materials, human resources etc from the society. By performing the task of CSR activities, the companies are giving something back to the society.

Ministry of Corporate Affairs has recently notified Section 135 and Schedule VII of the Companies Act as well as the provisions of the Companies (Corporate Social Responsibility Policy) Rules, 2014 (CRS Rules) which has come into effect from 1 April 2014.

Applicability: Section 135 of the Companies Act provides the threshold limit for applicability of the CSR to a Company i.e. (a) net worth of the company to be Rs 500 crore or more; (b) turnover of the company to be Rs 1000 crore or more; (c) net profit of the company to be Rs 5 crore or more. Further as per the CSR Rules, the provisions of CSR are not only applicable to Indian companies, but also applicable to branch and project offices of a foreign company in India. CSR Committee and Policy: Every qualifying company requires spending of at least 2% of its average net profit for the immediately preceding 3 financial years on CSR activities. Further, the qualifying company will be required to constitute a committee (CSR Committee) of the Board of Directors (Board) consisting of 3 or more directors. The CSR Committee shall formulate and recommend to the Board, a policy which shall indicate the activities to be undertaken (CSR Policy); recommend the amount of expenditure to be incurred on the activities referred and monitor the CSR Policy of the company. The Board shall take into account the recommendations made by the CSR Committee and approve the CSR Policy of the company.

Definition of the term CSR: The term CSR has been defined under the CSR Rules which includes but is not limited to: Projects or programs relating to activities specified in the Schedule; or Projects or programs relating to activities undertaken by the Board in pursuance of recommendations of the CSR Committee as per the declared CSR policy subject to the condition that such policy covers subjects enumerated in the Schedule. This definition of CSR assumes significance as it allows companies to engage in projects or programs relating to activities enlisted under the Schedule. Flexibility is also permitted to the companies by allowing them to choose their preferred CSR engagements that are in conformity with the CSR policy.

Activities under CSR: The activities that can be done by the company to achieve its CSR obligations include eradicating extreme hunger and poverty, promotion of education, promoting gender equality and empowering women, reducing child mortality and improving maternal health, combating human immunodeficiency virus, acquired, immune deficiency syndrome, malaria and other diseases, ensuring environmental sustainability, employment enhancing vocational skills, social business projects, contribution to the Prime Minister's National Relief Fund or any other fund set up by the Central Government or the State Governments for socio-economic development and relief and funds for the welfare of the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes, other backward classes, minorities and women and such other matters as may be prescribed.

Local Area: Under the Companies Act, preference should be given to local areas and the areas where the company operates. Company may also choose to associate with 2 or more companies for fulfilling the CSR activities provided that they are able to report individually. The CSR Committee shall also prepare the CSR Policy in which it includes the projects and programmes which is to be undertaken, prepare a list of projects and programmes which a company plans to undertake during the implementation year and also focus on integrating

business models with social and environmental priorities and process in order to create share value.

The company can also make the annual report of CSR activities in which they mention the average net profit for the 3 financial years and also prescribed CSR expenditure but if the company is unable to spend the minimum required expenditure the company has to give the reasons in the Board Report for non compliance so that there are no penal provisions are attracted by it.

The Rationale of CSR

To understand better the drivers of CSR in developing countries and the considerations that have possibly dictated the imposition of mandatory CSR in India, it is important to highlight the pros and cons of socially responsible activities from the viewpoint of both the society and the corporation along with the need for regulatory oversight of such activities.

CSR and Social Welfare

At the societal level, there has been an increasing recognition that the economic activity of a corporation needs to be embedded in societal concerns. In fact, much of the discourse on CSR is conducted in terms of the relationship between business and society, of the moral and ethical imperative of business that goes beyond legal compliance, to contribute positively to society. Bowen (1953), among the first academicians to draw attention to the social responsibility of corporations, argued that private corporations should be evaluated purely in terms of its “demonstrable contribution to the general welfare” (p.52) in terms of the production of social goods such as higher standards of living, and in spreading economic progress and security, and that the survival of the free enterprise system critically depended on such contributions. A similar argument was forwarded by Steiner (1971) who argued that while businesses are primarily economic institutions, they are also expected to contribute towards achieving social goals, and such responsibilities should increase with the size of the business.

This line of thinking, evolved over the years culminating in the stakeholder perspective that argues that a corporation's goal should go beyond maximising profits for its shareholders, and should instead be defined with respect to all its stakeholders (customers, suppliers, employees, community, etc.) including the society at large (Freeman, 1984). While much of the argument for CSR from the perspective of the society is ensconced in moral and ethical considerations, there are economic arguments too that have been made for and against CSR. The strongest position taken against firms engaging in CSR has been taken by Friedman (1970) who argued that it would be socially irresponsible for profit maximizing firms to engage in CSR; any diversion of funds to create social good at the cost of shareholder returns would be tantamount to 'theft.' The implication of Friedman's thesis is that CSR would lead to allocative inefficiencies and social losses. On the other hand, a body of theoretical research has provided the economic rationale for the social role of private firms in the provision of public goods via CSR. For instance, Besley and Ghatak (2007), based on a theoretical model argue that CSR is no different from the private provisioning of public goods, that it can be Pareto improving and that, CSR by private-for-profit firms will be potentially efficient when provisioning of public goods by governments is sub-optimal.

The rationale for CSR in the case of developing countries extends beyond standard arguments as highlighted above and explicitly brings in the role that CSR can play in meeting developmental objectives of poverty reduction and inclusive growth. To begin with, there is no place for Friedman's view of CSR. Instead, the social role of the corporates in development vis-à-vis that of the government becomes an integral part of the discourse. In particular, CSR contributes to governmental resources and delivery mechanisms either to supplement these, i.e., to chip in, or as a substitute, to fill up "governance gaps" especially where governments are weak, corrupt and under-resourced, and

institutions are weak (Visser, 2008; Blowfeld and Fyrnas, 2005; Matten and Moon, 2008). These arguments closely mirror the conclusions arrived at by Besley and Ghatak of the role of CSR where government provisioning could be sub-optimal for a variety of reasons.

Mandating CSR disclosure

The issue of mandating CSR essentially pertains to the question of whether corporations are required by laws and regulations to report/disclose its CSR activities or whether the decision to report is to be left to the business judgment of the corporation. The issue of mandatory CSR reporting has gained prominence in recent years following the global financial and economic crisis in the 2000s, a string of corporate misconduct and failures, and growing threats from business operations to environmental sustainability from business operations, all of which have created a 'trust deficit' between corporates and their stakeholders (KPMG-UNEP, 2010). Consequently, CSR governance has over time shifted from a “hands-off” approach to more stringent regulation in terms of imposing greater mandatory disclosure requirements regarding how CSR by corporations are impacting its different stakeholders and the community at large. The economic rationale for mandatory CSR disclosure vis-à-vis voluntary disclosure is not a priori obvious. If CSR at the firm level is driven by strategic considerations or to serve the interest of stakeholders, then one can argue that it is in the self-interest of a firm to voluntarily disclose its CSR activities. In other words, if it pays to engage in CSR, it pays to disclose. In fact, corporate responsibility reporting is considered to have become the “de facto” law for business (KPMG, 2011) essentially because corporations have increasingly realized that CSR reporting positively impacts financial value. Not reporting on the other hand is likely to adversely affect competitiveness, cost and new business opportunities. Under voluntary reporting, if all firms engaging in CSR report in equilibrium, making CSR reporting mandatory will

add to regulatory burden without adding any additional information (Lin, 2010). Further, mandatory CSR reporting could have a perverse effect on corporate accountability if it leads to useless and biased information (Hess and Dunfee, 2007). From a public policy perspective, the need for mandatory reporting arises in all probability when corporations do not view CSR as a paying proposition where social performance does not translate into financial performance at least in the short run, yet CSR is perceived to be eneficial at the societal level. If CSR is socially valued, mandatory reporting is more likely to evoke a positive CSR response whereas in case of voluntary reporting, CSR could be theoretically zero in the limit. Further, mandatory reporting could reduce information asymmetries especially in emerging markets with imperfect capital markets and is “critical” for engaging with takeholders and in ensuring corporate accountability (Hung et al., 2013). Finally, in countries with weak institutions and enforcement, mandatory CSR reporting can prevent several social bads that are not internalized by existing laws and regulations. That mandatory CSR disclosure has many takers despite its critics is evident from the fact that since the early 2000s, governments and stock exchanges through laws and regulations have progressively mandated CSR disclosures by corporations without impairing in any way the voluntary nature of CSR activities . The transition from a voluntary to a mandatory regime with respect to CSR reporting is most evident in the Indian scenario. Disclosure of CSR activities in the country have moved from being purely voluntary prior to 2012, aided by reporting frameworks suggested by the Government through the issuance of the Voluntary Guidelines of 2009 and 2011, to being mandated through since 2012 by the Securities and Exchange Board requiring top 100 companies to file Business Responsibility Reports, to

being mandated for a much larger set of Listed and non-listed companies under Section 135 of the Companies Act, 2013.

The Challenges

While acknowledging the potential benefits that Section 135 can usher in strengthening the relationship between business and society in India, there are some issues and challenges that will come up during implementation of the new CSR rules which will have to be addressed through the setting up of appropriate mechanisms. First, one should be concerned about whether too much funds will be generated under the new CSR Rules leading to challenges for companies to identify appropriate projects on a sustained basis. It is important to realise that companies need to pump in 2 per cent of their net profits every year. This in turn could put a strain on the company's management to search for, select and implement additional projects, monitor its ongoing CSR activities, all of which will cumulatively build up over time both in terms of scale and scope. A quick analysis of all the BSE listed companies can help one to get a perspective of the problem.

According to the analysis, as already presented in Table 7, had the present CSR criterion been applied to listed companies in 2012, an estimated amount of Rs. 8343.9 crore would have been spent on CSR activities by these companies based on their net profit figures for FY 2012. Moving the figure to FY 2015 and taking into account that the CSR Rules apply to unlisted companies too, the amount could be well around Rs. 10,000 crore per year. Other estimates appearing in the press put the total annual CSR spending to around USD 3 billion. While, as argued above, these estimates are relatively small in relation with the total government spending on social programs, the estimates are not trivial at the company level. As shown in Table 8, our analysis reveals that the CSR spending by the median firm managing a turnover of Rs. 33 crore, is about Rs. 55 lakhs per year, and CSR projects worth this value would have to be

identified annually and followed through. For large companies the issue of identifying appropriate projects on a sustained basis could be even more challenging. Companies like Reliance and ONGC, reported in Table 8, would have to spend upwards of approximately Rs. 400 crore every year towards CSR activities. This amount is likely to increase every year as the net profit of these companies increase. Spending of such large amounts may require large companies to have dedicated centres that identify, implement, and monitor large scale projects or a large number of smaller projects. This would entail additional costs for a company that need to be factored in evaluating the benefits from CSR. The Rules foresee this to some extent and allows companies to carry out their CSR activities through registered trusts set up by the companies or outside trusts with good track records, but the activities of these trusts would in turn become challenging and will possibly need monitoring. In this context, it is important for the government to guard against the possibility of promoters routing monies through CSR activities into trusts and organisations in which they have interest. Government will need to develop an effective way of monitoring such transactions and make legislative provisions as well.

Second, is the issue relating to the treatment of CSR kind of expenditure that companies may already be incurring. Would reclassifying them as CSR expenses meet the requirements of law?

For example, can companies that are operating educational institutions or running major hospital facilities for their employees beyond what the law requires, claim the excess facilities as CSR expenditure under Section 135? Will this be allowed if such facilities are also open to nonemployees as well? Some questions have already been raised as to whether certain types of expenditure which companies have been incurring will qualify as items towards meeting the specified CSR target. In response to this, the Ministry of

Corporate Affairs issued a circular dated June 18, 2014 (MCA, 2014b) specifying that “the activities undertaken in pursuance of the CSR policy must be relatable to Schedule VII of the Act and the activities mentioned in the Schedule VII must be interpreted liberally capturing the essence of the subjects enumerated therein.” As stated earlier, the circular also lists certain specific types of expenditures that will count as CSR expenditure for meeting the provisions of Section 135 and those that will not. More such explanations and clarifications are likely to be made over time. Third, is the problem of coordination of CSR projects across companies in a particular region to prevent the duplication of and overinvestment in similar types of CSR projects. This is particularly in view of the fact that the Rules recommend that companies give preference to local areas in their CSR spending. An analysis of the distribution of CSR activities by large listed companies for the year 2011 show that typically companies engage in not more than three types of activity and in activities largely related to education, health and sanitation, women empowerment, and provision of material and financial aid which together account for 70 per cent of all CSR spending. In instances where large investments are necessary such as in hospitals and schools, smaller companies may be better off by pooling their CSR resources as it may help them to collectively undertake such projects. To achieve better coordination across companies in a particular region, formal partnerships or consortiums can be set up. Finally, an unintended consequence of mandated annual CSR expenditure could be the cumulative build-up of social welfare programs in and around geographical regions where larger and better performing corporates are concentrated. High levels of CSR spending by such companies can benefit certain regions/states disproportionately more while other localities with sparse corporate sector activity can fall further behind. To avoid

such unintended consequences at the macro level would necessitate the setting up of a coordinating agency at a Central or at least at the State level to see that CSR spending of companies are harmonized for the betterment of all.

To conclude, the new CSR provisions in India are not a case of government abrogating its responsibility to the private sector. The estimated annual amount of CSR spending by corporates judged in context of total social sector spending by the government is just around two per cent of what listed companies would have spent after applying the criteria under Section 135. Rather, the new CSR provisions should be looked at as an effort by the government to make the corporate sector play a complementary role in meeting the broader society goal of encompassing development. Under the new CSR rules, the flexibility given to the companies in choosing and monitoring the projects is likely to promote efficiency and effectiveness in project implementation without the CSR Rules coming into serious conflicts with the primary objective of shareholder value maximization of companies. Social and economic incentives seem to have been well balanced in the new CSR rules and one can hope that the corporate sector will willingly lend a helping hand to the government in contributing to the inclusive growth of the nation.

References

- Amaeshi, K. M., B.C. Adi, C. Ogbechie and O. Olufemi, 2006. "Corporate Social Responsibility in Nigeria: Western Mimicry or Indigenous Influences?" *Journal of Corporate Citizenship*, 24 winter, pp. 83-99.
- Basu, K. and G. Palazzo, 2008. "Corporate Social Responsibility: A Process Model of Sensemaking," *Academy of Management Review* 33(1), pp. 122-136.
- Besley, Timothy and Maitresh Ghatak, 2007. "Retailing Public Goods: The Economics of Corporate Social Responsibility," *Journal of Public Economics*, Vol. 91, No. 9, p. 1645-1663.

Blowfield, Michael, and Jędrzej George Frynas: 2005. 'Editorial: Setting New Agendas - Critical Perspectives on Corporate Social Responsibility in the Developing World,'

International Affairs 81(3), 499-513.

Bowen, HR 1953, Social Responsibilities of the Businessman, New York: Harper & Row. Carroll, AB 1979. "A three-dimensional conceptual model of corporate social performance,

Academy of Management Review, vol. 4, pp. 497-505.

Connelly, J. T and P. Limpaphayom, 2004. "Environmental Reporting and Firm Performance:

Evidence from Thailand," Journal of Corporate Citizenship, 13, Spring: 137-49.

Davies, R., 2002. "Corporate Citizenship and Socially Responsible Investment in Asia,"

unpublished paper delivered at the Conference of the Association for Sustainable and

Responsible Investment in Asia, Hong King, 10 June 2002.

www.corporatecitizenshipasia.net/csr/csrwebassist.nsf/content/fl1d2b3ar4.html

Elhauge, Einer, 2005. "Sacrificing Corporate Profits in the Public Interest," New York University Law Review, Volume 80, Number 3, June, pp. 735-868.

Friedman, Milton (1970), "The Social Responsibility of Business is to Increase its Profits," The New York Times Magazine, September 13, The New York Times Company. Frynas, J. G., 2005. "The false developmental promise of

Corporate Social Responsibility:

evidence from multinational oil companies," International Affairs, Volume 81,

Issue 3, , May, pages 581-598. Gangopadhyay, Shubhashis, 2012, Profiting from

CSR: Mandatory spending on corporate social

responsibility does not fit in a market-driven society, Business Standard, January 28.

25

http://www.business-standard.com/article/opinion/shubhashis-gangopadhyay-profiting-from-csr-112012800080_1.html

Gangopadhyay, Shubhashis, 2014, CSR, out of the box: Mandated corporate social responsibility

hurts shareholders, not firms, Business Standard, March 21.

http://www.business-standard.com/article/opinion/shubhashis-gangopadhyay-csr-out-of-the-box-114032101233_1.html

Goenka, Harsh, 2012 Why it is a good idea to mandate corporate social responsibility, Economic

Times, September 1. http://articles.economictimes.indiatimes.com/2012-09-01/news/33535456_1_net-profit-companies-bill-crore-last-year

Heal, G., 2008, When Principles Pay: Corporate Social Responsibility and the Bottom Line, New York: Columbia University Press.

Hess, D. & Dunfee, T.W. 2007. "The Kasky-Nike Threat to Corporate Social Reporting:

Implementing a Standard of Optimal Truthful Disclosure as a Solution." Business Ethics Quarterly, vol. 17(1): 5-32.

Ho, Virginia Harper, 2013. "Beyond Regulation: A Comparative Look at State-Centric

Corporate Social Responsibility and the Law in China," Vanderbilt Journal of Transnational

Law, vol. 46: pp. 377-440.

<http://www.vanderbilt.edu/jotl/2013/04/beyond-regulation-a-comparative-look-at-state-centric-corporate-social-responsibility-and-the-law-in-china/>

Hung, Mingyi, Jing Shi and Yongxiang Wang, 2013, The Effect of Mandatory CSR Disclosure

on Information Asymmetry: Evidence from a Quasi-natural Experiment in China, Working

Paper, June. <file:///C:/Users/js390/Downloads/3.pdf>.

Karnani, Aneel, 2013, Mandatory CSR in India: A Bad Proposal, Stanford Social Innovation Review, 16, May, 20.

http://www.ssireview.org/blog/entry/mandatory_csr_in_india_a_bad_proposal

1

Girish Karnad's *Naga Mandala* ; A Study of Feminism

Dr. Monika Ratnaparkhi
Research Scholar
Department of English
Gwalior M.P

Girish Karnad is the most important dramatist of contemporary Indian drama. In his famous play *Naga-Mandala* (1988), he makes use of two oral tales from Karnataka in order to recreate a contemporary consciousness. The play reflects Karnad's love for Indian folk tradition. Commenting on the significance of folk theatre Karnad says, "The energy of folk theatre comes from the fact that although it seems to uphold traditional values, it also has the means of questioning these values...."¹

Karnad's play *Naga-Mandala* ; is a powerful portrait of the agony of man-woman relationship in the male patriarchal society. As Karnad informs his readers *Naga-Mandala* is based on two oral tales which he heard years ago from Prof. A. K. Ramanujan. The theme of the play moves round central figure Rani, who has become victim of this patriarchal society **M. Sarat Babu** views,

In his recent play, *Nag-Mandala* he
not only exposes male chauvinism, the
oppression of women, the great Injustice
done to them by men and patriarchal culture
but also stealthily deflates the
concept of chastity.²

Rani in the play is characterized as a young, beautiful girl, who is the only child of her parents. When she attains womanhood, her husband Appana

fetches home Rani. She is allowed only to cook his lunch, except it, she is not allowed even to talk to others. Appanna keeps her lock inside the house, and goes to his concubine. He treats Rani as a non-human thing. “Rani looks at him nonplussed. He pays no attention to her. Goes out, shuts the door, locks it from outside, and goes away. She runs to the door, pushes it, finds it locked peers out of the barred window. He is gone.”³ Appanna stands for an 'everyman'-a husband, in the patriarchal Indian society, who exercises absolute supremacy over woman. **A Jagmohanchari** in his article remarks:

This vulgar display of power instead of
love and treating woman as a disposable
object accurse to him owing to the post-colonialist
ethos and the mystique of tradition.⁴

In Indian society marriage is described not merely as the first experience of sex and love. Here both man and woman are bound to play different roles in the socialization process. Karnad represents irony of Rani and paradoxical meaning of her name. Although her name is Rani, the Queen, only daughter of her parents, she is doomed to suffer an unhappy married life. Karnad portrays dual aspects of woman's personality in patriarchal Indian society. On the one hand in Indian tradition woman is being worshiped as “Devi” or “Mata”; on the other she is ill-treated, in this so called patriarchal Indian society. **A Jagmohanchari Comments:**

The concept of ritualistic purity
of the metaphysical tradition has
structured the hierarchical vertical
line up of gods at the top, men
below and women still underneath.⁵

Rani is deprived of all the rights that a wife should have. Mistress of this household is not more than a cook or a maid. Moreover, there is nobody before whom her suppressed feelings and emotions could find an out way. She was

yarning for the love and care of her parents. She finds herself unable to adjust at the new place where she feels alone. When Kurudava calls her 'dear girl', Rani begins to sob'. "Apart from him you are the first person, I have seen since coming here. I'm bored to death there is no one to talk to!"⁶ Here through the character of Rani, Karnad attempts to study psychology of women in India. He also tries to draw reader's attention towards the treatment of women in contemporary society. Karnad in this play particularly concerned with the psychological problems faced by the men and women in Indian society. Their conflicts dilemmas and struggle for social adjustment is well conveyed in the play. Rani symbolizes the very portrait of Indian woman who has no existence of her own. Karnad dramatizes the agony of woman in the Hindu society. In which she is not left with any other choice. She only dreams of better world and finds herself disillusioned when she comes to the real world. Patriarchal order of Indian society, as it has been depicted in myths and folktales, does not offer woman freedom of expression. She is oppressed element of society. Her silent submission in every condition and adjustment with her social roles is a part of her duty accepted by traditional society.

Realizing the poisonous effect of magical roots, Rani pours curry into an ant hill. Thus aphrodisiac works on King Cobra who lives in the anthill, and consumes the paste. Karnad takes us into the world of ancient Indian myth of Naga - the symbol of energy, force and spirituality. In the context of Indian mythology, Naga is regarded as 'Devta' and is worshiped in different parts of India. Karnad in all his plays uses supernatural element. Naga in the form of Appanna showers affection and love on Rani. This sudden change in her husband's behavior astonishes her. The myth associated with *Naga-Mandala* reminds us 'Ahalya's' myth in Valmiki's *Ramayana*. She was a pious woman and wife of a saint Gautama. Indra in the guises of her husband comes there. Their sexual intercourse reveals in her committed adultery. Her husband

Gautama by his curse makes her stone. According to him, if she was a faithful wife she could discover the real identity of Indra. In *Naga-Mandala* we find Rani is a devoted wife; yet she fails to recognize her husband's real identity. She is struggling hard between two personalities of the same person. Appanna in human body behaves like an animal; on the other Naga a real snake in the form of Appanna behaves like a human being. Rani does not suspects Naga's identity since he educates her about love and sex. Rani had forgotten all the bad days in Naga's company. Even if she was locked in, her heart had broken all the boundations. Love was showering, rejuvenating and illuminating her inner dried and darken world.

Rani gives the news of her pregnancy to Naga. Naga knows this could reveal his identity. He tells Rani to hide the news of her pregnancy from all. Motherhood is bliss for woman but Rani finds herself confused and helpless at this stage. The psychological development of Rani from an ignorant girl to a wife then a mother brings out her existential identity in society.

As Rani's pregnancy revealed to Appanna he reacts violently over her. Rani swears to Appanna that she has not done anything wrong. Appanna is not convinced and picks up a huge stone to throw on her. Irony of the situation is that Infidelity of Rani does not make him concern of his own infidelity. In *Naga-Mandala* Karnad raises some important contemporary issues such as why man is licenced adultery, even the institution of marriage cannot put any charge on him. Gender biased division disturbs, brings turmoil between man-woman relationship and thus upsets the social life of human beings.

Naga saves Rani's life and advices her to undertake snake ordeal, when she will be asked to prove her chastity. Naga assures her that she must tell the truth and it will not bite her. Rani tells the truth and as Naga promised her instead of biting, Cobra spreads its hood over her. Cobra moves over her shoulder like a garland. It was a miracle for the villagers. One of Elder says

Appanna:

Your wife is not an ordinary
woman. She is goddess incarnate.
..you were the chosen instrument
for revealing her divinity.⁷

Appanna falls in Rani's feet and says:

Forgive me I am sinner
I was blind.....⁸

Story narrates that Rani gets everything. Appanna becomes a devoted husband. Appanna's concubine regrets for her sinful life, and becomes Rani's servant maid. Rani becomes a proud mother of a beautiful child. She lives happily with her family. Karnad has an awesome command over his dramatic material. In *Naga-Mandala* Karnad ponders over the theme of feminism in particular with multiple streams i.e Freudian, psycho-symbolic, archetypal and so on. The play elevates in the sense that in it destructive forces transform into constructive forces. The story displays subtle psychological problems that women generally face in their adjustment with different roles in the society. Karnad takes the responsibility of teaching Indian culture through folk narrations. Here through female narratives he presents a world of human affairs. Reader should keep in his account the cultural context of Indian woman and her relevance in contemporary Indian society.

References:

1. Karnad, Girish : Introduction to Three plays: *The Plays of Girish Karnad*, edited by Jaydipsinh Dodiya, P.34
2. Babu, M. Sarat : The concept of chastity and Nag Mandala, *The Plays of Girish Karnad*, edited by Jaydipsinh Dodiya, Prestige Books, New Delhi, 1999, p.237.
3. Karnad, Girish : *Naga Mandala*, oxford University Press, New Delhi, 1990, p.6

4. Chari, A. Jagmohan : Hayvadana and Nag-'Mandala'. A study in postcolonial Dialectics, *The plays of Girish Karnad : critical Perspectives*, ed. Jaydipsinh Dodiya, Prestige Books, New Delhi, 1999, p.231
5. Ibid, p.235
6. Karnad, Girish, *Naga-Mandala*, Oxford University Press, 1990, p.11
7. Ibid, p.40
8. Ibid, p.40

Girish Karnad's *The Fire and the Rain*: A Comparative Study of Women Characters

Dr. Monika Ratnaparkhi
Research Scholar
Department of English
Gwalior M.P

Girish Karnad has the genius and the power to transform any situation, into grand aesthetic experience, whether the plays are based on Indian mythology and folk tales e.g. *The Fire and the Rain*, *Heyavadana*, *Naga-Mandala* etc. or on Indian history, e.g., *Tughlaq*. In his play *The Fire and the Rain* (1998), Karnad has used the myth of 'Yavakri' from Van Parva *Mahabhart*. Karnad's *The Fire and The Rain* is most Symbolic of Karnad's plays. In this play contrast is present in various aspects of the myth. From the very title of the play the basic dramatic element of contrast is illustrated. As such in every aspect of play Karnad has shown the basic contradiction in every aspect of life and therefore there is contrast illustrated in every aspect of the play, i.e, Theme, structure, characters, dramatic devices of presentation and dramatic language etc.

There are only two women characters in the play Vishakha and Nittilai illustrate two sides of femininity, although there is no such scene showing both the characters face to face in the play. Both of them belongs to different levels of society with the help of these two characters Karnad binds the varied groups of society together On the one hand, he is showing so many parallels and wonderful comparison between Brahmanical and non- Brahmanical orders of society; on the other hand he has depicted the position and role of a woman in life.

Mala Renganathan Writes:

The Two Women Characters
Vishakha and Nittilai become victims
of the male paradigmatic struggles.
both get caught between the real
and the romantic and they are
reduced to nothingness, one to
Insanity and the other to death.¹

Nittilai is a girl of hunter clan (dalit) about fourteen years. She is a child of Nature. All her knowledge is derived from the company of Nature. As such, she illustrates the innocence and purity of a virgin. We are reminded of Wordsworth's Lucy as Nature herself has made a lady of her own. The inner beauty of Nittilai's soul outshines her outer beauty. She represents non Brahmanical culture.

On the other hand, Vishakha represents Brahmanical culture. She is wife of Chief Priest Parvasu and daughter-in-law of sage Raibhya. In a way she belongs to high class of society. She must have been an attractive person once but now looks 'angry and haggard'.

Both Vishakha and Nittilai are married against their wishes and both are suffering in their life. The other similarity is that Parvasu being over powered by his guilt conscious regards Vishakha as his guru. Nittilai too becomes a preceptor to Arvasu. As on her advice he opts for a world, which lies far from trivialities and egoism. Nittilai symbolizes some inborn personality traits of true love and humanitarianism. She says to Arvasu: "Arvasu when I say we should go together I don't mean, we have to live together like lovers or like husband and wife.....Let's be together like brother and sister. You marry any girl you like only, please Arvasu spare a corner for me."² She is a rational being, who is not swept off by any rash passion of love and hatred.

Vishakha loved Yavakri but as he left her and went away for penance, she had to marry Parvasu. According to her, both Parvasu and Yavkri have

the same attitude towards woman as a means of their sexual gratification. "My husband and you' He left no pore in my body alone. And you you think a woman is only a pair of half formed breasts."³ Thus Vishakha stands for a woman who suffers from the neglect of her mind and soul. She also illustrate inner conflict of such woman.

Nittilai as a married woman possesses some apparent contradictions with those of Vishakha a married woman from Brahmin community. Nittilai does not transgress the limits of decency and duty as a wife. But unfortunately she is killed by her husband and brother, who are unable to understand her nobility and purity. Her relationship with Aravasu has remained pure and platonic. There is no mention of any sexual meeting. Vishakha's love takes the form of sexual desires, and she slips to the voluptuous urge of Yavakri. Nittilai controls her passions and she reminds Aravasu of an impossibility of their physical union. She also saves the life of Aravasu from conspiracy of his brother Paravasu. We do feel pity for the unfortunate woman Vishakha. Her only fault is that she broke the rules for a devoted wife and committed adultery. This becomes cause of Raibhya's terrible anger and creation of Brahma-Rakshsa. Her desires for Yavakri takes his life, rages Paravasu and takes the life of Raibya.

The events connected with Vishakha illustrate the lower side and primitive instinct of human nature. On the other hand Nittilai rises above the basic human instincts of hate revenge etc. Moreover, she also enables Aravasu to rise above the instinct of revenge. Thus from the above mentioned points it is evident that Vishakha symbolises the burning and destructive aspects of 'fire', if it is used for some unhonly purpose. The crystal clear nature of Nittilai symbolises the life giving and cooling aspects of the 'rain'. Above all Vishakha's character reinforces revenge and violence in man; Nittilai's influence elevats a man and raises him higher.

Through his women character Girish Karnad focuses and also criticizes the age old orthodox patriarchal customs. In Indian society women are facing these problems from ancient times. These old patterns serves to project a new vision. On the one hand they satisfy audience philosophy of Indian culture; on the other playwright's vision to take serious contemporary issues with new fresh outlook and then to create contemporary consciousness in audience is also fulfilled.

References :

1. Mukherjee T. '*Girish Karnad's Plays: Performance and Critical Perspectives*', pen craft International, New Delhi, 2008, p.266-267
2. Karnad, Girish, *The Fire and the Rain*, New Delhi; OUP, 1998, p. 42
3. Ibid, p. 16

The Hungry Tide: as a presentation of diasporic concept.

Dr. Mukta Saxena
Guest Faculty Govt.-S.G.S.P.G. College
Ganj Basoda Distt. Vidisha

The entire action of novel takes place in India's Sunderbans 'between the sea and the plain of Bengal, on the eastern most coast of India, lies an immense archipelago of islands. Here there are no borders to divide fresh water from salt. For hundreds of years, only the truly dispossessed braved the man-eating tigers and the crocodiles who rule there, to eke a precarious existence from the mud, however the picture changed towards the start of the last century, when a visionary Scotts man bought a few of these fragmented islands from the British to form a Utopian settlement, where people irrespective of race, caste, culture could live together.

Considering the sheer scope that, this theme allows in terms of enumerating the legends, folk-lore, history and geological wonders. The story follows Indian-born American marine biologist, Piyali Roy, who is in search of rare river dolphins. During this adventure, she encounters two different men-Kanai-a smug urban Delhi entrepreneurs and Fokir, an illiterate but a proud local man of Lusibari. While Piya is in Sunderbans for her project, Kanai is at islands of the behest of his aunt Nirmala. Their paths cross and it is through their interwoven lives that Ghosh looks at the various elements of his theme.

There is the history of the Sunderbans region, the precarious ecology of the endangered river dolphins and the conservation projects surrounding the great Bengal tigers still living on these waterlogged islands. Kanai's uncle's notebook reveals the shocking story of Morichjhapi incident; tens of thousands of displaced

refugees try and settle on one of the uninhabited islands, but are violently evicted by the government in the name of conservation. There is underline message that nature is supreme and man is nothing in the face of nature's fury, which turns out prophetic in the occurrence of Tsunami.

In the end it's a great story set in a breath taking background of Sunderbans, combining history, myth and legends of the place with wonderful imagination and narrative skill. There are many novels in Indian fiction that deals with the theme of eco criticism though nature has been used as a backdrop against which the story develops. It is because a serious concern with ecology seems to be lacking in the works of earlier writers. Of late, writers prefer to create awareness of the consequences of human actions which damages the planets basic life support system. Amitav Ghosh's *The Hungry Tide* deals with the study of nature writing. The book is about one of the most dynamic ecological systems of the world. The novel clearly brings out the rage of nature and weakness at humans at the mercy of nature.

It takes us to Sunderbans and the hundreds of islands found and lost in the short span of time. It is about the hardships of the settlers trying to give a meaning to their lives against the all odds offered by the place. We see nature in both its full beauty and its ugliness; he presents before us the wrath of the nature and the fragility of humans. This blend of the political and the social truth with its concern for nature has brought the novel of Indian English literature under the discussion of the seminars based on eco criticism. The main reason of this environment degradation is the increasing population and increasing needs of this ever rising population.

The Hungry Tide unfolds through the eyes of two upwardly mobile, educated individuals who undertake a journey to the tide country. Kanai Dutt, the Bengali born Delhi-settled businessman arrives in Lusibari to visit his aunt Nilima and claim the package left for him by his uncle Nirmal. The package, he discovers is an account of his uncle's last days. This package recovers the history of the Bangladesh War and of the Morichjhapi massacre of 1979. The refugees plight is in the first place the product

of partition and therefore ultimately of British colonialism and its divide and rule strategies. The refugee community is forcibly resettled by the Indian government in M.P. state, hundreds of kilometers far from Bengal, but in 1978 makes the collective decision to return “home”. This package also revolves around Kusum and her son Fokir, who are portrayed as the victims of eviction from the island of Morichjhapi. Ghosh weaves together two temporal narratives: one unfolding through Nirmal's journals recounting the Morichjhapi episode that happened 28 years earlier and second through Pia's journey, to study the endangered Gangetic River dolphins. The combination of these two narratives highlights the problems and issues of wilderness protection and its related social costs in areas populated by the socially and economically poor both in the past and the present.

Water has special importance in Hindu mythology. Water is primarily connected with fertility, immortality, place, creation and the famine. Running water is deemed sacred in Indian mythology. According to Rig Veda, the river is a continuation of the divine waters that flow from heaven to earth. And the river nears the sea that it untangles into a thousand strands forming a vast archipelago of the Sunderbans. The water that shelters tigers, crocodiles, snakes and nurtures mangrove trees also protects the area from large scale deforestation and even frequent natural catastrophe like storms and typhoons.

At present the bio network of the Sunderbans witnesses the shift from a threatening eco system to a threatened eco system. The tides reach more than two hundred miles in land, and everyday thousands of acres of mangrove forest disappears only to re-emerge hours later. For hundreds of years, the truly disposed and the hopeless dreamers of the world have braved the man eaters and the crocodiles who rule there. This is one of the only habitats where Bengal tigers continue to live in the wild. They are zealously protected by various international environmental groups. But in the name of tiger preservation, human lives are threatened: the tigers routinely attack and often kill islanders. Though there are the obvious modern devises

that might be used to protect the islanders, the state allows the deaths to continue. In the Sunderbans, Ghosh argues, human lives are valued somewhat lower than those of tigers.

The settlers in this land were refugees from Bangladesh like Kusum, Fokir and Moyna and people of rare interest who wish to serve humanity like Nirmal, Nilima and Pia the cetologist. For settlers here, life is extremely insecure. Attacks by deadly tigers are common. Turmoil and exile are constant threats. Without warning, at any time, tidal floods rise and surge over the land, leaving ruin in their wake. Islands has suffered much hardships, poverty, famine, catastrophes and failed dreams. Death is stalk reality. In spite of these dangers people like Kusum feel at home in these islands and even while on exile in Bihar. She had dreamed of returning to this place, of seeing once more these rich fields of mud, these trembling tides.

Fokir in the novel is a forest guide who accompanies hunters and woodcutters to their expedition to the forest. The hunters and woodcutters are so superstitious that they will not venture into the forest unaccompanied by a Fakir. 'Fakir' is the anglicized form of 'Fokir', the forest guide. Pia doesn't know Bengali, Fokir doesn't know English-her ignorance of her own language heritage induces her to take Kanai on board as interpreter. Ghosh's novel takes as its task the exploration of a vast field of human communication testing both its possibilities and its limits as the characters seek to cross multiple barriers-the barriers of language, religion and social class, between human beings and nature, between traditional and cosmopolitan India, between urban and rural, between India and wider world.

Fokir guides Pia and Kanai through the water ways. He loses his life in the process of steering the outsiders safely through the forest. He fits the standard of the unfortunate and illiterate native, exposed to man-eating tigers, crocodiles and snakes inhabiting the tide country. And also to bribe taking officials of the state who are constant threat to his survival. Ghosh empowers him in his familiarity with the tide country, and its creatures and the inheritance of centuries old oral traditions he

inherits. In spite the technological advancements and educational background the outsiders depend on a Fokir to navigate the waters. Ghosh portrays Fokir as the personification of an ecological pioneer.

There is another reason that is concerned with expanding tourism industry in India. Sahara India parivar's mega tourism project purposes to take over large area of the Sunderbans to construct floatels, restaurants, shops, business centers, cinema's and theatres which would upset the delicate bionetwork and further terrorize the already rare biodiversity of the region. Ghosh passionately go up against this gigantic hotel project in the name of conservation.

The publication of *The Hungry Tide* plays an essential role in garnering worldwide support against the Sahara project, which led the central ministry of environment and forests to stop the project. The novel's publication in this sense political to the extent that the fictional narrative gave Ghosh the liberty to talk about the violence meted out to the natives, the flora and fauna of the Sunderbans. Ghosh's *The Hungry Tide* reveals how ecological concerns and conservation efforts served as a mere disguises to conceal the chase of political ends.

REFERENCES.

Dhawan,R.K. (ed)'The Novels Of Amitav Ghosh, New Delhi: Prestige Books: 1999.

Chaudhari,Supriya."A Sense of place ."Rev. of *The Hungry Tide*.Biblio:A Review of Books9.7 and (Jul-Aug 2004): 16-17.

Wikipedia,the free encyclopedia.

Gurnah,Abdulrazak."Tide Country People." Rev. of *The Hungry Tide*.The Times Literary Supplement 5285(Jul 16 2004):21.

[Http://www.amitavghosh.com.awards.html](http://www.amitavghosh.com.awards.html)

RAIN WATER HARVESTING- Solution to Crises

Ankur Verma

*Research Scholar, University Institute
of Technology, R.G.P.V.,
Bhopal (M.P.) India*

Abstract

Demand of water is growing in most cities as every urban citizen requires almost double the amount of water than a rural citizen requires. Urban population is has grown almost five times in six decades from 1951 (62.44 million) to 2011 (1.247 billion). At the rate with which India's population is increasing, India will surely overtake china and will become most populated country in the world by 2030. This will increase the rate of consumption of resources including water, resulting in high pressure on fresh water resources. Ancient method of damming river and transporting water to urban areas has its own issues of eternal troubles of social and political. In the past, most cities were self sufficient in meeting their water demands but rapid urbanization lead to gradually diminishing the fresh water resources. Groundwater as one of most utilised resources of fresh water is being extracted by governments and private parties hugely. In order to conserve and meet our daily demands of water requirement, we need to think for alternative cost effective and relatively easier technological methods of conserving water. Rain water harvesting is one of the best methods fulfilling those requirements.

Keywords: freshwater, groundwater, cost-effective

Introduction

In the most urban areas, population is increasing rapidly and the issue of supplying adequate water to meet societal needs and to ensure equity in access to water is one of the most urgent and significant challenges faced by decision-maker. Majority of the population in the cities today are ground water

dependent. In spite of the municipal water supply, it is not surprising to find people using private tube wells to supplement their daily water needs. As a result, the groundwater table is falling at an alarming rate. Extraction of groundwater is being done unplanned and uncontrolled.

In India, population is increasing day by day and also the requirement of water and as we have limited sources for supply, this situation leads to water crises. The level of extraction from rivers that most of India's river basins have degraded and the rivers are polluted. Large dams are the major source of water storage, and canals are the major distributory route. The former have caused large-scale community displacement and ecological havoc. The latter, large-scale degradation of land via soil salinisation groundwater resources have been heavily over-used. The water availability, both in terms of quality and quantity, has declined to such an extent that many parts of India, rural and urban, today face a drought-like situation.

Conflicts

Every year summer comes with water crises and conflicts. The wells, ponds and taps dry up, women begin to walk the village streets and city roads with pots and pitchers looking for a water-point. As municipality water-tankers and government-run water trains begin to traverse the length and breadth of the country, people gather on street corners, village squares and in front of municipality offices. They growl, murmur, throw stones, and fight. Protests, demonstrations, road-blockades, riots. Villages against towns. City-dwellers against farmers.. Towns against cities. Citizens against the government. People against people. Increasingly, these conflicts are taking on the general shape of a b i t t e r w a r f o r w a t e r .

Is there a way out? What should we do? Hang down our heads in shame?

Or should we do something about it?

What is Rainwater harvesting?

It is a technology used for collecting and storing rainwater for human use from

rooftops, land surfaces or rock catchments using simple techniques such as jars and pots as well as engineered techniques. It is also a good option in areas where good quality fresh surface water or groundwater is lacking. The application of appropriate rainwater harvesting technology is important for the utilisation of rainwater as a water resource.

Components of Rainwater Harvesting

A rainwater harvesting system comprises of following components for transportation filtration storing of rainwater through pipes, drains and tanks.

1. **A collection or catchment system**

It is generally a simple structure such as roofs, gutters that directs rainwater into storage tanks. Roofs are considered as most suited catchment areas as they easily collect large volume of rainwater without losses. The amount and quality of rainwater collected from catchment area depends upon intensity of rain, surface area of catchment/roof, type of floor of catchment/roof and surrounding environment.

Roofing materials well suited for rain water harvesting are slates, clay tiles and concrete tiles. Galvanised corrugated iron and thatched roofs made from palm leaves are also suitable. If paint is used, it must be non toxic ie no lead based paints.

2. **A conveyance system**

It is required to transfer the rainwater from roof catchment area to the storage system by connecting roof drains and piping from the roof top to one or more down spouts that transport the rainwater through filter system to storage tank. Materials suitable for pipe work include polyethylene (PE), Polypropylene (PP) or stainless Steel. Before water is stored in storage tank, it should be filtered to remove particles and debris. The choice of filtering system depends upon construction conditions. Low maintenance filters with good filter output and high water flow should be preferred.

3. Filter unit

It is the container or chamber filled with filter media such as coarse sand, coconut fibre, pebbles and gravels to remove the debris and dirt from water that enters the tank.

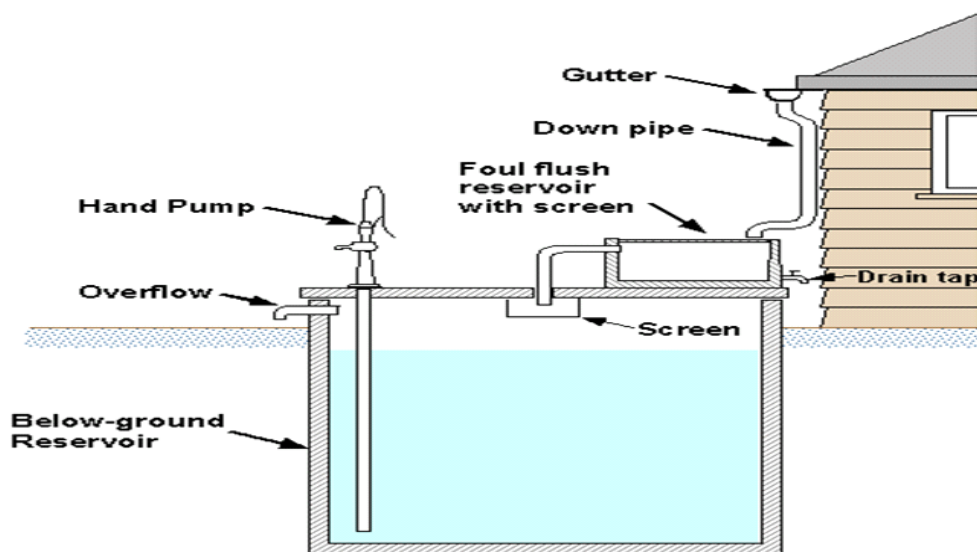


Figure: The components of Rainwater Harvesting System

Commonly used filters are of two types. One is ferro-cement filter unit. Which is comparatively heavy and other is made up of either aluminium or plastic bucket.

The later is readily available in market and has the advantage of ease in removing, cleaning and replacing. Another simple way of filtering the debris and dust particles that came from the roof along with rainwater is to use a fine cloth as filter media. The cloth, in 2 or 3 layers, can be tied to the top of a bucket or vessel with perforations at the bottom.

4. Storage tank

It is needed to store harvested rainwater. Depending upon the space available these tanks can be constructed above grade, partly underground or below grade. They may be constructed as part of building or may be built as separate unit located away from the building. Various types can be used including cylindrical ferrocement tanks, mortar jars and single-battery tanks. Polyethylene tanks are most common and easiest to clean and connect to the piping system. Storage tanks must be opaque to inhibit algal growth and should be located near to the supply and reduce conveying cost.

Water flow in the storage tanks or cistern is also decisive for the quality of the cistern water. Calm rainwater inlet will prevent the stirring up of the sediment upon leaving the cistern, the store water is extracted from the cleanest part of the tank, just below the surface of the water, using a floating extraction filter. A sloping overflow trap is necessary to drain away any floating matter and to protect from sewer gases.

5. **Delivery system**

It is used for delivery of rainwater and it includes a small pump, a pressure tank and a tap, if delivery by means of simple gravity on site is not feasible. Disinfection of the harvested rainwater, which includes filtration and or ozone or UV disinfection, is necessary if rainwater is to be used as potable water source.

“First Flush” systems which filter out the first rain and diverts it away from the storage tank should be also installed. This will remove contaminants in rainwater which are highest in the first rain shower.

Advantages of Rainwater Harvesting

1. To meet the ever increasing demand for water.
2. To reduce the runoff which chokes storm drains and to avoid flooding of roads.
3. To reduce groundwater pollution and to improve the quality of groundwater through dilution when recharged to groundwater.

4. Provides self-sufficiency to your water supply and to supplement domestic water requirement during summer and drought conditions.
5. Reduces soil erosion & flooding in urban areas.
6. The rooftop rain water harvesting is less expensive & easy to construct, operate and maintain.
7. In desert, RWH only relief.
8. In saline or coastal areas & Islands, rain water provides good quality water

Uses of rain water in campus

1. For plantation and gardening purpose.
2. For toilet uses.
3. For washing and cleaning purpose.
4. For laboratories.
5. Recharge ground water.
6. After treatment can use for drinking.

References:

www.rainwaterharvesting.org

www.aboutrainwaterharvesting.com

HARVESTING RAINWATER by Arjun Battacharya and O' Neil Rane.

RAIN WATER HARVESTING by Norma Khoury-Nolde.

Construction engineering and management by S Seetharaman.

Rainwater Harvesting Project at the Development Technology

Unit of School of Engineering, University of Warwick, UK.

DIN 1989-1. 2002. Rainwater Harvesting Systems Part 1: Planning, Installation, Operation and Maintenance. German Institute for 8. Standardisation, Berlin, 2002. Gould, J. and Nissen-Petersen, E. (1999) 9. Rainwater Catchment Systems for Domestic Supply: Design, construction and implementation. IT Publications, London.

**JOB SATISFACTION AND ITS IMPACT ON EMPLOYEE
PRODUCTIVITY WITH SPECIAL
REFERENCE OF BHEL BHOPAL**

DR. SHWETA SHUKLA

ASSOCIATE PROFESSOR

MAHARANA PRATAP COLLEGE OF MANAGEMENT

ABSTRACT

This research paper focuses on studying the impact of HRM practices on productivity of BHEL employees. The survey of 300 respondents was done it observed that job satisfaction played an important role in increasing the employee productivity It also examines the possibility that better HRM practices enhance the job satisfaction level and also in turn increases the employee productivity. Basically every satisfied employees are do their work with very devotion and with full of effort and their effort with polish their skills and their productivity and make him a expensive employee.

1-INTRODUCTION

JOB SATISFACTION:

Job satisfaction is one of the most widely studied subjects in the management field (Loi and Yang, 2009), as it is considered as one of the determinants of the quality of the working context in any organization. The starting point in exploring employees' satisfaction and motivation was Taylor's scientific study in 1911, but the real beginning of job satisfaction and motivation researches began with Mayo's Hawthorne studies (1924), which shed light on the importance of the human element as being the most valuable resource in any organization. Thousands of researches in job satisfaction have been

conducted since the Hawthorne studies and a great number of theories and models were established to explain the complex nature of the job satisfaction phenomena (Locke, 1983).

DEFINITIONS OF JOB SATISFACTION:

According to Evans (2001), there are 4 levels of understanding represented by work in job related attitudes such as job satisfaction. The first level has its basis in conventional wisdom and common sense, but is characterised by over simplistic reasoning. On this level, job satisfaction is usually equated with centrally initiated policy and conditions of service, such as pay. On the other end of the scale, the fourth level is characterized by in-depth analysis and recognition for the need of conceptual clarity and precision. On this level, individualism is recognised, and although there is still a search for commonalities and generalities, these are accurate as they are free from contextual specificity. Evans (2001), argues that this level has contributed not only to an understanding of what job satisfaction is, but also to what its determinants are, such as individual needs fulfilment, expectations fulfilment or values congruence. Therefore Evan (2001) defines job satisfaction as “a state of mind encompassing all those feelings determined by the extent to which the individual perceives her/his job-related needs to be being met” (Evans, 2001:12).

According to Robbins et al., (2003), individuals with high job satisfaction will display a positive attitude towards their job, and the individual who are dissatisfied will have a negative attitude about the job. Sempane, Rieger and Roodt (2002) states that job satisfaction is an individual's personal assessment of conditions prevalent in the job (Sempane, Rieger and Roodt, 2002). Although there are many definitions put in different ways, most of these definitions say the same thing, that job satisfaction is a crucial part of the

employees psyche and behaviours.

THE MEANING OF JOB SATISFACTION

It is important to commence this research by displaying the different definitions of job satisfaction which may help in understanding this complex human phenomenon. The term „satisfaction? is normally used to describe the status of people when their needs have been fulfilled. However, the term „job satisfaction? has been defined in numerous ways according to numerous points of view and no one can claim that there is an ideal definition that can be used by all researchers. However, it can be said that definitions of job satisfaction centralise on two main dimensions. The first dimension is focusing on the factors or conditions that give rise to the feeling of happiness or satisfaction. For example, Hoppock defined job satisfaction as *“Any combination of psychological, physiological, and environmental circumstances that cause a person to say, I am satisfied with my job.”* (1935: 47). Porter and Lawler defined it as *“the extent to which rewards actually received meet or exceed the received equitable level of rewards. The greater the failure of actual rewards to meet or exceed perceived equable reward, the more dissatisfied a person is considered to be in a given situation.”* (1968: 31). Consistent with the previous definitions, Mumford looked at the satisfaction concept as the *“degree of „fit? between organizational demands and individual needs, and that the employee?s satisfaction with his job and the employer?s satisfaction with his job and with work performance will only be high when this fit is a good one.”* (1970: 72).

In addition to the previous orientation, there is another dimension that some researchers focused on when outlining the job satisfaction concept; this dimension is related to the positive feelings or emotions that are related to one?s job. In this regard, Vecchio argued that *“job satisfaction is the emotional*

reaction to work experience.” (1995: 124). Smith *et al.* supported this orientation when they defined job satisfaction as “*the feelings a worker has about his job which are associated with perceived difference between what is expected as a fair and reasonable return and what is experienced, in relation to the alternatives available in a given situation.*” (1969: 6). Consistent with the same line of thinking, Spector (1997: 3) defined job satisfaction as “*the global feeling about the job or a related constellation of attitudes about various aspects or facts of the job.*”. Finally, Locke (1976: 1300) defined it in the same manner by defining it as “*a pleasurable or positive emotional state resulting from the appraisal of one’s job or job experience.*”.

FACTORS AFFECTING JOB SATISFACTION

Finding out exactly what makes people feel satisfied about their work can become a multi- faceted issue. According to Arnold and Feldman (1996), there are a variety of factors that make people feel positive or negative about their job. Moreover, some employees may be satisfied with few aspects of their work but dissatisfied with all other aspects, (Mullins, 2002). In the Telecommunication industries scenario, many staff members have reported that they are satisfied with the working hours and holidays but there are other factors such as supervision and the work itself that lead to their job dissatisfaction (Schenk, 2001). In terms of working conditions, the worker would rather desire working conditions that will result in greater physical comfort and convenience. The absence of such working conditions, amongst other things, can impact poorly on the worker’s mental and physical well-being (Baron and Greenberg, 2003). Robbins (2001) advocates that working conditions will influence job satisfaction, as employees are concerned with a comfortable physical work environment. In turn this will render a more positive level of job satisfaction. Arnold and Feldman (1996) shows that

factors such as temperature, lighting, ventilation, hygiene, noise, working hours, and resources are all part of working conditions. Employees may feel that poor working conditions will only provoke negative performance, since their jobs are mentally and physically demanding. However, Arnold and Feldman (1996) warned that if working conditions are too favorable or the extreme, this could be taken for granted or ignored by most employees. In such a case the employee does not really appreciate his good working conditions, or if it is the contrary, this may not bother or affect him.

Research appears to be equivocal regarding the influence of pay on job satisfaction. According to Bassett (1994), a lack of empirical evidence exists to indicate that pay alone improves worker satisfaction or reduces dissatisfaction. According to Bassett (1994) highly paid employees may still be dissatisfied if they do not like the nature of their job and feel they cannot enter a more satisfying job. In a study conducted by Oshagbemi (2000) amongst United Kingdom academics, a statistically significant relationship between pay and rank of employees and their level of job satisfaction was established. However, a study conducted by Young, Worchel and Woehr (1998) in the public sector failed to find any significant relationship between pay and satisfaction. Similarly, results from a survey conducted by Brainard (2005) amongst postdoctoral scientific researchers found pay and benefits to be weakly associated with job satisfaction. The existence of both financial reward and recognition has been found to have a significant influence on knowledge workers (Arnolds & Boshoff, 2004). Individuals view their remuneration as an indication of their value to the organization. They compare their inputs to received outputs relevant to that of others (Nel et al., 2004). This view is supported by Sweeney and McFarlin (2005) who concur that comparisons with similar others are important predictors of pay satisfaction. Their study, which

was based on the social comparison theory, highlighted the fact that comparisons to similar others impacts on pay satisfaction. According to Boggie (2005), inequity in terms of lack of recognition and poor pay often contribute to a problem with employee satisfaction. A number of researchers are of the opinion that job satisfaction is strongly related to opportunities for promotion (Pergamit & Veum, 1999; Peterson et al., 2003; Sclafane, 1999). This view is supported in a study conducted by Ellickson and Logsdon (2002) with municipal government workers where satisfaction with promotional opportunities was found to be positively and significantly related to job satisfaction. Kreitner and Kinicki (2001), however, state that the positive relationship between promotion and job satisfaction is dependent on perceived equity by employees. However, Hoy and Miskel (1991) warned that those top achievers promoted too quickly can result in dissatisfaction amongst loyal intelligent but less creative senior workers. The human resources department, at most times, is constantly asked the question “does the job position entail opportunity for advancement (promotion).”

JOB SATISFACTION & PRODUCTIVITY:

Job satisfaction is an important attribute of all labor market matches, as it is a useful summary measure of utility at work. The effects of job satisfaction on various labor market outcomes such as employee quitting behavior, absenteeism, and job performance have been explored in the literature (see Warr 1999). Despite this, there are still relatively neglected areas of research.

THE RELATIONSHIP BETWEEN JOB SATISFACTION AND

EMPLOYEE PERFORMANCE AND PRODUCTIVITY

According to Saari and Judge (2004: 395) the study of the relationship between job satisfaction and job performance has a controversial history. Shortly after

the Hawthorne studies, researchers began taking a critical look at the notion that a “happy worker is a productive worker”. Most of the earlier reviews of the literature suggested a weak and somewhat inconsistent relationship between job satisfaction and performance. A review of the literature in 1985 suggested that the statistical correlation between job satisfaction and performance was about .17. Thus, it was concluded that the presumed relationship between job satisfaction and performance was a management fad and illusory. This study had an important impact on researchers, and in some cases, on organizations, with some managers and HR practitioners concluding that the relationship between job satisfaction and performance was trivial.

2-REVIEW OF LITERATURE

JOB SATISFACTION AND PRODUCTIVITY:

Satisfied employees tend to perceive that the organisation will be more satisfying in the long run, they care about the quality of their work and are more committed to the organisation, leading to a demonstration of organisational citizenship behaviours (**Suh, 2003**). **Goslin (2005)** is also of the opinion that satisfied employees have higher retention rates and are more productive. When employees are dissatisfied, their physical and mental health is negatively affected (**Faragher, Cass & Cooper, 2005**). A meta-analysis conducted by **Judge, Thoresen, Bono, and Patton (2007)** also found a positive relationship between individual employee satisfaction and factors such as motivation, job involvement, organisational citizenship and job performance.

Corporate Leadership Council (2007) also conducted an employee satisfaction survey of over 40% of the companies that are listed in the top 100 of Fortune 500 companies. The study concluded that employee satisfaction, behaviour and turnover predicted the following year's profitability, and that

these are even more strongly correlated with customer satisfaction.

It is important for management in organisations to create a work environment that facilitates higher employee satisfaction levels. This is because employee satisfaction has a stimulus effect on the loyalty and confidence of employees, improves the quality of outputs and also increases productivity (*Yee et al., 2008*).

Consequently, organisational performance will also deteriorate as more production time will be lost because dissatisfied employees are likely to take more leave (*Judge, Piccolo, Podsakoff, Shaw & Rich, 2010*); therefore, if steps are taken to improve employee satisfaction, overall success of the organisation is enhanced and the results can be reflected through happier employees, enhanced workforce productivity, reduced workdays and higher profits. This also typifies the importance of people in organisations, since people are the promoters of excellent organisational performance.

Conversely, employee dissatisfaction resulting from poor workplace environments can also lead to a decrease in productivity leading to poor organisational performance (*Chandrasekar, 2011*).

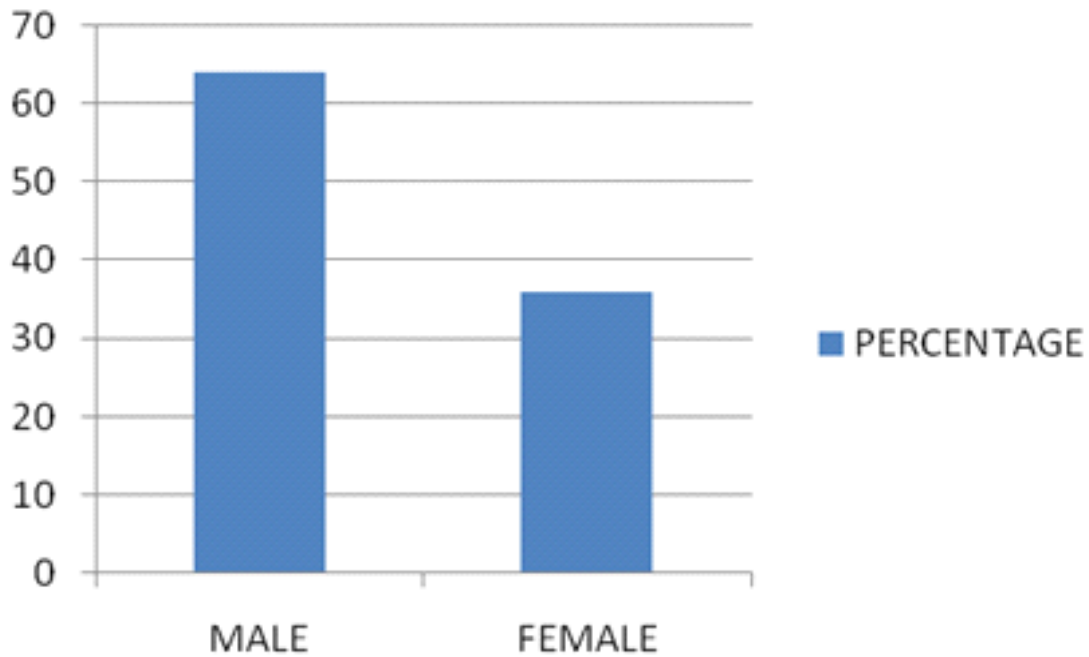
DATA ANALYSIS

JA. DEMOGRAPHIC DATA:

I. GENDER DISTRIBUTION

GENDER	FREQUENCY	PERCENTAGE
MALE	192	64
FEMALE	108	36
TOTAL	300	100

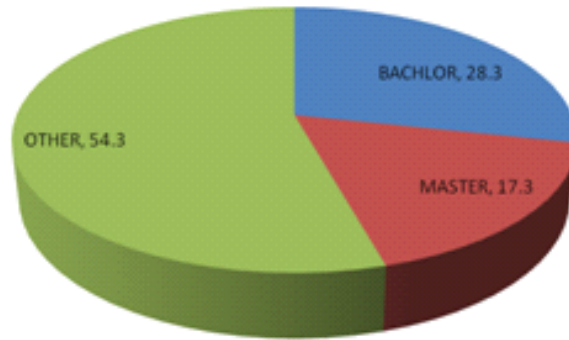
PERCENTAGE GENDER OF RESPONDENT



From the population size of 300, there were 108 females with 192 males. This data gives us the impression that generally due to the nature of work performed at BHEL, Bhopal women employees work in units which does not require heavy physical work.

II. PROFESSIONAL QUALIFICATION

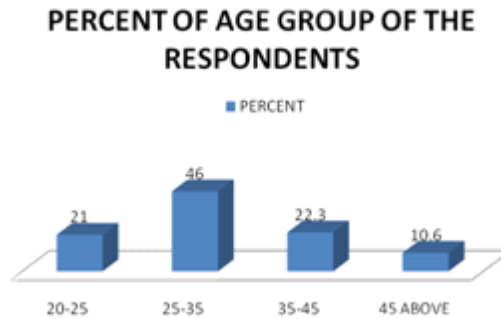
QUALIFICATION	FREQUENCY	PERCENT
BACHLOR	85	28.3
MASTER	52	17.3
OTHER	163	54.3
TOTAL	300	100



Since most of the employees working there are labor category, hence belongs to the group marked as “others”. This group makes most of the employees qualification working at BHEL, Bhopal (54.3%). Besides this many interns and trainees also work in BHEL who were also the respondents of this study and so they contribute to the “Bachelors” (28.33%) group. While some employees holds masters degree, most of them had done MBA.

III. AGE GROUP:

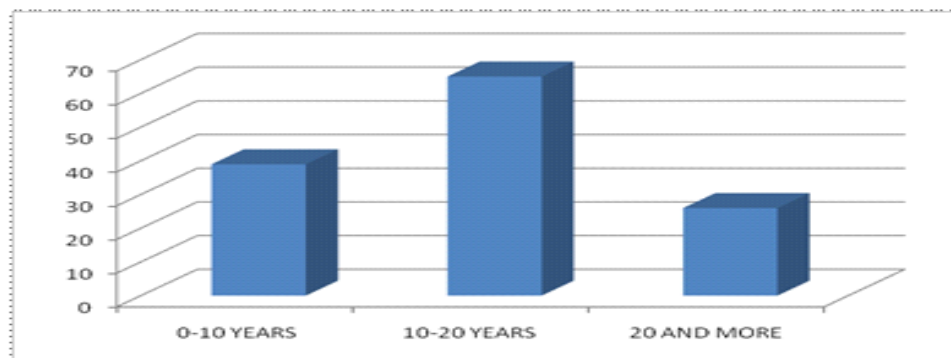
AGE-GROUP	FREQUENCY	PERCENT
20-25	63	21.0
25-35	138	46.0
35-45	67	22.3
45 ABOVE	32	10.6
TOTAL	300	100



Most of the employees fall under the category of age group 20-25 and 25-35. Hence, indicating the inclination of BHEL management towards young and dynamic employees. However, most the respondents who were 45 and above in age were experienced employees holding important positions at BHEL, Bhopal.

IV. YEARS OF SERVICE AT BHEL:

YEARS	FREQUENCY	PERCENT
0-10	117	39.0
10-20	195	65.0
20 AND MORE	78	26.0



Majority of the employees were experienced with 47.76% employees having an experience of more than 10 years.

H₀: The HRM practices have no impact on employees' Satisfaction level.
H_A: There is a significant relationship between employees' satisfaction level and HRM practices.

The hypothesis was tested using linear regression, in SPSS. From the output obtained the following points can be interpreted.

Model Summary

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate
1	.968 ^a	.936	.857	10.02551

It can be concluded that as much as 93.6% variation in the data of satisfaction level of the employees can be explained by HRM practices.

ANOVA

Model	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
1	5929.122	5	1185.824	11.798	.017
Regression	402.043	4	100.511		
Total	6331.165	9			

The F ratio is the ratio of two mean square values. If the null hypothesis is true, you expect F to have a value close to 1.0 most of the time. The F-value in this

11.79 which indicates a very weak fit in the model

H₀: There is no significant relation between Productivity and Job satisfaction level:

H_A: There is a significant relation between Productivity and Job satisfaction level.

To test this hypothesis Pearson correlation was used since both the variables were independent of each other.

Correlations

		productivity	jobs
productivity	Pearson Correlation	1	.820**
	Sig. (1-tailed)		.001
	N	11	11
jobs	Pearson Correlation	.820**	1
	Sig. (1-tailed)	.001	
	N	11	11

Interpretation:

It can be seen from the data above that there is a **very strong correlation** between both these variables, as $r = 0.82$ i.e it is very closer to 1. Also the value of probability factor p is 0.001. This indicates that the probability that this data supports null hypothesis is very less hence we have to reject the null hypothesis and accept the alternative hypothesis that “There is a significant relationship between Productivity and Satisfaction Level of the employees.”

Findings

1) This study highlighted the fact trade union leaders representing different ideological group have expressed their full satisfaction with regard to working of the present industrial relation machinery in the organization.

Conclusion

- 01) It was concluded that as much as 91% variation in the data of satisfaction of the employee in BHEL Bhopal(MP)
- 02) Job satisfaction has direct impact on productivity and commitment level of the employees.
- 03) There are a significant relationship between employee productivity and employee satisfaction

References -:

- 1). Santos, A. and Stuart, M. (2003). "Employee Perceptions and Their Influence on Training Effectiveness", *Human Resource Management Journal*, 13(1), pp. 27-45.
- 2) Jayawarna, D., Macpherson, A. and Wilson, A. (2007). "Training Commitment And Performance In Manufacturing SMEs: Incidence, Intensity and Approaches", *Journal of Small Business and Enterprise Development*, 14(2), pp. 321-338
- 3). Aguinis, Herman and Kraiger, K. (2009). "Benefits of Training and Development for Individuals, Teams, Organizations and Society", *Annual Review of Psychology*, 60(4), pp. 51-74.
- 4) Huselid, M .A . (1995) . The impact of human resource management practices on turnover, productivity, and corporate financial performance . *Academy of Management Journal*, 38, 635-672

Road Transportation Management and customer satisfaction in India

Dr. Papia Chaturvedi

Assistant Professor, Commerce,

Govt. Minimata Girls College, Korba

The **Ministry of Road Transport and Highways** (IAST: *Sa??ka Parivahana va Râjamârga Ma?trâlaya*), is a ministry of the Government of India, is the apex body for formulation and administration of the rules, regulations and laws relating to road transport, and transport research, in order to increase the mobility and efficiency of the road transport system in India. Road transport is a critical infrastructure for economic development of the country. It influences the pace, structure and pattern of development. In India, roads are used to transport over 60% of the total goods and 85% of the passenger traffic. Hence, development of this sector is of paramount importance for the India and accounts for a significant part in the budget. Since May 2014, the Minister for Road Transport and Highways is Nitin

Road transport (British English) or **road transportation** (American English) is transport using roads. Transport on roads can be roughly grouped into the transportation of goods and transportation of people. In many countries licensing requirements and safety regulations ensure a separation of the two industries. Movement along roads may be by bike or automobile, truck, or by animal such as horse or oxen. Standard networks of roads were adopted by Romans, Persians, Aztec, and other early societies. Cargo may be transported by trucking companies, while passengers may be transported via

mass transit. Commonly defined features of modern roads include defined lanes and signage. Within the United States, roads between regions are connected via the Interstate Highway System.

The nature of road transportation of goods depends, apart from the degree of development of the local infrastructure, on the distance the goods are transported by road, the weight and volume of an individual shipment, and the type of goods transported. For short distances and light, small shipments a van or pickup truck may be used. For large shipments even if less than a full truckload a truck is more appropriate. (Also see Trucking and Hauling below). In some countries cargo is transported by road in horse-drawn carriages, donkey carts or other non-motorized mode. Delivery services are sometimes considered a separate category from cargo transport. In many places fast food is transported on roads by various types of vehicles. For inner city delivery of small packages and documents bike couriers are quite common.

Traffic control

See also: Road traffic safety

Disruptions in organized traffic flow can create delays lasting hours.

Nearly all roadways are built with devices meant to control traffic. Most notable to the motorist are those meant to communicate directly with the driver. Broadly, these fall into three categories: signs, signals or pavement markings. They help the driver navigate; they assign the right-of-way at intersections; they indicate laws such as speed limits and parking regulations; they advise of potential hazards; they indicate passing and no passing zones; and otherwise deliver information and to assure traffic is orderly and safe.

Two hundred years ago these devices were signs, nearly all informal. In the late 19th century signals began to appear in the biggest cities at a few highly

congested intersections. They were manually operated, and consisted of semaphores, flags or paddles, or in some cases colored electric lights, all modeled on railroad signals. In the 20th century signals were automated, at first with electromechanical devices and later with computers. Signals can be quite sophisticated: with vehicle sensors embedded in the pavement, the signal can control and choreograph the turning movements of heavy traffic in the most complex of intersections. In the 1920s traffic engineers learned how to coordinate signals along a thoroughfare to increase its speeds and volumes. In the 1980s, with computers, similar coordination of whole networks became possible.

The term transportation is never an image of smooth drive and picturesque location in the context of India. It is always accompanied with riots and rituals, puddles and toll plazas, people and vehicles, fighting their way on what is supposed to be roads. This was the condition earlier. This is the condition now. Or is it? Leaping from moral high grounds to hard ground of reality, we all need to introspect whether the Road Transportation Management is as dysfunctional as we claim it to be or is it just a discourse that we are made to believe. A conditioning of mind.

According to Wikipedia, India has a road network of over 5,472,144 kilometres (3,400,233 mi) as on 31 March 2015, the second largest road network in the world. At 1.66 km of roads per square kilometre of land, the quantitative density of India's road network is higher than that of Japan (0.91) and the United States (0.67), and far higher than that of China (0.46), Brazil (0.18) or Russia (0.08). However, qualitatively India's roads are a mix of modern highways and narrow, unpaved roads, and are being improved. As on 31 March 2015, 61.05% of Indian roads were paved.

Adjusted for its large population, India has less than 3.8 kilometres of roads per 1000 people, including all its paved and unpaved roads. In terms of quality, all season, 4 or more lane highways, India has less than 0.07 kilometres of highways per 1000 people, as of 2010. These are some of the lowest road and highway densities in the world. For context, United States has 21 kilometres of roads per 1000 people, while France about 15 kilometres per 1000 people predominantly paved and high quality in both cases. In terms of all season, 4 or more lane highways, developed countries such as United States and France have a highway density per 1000 people that is over 15 times as India.

However, the main roads in India are under huge pressure and in great need of modernization in order to handle the increased requirements of the Indian economy. In addition to maintenance, the expansion of the network and widening of existing roads is becoming increasingly important. This would then enable the roads to handle increased traffic, and also allow for a corresponding increase in the average movement speed on India's roads. The low road densities per 1000 people has created significant congestion and slow speeds on existing roads inside cities. Because of the congestion, the fuel efficiency of the vehicles in India is very low. This increases the overall fuel consumption per equivalent kilometer travelled, besides resulting in heavy pollution since the engines run very inefficiently at such low speeds. Another problem that India faces is that of connectivity. Even though it has been categorized as the second largest road network in the world, it still fails to connect to its rural parts.

The term Road Transportation also include the logistics of transporting goods and commodities which plays a pivotal role across the functioning of all

the three sectors, primary, secondary and tertiary. The term logistics is often misinterpreted to mean transportation only. Whereas, the scope of logistics goes well beyond transportation. Logistics forms the system that ensures the delivery of the product in the entire supply pipeline. This includes transportation, packaging, storage and handling methods, and information flow. The impact of logistics in the ability of a company to satisfy its customers cannot be overstated. All other efforts at modernization within a company would not bear fruit until the logistics system is carefully designed to facilitate the smooth and efficient flow of goods in the system.

The topic of logistics is relatively new in India. There have been some companies that have done work in this area, but a large number of companies are only now beginning to realize the benefits of designing and managing the entire supply chain. With India joining the global marketplace, the role of logistics assumes greater importance.

The industrial policies in India have prompted manufacturers to build plants in remote, backward areas due to inexpensive land and tax benefits. This poses some serious logistical problems. Apart from a poor road and transportation network, the existing communications system in India leaves a lot to be desired by any international standard. It is in this context that logistics has to be considered in India.

Thus, it can be concluded that Road Transportation Management is still on its way to satisfy the customers. However, one interesting point to note here is that, the users of Road Network are never seen as customers. Thus, at that very instance, the privilege of customer is lost. The cycle then moves anti-clockwise i.e. instead of the state taking responsibility for the maintenance; the customers

consider themselves fortunate to find a well-maintained road. Here, what we need to realise is the fact that the state adhering to its responsibilities is not something to be thankful for rather it should be a normal course of action. Rather, it should have become. At least in 70 years.

<https://www.grossarchive.com/project/2928/TRANSPORTATION-MANAGEMENT-AND-CUSTOMERS-SATISFACTION-A-CASE-STUDY-OF-ENUGU-NORTH-MASS-TRANSIT-.html>

1. *"Road Transportation A History and How We Use it Today". American Auto Move. 30 August 2012. Retrieved 12 September 2012.*
2. ^ Jump up to:^{a b} Webb. English Local Government. pp. 157-159
3. **Jump up**^ Statute, 15 Car. II, c.1.
4. **Jump up**^ *Parliamentary Papers*, 1840, Vol 256 xxvii.
5. **Jump up**^ The Turnpike Trust Schools History.org, Accessed July 2011
6. **Jump up**^ Lay (1992), p72
7. **Jump up**^ *Oxford, Robert (3 September 2003). "How old is that route?" (pdf). Institution of Civil Engineers. Retrieved 2007-01-19.*
8. **Jump up**^ *Bellis, Mary (2007). "Thomas Telford". About: inventors. About, Inc, New York Times. Retrieved 2007-01-19.*
9. **Jump up**^ "1823 - First American Macadam Road" (*Painting - Carl Rakeman*) US Department of Transportation - Federal Highway Administration (Accessed 2008-10-10)
10. **Jump up**^ *Craig, David, "The Colossus of Roads", Palimpsest, Strum.co.uk, retrieved 18 June 2010*
11. [Http://indiabudget.gov.in/ub2017-18/eb/stat3a.pdf](http://indiabudget.gov.in/ub2017-18/eb/stat3a.pdf)
12. **Jump up**^ *"Organisational History". Ministry of*

- Shipping, Government of India. Retrieved 5 October 2014.*
- 13.^ Jump up to:^{a b c d e} "*Ninth Report of ERC*" (PDF). Ministry of Finance, Government of India. Retrieved 5 October 2014.
- 14.**Jump up**^ "*Wings under Ministry*". MORTH. Ministry of Road Transport and Highways, Government of India. Retrieved 5 October 2014.
- 15.**Jump up**^ "*Annual Report 20132014*" (PDF). Ministry of Road Transport and Highways. Retrieved 5 October 2014.

Social Media and Its Impact on Adolescents in India

Seema Rani
Asstt. Professor
Department of Social Work
Aditi Mahavidyalaya , University of
Delhi, Bawana Delhi 110039, India

Name and address of co-author:
Ramesh Kumar Bhardwa
Professor (Dr.)
Chairman, Department of Social Work
Kurukshetra University,
Kurukshetra, 136119, India

Key Words: Social Media, Adolescents, Social Networking, Social Work Intervention.

Social Media and Its Impact on Adolescents in India

Abstract

Social media websites and mobile technologies that facilitate communication between people & organizations. Social networking allows people to connect with friends, alumni friends, friend of friends, families and unknown web users. Children and adolescents are among the most excessive users of social network sites (SNS). Emerging studies find that children and adolescents spend a considerable portion of their daily life interacting through social media. This paper describes the positive and negative impact of social media on wellbeing of adolescents. We have also tried to explore the intervention strategies to deal with adolescent's problems related to social media crime or cyber bullying.

Key Words: Social Media, Adolescents, Social Networking, Social Work Intervention.

Introduction

A social networking service or social media is an online service, platform, or

site that focuses on facilitating the building of social networks or social relations among people who, share interests, activities, backgrounds or real life connections. Social media can be defined as a phenomenon that has recently taken over web, allowing more connectivity and interaction between web users. Several websites, such as Face book, Twitter, Google, and My space are labeled as “virtual communities.” Adolescents are among the most excessive users of social network sites. In other words, Social media allows individuals to present themselves, articulate their social networks, and establish or maintain connections with others. These sites can be oriented towards work-related contexts (e.g., LinkedIn.com), romantic relationship initiation (Friendster.com), connecting those with shared interests such as music or politics (e.g., MySpace.com, youtube), or the college student population (whatsapp and facebook.com). Participants may use the sites to interact with people whom they already know offline or to meet new people. Social networks sites enable its users to present and view each other's profiles, accumulate 'friends' who can post comments or like each other's pages. Web users can also join virtual groups based on common interests, and learn each others' hobbies, musical tastes, and romantic relationship status through their profiles.

Using of social media web sites is the most common activity among children and adolescents. Adolescents are a unique population of social media users. They are grown up entirely surrounded by communication technologies. They are also in a period of rapid development, growth, and maturation. Emerging studies find that adolescents spend a considerable portion of their daily life interacting through social media. The study about social media effects on adolescents can be contributed significantly to the concerns of adults who mediate access to these online communities.

India has the 3rd largest online user base following US and China. Social networking is primary driver of online activity in India. 67% Urban Indian internet users get online for social networking. 73% of India's citizens watch online videos. Google and Facebook account for 67% of total online ad spend in India. Age groups between 15-24 years are the highest number of social media users, on an average facebook users visit the site at least thrice a day. 67% of the teenagers are friends with strangers. Cases of cyber bullying, fake profiles are increasing in a huge number. Increasing the use of websites, thoughts of the youth are being manipulated. (Source : A report released by Singapore-based 'WeAreSocial' (2012).

Impact of Social Media on Adolescents

(a) Positive impact of social media on adolescents

Today is the time of advanced technology and social media plays an important role in its development. People love to use it as a tool of communication, entertainment and learning. Positive effects of social media are as follows:

Enhanced Learning Opportunities and find jobs

School and college students are using social media to connect with one another on assignments and group projects. For example, Facebook and similar social media programs allow students to gather outside of class to collaborate and exchange ideas about assignments. Some schools successfully use blogs as teaching tools, which is the benefit of reinforcing skills in English, written expression, and creativity. Social media plays great role for professionals for marketing, connecting, and finding business opportunities. Social media sites have created thousands of jobs and new avenues of income. Employers find employees and unemployed find work through social network sites.

Affordable and cost efficient

Due to cheaper and low cost, it is easily accessible to everyone for personal and

professional use. People don't hesitate to buy and use it frequently.

Effective way of Communication

Social media sites are the source of effective communication and it allows adolescents to accomplish online many of the tasks that are important to them i.e. staying connected with friends and family, making new friends, sharing pictures, and exchanging ideas. Social media participation can also offer adolescents a deeper benefit that extends into their view of self, community, and the world, including opportunities for community management through raising money for charity and volunteering for local events, including political events. It also enhances collective creativity through development and sharing of artistic and musical activities, expansion of one's online connections through shared interests to include others from more diverse backgrounds. Such communication is an important step for all adolescents and it affords the opportunity for respect, tolerance, and increased discourse about personal and global issues.

Seeking Health Information

Adolescents are finding that they can access online information about their health concerns easily. Excellent health resources are available to youth through web sites on a variety of topics as per their interest such as sexually transmitted infections, stress reduction, and signs of depression etc. Adolescents with chronic illnesses can access web sites through which they can develop supportive networks of people with similar conditions. The mobile technologies that adolescents use daily, namely cell phones, instant messaging, and text messaging, have already produced multiple improvements in their health care.

(B) Negative impact of social media on adolescents

In current scenario, social media has become an essential part of our life, but there are a lot of consequences which impacts wellbeing and life style of human being specially children and adolescents. As a result, they are becoming like a machine. They are going far away from human values and realistic approach.

Distraction and time wastage

Once students become addicted of these sites, they attempt to multi-task while studying. This reduces their academic performance and their ability to concentrate on a task because of distraction brought by social media. They are depended on getting information from web sites like Google. Several users are spending too much time on social sites rather than doing their constructive work. This has reduced their focus on learning and retaining information since they are dependent on the accessibility of information on social media.

Reduction in real life contacts

Today's generation ability to communicate face to face has also been affected by access using of media. They forget how to communicate with each other in person. They don't collaborate in discussions and this reduces their communication skills.

Influence of advertisement on buying

Many social media sites display multiple advertisements such as banner ads, behavior ads (ads that target people on the basis of their Web-browsing behavior), and demographic-based ads (ads that target people on the basis of a specific factor such as age, gender, education, marital status, etc) that influence not only the buying tendencies of adolescents but also their views of what is normal. It is particularly important for parents to be aware of the behavioral

ads, because they are common on social media sites and operate by gathering information on the person using a site and then targeting that person's profile to influence purchasing decisions.

Many online venues are now prohibiting ads on sites where children and adolescents are participating. It is important to educate parents, children, and adolescents about this practice so that children can develop into media-literate consumers and understand how advertisements can easily manipulate them.

Privacy concerns and the digital footprint

The main risk to adolescents online today is the risk of improper use of technology, lack of privacy, sharing too much information, or posting false information about themselves or others. These types of behavior put their privacy at risk. When Internet users visit various Web sites, they can leave behind evidence of which sites they have visited. This collective, ongoing record of one's Web activity is called the “digital footprint.”

One of the biggest threats to young people on social media sites is to their digital footprint and future reputations. Preadolescents and adolescents who lack an awareness of privacy issues, often post, inappropriate messages, pictures, and videos without understanding that “what goes online stays.”

Cyber bullying and Crime

Cyber bullying is defined as repeatedly harassing, threatening, intimidating, and or humiliating another person using technology such as social media and mobile devices. Several forms of cyber bullying exist, including **denigration, impersonation, flaming, trickery, and cyber stalking**. Cyber bullying can be very emotionally damaging. Victims of cyber bullying may experience depression, isolation, poor academic performance, and even suicidal ideation.

Sexting

Sexting can be defined as “sending, receiving, or forwarding sexually explicit messages, photographs, or images via cell phone, computer, or other digital

devices.” Many of these images become distributed rapidly via cell phones or the Internet. This phenomenon does occur among the adolescents that they send and post nude or seminude photographs or videos of themselves. Some adolescents who have engaged in sexting have been threatened or charged with crime.

Depression and loneliness

When adolescents spend a great deal of time on social media sites, such as facebook and whatsapp etc, and then begin to exhibit classic symptoms of depression. Acceptance by and contact with peers is an important element of adolescent life. The intensity of the online world is thought to be a factor that may cause depression in some adolescents. They are at risk for social isolation and sometimes turn to risky Internet sites and blogs for “help” that may promote substance abuse, unsafe sexual practices, or aggressive or self-destructive behaviors.

Social media crime and social work intervention

Social networking sites allow to everyone to recruit and distribute propaganda online, unauthorized sharing and copyright violation may causes loss of income. Security attacks such as hacking, thefts, scams, and viruses are common online. Criminals use social media to commit crimes. Robbers know when you're away from your home on vacation and stalkers get information about your whereabouts via social media. Sexual predators find, stalk, and assault victims through social media. Sexting (texting sexual content) can be a big problem. When adolescents or teens post prohibited photos or comments online, it can lead to criminal charges and child / adolescents pornography. Most of the adolescents are school/college going and highly influenced with peer groups cheating online. They are most vulnerable to cyber bullying or online

crime.

Cyber bullying and crime can be very emotionally damaging. Victims of cyber crime may experience depression, isolation, poor academic performance, and even suicidal ideation. Social worker plays an important role in preventing social media crime because they are able to work with students, teachers, school administrators, parents and the community to prevent cyber bullying and crime occurring in schools, colleges and society. He can guide and educate them in prevention and intervention such as:

Educate school & college personnel about the pro & cons of social media and how to prevent it both in and outside of campus environments.

Educate adolescents about social media and its effects, consequences and the importance of ethical online conduct so that the privacy and security could be maintained.

Social workers can collaborate with schools, colleges and community local resources to set up structures that prevent online crime on and off campus.

Set up workshops and presentations for adolescents and their parents so that they can understand the responsibility and usage of social media and technology.

Proactively survey with adolescents to understand where and when crime occurs.

Emotional and psychological support to victims through counseling when necessary.

Law enforcement can be contacted when online crime reaches a severity that endangers mental or physical safety.

Work with the wider community such as the police and children's services to agree a clearly understood approach to cases where bullying is particularly serious or persistent and where a criminal offence may have been committed.

Because of their young age, adolescents can encounter inaccuracy

during these searches and require parental involvement to be sure they are using reliable online resources. Social Worker can work with parents to enhance their knowledge and practice of online safety. Parents can make good use of the online security controls and privacy settings that are available, are particularly knowledgeable about how to stay safe when using social networking sites.

Conclusion

No doubt, social media plays a vital role in personal and professional life, but we all are addicted to social media that is hampering our productivity, face to face communication and to deal with real life situation etc.

We should use these social media network and channels in constructive way for effective communication, fruitful knowledge sharing etc. We should also take care of our privacy and security while using these networking sites.

Although Social Worker often attributes bullying to individual's behaviour, successful intervention programs emphasize the interrelated impact of family, school culture and communities. An ecological approach that includes appropriate family guidance, a proactive school & college culture, and community involvement is needed to implement the components necessary to combat cyber bullying and crime.

Reference list:

Ahn, J. (2011), "The Effects of Social Network sites on Adolescents: Social and Academic Development Current Theories and Controversies" *Journal of The American Society for Information Science and Technology*, 62 (8); 1435-1445, 2011.

Brunker, M. (2009). 'Sexting' surprise: Teens face child porn charges, 6 Pa. high school students busted after sharing nude photos via cell phones. Retrieved on 26th January 2010 from

- <http://www.msnbc.msn.com/id/28679588/>
Clinical Report (2011), “The Impact of Social Media social work students .on Children, Adolescents and Families” *Pediatrics*, vol. 127, 2011.
<http://pediatrics.aappublications.org/>
- Das, S. et. al. (2013), “Impact of Cyber Crime: Issues and Challenges.” *International Journal of Engineering Sciences & Emerging Technologies*, vol. 6.issue 2, pp 142-153.
- Ellison, N. B. et. al. (2007) titled, “The Benefits of Facebook 'Friends' Social capital and Colleges Students Use of Online Social networking Sites.” *Journal of Computer-Mediated Communication*.
- Halder, D et. al .(2009) titled, “Cyber Socializing and Victimization of Women.” *Online publication <http://ssrn.com/abstract=1561774>*.
- Jaishankar, K. (2009), “Sexting : A New Form of Victimless Crime? ” *International Journal of Cyber Criminology*, vol. 3,issue 1,2009.
- John D. et.al.(2008) 'Foundation Reports on Digital Media and Learning'. from <http://digitalyouth.ischool.berkeley.edu/report>
- Sen., A. (2017) “Forget Blue Whale Challenges, Cyber bullying is More Common Danger for You Kid”. *Economics Times Online Oct 06, 2017*.
- Smith, P. K. et. al. (2008) “Cyberbullying: Its nature and Impact in Secondary School Pupils.” *Journal of Child Psychology and Psychiatry*,49:4 9 (2008), pp 376-385.
- Valenzuela, S. (2014) “Facebook, Twitter and Youth Engagement: A Quasi-Experimental Study of Social Media Use and Protest Behavior Using Propensity Score Matching.” *International Journal of Communication*, vol.8,pp 2046-2070.
- Valenzuela, S. (2013). Unpacking the use of social media for protest behavior: The roles of information, opinion expression, and activism. *American Behavioral Scientist*, 57, 920 942. doi:10.1177/0002764213479375

भारतीय हस्तशिल्प: वस्त्र उद्योग: व्यापार, व्यवसाय

डॉ. केतकी त्रिवेदी,
सहायक प्राध्यापक, (वाणिज्य)
लोकमान्य टिळक विज्ञान एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन

भारत में हस्तशिल्प वस्त्रोद्योग मूलतः लघु एवं कुटीर उद्योग के रूप में संचालित होता रहा है। पुरातन उद्योग, धन्धे, कला, कारीगरी प्रायः जनपद अर्थात् ग्राम, समूहों में स्थापित एवं विकसित हुए। इनमें अपेक्षित कच्चा माल, मानव, श्रम तथा कुशल कारीगर ग्राम, सुलभ होते थे। कारीगर दो प्रकार के थे – कारु तथा शिल्पी। कार्य, सम्पादन में साधारण दक्षता रखने वाले कारीगर 'कारु' और विशिष्ट, उत्कृष्ट तथा कलात्मक दक्षता रखने वाले कारीगर 'शिल्पी' कहे जाते थे – 'कारवः स्थूलशिल्पकाराः, शिल्पिनः सूक्ष्मशिल्पकाराः' 1 नियत, कार्य, निष्पादन में दक्षता 'शिल्प' कहलाती थी। अपने कार्य के अनुसार कारुशिल्पिगण को राज्य शासन से भी वेतन, प्रोत्साहन, पुरस्कार आदि प्राप्त होते रहते थे। कौटिल्य, अर्थशास्त्र में उल्लिखित है कि सूत्राध्यक्ष (सूत व्यवसाय का अध्यक्ष) 2 – ऊन, वल्क, कपास, सेमल, सन, पटसन आदि कतवाने के लिए विधवाओं, विकलांग स्त्रियों, कन्याओं, सन्यासिनों, सजायापता स्त्रियों, वेश्या, माताओं, वृद्ध राजदासियों तथा नृत्य आदि में असमर्थ देवदासियों को नियुक्त करे। सूत की एकसारता, स्थूलता, मध्यमता आदि भली, भाँति परख कर इन स्त्रियों की मजदूरी तय करे। कम अथवा अधिक सूत कातने वाली स्त्रियों को उनके कार्य के अनुरूप वेतन प्रदान करे। सूत का वजन अथवा लम्बाई जाँच कर उन्हें तेल, आँवला और उबटन दे ताकि प्रसन्न होकर वे अधिक कार्य कर सकें। त्योहार अथवा अवकाश के दिनों में उन्हें भोजन, दान अथवा सम्मान प्रदान कर कार्य करवाए। आत्मनिर्भर रहने की इच्छुक असहाय स्त्रियों के लिए सूत दासियों द्वारा भेज कर उनसे कार्य करवाए तथा सद्व्यवहार करे। घर पर काता हुआ सूत लेकर जो स्त्रियाँ स्वयं अथवा दासी के साथ प्रातःकाल ही सूत्रशाला में उपस्थित हों, उन्हें उचित मजदूरी दे। निपुण शिल्पियों से मोटे, महीन सूत के कवच बनवाए, स्थूल, सूक्ष्म रेशमी वस्त्र, ऊनी वस्त्र, सूती वस्त्र के निर्माता शिल्पि, वर्ग को इत्र, फुलेल, विविध पारितोषिक आदि देकर उन्हें सदैव प्रसन्न रखे। इन शिल्पियों से ओढ़ने, बिछाने तथा पहनने के विशिष्ट तथा विविध कलात्मक वस्त्र बनवाए।

कारु तथा शिल्पी कारीगरों को जनाश्रय भी प्राप्त होता था। जमींदार, जागीरदार तथा अन्यान्य श्रीमन्त व्यक्ति अपनी अभिरुचि तथा अपेक्षा के अनुरूप कलात्मक वस्त्र, आवरण, आस्तरण, परिधान इत्यादि प्रवीण शिल्पियों से

विशेष रूप से तैयार करवाते थे। इनका अनुसरण करते हुए सामान्य जन भी अपेक्षा के अनुसार यथाशक्ति हस्तशिल्प कार्य करवाते थे। फलतः हस्तशिल्प उद्योग उत्तरोत्तर उन्नत हुए, शिल्पकार्य निरन्तर निखरता गया और शिल्पी-समुदाय भी उद्यमशील और समृद्ध हुआ।

औद्योगिक उन्नति के आधार-स्तम्भों में अन्यतम है, माल की क्रय-विक्रय व्यवस्था। यह व्यवस्था प्राचीन समय में शासकीय कर्तव्यों में परिगणित होती थी। उत्पादित माल हेतु अपेक्षित आयात-निर्यात स्थान, जल-थल मार्ग, मण्डी-बाजार, व्यापार केन्द्र इत्यादि का निर्माण राजकीय स्तर पर किया जाता था। व्यावसायिक नगर 'पण्यपत्तन' कहलाते थे। आज भी 'पाटण' (गुजरात), 'पटना' (बिहार) इत्यादि नगर इस प्राचीन नाम के आधुनिक रूप प्रतीत होते हैं। पाटण तो प्राचीन समय से ही वस्त्र-व्यवसाय का प्रख्यात नगर है। जनपद में उत्पादित माल का छोटे-बड़े नगरों में क्रय-विक्रय होता था। जनपद वस्तुतः ग्रामसमूह था जो राष्ट्र की जनता के निवास के लिए सुव्यवस्थित रूप में स्थापित किया जाता था। जनपद की सबसे छोटी बस्ती को 'ग्राम', दस ग्रामों के संगठन से 'संग्रहण' संज्ञक राजकीय बस्ती, दस-दस ग्रामों के उक्त क्रम से दो सौ ग्रामों का संगठन कर, एक क्षेत्र का निर्माण कर उसमें 'खार्वाटक' संज्ञक बस्ती (शासकीय-स्थान); इस क्रम से चार सौ ग्रामों का संगठन कर 'द्रोणमुख' और अन्ततः आठ सौ ग्रामों के बीच उक्त रीति से 'स्थानीय' नामक राजकीय नगर-महाग्राम स्थापित किया जाता था। ये स्थानीय इत्यादि बड़े-छोटे नगर धनोत्पादन के केन्द्र थे। 13 जनपदीय उद्योग-ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग-की उन्नति इन नगरों पर निर्भर रही। और नगर उद्योग के पोषक रहे।

वस्तुशिल्प वस्त्रोद्योग व्यावसायिक दृष्टि से भी समृद्ध रहा। इस उद्योग में संलग्न शिल्पी-समुदाय की व्यावसायिक चतुरता का एक प्राचीन प्रमाण 'विज्ञापन' के रूप में प्राप्त होता है। विश्व का यह प्रथम विज्ञापन है, जो भारत के मध्यप्रदेश ने विश्व को दिया, जो पंद्रह शताब्दियों पूर्व भारतीय वस्त्र-व्यवसायियों ने शिलालेख में उत्कीर्ण करवाया, जो व्यापार-व्यवसाय में अपेक्षित अनेकविध तत्वों से ओत-प्रोत है और जो हस्तशिल्पियों की व्यावहारिक सूझ-बूझ का द्योतक है। यह 'वस्त्र-विज्ञापन', व्यापार का प्रधान कीर्तिमान, अज्ञातप्राय है। अतः प्रसंगपुरःसर संदर्भसमेत इसे यथावत् यहाँ प्रस्तुत करना प्रासंगिक ही होगा। विश्व का प्रथम विज्ञापन प्राचीन दशपुर (मंदसौर, मध्यप्रदेश) के कुमारगुप्तकालीन अभिलेख में यह विज्ञापन सम्मिलित है। लाट (दक्षिण गुजरात) देश में रेशम के कुछ बुनकरों ने मिलकर अपना एक संघ बनाया। अपने व्यापार के विस्तार की अधिक संभावना में उन्होंने मालवा के प्रसिद्ध नगर दशपुर (मंदसौर) में संक्रमण किया। ईसा की पाँचवी शताब्दी के प्रारंभ में, संभवतः उससे भी कुछ पहले, यह संघ वहाँ जा बसा था। सागर और उत्तर भारत को जाने वाले महामार्गों की संधि पर दशपुर पड़ता था, जिससे बुनकरों के इस संघ का व्यवसाय बढ़ गया। बुनकर संघ के लाभ की भी जब कोई सीमा न रही तब उसने एक विशाल सूर्य मंदिर

दशपुर में बनवाया। इस सूर्य मंदिर की शिला पर संघ ने अपना विज्ञापन उत्कीर्ण करवा दिया और वह भी अन्यान्य प्रकाशित विषयों के बीच। इस अभिलेख में सर्वप्रथम उन्होंने अपने सम्राट की अभ्यर्थना की; तत्पश्चात् वहाँ के गोसा (गवर्नर) की; तदनन्तर उस नगर की समृद्धि की कथा कही; नगर के अनन्त और विविध सौन्दर्य का चित्रण किया और इसी बीच अनायास और सहज रूप से पढ़े जाने के लिये अपने संघ की, अपने संघ के चरित्रवान सदस्यों की काव्यमय कथा कही और उसमें अपने व्यापार का विज्ञापन अमिट रूप में अंकित कर दिया। मूल विज्ञापन तथा उसका अर्थ भी इस प्रकार है-

तारुण्यकान्त्युपचितोऽपि सुवर्णहार-
ताम्बूलपुष्पविधिना समलङ्कृतोऽपि।
नारीजनः प्रियमुपैति न तावदस्या
यावन्न पट्टमयवस्त्रयुगानि धत्ते ॥

‘चाहे जितना भी यौवन तन पर फूट पड़ा हो, कान्ति, अंगांग पर छितरायी पड़ी हो (ज्यों ज्यों निहारिये नीरे है नैननि त्यों त्यों खरी निकरे सुनिकाई-मतिराम), देह चाहे जितनी भी चित्ती हो प्रसाधान, पत्रलेख, भक्ति विरोचक से चर्चित हो, आलेखन अंगराग से लिप्त सुगन्धित हो, होंठ चाहे क्यों न आलता -ताम्बूल आदि से लाल रचे हों, फूलों से वेणियाँ गूँथी हों, कलियों से माँग बनी हो, अलंकार से भारीर भरा हो, (समझदार) नारी तब तक अपने प्रिय पति या पिया के पास नहीं जाती जब तक कि वह हमारे द्वारा बुने रेम का जोड़ा धार - सँवार नहीं लेती, निचय वरना उसका प्यारा उसे अन्यथा स्वीकार ही नहीं करेगा।

संदर्भ: दशपुर (मंदसौर, मध्यप्रदेश), अभिलेख

उद्धरण: मध्यप्रदेशं नमामि - डॉ. भगवत्शरण उपाध्याय (पृ. क्र. 14)

भारत लगभग दो हजार वर्षों तक सूती वस्त्रों का प्रमुख निर्यातक रहा। हड़प्पा मोहेन.जो.दड़ो, चान्दू दड़ो नगरों के उत्खनन.अवशेषों में ऐसे अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं, जो सिन्धुवासियों के देश.देशान्तरों से व्यापारिक सम्बन्ध सूचित करते हैं। यह व्यापार जल और थल, दोनों ही मार्गों से होता था। विद्वानों का अभिमत है कि सिन्धु घाटी की मुहरों का प्रयोग व्यापारिक माल.सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु किया जाता रहा। इराक के एक प्राचीन स्थान में उपलब्ध, सिन्धु घाटी की मुहर लगा हुआ सूती कपड़े का एक टुकड़ा इस मत की पुष्टि करता है। व्यापारिक माल जब बड़े.बड़े बण्डलों में बांध दिया जाता था, तब सुरक्षा के दृष्टिकोण से उन पर गीली मिट्टी की पट्टी लगा कर, उस पर मुहर छाप दी जाती थी। सिन्धुवासी कलात्मक सूती तथा ऊनी वस्त्रों का निर्माण करते थे। प्रागैतिहासिक तथा पुरा.ऐतिहासिक, दोनों ही युगों

के अध्ययन से विशेषज्ञों ने यह अनुमान किया है कि आर्य औद्योगिक संस्कृति का विकास – उद्योगों का प्रसार. प्रचार – रोम, अरब, फारस तक; यूरोप तक भी हुआ। वैदिक, उत्तरवैदिक, मौर्य, शुंग, गुप्त, राजपूत, मुगल और आंशिक रूप से अंग्रेज शासन के काल. खण्डों में भारतीय व्यापार. व्यवसाय के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध होते हैं। भारतीय व्यापार. व्यवसाय में वस्त्रोद्योग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मौर्ययुगीन व्यापार. वस्तुओं में सोना. चाँदी, हीरा. मोती, रेशम. मखमल. कमखाब के वस्त्र, कालीन इत्यादि प्रमुख थे। शुंगयुग में आर्थिक जीवन. स्रोत के उद्योग धन्धों की उन्नत अवस्था थी। रेशमी, सूती तथा महीन मलमल वस्त्रों के निर्माण में देश सर्वतोभावेन संपन्न था। भेड़. बकरी पालन तथा उनके ऊन से वस्त्रनिर्माण उल्लेखनीय स्थिति में था। गृहोद्योग के रूप में कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, छपाई आदि समस्त हस्तशिल्प कलाएँ प्रगति पर थीं। राजपूत युग में – विशेषतः हर्षवर्धन के समय में – प्रस्तर, काष्ठ, बांस, धातु, वस्त्रों के माध्यम से शिल्प. कला की सर्वथा नवीन विधाओं का विकास हुआ। इनमें भी वस्त्रों के महीन प्रकार तथा रंगसाजी विशेष उल्लेखनीय थी। राजपूत शैली के चित्रों में वस्त्र बुनता हुआ जुलाहा, छपाई कार्य में संलग्न रंगरेज, आदि चित्र हस्तशिल्पमय जन. जीवन दर्शाते हैं। वस्त्रोद्योग वस्तुतः भारत का राष्ट्रीय उद्योग रहा है। इस उद्योग ने भारत को विपुल वैभव तथा दिगन्त यश दिलाया। इस उद्योग की प्रतिष्ठा राजा. महाराजाओं की प्रतिष्ठा से भी बढ़- कर थी। तभी तो यहाँ रानियाँ सूत कातती थीं। सम्राट् अकबर बुनकर. विद्या में निपुण थे, स्वयं बुनाई. कार्य करते थे और इसे अपना गौरव भी मानते थे। भारतीय शासकों ने प्रतिष्ठापूर्ण कार्य में स्वयं दक्ष एवं संलग्न होना गरिमापूर्ण माना। राजा जनक ने स्वयं खेत जोता और कृषक. राजा होना गौरव का विषय माना। इन कार्यों के माध्यम से उन्होंने सदैव स्वयं का प्रजा. पालक एवं प्रजा. रक्षक स्वरूप विस्मृत नहीं होने दिया। यह थी प्राचीन समय अर्थात् भारतीय व्यापार एवं भारत पर अंग्रेजों के आधिपत्य के पूर्व भारतीय वस्त्रोद्योग की स्थिति। तब भारतीय वस्त्रोद्योग उन्नत था, प्रतिष्ठित था, कलात्मक प्रशस्त वस्त्रों का निर्माता था, विश्व में इनका प्रमुख निर्यातक था। किन्तु भारत में अंग्रेजों के आगमन एवं आधिपत्य से वस्त्रोद्योग की चरम दुर्दशा हुई। अंग्रेजों ने भारत में प्रथमतः व्यापारी के रूप में प्रवेश किया। अल्प ही समय में उन्होंने सूरत से आगरा तक अनेक व्यापारिक केन्द्र स्थापित किये; हुगली और चटगाँव के व्यापारिक प्रतिष्ठानों, सूरत और बंगाल की व्यापारिक मण्डियों पर अपना अधिकार जमाया। और व्यापार के क्षेत्र में विशेषाधिकार प्राप्त कर भारतीय व्यापार को अतिशय क्षति पहुँचाई। वे प्रथम तो यहाँ का माल मनमाने तरीके से क्रय कर, उस पर 200.300 प्रतिशत लाभ प्राप्त करते रहे, धन संपन्न हुए। तदनन्तर उन्होंने अपने देश में माल तैयार कर भारत में विक्रय करना प्रारंभ किया। सत्रह सौ ईसवी के लगभग ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्वामियों ने इंग्लैंड में भारतीय वस्त्रों के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भारतीय वस्त्रोद्योग को इससे भारी हानी उठानी पड़ी। भारत में अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ा, वे शासक बन गए, इनकी नीति बन गई – भारत को निरुद्योग तथा दरिद्र बनाना। संक्षेप में कहें तो पूर्ववर्ती शासकों के संरक्षण में समृद्ध, उद्योगशील, वैभवशाली भारत देश – ‘सोने की चिड़िया’ – अंग्रेज शासकों की शोषण नीति से विपन्न, निरुद्योग, दरिद्र,

दीन.हीन और असहाय क्रेता देश बन गया। भारतीय उद्योग में सब से बड़ा उद्योग वस्त्रोद्योग था अतः व्यापार के बहाने इस देश से जो भी धन गया, उसका अधिकांश भाग वस्त्र की कीमत के रूप में विदेश गया। देश में विदेशी माल के दलाल बनकर बंगाली जमींदार तथा गुजराती व्यापारी घनाढ्य हुए। गुजरात के व्यापारियों ने स्वाभाविक रूप में देश में मिलें स्थापित करने का विचार किया। और बम्बई, अहमदाबाद, सोलापुर आदि अनेक स्थानों पर कपड़ा.मिलों की स्थापना हुई। जन.साधारण ने इसे राष्ट्रीय प्रगति का प्रतीक माना किन्तु वस्तुतः प्रायः मिल.मालिकों ने अपना स्वार्थ ही साधा। आंग्ल युगीन भारत में यंत्र.युग से प्रभावित आधुनिक शहर विकसित हुए। इन शहरों में बड़े.बड़े यांत्रिक कारखाने स्थापित हुए। इन कारखानों ने तेल, बाष्प और विद्युत् की सहायता से प्रभूत मात्रा में निर्मित माल की आपूर्ति सुलभ, सुगम तथा सस्ती बना दी। गाँवों का कच्चा.माल, कार्य.कुशलता, मानव.श्रम आदि शहरों में समाते गए। ग्रामीण हस्तशिल्प उद्योग.हुनर का ह्रास तथा शहरी यांत्रिक उद्योगों का विकास होता चला गया। प्राचीन हस्तशिल्प निर्मित कलात्मक माल का स्थान विदेश आयातित अथवा बाजार में उपलब्ध यंत्र.निर्मित माल ने ले लिया। गाँवों का शोषण कर शहरों ने अभूतपूर्व किन्तु विकारग्रस्त वैभव.विलास पनपाया। और शहरी सभ्यता के स्वरूप में एक सर्वथा नवीन मानव.संस्कृति का विकृत अधकचरा प्रकार आविर्भूत हुआ, जो विदेशी प्रभाव से परिपूर्ण था। हस्तशिल्प वस्त्रोद्योग, जो प्राचीन समय में अत्यन्त उन्नत अवस्था में था, जिसमें निर्मित कलात्मक वस्त्रों की माँग न केवल देश में अपितु विदेशों में भी थी, उक्त परवर्ती समय में दम तोड़ने लगी। यंत्रों के साथ ही साथ विविध आधुनिक विधियों का आविष्कार हुआ। ये आधुनिक विधियाँ सरल थीं; इनकी उत्पादन.क्षमता अधिक थी; इनमें उत्पादन लागत भी कम थी। इससे ठीक विपरीत पारंपरिक हस्तशिल्प कार्य की प्रक्रिया जटिल थी; उत्पादन.क्षमता कम थी; और लागत भी अधिक थी। अतः अर्वाचीन यांत्रिक विधियों से निर्मित परिष्कृत वस्त्रों की माँग बाजार में बढ़ती गई और पारंपरिक हस्तशिल्प विधि से मानव.निर्मित कलात्मक वस्त्रों की माँग घटती गई। पारम्परिक हस्तशिल्प वस्त्रोद्योग पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। इसकी अवनति होती गई। हस्तशिल्पियों का जीवन.यापन समस्याग्रस्त होता चला गया। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती गई। साथ ही शिल्पियों को अपने कार्य में अपेक्षित ठप्पे (काष्ठ निर्मित); प्राकृतिक रंग (वनस्पति निर्मित) इत्यादि कच्चा माल प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। इनके द्वारा निर्मित वस्त्रों को, प्रचार.प्रसार की समुचित रूप में व्यवस्था न होने के कारण, उचित बाजार मिलना भी बन्द-सा हो गया। शिल्प संस्कृति का क्रमशः ह्रास होता गया। वैश्वीकरण के वर्तमान युग में हस्तशिल्प वस्त्रोद्योग की प्राचीन प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने की संभावनाएँ प्रबल हो रही हैं। घरेलू उपभोक्ता, आय में वृद्धि एवं फैशन के प्रति बढ़ती रुचि के कारण इस प्रकार के वस्त्रों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। इन वस्त्रों की गुणवत्ता, अपेक्षाकृत कम कीमत, कलात्मक विविधता आदि विशेषताएँ विश्व बाजार के सर्वथा अनुकूल हैं, किन्तु वैश्विक बाजार में अपनी इन विशेषताओं के साथ कायम रहना सुदृढ़ वित्तीय आधार पर निर्भर है। और सुदृढ़ वित्तीय आधार हेतु समुचित वित्तीय प्रबन्ध अपेक्षित है। उत्तम वित्तीय प्रबन्ध होने पर उसके परिणाम भी

अपेक्षा के अनुरूप उत्तम होते हैं।

संदर्भ:-

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र पर श्रीमूला व्याख्या: भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली-वाराणसी 1990 - भाग - 1 पृ. क्र. 136
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र पर श्रीमूला व्याख्या: भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली-वाराणसी 1990 - भाग - 1 पृ. क्र. 279
3. कौटिल्य अर्थशास्त्र पर श्रीमूला व्याख्या: भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली-वाराणसी 1990 - भाग - 1 पृ. क्र. 109-110
4. मध्यप्रदेशं नमामि: डॉ. भगवत्शरण उपाध्याय: अनिता प्रकाशन, उज्जैन 1980 पृ. क्र. 14
5. भारतीय संस्कृति और कला: वाचस्पति गैरोला: उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 1973 पृ. क्र. 110
6. भारतीय संस्कृति और कला: वाचस्पति गैरोला: उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 1973 पृ. क्र. 112
7. कालेलकर ग्रंथावली (भाग-6): आचार्य श्री काकासाहेब कालेलकर ग्रंथावली प्रकाशन समिति, अमदाबाद, 1986 - पृ. क्र. 510, 512, 514: 520
8. भारतीय संस्कृति और कला: वाचस्पति गैरोला: उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ 1973 पृ. क्र. 589-590

103, शिवाजी पार्क कॉलोनी,
देवास रोड़, उज्जैन (म.प्र.)

जहाँकदर चुगताई की ड्रामा निगारी

डॉ. मुबशिशरह अरह अंसारी
उच्च.श्रेणी. शिक्षक

भोपाल हमेशा इलम व अदब का गहवारा रहा है! खास तौर से उर्दू अदब की जो खिदमात इस सर जमीन में अंजाम दी गई हैं, वह बेमिसाल है! जहाँ भोपाल ने शायरी और नसर की मुखतलिक असनाफ में अपना मुकाम तसलीम कराया वहाँ ड्रामा के मैदान में भी इसकी खिदमत नज़र अंदाज नहीं की जा सकती।

ड्रामा एक फन है यू तो इसका ताल्लुक अदब से भी है मगर इसका ज्यादा करीबी रिश्ता थेयटर और सटेज से है।

ड्रामा निगार कहानी को किरदारो के ज़रिए पेश करने के लिए मवाद को एक खास तरतीब से पेश करता है। जिन्दगी तसलसुल का नाम है और हम किसी खास मुक़ाम से कहानी शुरू कर सकते हैं। मगर पसमंजर के बगैर कहानी अधुरी और बेबुनियादी होती है। ड्रामा के इख्तेसार की वजह से इबतेदाई वाकैयात का पसमंजर ड्रामे की हेयत् में शामिल तो नहीं मगर इस से अलग भी नहीं। ड्रामा निगार इबतेदाई वाकैयात के साथ ही पसमंजर को जल्द से जल्द वाजेह कर देता है। इबतेदाई वाकैयात से ड्रामा शुरू होता है। किरदार वाकैयात और कशमकर अपनी इबतेदाई शकल में जाहिर होते हैं। फिर वाकैयात उलझते हे। कशमकश बढ़ती है। किरदार अपने अमल से अपना असल तारुफ कराते है। तसादूम शुरू होता है इसके बाद वाकैयात नुक्तए उरुज पर होते है। इबतेदा में फतह शिकस्त और कामयाबी और नाकामयाबी का अन्दाजा नहीं होता। मगर फतह की उम्मीद और शिकस्त के खौफ से तमाशाई तज़बज़ब की हालत में ड्रामाई अमल के साथ ज़जबात के इन्तेहाई बुलन्द दर्जे पर पहुँच जाते है। यह कशमकश और तसादूम इन्फेरादी, इज्तेमाई माददी, रूहानी, जाहिरी, बातेनी, जिस्मानी और नज़रयाती हो सकता है। तसादूम, ज़जबात की कुव्वत में इजाफा करता है! ड्रामा के आखिर में फतह व शिकस्त के आसार नुमायों होते है। वाकैयात को रूख और सिमत मिलते है। तहयूर व तजस्सूस की फिज़ा में नरमी पैदा होती है, फिर सब गुतथियाँ सुलझ जाती हे। और सुकून की केफियत तारी हो जाती हे। ड्रामे की हेयत मुकर्रर नहीं की जा सकती हर ड्रामानिगार अपना तख्लीकी शऊर और ज़रूरत के मुताबिक ड्रामे को हियत देता है। और

नुकतए अरुज, आगाज, दरमियॉनया अनजाम से कबल हो सकता है, ड्रामानिगार वाकैयात को ईजाज व इख्तोसार, तजाद और ड्रामाई तंज से दिलचस्पी और फिक्र अंगेज बनाता है।

“ड्रामा निगार की पाबंदियाँ

ड्रामे के स्टेज से ताअल्लूक ने ड्रामा निगार पर बहुत सी पाबनदियाँ आईद की है। अरस्तु ने ड्रामे के लिए वहदते अमल ओर वहदते जमों को जरूरी किरार दिया। वहदते अमल का मकसद था कि ड्रामा का प्लाट इकेहरा और मुकम्मल हो। इसमें जुज्वी प्लाट औ जबात की रंगारंगी ना हो। प्लाट में किस्सा इबतेदा से अंजाम तक फितरी तरीके से सफर करने और उसमें एक ही जज्बात को पेश किया गया हो। वेहदते जमां के बारे में अरस्तु का खियाल था के किस्से में पेश किए गए वाकैयात तवील जमाने मे न बिखरे हों बल्कि वह सूरज की एक गरदिश के वक्त में ही महदूद हों। मुखतलिफ नाकैदीन ने अरस्तु के नजरये को मुखतलिफ मफहूम दिए अरस्तु ने वहदते मकां का तसव्वूर पेश नहीं किया मगर यूनानी ड्रामों में वहदते अमल और वेहदते जमों की पाबंदियाँ और इसकी मौजूदगी से वहदते मकां वजूद मे आई। जहां ड्रामे के फन ने ड्रामे निगार पर पाबनदियां आईद की है वहीं उसे कुछ सहूलियात भी मुहय्या की है। इन सफूलियात को ड्रामाई हरवे और मजाहेमाते कह सकते है। यह आरजी और हनगामी हो सकती है। चूँकि ड्रामा स्टेज पर मेहदूद वक्त मे पेश किया जाता है। इसलिए ड्रामा निगार बहुत से वाकैयात और हालात मे से कुछ वाकैयात और हालात का इन्तेखाब करता है। और इनको एक खास रबत और तसलसुल से पेश करके मुकम्मल जिदगी का शऊर बखशता है। किदार अपनी बात मे ऐसी जबान इस्तेमाल करता है जो आम जिदगी से मुखतलिफ होती है। इसमे बेजा तकरार और तवालत नहीं होती वह ऐसी जबान इस्तेमाल करते है जिसे तमाशाई जल्द समझ लेते है।

स्टेज पर जो वाकैयात पेश आते है, उनकी तरतीब में इस बात का खयाल रखा जाता है कि तमाशाई उनसे पूरी तरह वाकिफ रहे। आम जिन्दगी के वाकैयात इस तरह पेश नहीं आते ओर दूसरे लोग उनसे वाकिफ नहीं होते।

उर्दू ड्रामे की रिवायत खासी कमजोर रही है। आज भी हमारा स्टेज दूसरी जबानों के मुकाबले मे बहुत कमजारे नजर आता है। इसकी एक वजह तो यह मालूम होती है कि अग्रेजी ओर दूसरी कई जवानो के मुकाबले मे उर्दू अदब की उम्र कुछ कम है। मंजूम दास्तानो के नमूने तो सोल्हवी और सतरहवी सदी से मिलने लगते है। लेकिन उनके साथ-साथ उर्दू ड्रामे से मुतालिक कदीम रिवायत अभी तक सामने नहीं आई अगरचे अमानत की इन्द्र सभा” को उर्दू ड्रामे का इबतेदाई नमूना काह गया है। इन्द्रसभा 1852 में लिखी गई। इसमे कोई शक नहीं की “इंद्रसभा”अपने दौर की उमदा नमूना है।

“ठंद्रसभा” से बीसवी सदी के दूसरे दहे तक दो किस्म के ड्रामे सामने आए। एक तफरीही और तिजारती मकासिद के ड्रामे ओर दूसरे इस्लाही ड्रामे “इन्द्रसभा” से आगा हशर के ड्रामों तक उर्दू ड्रामे ने फन्नी तौर पर मनाजिल तो ते की लेकिन उन पर तिजारती मकासिद का गलबा रहा। मजमूर्ई तौर पर इन ड्रामों मे वाकफियत पसंदी, नफसियाती गहराई, फिकरी अज़मत ओर स्टेज का वह तवाजून नही है जो ड्रामें में होना चाहिए। ड्रामें का स्टेज से ताआल्लूक लाजिम व मलजूम की हेसियत रखता है ड्रामें के वाकेयात और मनाज़िर ऐसे होना चाहिए जो आसानी से स्टेज पर पेश किए जा सके। स्टेज के तकाजे” स्टेज की तरतीब यानी इसकी साख़त बदलते हुए मनाज़िर की सेटिंग, जब व जीनत परदे, मोसिकी लिबास, मेकअप रोशनी और मुखतालिक रंगीन शेडस या सायों तक महदूद नहीं है।

जहांक़दर चुग़ताई ने दीगर असमाफ़े अदब के साथ ड्रामें पर भी खूसुसी तवज्जूह दी। उन्होने गज़ल, गीत माजहियां, मजामीन, अफसाने के साथ ड्रामें लिखे। रेडियों के लिए काफी ड्रामें लिखे। उन्हें उदाकारी और हिदायत कारी से भी दिल चस्पी रही। सन् 1935 में जहाँक़दर चुक़ताई ने इमतेयाज़ अली ताज के “चचा छक्कन” में एक बच्चे का रोल अदा किया था। और यह ड्रामा भोपाल में स्टेज हुआ था।

जहां कदर चुक़ताई के ड्रामों में मौजूआत का तनव्वे मिलता हैं। मिलाप उनका पहला ड्रामा है जो सन् 1943 में लिखा गया। यह तीन ऐक्ट पर मुशतमिल है। उनके दूसरे अहम ड्रामों में “तिज़ोरी के आंसू”, “झॉसी की रानी”, “कमलापती”, “दिल्ली की आखरी शमा”, “धुँआ”, “उजड़े नवाब”, “धरती” और आकाश”, “सिकन्दर का खुवाब” “हिन्दुस्तान” शाइर बदल गया है” मिट गए हंसी हंसी में “हमने मोटर सायकिल खरीदी” शामिल है।

जहांक़दर चुग़ताई ने 1943 में “मिलाप ड्रामा” भी ग्वालियर के कालिज में खेला जो बहुत कामयाब रहा और उसके गाने भी जहाँक़दर चुग़ताई ही ने लिखे थे। उन्होने मुझे बताया कि हमारे एक दोस्त थे अब वह मुम्बई मे है। राज रतन के नाम से उन्होने यहां दो फिल्में भी बनाई है। उन्होने इसका मियूज़िक भी दिया था, उसके सारे गाने डायलाग भी लिखे थे। “तिज़ोरी के आंसू” का मौज दुर्वाइयो की बलेक मेल से मुतालिक है ओर जहां क़र चुग़ताई का पहला ड्रामा है जो सैफिया कालेज ने खेला गया।

“इन्केलाव” इसमें एक शायर की कहानी है जो अपने माहौल से बाखबर नहीं रहता है।

“झॉसी की रानी” और “कमला पती” यह तवील ड्रामें है जो हमीदिया गर्ल्स स्कूल में खेला गये। “हिन्दुस्तान यह जेगराफियाई यक बाबी ड्रामा है इसके किरदार गंगा, जमना, हिमालय और गंगा पुत्र थे यह ड्रामा 20 मिनट का था यह ड्रामा इतना मक़बूल हुआ कि तकरीबन सब ही मदारिस मे यह खूब खेला गया ग्वालियर में भी यह ड्रामा खेला गया। 1942 से 1965 तक कई बार यह ड्रामा मुखतालिफ जगह स्टेज किया गया।

“धदल्ली की आखरी शमा”

तारीखी ड्रामा है इन ड्रामो पर गहरी नज़र डालने पर अच्छी तरह वाजेह होता है कि इनका मुशाहेदा बहुत बारीक है खुसूसन तन्जीया मुकालमे में इस्तेमाल करने में इनको महारत हासिल ।

“उजड़े नबाब”, मजाहिया ड्रामा धरती और आकाश यक बाबी ड्रामा है, जिसमें कशमाकश को मोजू बनाया गया है। “शायर बदल गया है” यह एक एकट ड्रामा है इसमें बताया गया है कि एक आशिक शायर आपने माहौल के असर से न बच सका यह मज़हिया ड्रामा है, सेफीया कॉलेज में खेला गया हवा महल रेडियो स्टेशन से भी नश्र हुआ

“मिट गए हंसी-हंसी में” यह भी यकबारी मज़हिया ड्रामा हैं घर पर माल लाकार बेचने डाकू आए लेकिन घर वाले छुरी-चाकू का ऐजेंट समझे यह ड्रामा भी रेडियो स्टेशन भोपाल हवा महल से नश्र हुआ “सुन्दरचाची”, “धुआं” और मिलाप”उनकी मशहूर और बेहतरीन तख्लीक़ात है। जिनकी वजह से सिनफे अदब में जहाँक़दर चुगताई का नाम हमेशा जिन्दा रहेगा। नमूने के तौर पर अब चंद ड्रामों के मकालने पेश किए जाते हैं।

ड्रामा सुन्दर चाची

सुन्दर चाची” जहाँक़दर चुगताई का मकबूल ड्रामा है जिसमें उन्होंने तालिमें बालिगान के मौज़ पर अपने खियालात का इज़हार किया है। यह ड्रामा एक मुतावस्त तबके की जिन्दगी पेश करता है। दो एकट ड्रामा है हमीदिया गलस स्कूल के सालाना जलसे में खेला गया था। मुजल्लाह सेफिया में शाय हुआ। एक मुतावस्त तबके में मनोहर और शान्ति को मियाँ बीबी की हेसियत से पेश किया गया है। सुन्दर चाची, मनोहर की माँ और शान्ति की सास है। सुन्दर चाची तालीम को अहेमियत देते हैं। मगर उनकी बहु तालीम याफता नहीं है इसलिए सुन्दर चाची अपनी बहु से झगड़ा करती रहती है।

मनोहर एक मिल मजदूर है जब मिल बंद हो जाती है और वह बेकार हो जाता है तो इसकी बीबी जो किसी कदर दस्तकारी से वाकिफ है, अपने खाविंद को समझाती है कि मैं महनत मजदूरी करूँगा इस मौके के चंद कलमे पेश है।

शान्ति – क्या बात है आज आप इतने उदास क्यों नज़र आते हैं।

मनोहर – कुछ नहीं शान्ति कोई खास बात नहीं बस यूँ ही ज़रा थकसा गया हूँ। (खुद को संभालते हुए) आज काम भी बहुत

शान्ति – आप बेकार मुझसे झुपाने की कोशिश कर रहे हैं। भगवान के लिए बताइए क्या बात है, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगी-

मनोहर – कुछ नहीं कुछ भी तो नहीं थड़े दिन में सब ठीक हो जायेगा।

मुलाज़मत का क्या भरोसा ओर फिर मेरी टेम्परारी सर्विस थी – अब अभी आता हूँ।

शान्ति – जी नहीं – आप आराम कीजिए अब मेरी बारी है–

मनोहर – तुम ओर सर्विस (हकारत आमेज लेहजे में) आहा अहा हम जैसे सेकड़ो ग्रेजुएट जुतियों चटखाते फिरते है और फिर मैं यह कब पसंद करुंगा कि.....

शान्ति – आप तो बड़े प्रोग्रेसिव **Prograssive** बने फिरते थे कॉलेज में अब क्या हो गया – मनोहर यह घर सिर्फ तुम्हारा नहीं मेरा भी है– मैं तो बहुत दिनों से सर्विस की तलाश में थी– मगर आज मेरी मतलब की यह देखो (अखबर उठाकर) सरकारी ज़री सेंटर में दो सो रूपयें मेरे लिए तो बहुत हैं। ना बी.ए. ना एम.ए. फिर समाजी सेवा का काम– मेरी कई बेहनें आज बेकार बैठीं तेरी मेरी बुराईयों में अपना वक़्त गवां देती हैं। एक मर्द कमाता है दस खाने वाले।

मनोहर – मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हें सुख.....

शान्ति – इसका मतलब यह हुआ कि आप मुझे..... अपना नहीं समझते मेरा तो बस चाची से दम निकलता है। अच्छा मनोहर तो मैं ज़रा हो आऊँ।

मनोहर – फिर भी जाने क्यों मुझे तुम्हारा सर्विस करना.....

शान्ति – पुरानी बातों की नए ज़माने में क्या जरूरत हो सकती है–

इस ड्रामे में आज के मसाइल को बड़ी खूबी से नुमाया किया गया है– सुन्दर चाची का किरदार नुमायों किरदार है जिससे ड्रामे के इरतेका में मदद मिलती हैं

Refrence-

1. नकशे कलक
2. ज़हॉकदर चुगताई शखसियत और अदबी खिदमात
3. उर्दू डामें के तारिख व तन्कीद
4. शखसियात।

‘‘जहाँकदर चुगताई की शायरी’’

डॉ. मुबशिरह अरह अंसारी
उच्च.श्रेणी. शिक्षक

जहाँकदर चुगताई वे नस्र के मुखतलिक मैदानों में अपनी फनकारी के जोहर दिखाने के साथ-साथ नज़म के मैदान को भी अपनी फिक्र व फन की जोला निगाह बनाया अपने इबतेदाई ज़माने में जहाँकदर चुगताई को जो शेरी अदबी माहोल मिला था वह तरक्की पसंद तेहरीक के इन्तेहाई फरोग का ज़माना था। हमारे बड़े-बड़े शायर खियाती शायरी से अलग हट कर अपने अहद के अहम मालूमात अहम मौजूआत और मसाइल पर नज़मे कह रहे हैं। इस ज़माने में शायरी का जोर वतन, वतन की आज़ादी और अवामी मसाइल पर था चुनाचे जहाँकदर चुगताई ने भी यही रविश इखतेयार की और क़ोमी और अवामी जिदगी से मुतालिक मुखतलिफ मौजूआत पर कामयाब नज़में कहीं मुताले की असानी की गर्ज से उनकी शायरी को दर्ज ज़ेल हिस्सों में तक़सीम किया जा सकता है।

- 1- कौमी नज़में, मौजूआती नज़मे
- 2- गीत
- 3- बच्चों की नज़मे
- 4- ग़जल गोई, कतआत, रुबायात और दोहे व भजन

क़ोमी शायरी

1942 को कोइट इंडिया मूवमेट के बाद से जहाँकदर चुगताई ने क़ोमी गीत लिखना शुरू कर दिए और आखिर उम्र तक यह सिलसिला जारी रहा।

1942 ही में उनको यकीन हो गया था कि आज़ादी के बहुत दूर नहीं और जब आज़ादी आई तो उनका यह कहना कि हमारे राज में कमज़ोर पर ना हो बेदाद इस बात की दलील है कि आज़ादी के बाद वह उस मुलक को जिस तरह का देखना चाहते थे वह

उनके नज़दीक उनका 1942 का ख़्वाब था। जो आज़ादी के 67 साल बाद भी इस तरह पुरा ना हो सका जिस तरह वह चाहते थे। चुनावे उन्होंने महसूस किया के अगर कोम और वतन की मोहब्बत दिलो में पैदा हो जाए तो शायद हिन्दूस्तान उनके ख़्वाबों का महल बन सकता है।

एक चीज़ और ज़हाँकदर चुगताई के कौमी गीतों में मिलती है जिसका एक मजमूआ हिन्दी में “वतन के गीत” के नाम से शाय हो चुका है कि उन्होंने वतन से एक महबूबा की तरह प्यार किया है ऐसा नहीं कि उनके कौमी गीतो को सराहा ना गया हो।

हिन्दुस्तान के पहले जश्न ए आज़ादी पर जो स्कूलों और कालिजो की तरफ से पहली सालगिराह मनाई गई इसमे शहर के तमाम स्कूलों और कालिजो की तरफ से प्रभात फेरियाँ निकाली गई।

उनमें जो गीत सबसे ज्यादा पसन्द किया गया वह ज़हाँकदर चुगताई का गीत था इसके अलफाज़ यह थे।

देंगे लहू वतन में उजाला करेंगे हम

झण्डा तिरंगे का ऊँचा रखेंगे हम

लेकिन प्रभात फेरियों में गाने वाले और सुनने वाले लोग जानते थे कि इस गीत का लिखने वाला कौन शख्त है।

इस तरह 1957 में देहली में जब सद साला जश्ने आज़ादी मनाया गया तो इस जश्ने आज़ादी के जलसे में जिसके सदर पंडित नेहरू थे महारानी लक्ष्मी बाई कॉलेज के छात्रो ने जो विक्रम यूनिवर्सिटी की तरफ से वहाँ मदरू कि गई थी उन्होंने इस जलसे में जो कोमी गीत पढ़ा और जिसकी तारिफ ख़ुद पंडित जी ने की और देहली के अख़बारात ने की वह गीत ज़हाँकदर चुगताई ही का लिखा हुआ था। लेकिन यह किसी को मालूम ना हुआ कि इसका गीतकार एक नो जावान ज़हाँकदर चुगताई ही था। इस गीत के अलफाज़ यह थे-

आजाद थे आज़ाद है, आज़ाद रहेंगे

इस तरह लाल परेड मैदान में एक बहुत बड़ी यूथ कान्फरेंस मुनअकिद हुई थी जिसमें बंगाल की किसी यूथ टीम की तरफ से एक गीत गाँधी जी पर गाया गया था जिसके अलफाज़ थे।

“जाग रही है नर नारी में तेरी लगाई-ज्वाला यह सब जोत है तेरी”

इसमें भी गाने वाले और सुनने वाले गीतकार का नाम नही जान सके- इस

गीत का भी गीतकार वही नौजवान जहाँकदर चुगताई था।

इस तरह जहाँकदर चुगताई को 1957 में यूथ काँग्रेस की तरफ से उस वकत का गवर्नर श्री पाठसकर साहब ने एक बहुत बड़े जलसे में सिपास नामा भी पेश किया था और इसी तरह पी. सी. लाल साहब एयर फिलड मार्शल ने जहाँकदर चुगताई को उनके एक गीत पर तारिफी खत भी लिखा था।

“जरा और ऊँचा, जरा और ऊँचा
यहाँ तक कि बन जाए फलक का सितारा”

सयद मोहमूदुल हुसैनी साहब एडिटर नदीम अपनी किताब “शखसियात” में जहाँकदर चुगताई के कोमी गीतों के बारे में फरमाते हैं कि :-

उनके कोमी गीतों में उर्दू और हिन्दी के हसीन तरीन इमतेजाज़ के अलावा लोक गीतों जैसी सादगी भी मौजूद है।

चुगताई खामोशी के साथ यह खिदमात अनजाम देते रहे वह ऐसे रिवयती वतन परसत नहीं थे जिसके यहाँ देश भक्ती अलफ़ाज की शोबदा गिरी तक महदूद हो, और जिसके यहाँ खुलूस और रुह का फक़दान हो, इसके सीने में हुब्बूल वतनी की जो मशाल फिरोज़ाँ है उसने वतन के हर ज़र्रे को रोशन और महबूब बना दिया और वह खाकसारी में इतनी जाज़बियत ऐसी कशिश और इतनी दिल आवेज़ी महसूस करता है जो निगाराने अतिशे रुख में हो सकती है।

वतन परस्ती का एक सबक़ कौमी झण्डे से मुहब्बत करना भी है और कपड़े का यह छोटा सा टुकड़ा कौमी आन बान का मज़हर होता है। यही बजह है कि परचन को सर बुलन्द रखने की खातिर लोग जान से खेल जाते हैं। चुगताई के यहाँ कौमी झण्डे से मुतालिक़ जो गीत मिलते हैं उनमें भी उसका खूलूस और ज़ब्बा नुमायाँ हैं। बतोर नमूने चंद मुखतालिक़ गीतो के इक्तेबासात पेश किए जाते हैं।

“किसी की भी आँख से आँसू ना ढलेक
और मुस्कुराती रहे नम्र पलकें,
लहू अपना अपने वतन के लिए है
यह फूल अपना चमन के लिए है,
तिरंगा तेरे साय में वतन को गुलिस्ताँ करदें,
सितारों को उठा लाँए ज़मी को आसमाँ करदें,
हंसी फूलों से लेकर बाँट दें ग़मगीन लागों में
चमक बिजली की भरदें डुबडुबाई सर्द आँखें में,

मसरत ऐश, व इशरत इस ज़मीन पर जवेदों करदें,
 यह आज़ाद भारत की सच्ची कहानी
 यह वीरों की ताकत की जिनदा कहानी
 जमाने में अपना फसाना रहेगा
 हुआ क्या जो दुश्मन जमाना रहेगा,
 बढ़े आओ तुम बढ़े आओ तुम
 हिमालय से ऊँचा इरादा हमारा,

जहाँकदर चुगताई ने कोमी मौजूआत के अलावा समाजी मौजूआत पर भी नज़मे
 कही है जिन में “दो फूल” और “कौन बताए” क़बिले ज़िक्र हैं।
 जहाँकदर चुगताई ने कोमी मौजूआत के अलावा समाजी मौजूआत पर भी नज़में कहीं,
 जिन में “दो फूल” और “कौन बताए” क़बिले ज़िक्र है।
 “मौजूआती नज़में”

दो फूल का बुनयादी मक़सद खानदानी मनसूबा बंदी है और शायर यह पैग़ाम देना
 चाहता है कि ज्यादा बच्चों से बहतर है कि घर में दो बच्चे ही हों ताकि वोल्देंन अपनी
 जिम्मेदारी के साथ उनकी परवरिश कर सकें।

नज़म बयानिया आनदाज़ में लिखी गई है और काफिया बंद अशार हैं वाकिये
 की तरह एक मंजर पेश किया गया है अगर इस मंजर को तमहीद में बयान कर दिया
 जाए तो नज़म का लुतफ कमज़ोर हो जाएगा जो लुतफ इसके पढ़ने से हासिल हो
 सकता है।

आखिर में शायर ने अपना मक़सद का खुलासा करते हुए यह इशारा दिया है कि
 घर में बच्चों की ज्यादा तादाद इन कलियों की तरह होती है जो मज़ार पर चढ़ाई जाती है
 और अगर घर में दो खुशहाल मुस्कराते हुए फूल हों तो वह घर बहार की सूरत
 इख्तियार कर लेती है।

“कोन बताए” उनवान से जहाँकदर चुगताई ने एक बहुत जज़बाती नज़म लिखी
 है - जिन में दो सहेलियों की गुफ्तगू नज़म की गइ है - पहली जो जवानी में कदम
 रख रही है अपने जज़्बात इस तरह बयान करती है -

“उमड कर जो छ जाएं सावन के बादल मचाते हैं मन में अनोखी सी हलचल बादल”
 यह जी चाहता है घटाओं को छुल्लू
 धनक के में रंगीन झूले पे झूल्लू
 अभी तक ना ओढ़ी थी मैनें चंदरया।

मुझे लादी बाबा ने अब एक फरया
 ग्वालन यह कहती है आई जवानी
 जवानी की क्या यह होती है निशानी
 मेरे तन को कपड़े जकड़ने लगे हैं
 यह कनगन कलाई पकड़ने लगे हैं
 बगैरा-बगैरा

पहली सहेली की इस तरह तवील गुप्तगू में इस किस्म के अशार में जज़्बाती केफियत की बहुत अच्छी अक्कासी गई है और ज़बान भी ऐसी इस्तेमाल की गई है जो खुद भी जवानी की सरहदों में दाखिल हो रही है। पहली सहेली की तफसिली गुप्तगू सून कर वह भी जज़्बाती केफियत में मुबतिला हो जाती है और मुख्तसिर मकालमें में इस किस्म की बातें कहती हैं

जो तू सोचती है वही मैं सोचती हूँ
 जहां थी मैं पहले वहां अब नहीं हूँ।
 अपना मिल के इसका उपाए करेंगे
 यह बुढ़ापे तो सोते है सोते रहेंगे

गज़लयात के अलावा जहांकदर चुगताई ने कतआत रूबाइयात और दोहे भी कहे हैं।
 “कतआ”

वह आया जहां में हुई रोशनी
 मिली जिंदगी को नई ताजगी
 यह रोशक तो आलम में पहले ना थी
 ज़मी नेमत-ए-अहमद (सल.) सुनाने वाली
 फलक भी सितारे लूटाने लगा
 मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा

जनाब जोए अन्सारी साहब ने की जहांकदर चुगताई की अदबी खिदमात को सराहते हुए उनके कोमी गीतों पर खास तौर पर अपनी गिरांकदर राय का इज़हार इस तरह फरमाया है।

"I have been keeping pace with the literary out puts of Jahan Qadar Chughtai which have apperared from time to time in the literary papers and magazines of our country. His humourous and satiric. Pecies that embellished the pages of Nadeem Daily, Bhopal for a long time are still looked upon as very original.

He is also a poet of a very high calibre and his poems on nationatistic theme have a great appear. His excellence in Urdu prose and poetry has already been acknowledged by the discerning few. A public address presented to him in 1957 July signed by the then Governor of Madhya Pradesh Shri Patasakar, in appreciation of his lyrics written in praise of our country. His contribution in fine, to Urdu literature are not only orginal but are also of and research value.

“प्रोफेसर अहमद ने अपने एक अंग्रेजी ज़बान के मज़ामीन”

Chughtai a Great force in Literature मतबूआ May Mirror 1971 में जहाँकदर चुग़ताई की कौमी मन्ज़ूमात और माजाहिया व तनजिया तख़लिक़ात और ड्रामा निगारी के बारे में तहरीर किया।

Jahan Qadar Chughtai belongs to the race of unrewarded geniuses. In the past few years. I have seen him through and through.

My frindship with chughtai began in the staff room one fine morning. Soon I came to know that my friend is a poet, play wright, Journalist, essayist connoisseur and what not.

By now, I have read every thing that he has written. It is not an exaggeration to say that his versatile genius makes him peerless in the intellectual firmament of Bhopal.

(Bombay may 1971 Mirrore)

Le Stylest phomme, is apt and befitting in his care. His writing reflects his paradoxical personality and humorous temperament as a man, he is blessed with the Franciscan heart. He lives for other and finds a great deal of pleasure in the happiness of others.

It is his board humanity which has given him a keen perception of human nature, making him entirly an inveterate enemy of Nain-glory and social snobbery. Frankly speaking, he has no patience with snobs and all such people who assume an air of false greatness.

The first and foremost aim of his life is to crusade against social evils and hypocrisy of every description, satire is his weapon and invigoration.

"humour his shield".

Reference :-

1. नक्शे क़लम
2. जहाँकदर चुगताई शखसियत और अदाबी खिदमात (डा. मुबशिशरह अरब अलखजाराजी)
3. खय्याम की महफिल
4. शगुफा हैदराबाद

Analysis of export market of food products in india

RAHUL JAIN

Dept. - Commerce

Research scholar - Barkatullah University

ABSTRACT

Agriculture is the backbone of Indian economy as the economic development of this country is very much relied upon the agricultural activities. Agriculture provides not only food for the nation's population but also provides opportunities for employment generation, saving, contribution to industrial goods market and earning foreign exchange. Marketing of agricultural products means a series of activities involved in the movement of agricultural produces from the point of production to the point of consumption. Agriculture production system in India is characterised by small scale production and seasonality of production and demand and many more.

Indian food processing industry is primarily export oriented. With the export growth rate of around 15%, its share in the international market is only 1.7%. Again, only 2% of the total food produced in India is processed for further consumption. This is a matter of concern that despite massive potential, this sector remains grossly underutilized. Against this background, the present paper aims to study the export prospect of Indian Food processing industry laying focus on its trends, the problems it faces and possible remedial measures to achieve its high potential. Growth rates have been calculated following the best fitted trend. Revealed Symmetric Comparative Advantage Index has been used to measure the Comparative advantage of Indian processed food export.

1. Introduction

Liberalization of trade resulted in a rapid transformation of the export and import situations in the developing countries (Aksoy and Beghin, 2005). Specially, W.T.O brought the opportunities for countries to grow and realize their export potential. India's approval of the Agreement on Agriculture resulted in change in levels of comparative advantage for various agricultural commodities exported in the global markets (Shinoj and Mathur, 2008). Structural changes in the composition of agricultural trade were also observed in the world market (Jongwanich, 2009). Traditional food export has been gradually replaced by processed food export. India is the second largest producer of food, just behind China. Earlier, the activities of food processing sector in India were mainly limited to the food preservation, packaging and transportation. However, over the years, with the emergence of new markets and technologies, the sector has extended its scope. It has started producing many new items like ready to eat food, beverages, processed and frozen fruit and vegetable products, marine and meat products, etc. It also includes establishment of post-harvest infrastructure for processing of various food items like cold storage facilities, food parks, packaging centers, value added centers, irrigation facilities and modernized abattoir. Presently Indian Food Processing Industry mainly consists of Dairy, Fruits and Vegetables, Grains and Cereals, Fisheries, Meat and Poultry, consumers food items etc. Among these, Dairy products have the largest market share of about 37%. With the rapid growth of the economy, shift in the consumption pattern from cereals to more varied products like milk, vegetables etc. have resulted in the development of food processing industry in India. According to the eleventh five year plan, food processing industry constitutes more than half of the total food products in India. Food processing industry in India is primarily export oriented. No industrial license is required for setting up of fruit & vegetable processing industry. Though the industry is large in terms of size in India, it is still at a budding stage in terms of development and accounts for only 1.7 per cent of world trade in this

particular sector. Against this back ground, the present work aims to study the nature and prospects of export of Food Processing Industry in India.

2. Exports of Fresh and Processed Food Products from India:

Trends and Patterns This section presents the trends and patterns in the export of fresh and processed food products from India over the last ten years. It identifies key export destinations and export products. The analysis is based on data available from the website of the Department of Commerce (DoC), Government of India. The data is collected by the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) (Kolkata). For international comparisons, data from the World Integrated Trade Statistics (WITS) of the World Bank is used.⁸ 2.1 India's Export of Fresh and Processed Food Products According to the DoC's Foreign Trade Performance Analysis (FTP) data, in 2016-17, India's export of fresh and processed food products was USD 0.40 billion. ⁹ The share of India's export of fresh and processed products in India's overall export basket was 11 per cent in the same year. Over the last decade, even though exports of fresh and processed products have fluctuated, overall, exports have exhibited a rising trend (see Figure 1). As seen in the figure, India's export of fresh and processed food products peaked in 2012-13 with a share of 12.02 per cent in India's total exports.

2.2 India's Country-wise Export of Fresh and Processed Food Products

This section is based on data collected from WITS, using the Standard International Trade Classification (SITC), Revision 4. ¹¹ The data is available for the calendar year (January to December). In 2016, Vietnam was India's largest export partner for the export of fresh and processed food products, with a share of 14.2 per cent in India's total export of fresh and processed food products. Some of the key items of export to Vietnam include meat and meat products, dairy products and bird's eggs, and oilseeds and oleaginous fruits. The US is the second largest importer, followed by the United Arab Emirates (UAE) and Saudi Arabia. The value of exports to these markets and their share in the total export of fresh and processed food products is presented

Vietnam	3709.5	14.2
United States	2861.2	11.0
UAE	1894.4	7.3
Saudi Arabia	1404.7	5.4
Malaysia	802.6	3.1
Iran, Islamic Rep.	794.7	3.0
United Kingdom	637.1	2.4
Iraq	576.0	2.2
Nepal	569.7	2.2
Indonesia	561.9	2.2
Japan	536.8	2.1
World	26090.5	

In terms of region-wise exports, the EU (including the United Kingdom (UK)) is the largest importer of fresh and processed food products from India. India's export of fresh and processed fruits and vegetables to the EU is around USD 3112.1 million. Within the EU, the highest export by value is to the UK (around USD 637.1 million) followed by the Netherlands, Italy, Spain, Germany and France. The largest component in India's export basket for fresh and processed food products is cereals and cereal preparations (see Figure 3) which is mostly exported to Saudi Arabia (12 per cent of India's total export of cereal and cereal preparation in 2016), followed by the UAE (11.6 per cent), Iran (8.2 per cent) and Iraq (6.7 per cent). The second largest category of export is marine products namely fish (not marine mammals), crustaceans, molluscs and aquatic invertebrates, and preparations thereof which is largely exported to the US (29.8 per cent of the total export of the commodity in 2016) followed by Vietnam (22.9 per cent), Japan (7.02 per cent), Spain (4.1 per cent) and Thailand (3.5 per cent). The third largest item of export is meat and meat products, most of which is exported to Vietnam (48 per cent of the total export of the

commodity in 2016), followed by Malaysia (9.04 per cent), Egypt (8.5 per cent), Saudi Arabia (5.2 per cent) and Indonesia (5.1 per cent). Other key commodities of export are spices, coffee, tea, cocoa and fruits and vegetables.

Growth Measurement

Growth rates of selected Processed Foods, both in the absolute quantity (in MT) and value (Rs Crores) have been calculated with the best fitted model for the year 2001-02 to 2009-10. Linear, Exponential, Parabola and Log quadratic models have been considered for the selection. R² of different functional forms are not comparable. But, if the difference in R² is substantial the form with highest R² can be considered as the best fit. In case of narrow gap, the form with the lower C values (Chattopadhyay and Bhattacharya, 1986), can be considered (Majumdar, Basu, 2006). C is defined as $C = (P - Q) / (n - 1)$, where P is the number of pairs of adjacent residuals of the same sign and Q is the number of pairs of the opposite sign. If the residual is greater than equal to zero at one of them or if it is less than equal to zero at the other then 1 is assigned to Q. Models with insignificant coefficient of the quadratic term have been rejected.

Measurement of comparative advantage For examining the comparative advantage of Indian processed food export, Revealed Symmetric Comparative Advantage (RSCA) index (Dalum et al., 1998) is calculated using the formula: $RSCA = (RCA-1) / (RCA+1)$. RSCA measures the comparative advantage or disadvantage of a country with respect to another country or group of countries. RCA is the Revealed Comparative Advantage (Balassa, 1965) that can be calculated by the following relation: $RCA_{ij} = (X_{ij}/X_{wj}) / (X_i/X_w)$, Where X_{ij} = ith country's export of commodity j, X_{wj} = world exports of commodity j, X_i = total exports of country I, X_w = total world exports'. In the present study, country 'i' refers to India, commodity 'j' refers to any of the selected processed food item. RCA indices greater than unity reveals comparative advantage of that particular product in world trade. Basically

RSCA is an improvement over RCA as RCA suffers from the problem of asymmetry (Dalum et al., 1998). RSCA ranges from -1 to +1. Its positive value indicates comparative advantage of the country in export of the commodity and vice versa. 4. Result and Discussion 4.1Export performance India's exports of processed foods have been increased over the years. It increased from Rs.2563.91 Crores during 2001-02 to Rs. 8307.29 Crores in 2009-10 which includes Dried and Preserved Vegetable of Rs. 532.07 Crores, Mango Pulp of Rs. 744.61Crores of, Other Processed Fruit and Vegetable of Rs. 1434.51 Crores, Pulses of Rs. 408.32 Crores, Groundnuts of Rs. 1425.39Crores, Guargum of Rs. 1133.31 Crores, Jaggery & Confectionary of Rs. 233.2 Crores, Cocoa Products of Rs. 96.99 Crores, Cereal Preparations of Rs. 1013.54 Crores, Alcoholic and Non Alcoholic Beverages of Rs. 589.93 Crores and Miscellaneous Preparations of Rs. 694.28 Crores. The value of export of dried fruits and vegetables decreased from Rs 537.15 Crores to 532.07 Crores during 2001-02 to 2009-10. The export of Jaggery and Confectionery also decreased from Rs 436 Crores to Rs 233.2 Crores during the same period. The exports of selected processed food product for the year 2009-10 in quantitative and value terms have been presented in Table 2. Export of other processed fruits and vegetables which include Apple Juice , Beans Shelled, Chips Fried ,Dried Apricots, Grapefruit Juice, Jam Jellies of Other Fruits, Lemon Juice, Pineapple Juice, Tomato Juice etc. registered maximum increase from Rs 201.74 Crores(61332.36MT) to 1435.51 Crores (397978.2MT) during the said period. During 2009-10 other processed foods emerged as the largest contributor to total processed food export with 21.80 per cent share in physical units and 17.28% in value term. This is followed by ground nut (18.64 and 17.16% respectively) (APEDA). Coca products registered lowest percentage share, only .32% in physical unit and 1.16% in value term.

Export Destination

Trade barriers, comparative advantages, geographical proximity etc. are the

determinants of export destinations of any product. As shown in Table 5, USA, UK, Saudi Arabia, Netherlands, Indonesia, Philippines, Malaysia, Thailand etc. are the main destination of export of Indian processed food. During 2009 the main importer of Indian Dried fruits and vegetables, Guargam and other processed foods was USA with the amounts imported being 449945, 71923 and 73116MT respectively (APEDA data). For Mango Pulp and Jaggery & Confectionary, Saudi Arab was the top most destination and the amount of exports were 63480 and 4317 MT respectively. Pakistan and Indonesia were the main destination for Pulses and Ground nuts during 2009 and the physical amounts were 25829and 817692MT respectively. As per the APEDA data, the most important processed food of India is Guar Gum. After USA, China and Germany are the second and third largest destinations of Guar Gum export from India. 4.5 Government Intervention Since liberalization Food-processing sector has been identified as high priority sector and a number of schemes and incentives were announced by Indian Government. FDI up to 100% in beverages is permitted under the automatic route for processed food items excluding alcoholic beverages and a few other restricted items. Most of the processed food items were exempted from the licensing and excise duties. During 1999, food processing industries were recognized as a priority sector for accessing bank credits (Kumar & Rao, 2010). In 2001, the government of India launched the program of establishing agri export zone (AEZ). THE MAIN OBJECTIVE BEHIND IS TO identify the potential of the agri product in a contiguous region. APEDA was constituted as the nodal agency to promote the set up of AEZ.

Conclusion

The present study reveals that out of eight processed food items there are four items where India enjoys comparative advantage in the world market. Except few processed products, most of the cases the growth rates were quite high. However, the contribution of this sector to the world trade is almost insignificant. Despite being

one of the world's major food producers, with huge potential for exporters, India's accounts in the world food trade is only 1.5%. The constraints like non-availability of adequate infrastructural facilities, age-old technology, lack of adequate quality control, inefficient supply chain, inadequate storage facility, high inventory cost, high packaging cost are creating negative environment to the growth of this sector. It is estimated that around 20 to 25% food stock is lost due to lack of proper storage facilities. Another important factor is that due to its being a capital intensive industry, it leads to less number of producers in this specialized sector. The local market of Processed food is still small because of that the exporters fail to achieve economies of scale which indirectly influencing the world trade share of processed food. Food processing sector is also badly affected by lack of funding. Long gestation period and low returns create risk to lending money for this sector. As a result, a significant portion of its capacity has remained unutilized. The stagnant price realisations in the international market have also dented the prospect of some Indian processed food in the overseas market. Some other countries have started flooding of processed food in the global market at cheaper prices. Despite all these problems, this sector has a bright future. Several giant firms have entered in to this sector. It can be mentioned that effective supply chain needs to be developed for the sustained growth of this sector. Brand building through technology up gradation should also be taken into consideration to give a fillip to this sector. There should be quality management, firm adherence to export commitments and acquisition of appropriate negotiation skills.

References-

- [1] Aksoy. M.A. and Beghin. J.C. (2005). Global Agricultural Trade and Developing Countries, Mana Publications: New Delhi. [2] Athukorala. P.C, Gulati. A, Jayasuriya. S, Mehta. R. & Nidhiprabha. B. (2002). "International Food Safety Regulation and Processed Food Exports from Developing Countries", paper

presented at the conference, International Food Safety Regulation and Processed Food Exports from Developing Countries.,<http://rspas.anu.edu.au/economics/publish/papers/aci-ar>. [3] Athukorala P. & S. Jayasuriya. (2003). "Food Safety Issues, Trade and WTO Rules: A Developing Country Perspective". The World Economy, Vol. 26, Issues: 9, 395416. [4] Balassa. B. (1965). "Trade liberalization and revealed comparative advantage", Manchester School of Economics and Social Studies, Vol.: 33 Issues: 2, 99-124. [5] Chattopadhyay. M. and G. Bhattacharyay (1986). "Growth of Indian Agriculture: A reappraisal", Indian Journal of Agricultural Economics, Vol.42, No. 1, 67-75. Chengappa. P. G., Achoth. L., Rashmi. P., Dega. V., Reddy. B. M. R. and Joshi. P. K. (2005). "Emergence of organized retail chains in India during Post Liberalization Era", Paper presented at the South Asia Regional Conference of the International Association of Agricultural Economists, Globalization of Agriculture in South Asia, Hyderabad, The World Bank, Washington, DC. [6] Dalum. B.K., Laursen. K. and Villumsen. G. (1998). "Structural change in OECD export specialization patterns: De-specialization and 'stickiness". International Review of Applied Economics, Vol; 12, 447-467. National Centre for Cold-chain Development (NCCD) (2015). All India Cold-chain Infrastructure Capacity: Assessment of Status & Gap. National Centre for Cold-chain Development and NABARD Consultancy Services. New Delhi, India. Available at http://www.nccd.gov.in/PDF/CCSG_Final%20Report_Web.pdf (accessed on June 28, 2017) Ministry of Finance, Government of India, January 2017, http://dea.gov.in/sites/default/files/RevivingAcceleratingIndiaExports_Issues_Suggestions230317.pdf (accessed on September 7, 2017) World Trade Organization (2012). "World Trade Report 2012-Trade and Public Policies: A closer look at non-tariff measures in the 21st century". WTO Publications. Available at https://www.wto.org/english/res_e/booksp_e/anrep_e/world_trade_report12_e.pdf (Accessed on September 6, 2017)

https://www.ripublication.com/gjmbs_spl/gjmbsv3n3spl_08.pdf

<https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S1877042814030821>

<https://www.inflibnet.ac.in/ojs/index.php/MI/article/viewFile/4887/3579>

सूचना-प्रौद्योगिकी से कृषि क्षेत्र में नयी क्रान्ति

डॉ.रंजीता टेकाम

सहायक प्रध्यापक समाजशास्त्र विभाग

शा.महाविद्यालय बुधनी म.प्र.

कृषि क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण महत्वपूर्ण है और इस क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सूचना प्रौद्योगिकी न केवल प्रौद्योगिकी के तेजी से विस्तार के लिए आवश्यक है बल्कि इसके उपयोग से विभिन्न कृषि कार्यों को जल्दी से और आसान तरीके से किया जा सकता है। विश्व बैंक और अन्य शोध संस्थानों के अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया कि ऑनलाइन शिक्षा, रेडियो, उपग्रह और दूरदर्शन जैसे आधुनिक संचार माध्यमों द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी का विस्तार करके किसानों की जागरूकता, दक्षता तथा उत्पादकता में कई गुणा वृद्धि की जा सकती है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने कृषि के हर काम को आसान बना दिया है।

किसान अपने घर बैठे किसान कॉल सेंटर में 1551 या 18001801551 पर निःशुल्क फोन करके अपनी कृषि समस्या का समाधान पा सकता है। हमारे देश के अधिकतर कृषि व बागवानी विश्वविद्यालयों ने अपने क्षेत्र विशेष की फलों व अन्य फसलों की उत्पादन से संबंधित सभी जानकारियां अपने वेबसाइट पर डाल रखी हैं जिन्हें किसान इन्टरनेट के माध्यम से घर बैठे अपने कम्प्यूटर पर प्राप्त कर सकते हैं। इन विश्वविद्यालयों के इन वेबसाइटों पर भविष्य में कृषि कार्यों की जानकारी तथा मौसम की जानकारी भी समय-समय पर किसानों को नियमित रूप से दी जाती है।

सूचना प्रौद्योगिकी व संचार माध्यमों द्वारा हम कृषि में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे अधिक उपयोग हम आधुनिक व विकसित तकनीकों को प्राप्त करने में कर सकते हैं। ये जानकारियां हम रेडियो, दूरदर्शन, केबल नेटवर्क, इन्टरनेट, टेलीफोन, मोबाइल फोन व कम्प्यूटर पर चलने वाले विभिन्न 'साफ्टवेयर' के माध्यम से हम आसानी से व तेजी से प्राप्त कर सकते हैं। रेडियो व दूरदर्शन द्वारा आजकल किसानों के लिए ऐसे सीधे प्रसारण वाले कार्यक्रम प्रसारित किये जा रहे हैं जहां

किसान हर सप्ताह रेडियो व दूरदर्शन केन्द्रों में बैठे हुए कृषि विशेषज्ञों से सीधे बात कर सकते हैं और अपनी कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। टेलीफोन से हम किसान कॉल सेंटर पर 1551 नम्बर पर तथा मोबाइल से हम सेंटर के 18001801551 नम्बर पर फोन करके कृषि संबंधी जानकारी मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं।

कई विश्वविद्यालय व अन्य संस्थान मोबाइल फोन पर 'एस.एम.एस.च' द्वारा भी किसानों को जानकारी उपलब्ध करवा रहे हैं। किसान अपने कम्प्यूटर द्वारा या गांव में सामुदायिक सूचना केन्द्रों के माध्यम से भी कृषि संबंधी जानकारी कृषि विश्वविद्यालयों के वेबसाइट पर इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। गुजरात में पंचायतों को इस प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों से जोड़ा गया है ताकि कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण तेजी से हो। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र द्वारा भी कृषि विश्वविद्यालयों में ऐसी प्रणाली स्थापित की गई जहां किसान प्रदेशों के विभिन्न भागों में फैले हुये कृषि विज्ञान केन्द्रों से विश्वविद्यालय के मुख्य केन्द्र पर मौजूद विशेषज्ञों से कैमरे पर सीधे बातचीत कर सकते हैं। इसके अलावा रेडियो व दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों पर विभिन्न विषयों पर पाठशालाओं का आयोजन भी किया जाता है जहां उस विषय पर सभी जानकारियां क्रमवद्ध तरीके से किसानों को घर बैठे ही दी जाती हैं। कम्प्यूटर से जुटे हुये किसान, सीडी व 'पैन ड्राइव' के माध्यम से भी जानकारी प्राप्त करके अपने कम्प्यूटर पर देख सकते हैं।

इतिहास

सूचना प्रौद्योगिकी विभिन्न कालखण्डों में अपने समय की सूचना से सम्बन्धित समस्याओं (इन्पुट, प्रसंस्करण, आउटपुट, संचार आदि) को हल करने की जिम्मेदारी सम्भालती है। अतः इसके इतिहास को

चार मूल कालखण्डों में बांटा जा सकता है—

- (१) यांत्रिक युग के पूर्व (त्तमउमबींदपबंस)
- (२) यांत्रिक युग (डमबींदपबंस)
- (३) विद्युतयांत्रिक युग (म्समबजतवउमबींदपबंस), तथा
- (४) एलेक्ट्रॉनिक युग (म्समबजतवदपब)

संचार प्रौद्योगिकी

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

2005 में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर खर्च सूचना और संचार की प्रौद्योगिकी या सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, जिसे आम तौर पर आईसीटी (पब) कहा जाता है, का प्रयोग अक्सर सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के पर्यायवाची के रूप में किया जाता है

लेकिन यह आम तौर पर अधिक सामान्य शब्दावली है, जो आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी में दूरसंचार (टेलीफोन लाईन एवं वायरलेस संकेतों) की भूमिका पर जोर देती है। आईसीटी में वे सभी साधन शामिल होते हैं जिनका प्रयोग कंप्यूटर एवं नेटवर्क हार्डवेयर दोनों और साथ ही साथ आवश्यक सॉफ्टवेयर सहित सूचना एवं सहायता संचार का संचालन करने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आईसीटी (फ्ज) में आईटी (फ्ज) के साथ-साथ दूरभाष संचार, प्रसारण मीडिया और सभी प्रकार के ऑडियो और वीडियो प्रक्रमण एवं प्रेषण शामिल होता है। इस अभिव्यक्ति का सबसे पहला प्रयोग 1997^ख, में डेनिस स्टीवेंसन द्वारा ब्रिटेन की सरकार^ख, को भेजी गई एक रिपोर्ट में किया गया था एवं सन 2000 में ब्रिटेन के नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संबंधी दस्तावेजों द्वारा प्रचारित इसका प्रचार किया गया। अक्सर आईसीटी (फ्ज) का प्रयोग "आईसीटी (फ्ज) रोडमैप" में उस मार्ग को सूचित करने के लिए किया जाता है जिसे कोई संगठन अपनी आईसीटी (फ्ज) जरूरतों के साथ अपनाएगा^{ख,ख}, अब आईसीटी (फ्ज) शब्द का प्रयोग टेलीफोन नेटवर्कों का कंप्यूटर नेटवर्कों के साथ एक एकल केबल या लिंक प्रणाली के माध्यम से संयुग्मन (अभिसरण) करने के लिए भी किया जाता है। टेलीफोन नेटवर्कों का कंप्यूटर नेटवर्क प्रणाली के साथ संयुग्मन करने के व्यापक आर्थिक लाभ (टेलीफोन नेटवर्क की समाप्ति के कारण भारी लागत बचत) हैं। वीओआईपी (टव्च) देखें। बदले में इसने संगठनों के विकास को प्रेरित किया है जिसमें उनके नाम में आईसीटी शब्द का प्रयोग दो नेटवर्क प्रणालियों के संयुग्मन करने की प्रक्रिया में उनकी विशेषज्ञता को सूचित करने के लिए किया जाता है।

सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न घटक

कंप्यूटर हार्डवेयर प्रौद्योगिकी

इसके अन्तर्गत माइक्रो-कम्प्यूटर, सर्वर, बड़े मेनफ्रेम कम्प्यूटर के साथ-साथ इनपुट, आउटपुट एवं संग्रह (जवतंहम) करने वाली युक्तियाँ (कमअपबमे) आती हैं।

कंप्यूटर साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी

इसके अन्तर्गत प्रचालन प्रणाली (व्यमंतजपदह"लेजमउ), वेब ब्राउजर, डेटाबेस प्रबन्धन प्रणाली (कटडै), सर्वर तथा व्यापारिकध्वाणिज्यिक साफ्टवेयर आते हैं।

दूरसंचार व नेटवर्क प्रौद्योगिकी

इसके अन्तर्गत दूरसंचार के माध्यम, प्रक्रमक (व्त्वबमेवत) तथा इंटरनेट से जुड़ने के लिये तार या बतार पर आधारित साफ्टवेयर, नेटवर्क-सुरक्षा, सूचना का कूटन (क्रिप्टोग्राफी) आदि हैं।

मानव संसाधन

तंत्र प्रशासक (System Administrator), नेटवर्क प्रशासक (Network Administrator) आदि

सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी धरती को एक गाँव बना दिया है। इसने विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को

जोड़कर एक वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। यह नवीन अर्थव्यवस्था अधिकाधिक रूप से सूचना के रचनात्मक व्यवस्था व वितरण पर निर्भर है। इसके कारण व्यापार और वाणिज्य में सूचना का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। इसीलिए इस अर्थव्यवस्था को सूचना अर्थव्यवस्था (Information Economy) या ज्ञान अर्थव्यवस्था (Knowledge Economy) भी कहने लगे हैं। वस्तुओं के उत्पादन (manufacturing) पर आधारित परम्परागत अर्थव्यवस्था कमजोर पड़ती जा रही है और सूचना पर आधारित सेवा अर्थव्यवस्था (service economy) निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा उपयोग किसान अपने विभिन्न कृषि कार्यों को करने में कर सकते हैं। आज कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित मशीनों द्वारा बड़े-बड़े खेतों की जुताई व उन्हें समतल करना, बुवाई करना, निराई-गुड़ाई करना, खाद देना, सिंचाई करना, कीटनाशी व रोगनाशी रसायनों के छिड़काव जैसे कार्य सफलतापूर्वक किये जा रहे हैं। इसके साथ कम्प्यूटर कृषि उत्पादों को डिब्बाबंद करने, बेचने के लिए उपयुक्त मंडियों का चयन करने और मूल्यों का निर्धारण करने में भी सहायता करते हैं। कम्प्यूटर नियंत्रित मशीनों का सब्जियों, फूलों व फलों की पॉलीहाउस के अन्दर होने वाली संरक्षित खेती में महत्वपूर्ण योगदान है। संरक्षित खेती में जहां फसलों को पानी, खाद और नमी इत्यादि की मात्रा और समय कम्प्यूटर ही निर्धारित करता है।

उस दिशा में स्पेन, हालैंड, इजाराइल, तुर्की, फ्रांस और अमेरिका जैसे देशों में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। इन देशों में कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित मशीनों से किये गये कार्य से संरक्षित खेती में फसलों से 3 से 4 गुणा अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा रहा है। इस तरह के स्वचालित यंत्रों की मदद से कोई भी किसान 350 एकड़ भूमि की आसानी से सिंचाई कर सकता है। कम्प्यूटर नियंत्रित मशीनों का उपयोग फसल उत्पाद के सही ढंग से डिब्बाबंदी में भी किया जाता है। फलों व सब्जियों की डिब्बाबंदी करते समय कम्प्यूटर की सहायता से फलों को कैसे और कितनी संख्या में रखने संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। इस तरह फल व सब्जियों रगड़ लगने से बच जाते हैं जिससे ढुलाई व विपणन के समय कम नुकसान होता है। इस तरह के कम्प्यूटर नियंत्रित कार्यों से सिंचाई में पानी, खाद व दूसरे जीवनाशी तथा अन्य रसायनों की कम खपत होती है और इनके सही समय पर निर्धारित उपयोग से अधिक उत्पादन भी मिलता है।

यद्यपि भारत सरकार का ग्रामीण विकास मंत्रालय देश के प्रत्येक गांव में ऐसे सार्वजनिक व सामुदायिक सूचना केन्द्र स्थापित कर रहा है जहां कम्प्यूटर व इंटरनेट जैसी सुविधायें मौजूद होंगी, लेकिन फिर भी ये कार्य तेजी से होना चाहिए। इन सूचना केन्द्रों को कृषि विश्वविद्यालयों तथा जिला के सूचना केन्द्रों से भी जोड़ा जाना चाहिए जिससे प्रौद्योगिकी और सूचनाओं का प्रसार तेजी से हो। देश के कृषि व बागवानी

विश्वविद्यालयों को सूचना प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए विशेष आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए। सूचना और संचार क्रांति का कृषि में अधिक से अधिक उपयोग करके हम कृषि को नई दिशा दे सकते हैं जिससे देश में अन्न और दूसरे कृषि व पशुधन से प्राप्त उत्पादों का उत्पादन बढ़ेगा और किसानों की वित्तीय स्थिति और मजबूत होगी।

सन्दर्भ:—

[Http%//specials-ft-com/lifeonthenet/FT3NXTH03DC.html](http://specials-ft-com/lifeonthenet/FT3NXTH03DC.html)
द इंडीपेंडेंट आईसीटी (ICT) इन स्कूल्स कमीशन (1997) इन फॉर्म फौर्मेशन एंड
कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी इन यूके स्कूल्स, एन इंडीपेंडेंट इन्क्वैरी. लंदन, ब्रिटेन. लेखक: कुर्सी
डेनिस स्टीवेंसन

भारतीय दलीय व्यवस्था में आए परिवर्तन का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

डॉ. अनामिका रावत
प्राचार्य इंदिरा प्रियदर्शिनी कॉलेज
खानूगांव भोपाल

दलीय व्यवस्था का प्रभाव संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर पड़ता है। दलीय व्यवस्था की प्रकृति शासन-संरचना पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसलिए जब एक दलीय-प्रभुत्व दलीय व्यवस्था थी तब शासन में संघीय प्रवृत्तियाँ छिपी रहती थीं। प्रधानमंत्री व मंत्रिमंडल सम्पूर्ण शासन व्यवस्था व राजनीति पर छाए रहते थे परन्तु दलीय व्यवस्था में हुए बदलाव का असर शासन व्यवस्था पर भी पड़ा है। इसका वर्णन प्रो. एम. पी सिंह ने इस प्रकार किया है –

संविधान लागू होने के चार दशकों तक अखिल भारतीय कांग्रेस के नेतृत्व में एक-दलीय वर्चस्व वाली पार्टी-प्रणाली के कारण शासन व राजनीति में संघीय पहलू प्रायः दबा रहा। मंत्रिपरिषद, बल्कि मात्र प्रधानमंत्री के आधिपत्य में संसदीय पहलू पूरी राजनीतिक प्रणाली पर हावी रहा। 1989 के लोकसभा चुनाव के बाद से बहु-दलीय प्रणाली के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन व अल्पमत की सरकारों के दौर में शासन व राजनीति में संघीय प्रवृत्तियों का अभूतपूर्व विकास हुआ है। इस चरण में राज्य सरकारों की स्वायत्तता बढ़ी है। अब राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में राज्य सरकारों की भूमिका का विस्तार हुआ है। दलीय राजनीति-प्रेरित केंद्र सरकार के द्वारा संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत दूसरे दलों की राज्य सरकारों को असंविधानिक तौर पर ध्वस्त कर देने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगा है। गठबंधन सरकारों में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, एवं मंत्रिपरिषद की शक्तियों व कार्यकलाप का एक नया व्याकरण विकसित हुआ है। राष्ट्रपति के विवेक की शक्तियों के प्रयोग की संभावनाएं बढ़ी हैं, प्रधानमंत्री की शक्तियों पर सांझा सरकार के घटक दलों का नियंत्रण बढ़ा है, तथा मंत्रिमंडल की एकता तथा संसद के प्रति उत्तरदायित्व के सिद्धांत में व्यवहारिक विखंडन आया है। पर न्यायपालिका की शक्तियों तथा क्रियाशीलता में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।

अतः भारतीय दलीय व्यवस्था में आए परिवर्तन ने संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था को व्यवहारात्मक रूप में बदल दिया। उसके वह बदलाव व प्रभाव निम्नलिखित हैं दृ

प). भारत अर्ध-संघ से महासंघ की ओर (थत्तवउ फनेंप थ्कमतंस जवूंतके ळतमंजमत

थमकमतंसंप्रजपवद):— 1989 तक भारत में एक दलीय प्रभुत्व का दौर रहा जिसमें संसदीय तत्त्वों का दबदबा संघीय तत्त्वों पर बना रहा। हालांकि इस काल में भी क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व था परन्तु वह वर्तमान की तरह अत्यधिक शक्तिशाली नहीं थे। इसलिए राज्य स्वायत्तता, क्षेत्रीय आकांक्षाओं जैसे मुद्दे गौण रहे। इस कारण के.सी. व्हीयर ने अपनी पुस्तक थमकमतंसं ळवअमतदउमदज (1964) में भारत की संसदीय-संघीय व्यवस्था को अर्ध-संघ (फर्नेप थमकमतंसं) का नाम देते हैं (अर्थात् जो पूरा संघ न हो, परन्तु कुछ विशेषताएं संघीय शासन की अवश्य हों।) क्योंकि असली संघवाद वह है, जो अपने राज्यों (प्रान्तों) को अधिक शक्ति व स्वायत्तता प्राप्त हो अथवा संविधान उन्हें प्रदान करे। केंद्र के पास भी अपना कार्य करने के लिए पर्याप्त व अनिवार्य शक्तियां हों।

1989 के पश्चात् कुछ नए क्षेत्रीय दलों का शक्तिशाली रूप में उदय हुआ तथा पुराने क्षेत्रीय दल भी शक्तिशाली रूप में उभरकर सामने आए। हालांकि इसके चिह्न तो 1967 के आसपास ही राज्य राजनीति में दिखाई देने लगते हैं परन्तु 80 के दशक में यह काफी सशक्त हो जाते हैं। यह दल ही (अकाली दल) 'आनंदपुर साहिब' जैसे प्रस्ताव रखते हैं। जो राज्यों की स्वायत्तता से जुड़े होते हैं, संघीयकरण की ओर बढ़ने से जुड़े होते हैं। साथ ही राज्यों में अकेले बहुमत प्राप्त करने की स्थिति में पहुँच जाते हैं (जैसे दृ असम गण परिषद दृ असम में, तेलुगुदेशम पार्टी दृ आंध्र प्रदेश में द्रविड़ मुनेत्र कजगम व अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कजगम दृ तमिलनाडु में)। जैसे ही राष्ट्रीय राजनीति में अल्पमतीय सरकारों के निर्माण का दौर शुरू होता है, एक दलीय प्रभुत्व बहु-दलीय गठबंधन के युग में परिवर्तित होता है। यह क्षेत्रीय शक्तियां महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। इनके बिना राज्य व केंद्र दोनों स्तर पर सरकार-निर्माण असंभव हो जाता है। केंद्र में किसी राष्ट्रीय दल के नेतृत्व में बने गठबंधन व राज्य में अलग-अलग दलों की सरकारें बननी शुरू हुईं, जिसने क्षेत्रीय दलों की स्वायत्तता सम्बन्धी मांगे, उनकी केंद्र सरकार से मांगें मनवाने की प्रकृति, इन सभी ने भारत के संघवाद की प्रकृति को प्रभावित किया। सहकारी संघवाद से सौदेबाजी वाले संघवाद में वह परिवर्तित हो गया। डगलस वरनी (क्वनहसें टमतदमल) अपने लेख 'फर्नेप-थमकमतंसपेउ जव

राजनीतिक दल अथवा राजनैतिक दल एक राजनीतिक संस्था (च्वसपजपबंस वतहंदपेंजपवद) है जो शासन में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने एवं उसे बनाये रखने का प्रयत्न करता है। इसके लिये प्रायः वह चुनाव की प्रक्रिया में भाग लेता है। राजनीतिक दलों का अपना एक सिद्धान्त या लक्ष्य (विजन) होता है जो प्रायः लिखित दस्तावेज के रूप में होता है।

थ्वभिन्न देशों में राजनीतिक दलों की अलग-अलग स्थिति व व्यवस्था है। कुछ देशों में कोई भी राजनीतिक दल नहीं होता। कहीं एक ही दल सर्वेसर्वा (डॉमिनेन्ट) होता है। कहीं मुख्यतः दो दल होते हैं।

किन्तु बहुत से देशों में दो से अधिक दल होते हैं।

लोकतान्त्रिक राजनैतिक व्यवस्था में राजनैतिक दलों का स्थान केन्द्रीय अवधारणा के रूप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राजनैतिक दल किसी समाज व्यवस्था में शक्ति के वितरण और सत्ता के आकांक्षी व्यक्तियों एवं समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे परस्पर विरोधी हितों के सारणीकरण, अनुशासन और सामंजस्य का प्रमुख साधन रहे हैं। इस तरह से राजनैतिक दल समाज व्यवस्था के लक्ष्यों, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तनों, परिवर्तनों के अवरोधों और सामाजिक आन्दोलनों से भी सम्बन्धित होते हैं। राजनैतिक दलों का अध्ययन समाजशास्त्री और राजनीतिशास्त्री दोनों करते हैं, लेकिन दोनों के दृष्टिकोणों में पर्याप्त अन्तर है। समाजशास्त्री राजनैतिक दल को सामाजिक समूह मानते हैं जबकि राजनीतिज्ञ राजनीतिक दलों को आधुनिक राज्य में सरकार बनाने की एक प्रमुख संस्था के रूप में देखते हैं।

विशेषताएँ

राजनीतिक दल की संरचना में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य समूह से अलग करती हैं –

1. राजनीतिक दल ऐसा संगठन है जिसका प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक नेतृत्व की प्राप्ति होता है। इसमें दल का नेता संगठित अल्पतंत्र (कार्यकारिणी) द्वारा शक्ति हथियाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करता है।

2. सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों को लेकर उप संरचनाएं एवं समितियां होती हैं, जो भौगोलिक सीमाओं, सामाजिक समग्रताओं के आधार पर होती हैं। दल में कई परस्पर विरोधी समूह किसी उद्देश्य तथा राजनीतिक विचारधारा को लेकर साथ जुड़े हुए रहते हैं।

3. हर राजनीतिक दल में अल्पतंत्र होता है। प्रथम अवस्था में शक्ति का केन्द्रीकरण कुछ अनुभवी नेताओं के हाथ में होता है, जो प्रमुख पदाधिकारी होते हैं, जबकि दूसरी अवस्था में दल का संगठन एक विशेष स्तरीकरण व्यवस्था में विभाजित होता है और हर स्तर पर कुछ स्वायत्तता पाई जाती है।

4. दल में सदस्यता निरन्तर बनी रहती है। एक सदस्य दूसरे सदस्य को दल की गतिविधियों की जानकारी देते रहते हैं। नए सदस्यों के लिए दल में सदस्यता के द्वार हमेशा खुले रहते हैं 87 हैं। यहीं यह एक खुली संरचना होती है। कुछ लोग दल के सदस्य इसलिए होते हैं कि उन्हें समाज में उसके कारण एक विशेष स्थान मिल जाता है।

राजनीतिक दलों का सामाजिक संगठन

जिस संगठित रूप में राजनीतिक दल आज हमारे सामने विद्यमान हैं, उस रूप में उनका इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है। उनकी उत्पत्ति उन्नीसवीं शताब्दी में हुई है परन्तु इससे पूर्व भी मनुष्यों द्वारा निर्मित कुछ

संगठन, शासन से प्रत्यक्ष न होने पर भी जनमत के निर्माण तथा मांगों को शासकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। आधुनिक समाज में राजनीतिक दलों का गठन विविध आधारों पर किया गया है। राजनीतिक दलों के निर्माण में मनोवैज्ञानिक आधार अर्थात् मानव स्वभाव में निहित प्रवृत्तियां प्रमुख हैं। मतैक्य एवं संगठन मानव स्वभाव की दो प्रमुख प्रवृत्तियां हैं। समान स्वभाव एवं मूल्यों वाले व्यक्ति संगठित होकर राजनीतिक दल का निर्माण करते हैं तथा फिर उन मूल्यों को बनाये रखने का प्रयास करते हैं। ब्रिटिश कंजरवेटिव दल का गठन रूढ़िवादी व्यवस्था को बनाये रखने के समर्थक व्यक्तियों द्वारा किया गया है। कुछ व्यक्ति रूढ़िवादी व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते हैं तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उदारवादी दलों का निर्माण करते हैं, जबकि कुछ लोग विगत युग की पुनरावृत्ति की आकांक्षा के आधार पर प्रतिक्रियावादी दलों का निर्माण करते हैं।

मानव इतिहास में धर्म की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा आज भी अनेक देशों में धार्मिक नेता एवं पदाधिकारी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीति में हस्तक्षेप करते हैं। राजनैतिक दलों के सामाजिक संगठन में धर्म प्रमुख भूमिका निभाता है। उदाहरणार्थ भारत में मुस्लिम लीग, अकाली दल, जनसंघ, हिन्दू महासभा जैसे दलों के सामाजिक संगठन में धर्म केन्द्रीय भूमिका निभाता है। राजनीतिक दलों के निर्माण में क्षेत्रीयता अथवा प्रादेशिकता भी एक प्रमुख आधार है। प्रादेशिक हितों की रक्षा के लिए तथा प्रादेशिक समस्याओं के शीघ्र निपटारे के लिए कुछ प्रादेशिक दलों का निर्माण होता है। भारत में डी0एम0के0, तेलंगाना प्रजा समिति, असम गण परिषद, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा आदि। राजनीतिक दल आर्थिक या वर्गीय आधारों पर भी संगठित होते हैं। मार्क्स के अनुसार राजनीतिक दलों तथा वर्गों का परस्पर सम्बन्ध राज्य व राजनीति के सिद्धान्त का केन्द्रीय बिन्दु होता है। अनेक अन्वेषणों से हमें यह पता चलता है कि वर्गीय हित, दलीय सम्बद्धताओं तथा निर्वाचनों की पसन्द के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा अधिकांश समाज में राजनीतिक दल निर्वाचक वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ब्रिटेन में श्रमिक दल, भारत में मजदूर दल, किसान यूनियन आदि।

जाति, भारतीय समाज की आधारभूत विशेषता है। भारत में राजनैतिक दलों के सामाजिक संगठन को जाति हमेशा से प्रभावित करती रही है। स्वतन्त्रता से पूर्व जाति मुक्ति का आन्दोलन राजनैतिक दलों के गठन को प्रभावित करना रहा है। दलित वर्ग कल्याण लीग, बहिष्कृत हितकारिणी सभा, जस्टिस पार्टी इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् निर्वाचन प्रतियोगिता में 'जाति' राजनैतिक गतिशीलता लाने वाला प्रमुख सामाजिक आधार बन गया। 'जातीय संलयन' और 'जातीय विखण्डन' राजनैतिक प्रक्रियाओं में केन्द्रीय

भूमिका निभाने लगी। सभी राजनैतिक दल जातीय गणना के आधार पर उम्मीदवारों को तय करने लगे। वर्तमान समय में जातीय आधार पर राजनैतिक दलों के गठन का प्रमुख आधार है। समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल यूनाइटेड आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। दलीय संगठन में विचारधारा भी प्रमुख भूमिका निभाती है। समाजवादी, लेनिनवादी और माओवादी विचारधाराओं पर आधारित अनेक दलों का निर्माण भारतीय राजनीति की प्रमुख विशेषता रही है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में क्षेत्रीयकृत बहु-दलीय व्यवस्था में हुए परिवर्तन ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को अर्ध-संघ (फनेंप-थमकमतंबल) से अर्ध-परिसंघ (फनेंप-ब्वदमिकमतंबल) की तरफ परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

इस स्थिति पर 2014 किए बाद पूर्ण बहुमत की सरकार के प्रधानमंत्री बने नरेन्द्र मोदी के बाद बदलती दिखी है क्योंकि उनका व्यक्तित्व व कार्यप्रणाली काफी सशक्त दिखाई देती है (यह कई बार सही भी साबित होता है और कई बार निरंकुशता की ओर भी ले जाता है) और वह इस पद को सशक्त बनाएंगे। पपप). राष्ट्रपतीय सक्रियता (क्तमेपकमदजपंस |बजपअपेउ):- जैसा पहले प्रो. एम.पी. सिंह ने विश्लेषित किया कि बहु-दलीय गठबंधनयुक्त राजनीति के दौर में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सभी की भूमिकाएं परिवर्तित हो गयी हैं। इसलिए क्षेत्रीय दलों की बढ़ती शक्ति से प्रधानमंत्री पद की गरिमा व स्थिति में गिरावट आई है तो राष्ट्रपति की भूमिका इस परिवर्तित दौर में महत्वपूर्ण हो गयी है। 1977-1979 (राष्ट्रीय राजनीति में गठबंधन का पहला दौर) और 1989-1999 के काल में राष्ट्रपति ने गठबंधन व मिली जुली सरकारों की स्थिति के अंतर्गत मुख्य रूप से लोकसभा में बहुमत पर संदेह के सन्दर्भ में सरकारों के निर्माण और पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसी बदलती हुई भूमिका के कारण जेम्स मैनर ने अपने प्रसिद्ध लेख 'जेम क्तमेपकमदबल' में स्पष्ट करते हैं कि -

राष्ट्रपति का पद 1989 से अत्यधिक महत्वपूर्ण बनता जा रहा है क्योंकि वह अब सरकारों को बनाने के खेल का निर्णायककर्त्ता (त्ममितमम) है। अब राष्ट्रपति यह निर्णय लेता है कि वह प्रधानमंत्री की लोकसभा को भंग करने की सिफारिश कमो मंजूरी दे या नहीं। इस तरह खंडित संसदों के युग में राष्ट्रपति का पुराना कार्य अब काफी जटिल, उलझनभरा और मुश्किल हो गया है। ख३,

जेम्स मैनर का तर्क मुख्य रूप से इस ओर इशारा करता है कि 1989 के पश्चात् राष्ट्रपति काफी दृढ़ (ोमतजपअम) हो गए हैं। अपने तर्क को सिद्ध करने के लिए वह तीन राष्ट्रपतियों दृ वेंकटरमण (1987-1992), शंकर दयाल शर्मा (1992-1997), के.आर. नारायणन (1997-2002) की भूमिका का परीक्षण करते हैं। जेम्स मैनर बताते हैं कि वेंकटरमण ने दृढ़ होने के मुद्दे को 'शायद' अपने प्रयास से खोल दिया था। शंकरदयाल शर्मा दृढ़ नहीं थे और के. आर. नारायणन वास्तविक रूप में दृढ़ थे, जिसमें उनका

व्यक्तित्व, पद में निहित शक्तियां और उस समय की परिस्थितियाँ तीनों चीजें महत्त्वपूर्ण थीं।
पअ). राज्यपाल की भूमिका में परिवर्तन:- राज्यपाल को संविधान ने दोहरी भूमिका निभाने का कर्तव्य दिया है।

सन्दर्भ:-

This has been Cited in Indian Politics % Constitutional Foundations and Institutional Functioning] M-P- Singh and Rekha SaŪena ¼2011½] New Delhi % PHI Learning] p-167&168-

[3] James Manor] The Presidency (2005) in Devash Kapur and Pratap Bhanu Mehta (Eds-), Public Institutions in India% Performance and Design] New Delhi % /OŪford University Press] p- 106-

[4]This has been Cited in Indian Politics % Constitutional Foundations and Institutional Functioning] M-P- Singh and Rekha SaŪena ¼2011½]New Delhi % PHI Learning] p- 102

[5] bl foj.k ds fy, foLrkj ls ns[ksa M-P- Singh and Rekha SaŪena ¼2011½ Indian Politics : Constitutional Foundations and Institutional Functioning] New Delhi : PHI Learning] p-102&103-

शेरशाह सूरी मुगलकाल का सर्वश्रेष्ठ मुस्लिम शासक

डॉ सैय्यद इफ्तखार अजीज,
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास,
शा.शहीद भगत सिंह महाविद्यालय, अष्टा

परिचय

शेरशाह सूरी (1472–22 मई 1545) जन्म का नाम फरीद खॉँ भारत में जन्मे पठान थे, जिन्होंने हुमायूँ को 1540 में हराकर उत्तर भारत में सूरी साम्राज्य स्थापित किया था। शेरशाह सूरी ने पहले बाबर के लिये एक सैनिक के रूप में काम किया था जिन्होंने उन्हें पदोन्नति कर सेनापति बनाया और फिर बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया। 1537 में, जब हुमायूँ कहीं सुदूर अभियान पर थे तब शेरशाह ने बंगाल पर कब्जा कर सूरी वंश स्थापित किया था। 1539 में, शेरशाह को चौसा की लड़ाई में हुमायूँ का सामना करना पड़ा जिसे शेरशाह ने जीत लिया। 1540 ई. में शेरशाह ने हुमायूँ को पुनः हराकर भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया और शेर खान की उपाधि लेकर सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया।

एक शानदार रणनीतिकार, शेर शाह ने खुद को सक्षम सेनापति के साथ ही एक प्रतिभाशाली प्रशासक भी साबित किया। 1540–1545 के अपने पांच साल के शासन के दौरान उन्होंने नयी नगरीय और सैन्य प्रशासन की स्थापना की, पहला रुपया जारी किया है, भारत की डाक व्यवस्था को पुनः संगठित किया और अफगानिस्तान में काबुल से लेकर बांग्लादेश के चटगांव तक ग्रांड ट्रंक रोड को बढ़ाया। 1545 में, साम्राज्य के उसके पुनर्गठन ने बाद में मुगल सम्राटों के लिए एक मजबूत नींव रखी विशेषकर हुमायूँ के बेटे अकबर के लिये।

शेर शाह सूरी का इतिहास

शेर शाह सूरी उत्तरी भारत के सुर साम्राज्य के संस्थापक थे, जिनमें उनकी राजधानी दिल्ली भी शामिल है।

1540 में शेर शाह ने मुघल साम्राज्य को अपने हातों में लिया था। 1545 में उनकी अकस्मात् मृत्यु के बाद, उनका बेटा उत्तराधाकारी बना। पहले वह मुगल आर्मी के सेनापति बने और फिर बाद में वे बिहार के शासक के रूप में उठ खड़े हुए। 1537 में, जब बाबर का बेटा हुमायूँ अभियान पर था तब शेर खान ने बंगाल राज्य को हथिया लिया था और वहा उसने सुर साम्राज्य स्थापित किया। शेर शाह ने खुद को हर मोड़ पर सही साबित किया, वे एक सफल शासक साबित हुए और एक वीर और साहसी सेनापति कहलाये। उनके विशाल और समृद्ध साम्राज्य को बाद में मुगल शासक हुमायूँ के बेटे अकबर ने हथिया लिया।

1540 से 1545 के अपने पाच साल के शासन काल में, उन्होंने अपने साम्राज्य में नयी सैन्य शक्ति का निर्माण किया था, और साथ ही पहले रूपया का भी प्रचलन उन्होंने शुरू किया और भारतीय पोस्टल विभाग को भी उन्होंने अपने शासनकाल में विकसित किया। बाद में उन्होंने हिमायुं दिना पनाह शहर को विकसित कर उसका नाम शेरगढ़ रखा और इतिहासिक शहर पाटलिपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा। बाद में ग्रांट ट्रंक रोड को चित्तागोंग से विस्तृत करते हुए रास्तो को पश्चिमी भारत से अफगानिस्तान के काबुल तक ले गये और देशो को रास्ते से जोड़े रखा।

शेर शाह सूरी का जन्म फरीद खान के नाम से भारत के बिहार प्रान्त के सासाराम ग्राम में हुआ था। उनका उपनाम सूरी उनके प्राचीन ग्राम सुर से लिया गया था। जब वे युवावस्था में थे तभी उन्होंने एक शेर का शिकार किया था और तबसे उनका नाम शेरशाह रखा गया। उनके दादा इब्राहीम खान सूरी नारनौल के प्रसिद्ध जागीरदार थे और कुछ समय के लिए उन्होंने दिल्ली के शासक का भी प्रतिनिधित्व भी किया था। आज भी नारनौल में इब्राहीम खान सूरी का स्मारक बना हुआ है। तारीख-खान जहाँ लोदी ने भी इस बात को स्पष्ट किया था। शेरशाह पश्तून सुर समुदाय से संबंध रखते थे (इतिहास में पश्तून अफगानी के नाम से भी जाने जाते थे)। उनके दादा इब्राहीम खान सूरी एक साहसी योद्धा थे।

शेरशाह सूरी की जीवनी

शेरशाह सूरी या शेर खान, भारत में सुर राजवंश के संस्थापक थे। 1486 में जन्मे, वह सासाराम, बिहार के एक जागीरदार के पुत्र थे। उनका मूल नाम फरीद था। 15 साल की उम्र में अपना घर छोड़ वह जौनपुर चले गये। वहां उन्होंने अरबी और फारसी भाषाओं का अध्ययन किया। उनमें बहुत अच्छा प्रशासनिक कौशल था जिसके फलस्वरूप अपने पिता द्वारा उन्हें जागीर प्रबंधन करने के लिए नियुक्त किया गया था, किन्तु कुछ कारणों की वजह वह इसे छोड़ मुगल सम्राट बाबर की सेवा में शामिल हो गये। 1522 में वह उस समय के बिहार के राज्यपाल बहार खान की सेवा में शामिल हुए। अकेले एक बाघ की हत्या में द्वारा दिखाए गए साहस और वीरता के लिए बहार खान ने उन्हें शेर खान का खिताब

दिया गया था। बाद में बहार खान ने उन्हें डिप्टी गवर्नर और अपने बेटे जलाल खान के शिक्षक के रूप में नियुक्त किया था। वह फिर बाबर की सेवा में शामिल हुये लेकिन जल्द ही वापस आ गये। क्योंकि जलाल खान नाबालिग था इसलिए शेर खान बिहार की आभासी शासक थे। 1531 में उन्होंने मुगल शासक हुमायूँ से अपनी स्वतंत्रता माँगी। उन्होंने हुमायूँ के साथ कई लड़ाइयाँ लड़ी, शुरू में बंगाल में गौड़ पर कब्जा किया और अंततः 1540 में कन्नौज की लड़ाई के बाद दिल्ली की गद्दी हासिल की। उन्होंने अपने शासन का विस्तार जारी रखा और कुछ ही समय अपने राज्य में पूर्व में सिंधु से पश्चिम में बंगाल तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया। वह एक बहादुर सिपाही और एक सैन्य प्रतिभा थे और उन्होंने मेवात की लड़ाई में रेत के थैलों का उपयोग कर बंकर बनाये थे।

वह एक बहुत ही कुशल प्रशासक थे और उनके शासन और सुधारों वह शुरू के लिए उन्हें याद किया जाता है। उनका प्रशासन बहुत ही कुशल लेकिन थोड़ा सख्त था। उन्होंने अपने राज्य को प्रांतों के रूप में विभाजित कर दिया जिन्हें सरकार खा जाता था। आगे उन्हें परगना और फिर छोटी इकाइयों में विभाजित किया गया। माना जाता है कि 'टंका' के स्थान पर रुपया और पैसा लागू करने वाले पहले शासक थे। उन्हें कस्टम ड्यूटी की शुरुआत का श्रेय भी दिया जाता है जिसका आज भी पालन किया जाता है। उन्होंने कई सराय, मस्जिदों का निर्माण कराया और सड़कों का तंत्र भी स्थापित किइस जिसमें सबसे प्रसिद्ध है ग्रांड ट्रंक रोड। उनमें वास्तुकला के प्रति एक परिष्कृत स्वाद था, जो उनके द्वारा निर्मित रोहतास किले के निर्माण में स्पष्ट है।

उन्होंने अपने प्रशासन के साथ-साथ सैन्य गतिविधियों को भी जारी रखा। उन्होंने बुंदेलखंड में कालिंजर के मजबूत किले को घेरा था जहां 1545 में बारूद के विस्फोट में उनकी आकस्मिक मौत हो गई थी। हालांकि उन्होंने पांच साल की छोटी अवधि के लिए ही भारत पर राज्य किया था लेकिन उनके द्वारा किए गए परिवर्तनों ने लोगों के जीवन पर चिरस्थायी प्रभाव डाला। उन्हें मध्यकालीन भारत के सबसे सफल शासक के रूप में देखा जाता है। एस ए राशिद के अनुसार एक सक्षम जनरल, घाघ सैनिक, और एक प्रतिबद्ध शासक के तौर पर शेरशाह अन्य शासकों के ऊपर ही रहे।

इतना महान था उनका व्यक्तित्व की उनके सबसे बड़े शत्रु हुमायूँ ने उनकी मौत पर उन्हें उस्ताद-ए-बादशाह, राजाओं के शिक्षक के नाम से संबोधित किया था। शेरशाह सूरी के बाद उनके पुत्र जलाल खान ने गद्दी संभाली जिसने बाद में इस्लाम शाह के नाम को अपनाया था। उसने सासाराम, बिहार में अपने पिता शेरशाह सूरी के एक शानदार मकबरे का निर्माण किया।

प्रारंभिक जीवन

शेरशाह का जन्म सासाराम शहर में हुआ था, जो अब बिहार के रोहतास जिले में है। ख, उनका असली नाम फरीद खँ था पर वो शेरशाह के रूप में जाने जाते थे क्योंकि उन्होंने कथित तौर पर कम उम्र में अकेले ही एक शेर को मारा था। उनका कुलनाम 'सूरी' उनके गृहनगर "सुर" से लिया गया था। उनके दादा इब्राहिम खान सूरी नारनौल क्षेत्र में एक जागीरदार थे जो उस समय के दिल्ली के शासकों का प्रतिनिधित्व करते थे। उनके पिता पंजाब में एक अफगान रईस जमाल खान की सेवा में थे। शेरशाह के पिता की दो पत्नियाँ और आठ बच्चे थे।

शेरशाह को बचपन के दिनों में उसकी सौतेली माँ बहुत सताती थी तो उन्होंने घर छोड़ कर जौनपुर में पढ़ाई की। पढ़ाई पूरी कर शेरशाह 1522 में जमाल खान की सेवा में चले गए। पर उनकी सौतेली माँ को ये पसंद नहीं आया। इसलिये उन्होंने जमाल खान की सेवा छोड़ दी और बिहार के स्वघोषित स्वतंत्र शासक बहार खान नुहानी के दरबार में चले गए। ख, अपने पिता की मृत्यु के बाद फरीद ने अपने पैतृक जागीर पर कब्जा

जीवन वृत्त एवं उपलब्धियां:

शेरशाह का जन्म 1472 में पंजाब के होशियारपुर बैजवाडा ग्राम में हुआ था। उसके बचपन का नाम फरीद था। फरीद के पिता हसन खां ने सुलतान बहलोल लोदी के दरबार में सलाहकार के रूप में नौकरी कर ली थी। उसके पिता कई परगने के सूबेदार थे। फरीद का बचपन सहसराम [बिहार] में बीता। हसन की चार पत्नियां व आठ पुत्र थे। सबसे बड़ी पत्नी अफगानी थी। शेष दासी पत्नियां थीं। फरीद सबसे बड़ी पत्नी का पुत्र था।

सौतेली माताओं के व्यवहार तथा पारिवारिक झगड़ों से दुखी और परेशान होकर वह 22 वर्ष की अवस्था में जौनपुर आ गया। यहां आकर उसने इस्लामी धर्म-ग्रन्थों का अरबी, फारसी में अध्ययन किया। अपनी योग्यता के कारण वह शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। उसके पिता हसन खां ने उसे कालान्तर में अपनी दो जागीरों का प्रबन्ध भार सौंप दिया।

अपने शासनकाल में उसने किसानों, जमींदारों के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित किया। फरीद ने जमीन की नपायी कराकर रिश्वतखोर कर्मचारियों को हटाकर जमींदारों की शोषण प्रवृत्ति पर नियन्त्रण स्थापित किया। उसने किसानों से कहा— "मैं तुम्हें अधिकार देता हूँ कि तुम लगान अदा करने का वही तरीका चुन लो, जो तुम्हारे लिए सबसे फायदेमन्द हो। यदि तुम्हें कुछ तकलीफ हो, तो सीधे मेरे पास चले आओ।"

शेरशाह ने किसानों की दशा को सुधारने के लिए उनकी कठिनाइयों पर विशेष ध्यान दिया । किसानों के खेतों की सुरक्षा करते हुए उसने अकाल तथा कठिनाई के समय उन्हें यथासम्भव सहायता प्रदान की । भूमि की पैमाइश के आधार पर लगान का निर्धारण किया । शेरशाह ने भू-स्वामियों को खबरदार करते हुए कहा— “किसी भी किसान से अधिक वसूली पर तुम्हारे हिसाब से उसे काटा जायेगा ।” शेरशाह का शासन निरंकुश होते हुए भी प्रजा के लिए कल्याणकारी था । वह अपने राज्य की बाहरी आक्रमणों से न केवल रक्षा करने पर ध्यान देता था, बल्कि जनता की भौतिक, मानसिक और नैतिक उन्नति को भी अपना कर्तव्य समझता था । वह एकमात्र ऐसा शासक था, जिसने हिन्दू और मुसलमान दोनों को ऊंचे पदों पर आसीन किया ।

द्वितीय अफगान साम्राज्य

अभी तक शेरशाह अपने आप को मुगल सम्राटों का प्रतिनिधि ही बताता था पर उनकी चाहत अब अपना साम्राज्य स्थापित करने की थी। शेरशाह की बढ़ती हुई ताकत को देख आखिरकार मुगल और अफगान सेनाओं की जून 1539 में बक्सर के मैदानों पर भिड़ंत हुई। मुगल सेनाओं को भारी हार का सामना करना पड़ा। इस जीत ने शेरशाह का साम्राज्य पूर्व में असम की पहाड़ियों से लेकर पश्चिम में कन्नौज तक बढ़ा दिया। अब अपने साम्राज्य को वैध बनाने के लिये उन्होंने अपने नाम के सिक्कों को चलाने का आदेश दिया। यह मुगल सम्राट हुमायूँ को खुली चुनौती थी।

अगले साल हुमायूँ ने खोये हुये क्षेत्रों पर कब्जा वापिस पाने के लिये शेरशाह की सेना पर फिर हमला किया, इस बार कन्नौज पर। हतोत्साहित और बुरी तरह से प्रशिक्षित हुमायूँ की सेना 17 मई 1540 शेरशाह की सेना से हार गयी। इस हार ने बाबर द्वारा बनाये गये मुगल साम्राज्य का अंत कर दिया और उत्तर भारत पर सूरी साम्राज्य की शुरुआत की जो भारत में दूसरा पठान साम्राज्य था लोधी साम्राज्य के बाद।^{ख४}, सरकार और प्रशासनखसंपादित करें,

स्वी में शेरशाह सूरी द्वारा जारी सबसे पहला रुपया। सिक्के में देवनागरी और फारसी में लिखा है। शेरशाह सूरी एक कुशल सैन्य नेता के साथ-साथ योग्य प्रशासक भी थे। उनके द्वारा जो नागरिक और प्रशासनिक संरचना बनाई गयी वो आगे जाकर मुगल सम्राट अकबर ने इस्तेमाल और विकसित की। शेरशाह की कुछ मुख्य उपलब्धियाँ अथवा सुधार इस प्रकार हैं:^{ख३},

शेरशाह सूरी का मकबरा, सासाराम

सासाराम, बिहार के रोहतास जिले का मुख्यालय है जो ग्रांड ट्रंक रोड (राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या 2) पर बसा एक छोटा सा शहर है और मुगलसराय-गया खंड पर उसी नाम का एक रेलवे स्टेशन भी है। यह राज्य की राजधानी, पटना से लगभग 160 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। शेरशाह सूरी को वास्तव में भारत के राष्ट्रीय नायकों में से एक समझा जाता है। शेरशाह सूरी (मूल नाम फरीद खान) बहादुर, बुद्धिमान, पैनी राजनैतिक परख रखने के साथ-साथ व्यवहार कुशल सैन्य प्रशासक होने के अलावा नगर प्रशासन में भी असाधारण कौशल और योग्यता रखने वाला व्यक्ति था। उसके पिता, हसन शाह सासाराम के जागीरदार थे। शेरशाह सूरी का जन्म सन 1472 ईसवी में हुआ था और उसने अपनी औपचारिक शिक्षा जौनपुर से प्राप्त की थी। अपनी विशेषताओं के कारण उसने अपने कार्य की शुरुआत एक छोटे जागीरदार के रूप में की और वह मुगल बादशाह, हुमायूँ को हराने के बाद सन 1540 ईसवी में दिल्ली के राज सिंहासन पर बैठा। लेकिन दुर्भाग्य से वह पांच वर्ष की एक छोटी अवधि तक ही शासन कर सका क्योंकि रबी-उल-अवाल के दसवें दिन हिजरी 952 या 13 मई 1545 ईसवी को कालिंजर के किले में एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। उसने एक स्वतंत्र राजवंश, सूर-अफगान की स्थापना की। उसने विभिन्न क्षेत्रों में आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त की थी। उसने अपने संपूर्ण साम्राज्य में कानून और व्यवस्था की पुनःस्थापना की और व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा दिया। शेरशाह सूरी ने कोलकाता से पेशावर के बीच चलने वाले पुराने राजमार्ग जिसे ग्रांट ट्रंक रोड कहते हैं को फिर से चालू करवाया और आगरा से जोधपुर और चित्तौड़ तक एक सड़क का निर्माण करवाया जो गुजरात बंदरगाह के मार्ग को जोड़ती है और तीसरा मार्ग लाहौर से मुल्तान तक बनवाया जो पश्चिम और मध्य एशिया में जाने वाले काफिलों के लिए था। यात्रियों की सुविधाओं के लिए उसने इन मार्गों पर अनेक सरायों का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त, उसने 'रूपए' मुद्रा का प्रारंभ किया और एक व्यवस्थित डाक सेवा की शुरुआत की। शेरशाह सूरी एक महान निर्माता भी था। उसने दिल्ली के निकट यमुना नदी के किनारे पर एक नया नगर बसाया था जिसमें से केवल पुराना किला ही बचा है। इसके भीतर मस्जिद है जो प्रचुर सजावट के लिए जानी जाती है। लेकिन वास्तुशिल्प के क्षेत्र में उसने उत्कृष्ट योगदान सासाराम, बिहार में अपना स्वयं का मकबरा बनवा कर दिया जो सादगी और लालित्य का मिला-जुला रूप है। इस मकबरे को भारतीय-अफगान वास्तुशिल्प के भव्य नमूनों में से एक समझा जाता है। यह ईंटों से बनी एक शानदार इमारत है जिसमें अंशतः पत्थर लगे हैं और जो लगभग 305 मीटर माप वाले एक भव्य वर्गाकार तालाब के मध्य में पत्थर के एक बड़े चबूतरे पर खड़ी है। 9.15 मीटर ऊंचा चबूतरा, प्राकार-दीवार से घिरा है जिसके चार कोनों पर अष्टकोणीय गुम्बदनुमा मंडप हैं।

सन्दर्भ—:

1. शेर शाह," (अंग्रेजी में). इन्फोप्लीज. कोलम्बिया इनसाइक्लोपीडिया. अभिगमन तिथि: १६ मई २०१४.
2. इस तक ऊपर जायें:अ आ इ "शेरशाह सूरी: एक महान राष्ट्र निर्माता". रेस अगेंस्ट टाइम. १७ दिसम्बर २०१३. अभिगमन तिथि: १६ मई २०१४.
3. ऊपर जायें "5 साल में शेरशाह ने किए थे जनहित के बेमिसाल काम". जी न्यूज. २० अप्रैल २०१४. अभिगमन तिथि: १६ मई २०१४.
4. घूस तक ऊपर जायें:अ आ Sher Shah Suri 1540–1545 (मंतसल स्पमि) ख़ोर शाह सूरी १५४०–१५४५ (पूर्व जीवन)," (अंग्रेजी में). जनरल नोलेज टुडे. २८ मई २०११. अभिगमन तिथि: १६ मई २०१४.
5. शेर शाह," (अंग्रेजी में). बांग्लापीडिया. Archived from the original on २२ जनवरी २०१२.
2. <https://hindi-mapsofindia.com/who&is&who/history/biography&of&sher&shah&suri&in&hindi>
- 3- <http://www-gyanipandit-com/sher&shah&suri&history&in&hindi/>
- 1.

ईचौपाल की अवधारणा और भारतीय अर्थव्यावस्था

अर्चना शर्मा

सहायक प्राध्यापक

समाज शस्त्र विभाग

शा.भेल पी.जी. महाविद्यालय भोपाल

चौपाल की अवधारणा

भारतीय किसानों के लिए नई नहीं है। आइटीसी द्वारा उठाया गया शुरुआती कदम आज हजारों गांवों में अपनी छाप छोड़ रहा है। आज बहुत सारे सरकारी विभाग और नैस्कॉम 'प्रत्येक गांव में एक कंप्यूटर के लक्ष्य को हासिल करने के लिए जोरशोर से लगे हुए हैं। वर्तमान में 11 राज्यों और 42 हजार गांवों में तकरीबन 7000 ई-चौपालों का फायदा लगभग 40 लाख किसान उठा रहे हैं वे उसकी मदद से सोयाबीन, मसाले, कॉफी, गेहूं, चावल, मक्का, दालें और अन्य अनाज उप

जा रहे हैं। देश में सबसे पहले आइटीसी ने 1500 ई-चौपाल नेटवर्क बनाया, जिसमें बैटरी से चलने वाला कंप्यूटर, एक संचालक और सैटेलाइट संचार की व्यवस्था की गई थी। इसी तर्ज पर रिलायंस इंडस्ट्री भी अपना सामाजिक आधारभूत ढांचा बना रही है ताकि वो किसानों तक अपनी पहुंच बना सकें। आंध्रप्रदेश, पंजाब और हरियाणा से दूध की खरीद के लिए इस मॉडल को शुरू किया गया है, जल्द ही इसमें और भी वस्तुएं शामिल की जाएंगी। डीसीएम श्रीराम कंसल्टेंसी लिमिटेड (डीएससीएल) ने अपने तरीके का ई-चौपाल मॉडल बनाया है जिसे नाम दिया गया है हरियाली किसान बाजार (एचकेबी)। इस मॉडल का लक्ष्य गांव के लोगों, खासतौर पर किसानों के लिए बाजार बनाना है। सन 2002 में शुरू हुए इस हरियाली मॉडल के 160 बूथ हैं और एक बूथ के जरिए 20,000 किसानों के परिवार तक पहुंच बनाई गई है। आइटीसी के एक अधिकारी के अनुसार 'किसान की सारी जरूरतें कोई एक आदमी पूरी नहीं कर सकता, इसलिए ई-चौपाल की जरूरत महसूस हुई, पर अभी यह शुरुआत है अभी बहुत काम होना बाकी है। दरअसल आम किसान के लिए ई-चौपाल एक ऐसा जादू का पिटारा है, जिससे फसलों की सही कीमत और जरूरत के सामान के साथ कई और महत्वपूर्ण खबरें और नसीहतें उपलब्ध होती हैं, जैसे—

फसलों का डाटाबेस

आपको अगली बार कौन सी फसल उगानी है यह निरधारण करने में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया डाटाबेस आपकी मदद करेगा। यह आपको सलाह देगा कि कौन सी फसल उगाना फायदेमंद और घरेलू परिस्थितियों के अनुरूप सही है। एचकेबी ने अपने यहां 2-3 कृषि वैज्ञानिकों को रखा है जो सभी केन्द्रों पर किसानों को 24 घंटे अपनी सेवा देते हैं। बिचौलियों से मुक्ति वस्तु (कमोडिटी) बाजार से कंप्यूटर के माध्यम से सीधे जुड़ने पर आपको बिचौलियों के बगैर उपज की बेहतर कीमत मिलेगी। इस समय देश में करीब 25 वस्तु विनमय केन्द्र (कमोडिटी एक्सचेंज) है जिनमें चार राष्ट्रीय स्तर के हैं जैसे- नैशनल मल्टी-कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया (एनएमसीई), नैशनल बोर्ड ऑफ ट्रेड (एनबीटी), नैशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव एक्सचेंज (एनसीडीइएक्स) और मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स)।

अन्य सुविधाएं

इन केन्द्रों से पेट्रोल पंप, एलपीजी गैस कनेक्शन और बैंक भी जुड़े हुए हैं। भारत पेट्रोलियम के साथ एचकेबी ने अपने केन्द्र के नजदीक एक पेट्रोल पंप खोलने के लिए गठजोड़ भी किया है और अब तक 16 पेट्रोल पंपों ने काम करना शुरू भी कर दिया है तथा साल के अंत तक 60 और पेट्रोल पंप के शुरू होने की उम्मीद है। आइसीआइसीआई और एचडीएफसी बैंक ने भी अपने काउंटर यहां खोले हैं। इनमें से कुछ केन्द्रों पर शॉपिंग मॉल और सुपर बाजार भी है जहां घरेलू उपभोक्ता वस्तुएं जैसे टीवी, फ्रिज आदि भी खरीदे जा सकते हैं। ज्ञात रहे कि 'विलेज कंप्यूटर को चलाने के लिए ज्यादा पढ़ा होना या वैज्ञानिक होना जरूरी नहीं है। मात्र 15 से 20 दिन का प्रशिक्षण लेने के बाद आप पंचायत के कंप्यूटर रूम को संभाल सकने में सक्षम हो सकते हैं। यही नहीं, इन कोर्सेज में प्रशिक्षण के लिए आप दसवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के बाद आवेदन भी कर सकते हैं। भारत में तकरीबन छः लाख गांवों में इस रोजगार की विपुल संभावनाएं हैं।

आईटीसी के अध्यक्ष वाई सी देवेश्वर अपनी महत्वाकांक्षी योजना ई चौपाल के जरिये वालमार्ट जैसा मुकाम हासिल करना चाहते हैं। उनकी ई चौपाल में किसान इंटरनेट के जरिये सीधे बाजार से जुड़कर अपने उत्पाद बिना किसी बिचौलिये के ही बेच सकते हैं। इससे छोटे किसानों को बड़ी ताकत मिली है।

यळ देवेश्वर के सपनों की योजना रही है और वह इसे हर हाल में परवान चढ़ाना चाहते हैं और अपने इस मकसद में उन्हें खासी कामयाबी भी मिली है। ई चौपाल की पहल को शुरू हुए दस साल बीत चुके हैं।

वर्ष 2000 में महज 6 चौपाल के साथ ही इसकी शुरुआत हुई थी। वर्ष 2007 में यह आंकड़ा 6,500 तक पहुंच गया था। तब एक वक्त तो ऐसा भी आया था कि आईटीसी रोजाना 6 नई ई चौपाल की बुनियाद रख रही थी। किसानों के लिए इतने बड़े पैमाने पर शुरु किया गया ऑनलाइन अभियान अपने आप में बेहद खास है।

इसकी खासियत ही इसे हॉवर्ड बिजनेस स्कूल की केस स्टडी और दिवंगत मैनेजमेंट गुरु सी के प्रहलाद की किताब 'द फॉर्च्यून एट द बॉटम ऑफ पिरामिड' में जगह दिला पाई है। इसके लिए लक्ष्य तय किया गया था कि वर्ष 2010 तक देश भर में करीब 20,000 ई चौपाल स्थापित किए जाएंगे जिनका दायरा 1,00,000 गांवों तक फैला होगा। लेकिन इस रफ्तार में जरा मंदी आ गई और ई चौपाल का आंकड़ा 6,500 पर ही ठहर गया। उद्योग जगत के एक अंदरूनी सूत्र का कहना है, 'दस साल के एक बच्चे का सातवें वर्ष के बाद विकास रुक गया।'

इसकी वजह पहचानना भी ज्यादा मुश्किल नहीं है। निर्यात पर पाबंदी, सब्सिडी, स्टॉक पर नियंत्रण, वायदा कारोबार पर रोक के अलावा कृषि उत्पाद विपणन समिति (एपीएमसी) अधिनियम में संशोधन की मद्दम पड़ी रफ्तार ने ई चौपाल परिचालन में जोखिम और मुनाफे को प्रभावित किया है। आईटीसी के कृषि कारोबार प्रभाग के मुख्य कार्याधिकारी एस शिवकुमार का कहना है वर्ष 2007 में ई चौपाल की रफ्तार के रुकने में कृषि क्षेत्र में चल रहे नीतिगत सुधारों की गति की भी अहम भूमिका रही है। उनमें से कुछ की दिशा ही बदल दी गई है या फिर उनमें सुधार की गति अपेक्षित नहीं है। शिवकुमार ही आईटीसी की ई चौपाल योजना के प्रमुख शिल्पकार हैं। फिलहाल कोई नई ई चौपाल नहीं लगाई जा रही है। ऐसे में उस लक्ष्य का क्या होगा जो कंपनी ने तय किया हुआ था? शिवकुमार कहते हैं कि जब भी सुधार पटरी पर आ जाएंगे तब लक्ष्य की समीक्षा की जाएगी। ई चौपाल मॉडल किसानों को मंडी कीमतों के बारे में सूचित करने और बीज तथा उर्वरक आदि के ऑर्डर देने के अलावा अच्छी कृषि की तकनीक से भी अवगत कराता है। प्रत्येक बूथ पर एक प्रशिक्षित किसान संचालक द्वारा इंटरनेट की सुविधा दी जाती है।

कंप्यूटर संचालक के घर में रहता है और वह फोन अथवा वीएसएटी के जरिए इंटरनेट से जुड़ा रहता है। प्रत्येक सेवा औसतन पांच किलोमीटर की परिधि में रहने वाले 10 गांवों के 600 किसानों को लाभान्वित करती है। संचालक कुछ परिचालन लागत देता है लेकिन बदले में उसे ई चौपाल के जरिए होने वाले ई-लेनदेन के लिए कुछ सेवा शुल्क मिलता है। ई चौपाल की सफलता के बाद ग्रामीण मार्केटिंग हब के रूप में चौपाल सागर बनाए गए।

ये मुख्यतया कृषि संबंधी कामों के लिए तथा शॉपिंग सेंटर के रूप में विकसित किए गए। कंपनी की योजना 2007 तक 40 और 2010 तक 100 ऐसे केंद्र बनाने की थी। हालांकि आज तक केवल 24 ही चौपाल सागर बन सके हैं। इसी तरह चौपाल फ्रेश के नाम से फलों व सब्जियों की खुदरा व थोक बिक्री की जो योजना 2007 में शुरू की गई थी वह अभी तक आरंभिक स्तर पर ही है। उम्मीद है कि अगले तीन चार सालों में इसके तहत 140 स्टोर खोले जाएंगे।

त्साम रुकावटों के बावजूद आईटीसी हार मानने को तैयार नहीं और अब वह कृषि विस्तार के अलावा रोजगार कार्यालयों के रूप में नए कारोबार की संभावना तलाश रही है। इसके तहत ग्रामीण इलाकों के युवा विभिन्न रोजगारों के लिए ई चौपाल के जरिए आवेदन कर सकेंगे। ई-चौपाल ग्रामीण किसानों के लिए इंटरनेट का उपयोग प्रदान करता है कि आईटीसी लिमिटेड द्वारा भारत-आधारित व्यापार पहल है। उद्देश्य कृषि वस्तुओं की गुणवत्ता और किसानों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, एक परिणाम के रूप में, सूचित और उन्हें सशक्त करने के लिए है।

आईटीसी लिमिटेड (पूर्व में भारत तंबाकू कंपनी लिमिटेड) सिगरेट, विशेषता कागज, खाद्य उत्पादों और पैकेजिंग सेवाओं के अपने उत्पादन के लिए जाना जाता है भारत में एक उपभोक्ता उत्पाद और कृषि व्यवसाय समूह है। ई-चौपाल पहल के माध्यम से, आईटीसी छह सौ किसानों प्रत्येक के एक औसत की सेवा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक 6500 ई-चौपाल कंप्यूटर स्टेशनों बनाया गया है। इस प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, किसानों, आपूर्ति आदेश के बारे में सबसे अच्छा कृषि पद्धतियों जानने के लिए, मौसम की रिपोर्ट प्राप्त हो जाएगा और पूरे क्षेत्र में फसलों के लिए मूल्य निर्धारण के बारे में पढ़ सकते हैं। किसानों को उनकी खुद की कीमतों के लिए उस जानकारी का उपयोग कर सकते हैं। वे अब एक बिचौलिया के माध्यम से बेचने के लिए मजबूर कर रहे हैं क्योंकि वे भी अधिक मुनाफा प्राप्त करते हैं। आईटीसी लिमिटेड ने भी अपनी आपूर्ति श्रृंखला को सरल बनाने और उसका मुनाफा बढ़ाने के द्वारा, पहल से लाभ।

ऐसा क्यों है कि अभिनव है ई चौपाल कई अर्थशास्त्र आईटीसी के लिए लाभ के साथ-साथ ग्राहक प्रदान की है। फसल की कीमतों पर वेब सक्षम वास्तविक समय डाटा को अपनी उपज के लिए बाजार की कीमतों के साथ किसान प्रदान करते हैं। मध्यस्थ के रूप में आईटीसी लाभ को हटा रहे हैं, और परिवहन लागत में कमी। बिचौलियों के बजाय वे के रूप में बनाया गया है, मूल्य श्रृंखला से नहीं हटाया गया उलवरनो नए ई-चौपाल की स्थापना में आईटीसी की सहायता जो (समन्वयकों)। उन्होंने यह भी

माल की भौतिक परिवहन संभाल और उस पर एक कमीशन कमाते हैं। मौसम और वैज्ञानिक खेती के तरीकों, और उच्च गुणवत्ता खेत आदानों की आपूर्ति के बारे में जानकारी प्रदान करके, आईटीसी उनकी दक्षता और उनके उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए किसानों को सक्षम होना चाहिए। यह भी आपूर्ति श्रृंखला के कई क्षेत्रों में जोखिम को कम करने के लिए कंपनी को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्रदान की ई चौपाल भी एक प्रभावी विपणन वाहन के साथ आईटीसी प्रदान की है। आईटीसी गुणवत्ता मानदंड से काफी ज्यादा हैं, जो उत्पादन के लिए "बोनस अंक देता है"। यह अन्य आईटीसी उत्पादों के लिए विमर्श किया जा सकता है। आईटीसी भी उपभोक्ता उत्पादों का विज्ञापन करने के लिए एक माध्यम के रूप में ई-चौपाल का उपयोग करता है।

सन्दर्भ—:

हिन्दी शब्दावली मे रमेने बीतपेज = ईसा मसीह हैं जो संस्कृत से लिया गया है। तथापि स-ठीक यीशु मसीह देखिये।ख्,

ULDAS (वार्ता) ११:३२, ८ जनवरी २०१८ (पेज)

1- <http://www-guide2india-org/jesus&in&hindi&life&story/>

2- <https://http://www-shabdkosh>

<com/translate/jesus%20christ/jesus%20christ&meaning&in&Hindi&English>

Goods and Services Tax (India)

Dr, Santosh yadav
Professor commerce
Sarojni Naidu Girls Collage Bhopal

Goods Services Tax (GST) is an indirect tax levied in India on the sale of goods and services. Goods and services are divided into five tax slabs for collection of tax - 0%, 5%, 12%, 18% and 28%. Petroleum products and alcoholic drinks are taxed separately by the individual state governments. There is a special rate of 0.25% on rough precious and semi-precious stones and 3% on gold.^[1] In addition a cess of 22% or other rates on top of 28% GST applies on few items like aerated drinks, luxury cars and tobacco products.

The tax came into effect from July 1, 2017 through the implementation of one hundred and first amendment by the Government of India. The tax replaced existing multiple cascading taxes levied by the central and state governments. The tax rates, rules and regulations are governed by the Goods and Services Tax Council which comprises finance ministers of centre and all the states. GST simplified a slew of indirect taxes with a unified tax and is therefore expected to dramatically reshape the country's 2 trillion dollar economy.

Goods and Services Tax (GST) is an indirect tax which was introduced in India on 1 July 2017 and was applicable throughout India which replaced multiple cascading taxes levied by the central and state governments. It was introduced as The Constitution (One Hundred and First Amendment) Act 2017,[1] following the passage of Constitution 122nd Amendment Act Bill. The GST is governed by a GST Council and its Chairman is the Finance Minister of India. Under GST, goods and

services are taxed at the following rates, 0%, 5%, 12% ,18% and 28%. [2]There is a special rate of 0.25% on rough precious and semi-precious stones and 3% on gold.[3] In addition a cess of 15% or other rates on top of 28% GST applies on few items like aerated drinks, luxury cars and tobacco products.[4] GST was initially proposed to replace a slew of indirect taxes with a unified tax and was therefore set to dramatically reshape the country's 2 trillion dollar economy. In May 2016, the Lok Sabha passed the Constitution Amendment Bill, paving way for GST. However, the Opposition, led by the Congress demanded that the GST Bill be again sent back to the Select Committee of the Rajya Sabha due to disagreements on several statements in the Bill relating to taxation. Finally in August 2016, the Amendment Bill was passed. Over the next 15 to 20 days, 18 states ratified the GST Bill and the President Pranab Mukherjee gave his assent to it.

A 21-members select committee was formed to look into the proposed GST laws.[10] State and Union Territory GST laws were passed by all the states and Union Territories of India except Jammu & Kashmir, paving the way for smooth rollout of the tax from 1 July 2017.[11] There was to be no GST on the sale and purchase of securities. That continues to be governed by Securities Transaction

If a company has turnover up to RS. 1.5 Crore in preceding financial year then they need not to mention HSN code while supplying goods on invoices, if a company has turnover more than 1.5 Cr but up to 5 Cr then they need to mention 2 digit HSN code while supplying goods on invoices and if turnover cross 5 Cr then they shall mention 4 digit HSN code on **Tax (STT).[12]**

Launch

The GST is imposed at different rates on different items. The rate of GST is 18% for soaps and 28% on washing detergents. GST on movie tickets is based on slabs, with 18% GST for tickets that cost less Rs. 100 and 28% GST on tickets

costing more than Rs.100.[22] The rate on under-construction property booking is 12%.[23] Some industries and products were exempted by the government and remain untaxed under GST, such as dairy products, products of milling industries, fresh vegetables & fruits, meat products, and other groceries and necessities. Checkposts across the country were abolished ensuring free and fast movement of goods.

The Central Government had proposed to insulate the revenues of the States from the impact of GST, with the expectation that in due course, GST will be levied on petroleum and petroleum products. The central government had assured states of compensation for any revenue loss incurred by them from the date of GST for a period of five years. However, no concrete laws have yet been made to support such action.

GST council adopted concept paper discouraging tinkering with rates. **Goods and Services Tax Network (GSTN)** This section needs to be updated. Please update this article to reflect recent events or newly available. As per the government website on GST, "Goods and Services Tax" Network (GSTN) is a nonprofit organisation proposed to be formed for creating a website / platform for all the concerned parties related to the GST, namely stakeholders, government and taxpayers to collaborate on a single portal. When up and running, the portal is supposed to be accessible to the central government which allows it to track down every transaction on its end while taxpayers are advertised to have the ability of connecting this to their tax returns. However its efficacy and efficiency is yet to be tested. The IT network was touted to be developed by unnamed private firms. The known authorised capital of GSTN is ₹10 crore(US\$1.6 million) in which Central Government holds 24.5 percent of shares while the state government holds 24.5 percent and rest with private banking firms for smooth running of the transactions.[28]

GST Advantages

1. GST is a transparent tax and also reduce number of indirect taxes.
2. GST will not be a cost to registered retailers therefore there will be no hidden taxes and the cost of doing business will be lower.
3. Benefit people as prices will come down which in turn will help companies as consumption will increase.
4. There is no doubt that in production and distribution of goods, services are increasingly used or consumed and vice versa.
5. Separate taxes for goods and services, which is the present taxation system, requires division of transaction values into value of goods and services for taxation, leading to greater complications, administration, including compliances costs.
6. In the GST system, when all the taxes are integrated, it would make possible the taxation burden to be split equitably between manufacturing and services.
7. GST will be levied only at the final destination of consumption based on VAT principle and not at various points (from manufacturing to retail outlets). This will help in removing economic distortions and bring about development of a common national market.
8. GST will also help to build a transparent and corruption free tax administration.
9. Presently, a tax is levied on when a finished product moves out from a factory, which is paid by the manufacturer, and it is again levied at the retail outlet when sold.
10. GST is backed by the GSTN, which is a fully integrated tax platform to deal with all aspects of GST.

GST Disadvantages

1. Some Economist say that GST in India would impact negatively on the real estate market. It would add up to 8 percent to the cost of new homes and reduce

demand by about 12 percent.

2. Some Experts says that CGST(Central GST), SGST(State GST) are nothing but new names for Central Excise/Service Tax, VAT and CST. Hence, there is no major reduction in the number of tax layers.
3. Some retail products currently have only four percent tax on them. After GST, garments and clothes could become more expensive.
4. The aviation industry would be affected. Service taxes on airfares currently range from six to nine percent. With GST, this rate will surpass fifteen percent and effectively double the tax rate.
5. Adoption and migration to the new GST system would involve teething troubles and learning for the entire ecosystem.

For the Common Man Items Expected to Get Cheaper

The following things/items are expected to become cheaper under GST for the common man:

- Prices of movie tickets may become cheaper in most states
- Dining in restaurants
- Two-wheelers
- Entry-level sedan (except small cars)
- SUVs and luxury or premium cars
- Televisions
- Washing machines
- Stoves

For the Common Man Items Expected to Get Costlier

The following things/items are expected to become costlier under GST for the common man:

- Mobile bills

- Renewal premium for life insurance policies
- Banking and investment management services
- Basic luxuries for a common man like WIFI and DTH services, online booking of tickets may become costlier.
- Residential rent
- Health care
- School fees
- Courier services
- Commuting by metro or rail may become expensive.
- Aerated drinks
- Cigarettes and tobacco products.
-

Disadvantages of GST

- According to the experts, terms such as GST which includes CGST, SGST, and IGST is nothing but just a new name in accordance with the existing tax systems. Kind of old wine in a new bottle.
- The Service Tax which stood at 15% in the previous regime, has now been replaced with GST at 18%. As such many services have become costlier with telecom, airline and banking affected majorly. In fact, insurance and petroleum are also said to be majorly affected by the enactment of GST Tax.
- The GST Act has given the control of businesses to Central and State Governments with businessmen binding by-laws. This has given rise to complexity for many businessmen across the nation.
- Post GST implementation, the first few instances of application have resulted in high tax outgo for businesses. Businesses are trying to claim the credit of input tax but several cases of mismatch of data are coming up. As a result, there is chaos among the tax filers.

- The opposition has called it as a Disability Tax as many of the things related to disabled people which were earlier tax-free are now included in GST taxation. Prior to implementation of GST, brail paper, typewriter, hearing aid and motorised wheelchair were tax-free whereas these things are being taxed now. The opposition has made pleas to roll back the tax on such items.
- On one end, the government is trying to give a push to banking services and insurance in India and on the other end, the government has decided to tax banking and insurance service at higher rates when compared to the previous rates.
- GST has also had an impact on discount and reward programs as well. The product is being taxed on the rates pre-discount whereas the products were earlier taxed at post discount prices. Most of the companies have also suspended reward programs for temporary basis because of complexities of GST.
- The government has chosen a mid-year launch for GST and this will lead to problems in taxation and reporting during the end of the financial year. Ideally, the government should have launched GST at end of financial year as this would have avoided a lot of confusion during taxation and reporting.
- As per GST, the seller requires registering in all the states that it does business in and it has increased the complexity for the seller. The government should have created a provision for centralised registration of State GST as this would have helped many sellers during the rollout.

GST is the new regime of indirect tax in the nation which has modified the existing indirect tax rules. It has scheduled a coalition between central and state government amidst the cry for better taxation system which it duly delivered. However, a coin holds two sides, and as such GST has both, some advantages and some disadvantages

References

1. "GST: Cars, durables face 28% rate; luxury vehicles to attract 15% cess", [Business Standard](#), 18 May 2017
2. "Film theatres in Tamil Nadu to begin indefinite strike against GST". [The Hindu](#). 2 July 2017. Retrieved 3 July 2017.
3. "Looking back at GST's journey: How an idea is now near reality", [Indian Express](#), 31 March 2017
4. "GST: A 17-year-old dream, 17 phases towards creating history", [India Today](#), 29 June 2017
5. "Goods and Services Tax: History of India's biggest tax reform and people who made it possible", [India TV](#), 29 Jun 2017
6. "GST: Meet the men behind India's biggest tax reform that's been in making for 17 years", [India Today](#), June 29, 2017
7. Nair, Remya (8 June 2015), "Rajya Sabha panel to hear GST concerns on 16 June", [Live Mint](#)
8. "GST rollout: All except J-K pass State GST legislation", [The Indian Express](#), 22 June 2017"GST draft makes it must for companies to pass tax benefit to consumers", [The Times of India](#), 27 .

भारतीय सामाजिक उन्नयन में रामकृष्ण मिशन की भूमिका

संजय कुमार अग्रवाल
शोधार्थीयसमाज शास्त्र
म.ल.बा.शा. उत्कृष्ट

महाविद्यालय ग्वालियर यम.प्र.द्ध
रामकृष्ण मिशन की स्थापना— भारत का इतिहास अनेक ऋषि मुनियों का इतिहास रहा है। यह देखा गया कि जब किसी बाह्य शक्ति ने भारतीय सभ्यता को क्षति पहुंचाई है, तभी भारत की नैसर्गिक श्रद्धा और संस्कृति की रक्षा के लिये धर्म संस्थापकों का आविर्भाव हुआ। ठीक 19वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में अंग्रेजी शिक्षा के विस्तार से भारतीय आस्था पुनः दुर्बल होती गयी। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की स्वधर्म एवं संस्कृति के प्रति रूचि कम होने लगी। सनातन धर्म से उनका विश्वास उठने लगा। और उनको ऐसा लगने लगा कि हिन्दू धर्म अन्धविश्वास तथा व्यर्थ के कर्मकाण्डों से भरा है। जबकि किसी में यह जिज्ञासा नहीं हुयी कि अपने पूर्वजों की महान संस्कृति का अध्ययन कर इसमें निहित दर्शन का अनुसंधान करें।
ऐसी विषम परिस्थिति में 1936 में बंगाल के हुगली जिले के कामारपुकुर नामक ग्राम में श्रीरामकृष्ण का जन्म एक निर्धन तथा निष्ठावान ब्राम्हण नामक परिवार में हुआ। वे बड़े होकर अपने बड़े भाई के साथ कोलकाता आये और कोलकाता के दक्षिणेश्वर में काली मन्दिर पर वे पुजारी बन गये। उनकी कठोर साधना और आकुल प्रार्थना से प्रस्तर की काली प्रतिमा मानो जाग्रत हो उठी।
रामकृष्ण युग का प्रारम्भ— सन् 1885 के अप्रैल माह में श्रीरामकृष्ण जी को गले का रोग आरम्भ हुआ। काफी चिकित्सा के बाद भी रोग को ठीक होते न देख, चिकित्सा सेवा की सुविधा हेतु उन्हें 2 अक्टूबर 1885 में श्यामपुकुर तथा कुछ ही दिन बाद काशीपुर लाया गया। गृहस्थ भक्त तथा युवक भक्तों में कोई-कोई वहीं रहते और कोई-कोई बीच-बीच में घर से आकर श्रीरामकृष्ण जी की सेवा करते थे। उसी समय श्रीरामकृष्ण जी चयनित युवक भक्तों में त्याग का भाव जाग्रत कर तपस्या, शास्त्रचर्चा तथा उपदेश द्वारा अपने भावी संघ के निर्माण में लग गये। जब एक दिन युवक नरेन्द्रयविवेकानन्द जीद्ध ने रामकृष्ण देव से आग्रह किया वे शुकदेव की तरह रातदिन निर्विकल्प समाधि में रहना चाहते हैं, तब श्रीरामकृष्ण देव जी ने छिडकते हुए कहा था— छिः! तू इतना छोटा विचार रखता हैघ मैं तो चाहता था कि तू वट-वृक्ष बनेगा जिसकी छाया में बहुत से लोग आश्रय लेंगे।

श्रीरामकृष्ण देव ने अपनी महासमाधि के कुछ दिन पूर्व नरेन्द्र को अपनी सम्पूर्ण शक्ति देते हुये कहा, देख नरेन तेरे हाथों में इन सबको सौंप कर जाता हूँ। इन्हें तू खूब प्रेम करना, जिससे ये पुनः घर नहीं लौटकर एक ही स्थान में रहकर साधन-भजन में मन लगा सकें, ऐसी व्यवस्था करना। " इस प्रकार उन्होंने नरेन्द्र को नायक बनाकर विशेष रूप से प्रशिक्षित किया इतना कहकर ही वे नहीं रुके। बल्कि इन लोगों के जाति भेद को दूर करने के लिये एक दिन उन्होंने सबको जाति-वर्ण का विचार न कर सबके घर पर शिक्षा के लिये भेजा। किसी दूसरे दिन इन अन्तरंग शिष्यों को त्याग का ज्वलन्त प्रतीक स्वरूप गेरुआ वस्त्र प्रदान किये। इस प्रकार युवा शिष्यों को संन्यास व्रत में दीक्षित कर श्रीरामकृष्ण ने स्वयं ही नरेन्द्रनाथ के नेतृत्व में काशीपुर के उद्यान में रामकृष्ण संघ का आरम्भ किया।"

वराहनगर का प्रथम रामकृष्ण मठ— श्रीरामकृष्ण जी ने अपने नवयुवा भक्तों को जो आध्यात्मिकता का बीजारोपण किया था उसे पूर्ण करने के लिये त्यागी युवक कृत संकल्पित थे। एक रात श्रीरामकृष्ण जी के गृही शिष्य सुरेन्द्र मित्र ध्यान कर रहे थे, तभी ठाकुर जी ने उन्हें दर्शन देकर कहा, तुम यहाँ ध्यान कर रहे हो, और मेरे लडके इधर उधर भटक रहे हैं पहले उनकी व्यवस्था करो।" इतना सुनते ही सुरेन्द्र ने नरेन्द्रयस्वामी विवेकानन्द जी के पास जाकर कहा— मैं जितने रुपये ठाकुर सेवा के लिये पहले देता था, उतने अभी भी दूँगा, तुम सब युवकों को एकत्र कर उनकी आवास की व्यवस्था करो। उसके बाद वराहनगर अंचल में एक खण्डहर मकान किराये पर लिया गया नरेन्द्र की प्रेरणा से सभी त्यागी युवक एक-एक कर आने लगे, बड़े गोपाल मठ में आने वालों में पहले सदस्य थे। उसके बाद तारकनाथ तथा कुछ महीने बाद काली यस्वामी अभेदानन्द और राखाल यस्वामी ब्रम्हानन्द भी आ गये। नरेन्द्र शशी यरामकृष्णानन्द शरत आदि हमेशा मठ में आते जाते रहते थे। एक ताम्रपात में ठाकुरजी के अस्थि-अवशेषों की स्थापना पर जीवन्त रूप में उनकी नित्य पूजा होने लगी।

धर्म सम्बन्धी विचार—रामकृष्ण मिशन को पूर्ण रूप से स्थापित करने एवं आगे बढ़ाने का श्रेय प्रमुख रूप से स्वामी विवेकानन्द जी को ही जाता है। विवेकानन्द जी ने धर्म को एक प्रबल शक्ति माना है। धर्म ने मानव जाति के भाग्य निर्माण में अपार योगदान दिया है। धर्म सामाजिक संगठन तथा सहयोग की प्रबल शक्ति है। उन्होंने बताया कि अब तक मानवता को इसी शक्ति ने संगठित किया है। "धर्म के सार और सर्वस्व का स्वामी विवेकानन्द जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया" प्रत्येक आत्मा ही सर्वस्व ब्रम्ह है। ब्रम्ह एवं अन्तः प्रकृति दोनों का नियमन कर इस अर्न्तनिहित ब्रम्ह स्वरूप को अभिव्यक्त करना ही जीवन का ध्येय है। कर्म, भक्ति, योग तथा ज्ञान के द्वारा या इनमें से किसी एक के द्वारा या एक से अधिक के द्वारा या सबके सम्मेलन के द्वारा यह ध्येय प्राप्त कर लो और मुक्त हो जाओ। यही कर्म का सर्वस्व है। मत—मतान्तर विधि

या अनुष्ठान, मन्दिर ये सब गौण हैं। स्वामी विवेकानन्दजी ने वेदान्त दर्शन के व्यावहारिक रूप देने का अथक प्रयास किया। विवेकानन्द जी अद्वैत वेदान्त के सन्देशवाहक थे। वे मायावादी भी थे। परन्तु उनकी बुद्धि समन्वयकारी थी। पश्चिम की वैज्ञानिक उपलब्धियों से वे भलिभाँति परिचित थे। परन्तु उनका दृढ़ विश्वास था कि पश्चिम की तुलना में, भारत—साहित्य, ज्ञान विज्ञान, इतिहास, संस्कृति तथा धर्म के पक्ष में कहीं अधिक सहिष्णु तथा समृद्ध हैं। जात—पात साम्प्रदायिकता तथा छुआछूत का कडा विरोध—विवेकानन्द जी ने रुढिवाद तथा पाश्चात्य भौतिकवादों संस्कृति के प्रति अत्यधिक आकर्षण को बेईमानी एवं शारीरिक विकार की उपेक्षा को देश के पतन का कारण बताया। उन्होंने यह भी कहा कि पतन के लिए भारतवासियों द्वारा अपने को हीन मानना, मौलिकता एवं साहस की कमी, आलस्य, संकीर्ण दृष्टिकोण धर्म की उपेक्षा व दुर्बलता एवं पिछड़ापन भी उत्तरदायी हैं।

जिस रूप में जाति भेद भारत में अपनी जड़े जमा चुका था। उसे समूल रूप से नष्ट करना असंभव था। अतः एक यथार्थ वादी विचारक के रूप में विवेकानन्दजी ने कहा था कि हमारा उचित प्रयास यह होना चाहिए कि मूल चातुर्यवर्ण व्यवस्था पुनः जीवित की जाये और निम्नतर वर्गों को ऊपर उठाकर उच्चतर वर्गों के स्तर पर लाया जाये ब्राह्मणों को नीचे गिराने की अपेक्षा यह उचित होगा कि प्रत्येक को उनके धरातल पर ले जाना चाहिये तथा उनमें संस्कृति का प्रचार करना चाहिये क्योंकि स्थायी सुधार का यही मात्र एक उपाय है। विवेकानन्दजी ने पुरोहित धर्म की कटु शब्दों में निन्दा की तथा परम्परावादी ब्राह्मणों के पुरातन अधिकारवाद के सिद्धान्त का खण्डन किया। स्वामी जी लोकतान्त्रिक आध्यात्मवाद के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि सभी मनुष्यों को परमज्ञान अर्जन करने का पूर्ण अधिकार है। उन्होंने प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का जोरदार विरोध किया। सच्ची शिक्षा— स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि यदि व्यक्ति एकाग्र होकर अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करें तो उसे सही अर्थों में ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। जो व्यक्ति किसी भी विषय में या ज्ञान विज्ञान की किसी भी धारा में यदि अधिकार पूर्वक रूप से ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो उसे सच्चे मन से एकाग्र होना ही पड़ेगा।

स्वामी जी का मत था कि छात्रों को ऐसा वातावरण प्रदान किया जाये कि वह स्वयं सीख सकें, क्योंकि सीखता तो वह स्वयं ही है कोई उसे अनावश्यक रूप से ज्ञान नहीं सिखा सकता। ऐसा कोई माली नहीं होता जो पौधे का पेड़ बना दे। हाँ इतना अवश्य कर सकता है कि कोई पौधे को क्षति न पहुँचा सकें। इसी प्रकार शिक्षक को चाहिये कि छात्र के सीखने की स्वतन्त्रता का सम्मान करें तथा छात्र को स्वतः शिक्षित होने दें। एक सफल शिक्षक होने के नाते स्वामी विवेकानन्द जी ने देश काल और पात्र के अनुसार विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया।

सन्दर्भ—ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन— एच. सी. शर्मा
ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली
2. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन— डॉ. वी. पी. वर्मा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
3. स्वामी विवेकानन्द जी यसांस्कृतिक चेतना के वैश्विक प्रहरीद्ध— डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव अल्फा
पब्लिकेशन नई दिल्ली
4. स्वामी विवेकानन्द साहित्य संचयन— स्वामी ब्रम्हास्थानन्द रामकृष्ण मठ नागपुर
5. मेरा भारत अमर भारत— स्वामी विवेकानन्द जी रामकृष्ण मठ धनतोली नागपुर
6. स्वामी विवेकानन्द जीवनी और उपदेश— स्वामी लोकेश्वरानन्द जी अद्वैत आश्रम कोलकाता
7. विवेकानन्द जी की आत्मकथा— शंकर एवं सुशील गुप्ता प्रभात प्रकाशन दिल्ली
8. विवेक ज्योति—रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर छत्तीसगढ़

DESIGN OF RAIN WATER HARVESTING SYSTEM

Ankur Verma
Research Scholar,
University Institute of Technology, R.G.P.V.,
Bhopal (M.P.) India

Abstract: *India is rapidly urbanising. The scarcity of water is not an unknown issue. Every summer, the news over water crises and conflicts are all over. The main objective of this project is to show that by using rain water harvesting technique, we can save water, meet water demands to some extent and utilise it appropriately and contribute to recharge of ground water with the nominal cost. The study includes designing of cost-effective and easier rainwater harvesting technology in the institutional building of B.V.D.U.C.O.E, PUNE and provides water facilities for various purposes in the college.*

Keywords: groundwater, rainwater harvesting system

Introduction:

Rainwater harvesting is a easy method by which rainfall is collected for future use. The collected rainwater may be stored, utilised in different ways or directly used for recharge purposes. The B.V.D.U.CO.E campus is situated at Katraj-Dhankawadi, Pune-43. It is surrounded by other institutes of Bharati Vidhyapeeth University. B.V.D.U,COE, Pune have nine departments in the college. Hence, total strength of the college including students and staffs people will be more than 3,032 and it is still under the expansion project adding more number of students and faculty person and increasing facilities by building new departmental building and infrastructures. The aim of this project is to show the benefits of rain water harvesting system by implementing small but effective technique in the campus. Thus to achieve the

potential gains of this system and draw maximum advantage from it, we need to have large rooftops areas which will be acting as catchment areas of our rainwater harvesting system.

Therefore, we have included all the major buildings having large rooftop areas. Hence, project study areas include all the departmental buildings such as, central wing, west wing, north wing, library building, and mechanical building.

Methodology:

Computation of volume of runoff per year,

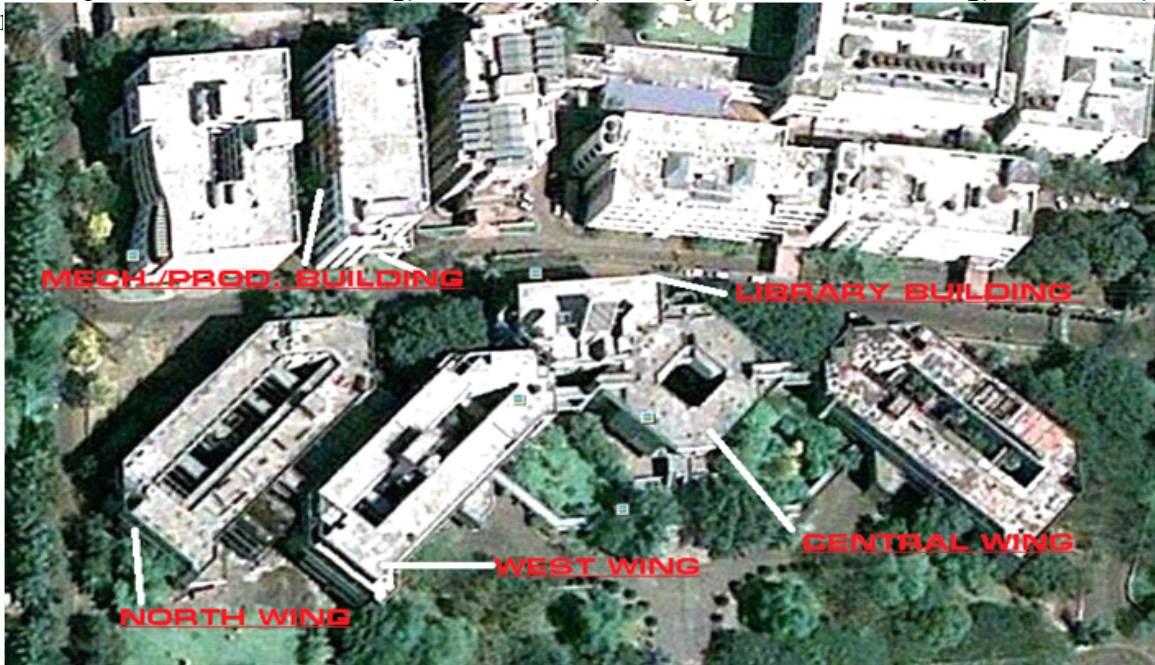
Annual water harvesting potential = Total catchment area (m²) × Average annual rainfall

× Runoff coefficient

Total roof area of B.V.D.COE, PUNE was calculated = 4361 m²
 Average annual rainfall at Pune = 722 mm
 Runoff coefficient = 0.85

Total catchment area,

Area of the catchment (A) = 718 m² (rooftop area of central wing) + 1205 m² (rooftop area of north wing) + 1103 m² (rooftop area of west wing) + 432 m² (



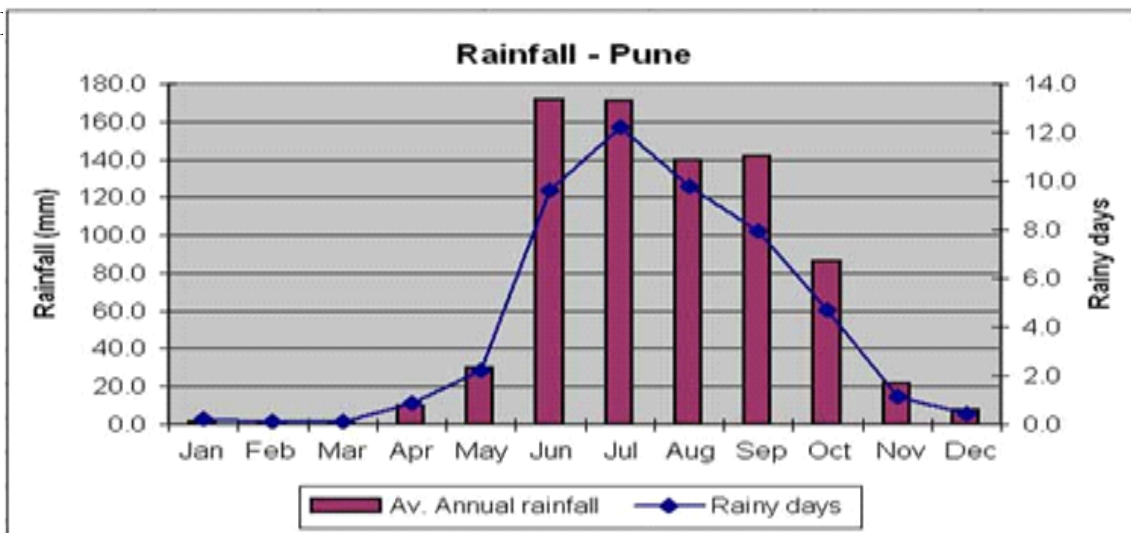
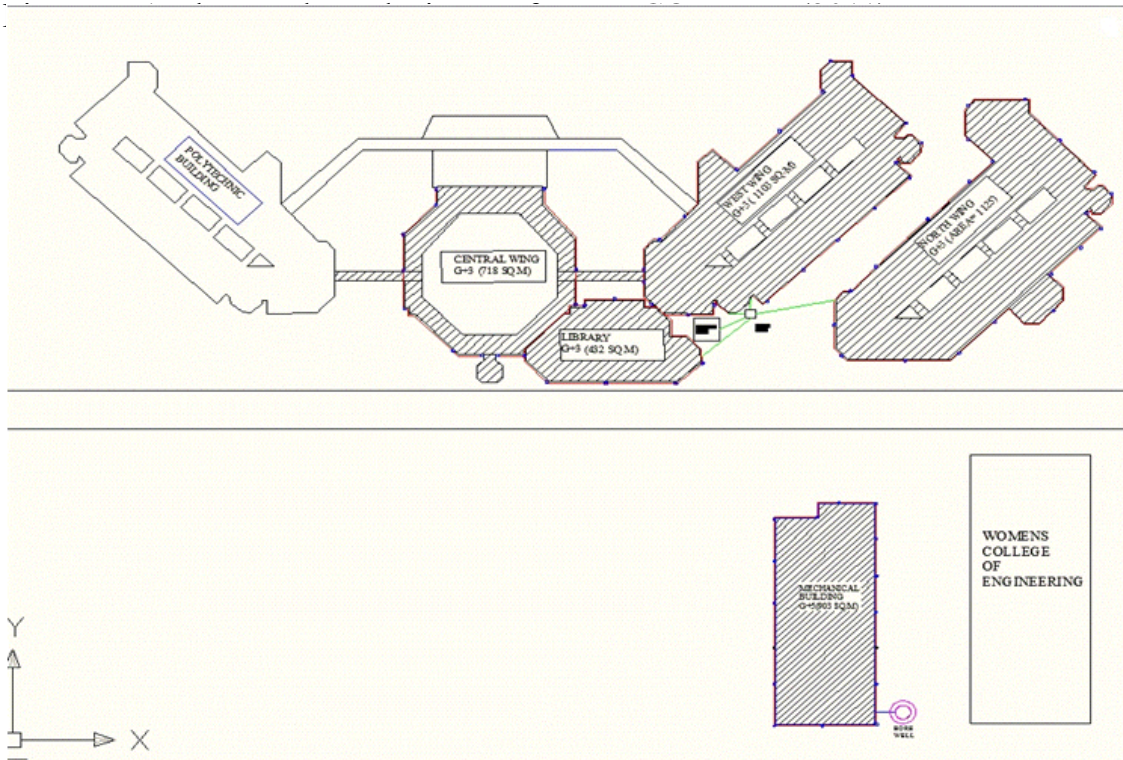


Figure no.3: Rainfall Data of Pune City(2011)

Rainfall data is required preferably for a period of at least 10 years

Average annual rainfall of Pune city is 722 mm

Annual water harvesting potential = $4361 \times 0.722 \times 0.85 = 2676.34 \text{ m}^3 = 26,76,340 \text{ lt.}$

Total volume of water suppose to be collected = 24, 41,077 liters per year

Avg daily water harvested in monsoon period (from June to Sept)= **17,550 liters/day**

Design of storage tanks:

It depends upon;

Avg. daily water harvested in monsoon (from June to Sept.) = 17,550 liters/day

Total strength of college = 3,032

Water required per person/lit./day i.e. 140lit.

The storage tank must be;

The storage tank is of dimensions $5\text{m} \times 5\text{m} \times 3\text{m}$

The capacity of tank is 75000 litres.

The storage tank is underground RCC tank.

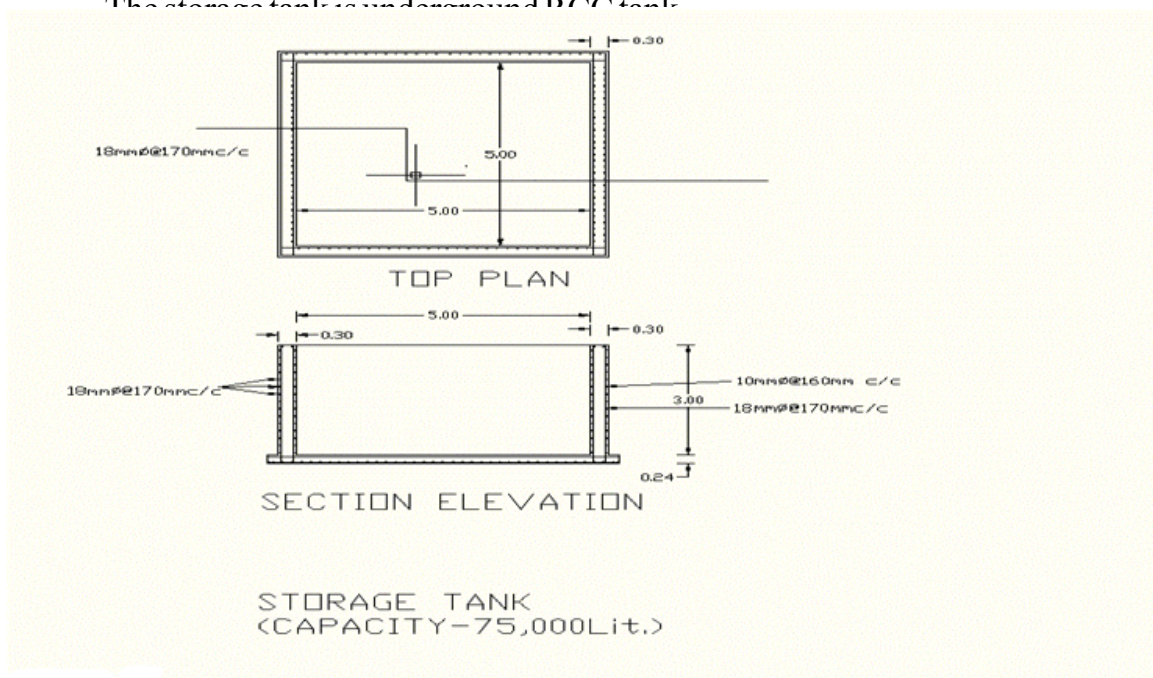


Figure no.6: Design of Recharge Well(2011)

Measurement & Costing:

<i>❖ Storage Tank</i>				
Activity	Quantity	Rate	Per Unit	Amount
Excavation	125.64	52.50.00	M ³	6533.00
PCC	09.00	2435.00	M ³	21915.00
RCC	27.68	2575.00	M ³	71276.00
STEEL	3433.286 kg	40.00	kg	137331.00
TOTAL				237055.00

Table no.1: Measurement of storage tank(2011)

<i>❖ Square Filter Tank</i>				
Activity	Quantity	Rate	Per Unit	Amount
Excavation	15.00	52.50	M ³	787.50
PCC	01.56	2435.00	M ³	3798.60
RCC	03.517	2575.00	M ³	9056.30
STEEL	366.22 kg	40.00	kg	14648.80
TOTAL				28291.20

Table no.2: Measurement of square filter tank(2011)

<i>❖ Recharge Open Well</i>				
Activity	Quantity	Rate	Per Unit	Amount
Excavation	34.30	50.00,55.00,770.00	M ³	8844.50
PCC	01.894	2435.00	M ³	4611.89
BRICK M	12.486	2540.00; 203.00	M ³	18932.00
TOTAL				37197.55

Table no.3: Measurement of recharge open well(2011)

- **For Storage Water Tank**

Total cost	Rs. 237055.00
Add 5% for Contingencies	Rs. 248908.60
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.251397.67
Grand total	=Rs.251400 /-

• **For Square Filter Tank**

Total cost	Rs. 28291.20
Add 5% for Contingencies	Rs. 29705.76
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.30002.80
Grand total	= Rs. 30000 /-

• **For recharge open well**

Total cost	Rs. 37198.00
Add 5% for Contingencies	Rs. 37057.90
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.39448.50
Grand total	=Rs.39500 /-

❖ *Conveyance system*

Item	Size	Quantity	Rate	Per Unit	Cost
<i>Rain water storage system</i>					
Horizontal downtake pipes	dia 75mm	690.00	50.00	metre	34500.00
Vertical downtake pipes	dia 63mm	861.40	34.00	metre	29287.60
Wire mesh		59.00	20.00	no.	1180
Mesh in filter tank		4.00	225.00	m ²	
TOTAL					65868.00
<i>Rain water recharge system</i>					
Horizontal downtake pipes	dia 75mm	136	50.00	metre	6800.00
Vertical downtake pipes	dia 63mm	350.40	34.00	metre	11914.00
Wire mesh		16.00	20.00	no.	320.00
TOTAL					19034.00
Fittings + Other charges	25% of Total				4758.00

Table no.4: Measurement of conveyance system(2011)

Total cost for rainwater storage system= 251400 + 30000 + 65868 + 16467
= Rs. 363735 /-

Total cost for rainwater recharge system = 39500 + 19034 + 4758
= Rs. 63292 /-

Total cost of rain water harvesting project at B.V.D.U,COE, Pune
= 363735 + 63292 = **Rs.427027 /-**

Break Even Analysis of Rainwater Harvesting System:

CASE-1

- Estimated cost of storage tank=Rs. 2,51,400 /-
- Estimated cost of filter tank =Rs.30,000 /-
- Estimated cost of conveyance system=Rs.65,868 /-
- Estimated cost of recharge well system =Rs.53,384 /-
- Total estimated cost of rain water harvesting system=Rs.4,27,000/-
- Cost of 1 water tanker = Rs.400 /-
- Number of tanker require per day = 2
- Total cost of the tanker per day=Rs.800 /-
- Water supplied from the rainwater harvesting system per year=130 days
- Total saving from rainwater harvesting system per year=Rs.800 x 130

CASE-2

By considering the two underground water storage tanks which has already been built in the college, the total cost for the construction of the rain water harvesting system in Bharati Vidyapeeth University, College of Engineering can be greatly reduced.

- Capacity of 1st tank =75,000 litres
- Capacity of 2nd tank =80,000 litres
- Total capacity of the tanks=1,55000 litres

From case 1

- Estimated cost of the design storage tank=Rs.2,51,400 /-
- Total estimated cost of the rainwater harvesting system=Rs.4,27,000
- Therefore, total cost of the project without the design storage tank =

Rs.1,75,600

- Total saving from rainwater harvesting system per year =Rs.1,04,000/-
- Therefore, duration to recovery the investment in rainwater harvesting system
=1,75,600/ 1,04,000

Rainwater harvesting system's Break Even Point = 1.5 years

Conclusion:

Thus by utilising the already constructed two tanks, the amount of water that can be stored is more than that can be stored by the design storage tank. Moreover the total cost for the construction of rain water harvesting system is greatly reduced.

Implementation of rainwater harvesting system at the B.V.D.U, College of engineering, Pune will be the best approach to fight with present scenario of water scarcity in all aspects, whether it is from financial point of view or an awareness programme. Water is highly a precious natural resource which is always in high demand and thus, RAINWATER HARVESTING at B.V.D.U, COE, Pune is highly recommended.

Note-The Study is carried out in 2011.

References:

www.rainwaterharvesting.org

www.aboutrainwaterharvesting.com

HARVESTING RAINWATER by Arjun Battacharya and O'Neil Rane.

RAIN WATER HARVESTING by Norma Houry-Nolde.

Construction engineering and management by S Seetharaman.

Rainwater Harvesting Project at the Development Technology Unit of School of Engineering, University of Warwick, UK.

DIN 1989-1. 2002. Rainwater Harvesting Systems Part 1: Planning, Installation, Operation and Maintenance. German Institute for 8.Standardisation, Berlin, 2002. Gould, J. and Nissen-Petersen, E. (1999) 9.Rainwater Catchment Systems for Domestic Supply: Design, construction and implementation. IT Publications, London.

Activity	Quantity	Rate	Per Unit	Amount
Excavation	34.30	50.00,55.00,770.00	M ³	8844.50
PCC	01.8942435.00	M ³	4611.89	
BRICK M	12.4862540.00; 203.00	M ³		18932.00
TOTAL				37197.55

Table no.3: Measurement of recharge open well(2011)

- **For Storage Water Tank**

Total cost	Rs. 237055.00
Add 5% for Contingencies	Rs. 248908.60
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.251397.67
Grand total	=Rs.251400 /-

• **For Square Filter Tank**

Total cost	Rs. 28291.20
Add 5% for Contingencies	Rs. 29705.76
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.30002.80
Grand total	= Rs. 30000 /-

• **For recharge open well**

Total cost	Rs. 37198.00
Add 5% for Contingencies	Rs. 37057.90
Adding 1% for work charge	
Establishment	=Rs.39448.50
Grand total	=Rs.39500 /-

❖ *Conveyance system*

Item	Size	Quantity	Rate	Per Unit	Cost
<i>Rain water storage system</i>					
Horizontal downtake pipes	dia 75mm	690.00	50.00	metre	34500.00
Vertical downtake pipes	dia 63mm	861.40	34.00	metre	29287.60
Wire mesh		59.00	20.00	no.	1180
Mesh in filter tank		4.00	225.00	m ²	
TOTAL					65868.00
<i>Rain water recharge system</i>					
Horizontal downtake pipes	dia 75mm	136	50.00	metre	6800.00
Vertical downtake pipes	dia 63mm	350.40	34.00	metre	11914.00
Wire mesh		16.00	20.00	no.	320.00
TOTAL					19034.00
Fittings + Other charges		25% of Total			4758.00

Table no.4: Measurement of conveyance system(2011)

Total cost for rainwater storage system= 251400 + 30000 + 65868 + 16467
= Rs. 363735 /-

Total cost for rainwater recharge system = 39500 + 19034 + 4758
= Rs. 63292 /-

Total cost of rain water harvesting project at B.V.D.U,COE, Pune
= 363735 + 63292 = **Rs.427027/-**

Break Even Analysis of Rainwater Harvesting System:

CASE-1

- Estimated cost of storage tank=Rs. 2,51,400 /-
- Estimated cost of filter tank =Rs.30,000 /-
- Estimated cost of conveyance system=Rs.65,868 /-
- Estimated cost of recharge well system =Rs.53,384 /-
- Total estimated cost of rain water harvesting system=Rs.4,27,000/-
- Cost of 1 water tanker = Rs.400 /-
- Number of tanker require per day = 2
- Total cost of the tanker per day=Rs.800 /-
- Water supplied from the rainwater harvesting system per year=130 days
- Total saving from rainwater harvesting system per year=Rs.800 x 130

CASE-2

By considering the two underground water storage tanks which has already been built in the college, the total cost for the construction of the rain water harvesting system in Bharati Vidyapeeth University, College of Engineering can be greatly reduced.

- Capacity of 1st tank =75,000 litres
- Capacity of 2nd tank =80,000 litres
- Total capacity of the tanks=1,55000 litres

From case 1

- Estimated cost of the design storage tank=Rs.2,51,400 /-
- Total estimated cost of the rainwater harvesting system=Rs.4,27,000
- Therefore, total cost of the project without the design storage tank =
Rs.1,75,600

- Total saving from rainwater harvesting system per year =Rs.1,04,000/-
- Therefore, duration to recovery the investment in rainwater harvesting

system

$$=1,75,600/1,04,000$$

Rainwater harvesting system's Break Even Point = 1.5 years

Conclusion:

Thus by utilising the already constructed two tanks, the amount of water that can be stored is more than that can be stored by the design storage tank. Moreover the total cost for the construction of rain water harvesting system is greatly reduced.

Implementation of rainwater harvesting system at the B.V.D.U, College of engineering, Pune will be the best approach to fight with present scenario of water scarcity in all aspects, whether it is from financial point of view or an awareness programme. Water is highly a precious natural resource which is always in high demand and thus, RAINWATER HARVESTING at B.V.D.U, COE, Pune is highly recommended.

Note-The Study is carried out in 2011.

References:

www.rainwaterharvesting.org

www.aboutrainwaterharvesting.com

HARVESTING RAINWATER by Arjun Battacharya and O'Neil Rane.

RAIN WATER HARVESTING by Norma Khoury-Nolde.

Construction engineering and management by S Seetharaman.

Rainwater Harvesting Project at the Development Technology Unit of School of Engineering, University of Warwick, UK.

DIN 1989-1. 2002. Rainwater Harvesting Systems Part 1: Planning, Installation, Operation and Maintenance. German Institute for Standardisation, Berlin, 2002. Gould, J. and Nissen-Petersen, E. (1999) Rainwater Catchment Systems for Domestic Supply: Design, construction and implementation. IT Publications, London.

"Limnological studies fima fish fauna"

(Rekhanjali Pandey)
M.Sc.
Deptt. of Zoology
Govt. S.G.S. P.G. College
Sidhi (M.P.)

INTRODUCTION

Biodiversity is the variety of organisms, including their genetic diversity and the assemblage they form (Reid and Miller, 1989). The earth supports between 5-10 million species of plants and animals which have been the result of about 3 billion years of evolution, involving mutation, recombination and natural selection changing environments, such as the ice age followed by warm period and drought, exerted severe selection pressures and were responsible for evolution of new species as well as extinction of already flourishing species. Hence, natural extinction is the part of the overall evolutionary process and the evolution and extinction of species have occurred side by side in nature.

It is estimated that about 1010 species of animals are under threat of extinction on the planet, earth. Currently, one species of animal faces extinction every year, which is about ten times more than the rate between 1600 A.D. Evolutionary processes take millions of years for the origin of one species as well as for the extinction of an existing species (Turki, 1985). Most of the aquatic species which have dwindled fast in recent years happened to be costly

in one way or the other. Among causative factors for their extinction, the water pollution is on the top. Down the ages, the water bodies have been worshipped, but later the human being began to exploit water resources as dust bin which led to their deterioration. Water pollution drastically reduces the biodiversity of freshwater ecosystem. Therefore, proper management and conservation strategies are essential to maintain the biodiversity of the dam ecosystem.

Several researches have been done on the management and conservation of the dam ecosystem of Indian subcontinent (Ganapati, 1957; Ganapati and Sreenivasan, 1968; Sreenivasan, 1984; Mehrotra and Jhingran, 1984; Pati and Sahu, 1993; Sinha *et al.* 1994; Ramana and Sreeramulu, 1994). But no work has been done on the programmatic conservation and management of dam in Vindhya region except Kumar and Singh (1996) who simply provided certain Physico-chemical profiles of the dam. To fill this gap, special attention has been given to the remedial processes for proper management and conservation of the dam and its biodiversity.

Benisagar dam, Jaraha, Rewa district is situated in North-East of Madhya Pradesh. It's shape is triangular and lies between 24°32' North & 81°18' East of Central India. It is surrounded in the North by U.P., in south by Sidhi, in east by Mirzapur and in west by Satna district. There is a railway line, roads were only means of transport previously and recently vayudoot service have been started.

LIMNOLOGICAL OBSERVATIONS

After limnological material and methods of the thesis author has drawn the observation of physicochemical parameters of water of the Benisagr dam, Jaraha in this chapter IV of the thesis. The results are given as per sites of the dam.

Physico-chemical parameters of the water at different sites of the Benisagar Dam, Jaraha, Rewa (M.P.)

(1) Water Temperature

Site S₁ - At this research site the range of water temperature was found between

17.4⁰C and 36.6⁰C minimum temp. was recorded in December 2013 and maximum in June 2013

Site S₂ - Surface water temperature ranged between 22⁰C and 38.8⁰C. It was minimum in Jan. and Feb. 2013 and maximum in Jun. 2013

Site S₃ - The range of water temperature was found between 20.8⁰C and 38⁰C. Temperature was minimum in the month of Feb. 2013 and maximum was recorded in Jun. 2013

Site S₄ - The range of water temp. was recorded between 20⁰C and 38⁰ C. Temperature was minimum in Jan. and Feb. 2012 and maximum in Jan. 2013

Site S₅ - The water temperature was ranging between 19.4⁰C and 38.6⁰C. Temperature was minimum in Feb. 2013 and maximum in Jun. 2013

During the course of present study it was observed that highest value of water temperature was recorded in the month of June 2013 and minimum value of temperature was observed in the month of Dec. 2013. It is also observed that lower value was found at Site S₁ which is already said unpolluted Site and higher value was recorded at the Site S₅.

BIOLOGICAL OBSERVATIONS

PLANKTONIC COMMUNITY OF THE BENISAGAR DAM, JARAHA, REWA (M.P.)

The critical survey of available literature reveals that the existence of plankton in aquatic systems was unknown, until the middle of the last century. The importance of minute organisms which remain suspended in water was recognized as early as 1845 by John miller. In fact, the usage of the term "Plankton" has come down over the century since the time of Hensen, an oceanographer, who first coined this term in 1887. Plankton may be defined as the heterogenous assemblages of minute organisms that occur in the water, floating at the mercy of the waves and other water movements (Welch, 1952). Those plankton which are retained by plankton net, are called "Net plankton" while those that pass through the net are called "Nannoplankton". No hard and fast line can be drawn between the types of organisms based on

size (Pavoni, 1963) and any method of separation between Net plankton and Nannoplankton would be somewhat artificial.

The phytoplankton forms a very important component of the aquatic vegetation, occurring in all kinds of water bodies and consequently enjoying a world wide distribution. Therefore, particularly in the recent past, numerous researchers from all parts of the globe, have paid considerable attention to the study of the planktonic autotrophs.

One of the most important dimension of the ecological community is that of diversity. Diversity of the community, both diversity of species within its and of their inter-relationship to one another, is a crucial facet of the system having many implications for community functions and stability. Species diversity is a measure of the variety of different animal and plant species in a community. A general ecologic principle pertaining to community ecology is that the greater diversity, the greater the stability of the communities. This is because communities with many species have more complex web of food, relationships and each species has greater diversity in its food and cover recourses.

In each of the species in an environment attains its population maxima in accordance with the carrying capacity of its niche, the saturation point is approacher. So, the diversity tends towards an upper limit until a major new environment is opened with new niches to be exploited. As the environment approaches saturation, it becomes progressively more and more difficult for a new species to establish; species number and diversity thus become a constant. A new species can then be accommodated only at the expense of the extinction of an old one (Putmanted and Wratten, 1984). Maintenance of this steady-state equilibrium which has been termed "The Red Queen Hypothesis" by Van Valen (1976) is only possible if the environment remains stable and does not undergo scale fluctuations.

During this investigation all the indices of species number show wide fluctuations, suggesting thereby, that such niche-saturation was perhaps

never attained by the community because of the instability of the studied environment. In India, although, there is some work on water pollution ecology of phytoplankton with particular reference to domestic wastes (Venkateswarlu, 1969, 69b; Govindan and Sundaresan, 1979; Datta *et al.*, 1983c; Trivedy *et al.*, 1983). Aspects of biology of industrial waste waters have been worked out by a few investigators like (David, 1956; Rana *et al.*, 1971; Rajagopalan *et al.*, 1973; Olaniya *et al.*, 1976; Rana, 1977; Rai *et al.*, 1981; Ramaswamy *et al.*, 1982 and Comashekar *et al.*, 1984).

Although, there are a number of major groups of phytoplankton, those relevant to the present investigation are Bacillariophyceae, Chlorophyceae, Cyanophyceae and Euglenophyceae.

1. Bacillariophyceae (diatoms) : is one of the most important groups of phytoplanktonic algae. Most species are sessile and associated with littoral substrata. Their primary characteristic is silicified cell walls and both unicellular and colonial forms are common.
2. The Chlorophyceae (green algae) : is an extremely large and morphologically diverse group which is mostly fresh water in distribution.
3. The Cyanophyceae (also known as Myxophyceae or blue-green algae) : has been among the most studied of all the groups. It is a primitive group which has both prokaryotic and eukaryotic features in its cell structure and function.
4. The Euglenophyceae (euglenoid algae) : forms a relatively large and diverse group but few species are truly planktonic nature.

Analysis and evaluation of seasonal and spatial growth parameters of phytoplankton are somewhat difficult, because of the array of environmental factor involved (Wetzel, 1983). Some important factors regulating the growth and succession have been studied in details by many investigators of the world and some of these are :

- (i) Light and temperature (Godwards, 1962; Steeman Nielsen and

Jorgensen, 1968a, 68b; Jorgensen, 1969).

- (ii) Buoyancy regulation, i.e. means of remaining within the photic zone by alternation of sinking rates (Lund, 1959, 65; Fogg *et al.* 1973; Tituman and Kilham, Booker and Walsby, 1979; Boney, 1981).
- (iii) Inorganic nutrient (Eppley and Thomas, 1969).
- (iv) Organic nutrient factors (Conrad and Saltman, 1962; Wetzel, 1972; Provasoli and Cariucci, 1974; Nishijima *et al.* 1979).
- (v) Biological factors, viz. competition, predation etc. (Sagar and Masler, 1969; Greeney *et al.*, 1973; Mallegraeff and Ringelberg, 1978; Tilman, 1980).

Several limnologists of the world have tackled the problem of distribution and seasonal variations in the abundance of phytoplankton, Pearsall (1923-32) was one of the pioneer workers in Europe in this field. Recently, Lewis (1976, 78a, 78b) has also studied extensively the phytogeography.

During the present study, four major groups of phytoplankton have been studied and identified, Bacillariophyceae, Chlorophyceae, Cyanophyceae and Euglenophyceae and only the "net plankton" community have been analysed qualitatively and quantitatively, their seasonal variations have also been studied and the data obtained have been analyzed statistically to estimate the significance of the impact of physico-chemical parameters on the phytoplankton community. Effort has also been made to evaluate the correlations between physico-chemical parameters and the "net phytoplankton" community

SUMMARY

The present Summary of thesis of author is being submitted for fulfillment of requirement for the degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY in the faculty of Life Science in the A.P.S. University, Rewa (M.P.) India under the head "**Limnological studies of Benisagar Dam, Jaraha, Rewa with special reference to fish fauna**". Every effort is made by the author to illustrate this

thesis as completely as possible through colored maps, photographs, camera lucida diagrams, tables, graphs and ideograms.

The present thesis is presented in 7 chapters as given in the contents, which includes introduction, historical review, material and methods, limnological observations, biological observations, discussion, suggestions and recommendations, summary and bibliography in the end.

Critical survey of the literature reveals that a number of big, medium, minor dams and tanks have envisaged under different river valley projects. These dams have been undertaken for irrigation, power generation and water supply. These dams hailed as the temples of modern India by the Country's first Prime Minister Jawaharlal Nehru, have increased agricultural production, power generation and reduced dependence of imports. But according to some experts, the social, environment and even economic cost of these dams, however, for out weights their benefits. According to them, most important social consequences of big dams has been the displacement of millions of tribals from their homeland and their eventual influx into urban areas utmost as refugees, scientists, environmentalists, journalists, social activists, lawyers and bureaucrats have now taken up the cry against big dams.

BIBLIOGRAPHY

- Abbasi, K. (2003). First record of black carp, *Mylopharyngodon piceus* from southern Caspian Sea (Iran). *Iranian Journal of Fisheries Sciences*. **12(2)** : 139-146. In Farsi.
- Abbasi, K. (2005). Studying alien fishes and macrocrustaceans distribution and their effects on rivers and wetlands of the Iranian basin of Caspian Sea. Borok II, International Workshop, Invasions of Alien Species in Holarctic.

- Abbasi, K. (2006a). Identification and distribution of fish fauna in Shafarud River, Guilan Province. *Iranian Journal of Fisheries Sciences*. **15(2)** : 73-86. In Farsi.
- Abbasi, K. (2006b). Identification and distribution of fish fauna in Hevigh River (Guilan Province). *Iranian Journal of Biology*. **18(4)** : 370-382. In Farsi.
- Abdin, G. (1948). Seasonal distribution of phytoplankton and seassiole algae in river Nile. *Cairo. Ibid.* **29** : 369-382.
- Adholia, Upkar, N. (1979). Zooplankton of the river Betwa (India). *Geo. Eco. Trop.* **3(4)** : 361-371.
- Adholia, Upkar, N. (1988). Hydrography of the river Betwa (India). International workshop on surface water management 28.
- Agarkar, D.S. (1967). Myxophyceae of Gwalior, Madhya Pradesh. *Phykos.* **6** : 1-6.
- Agarwal, D.K., Gaur, S.D., Tiwari, I.C., Narayanswami, N. and Marwal, S.M. (1976). Physico-chemical characteristics of Ganga water at Varanasi. *Indian J. Envir. Hlth.* **18(3)** : 201-206.

मलेरिया नामक संक्रामक रोग का समाजशास्त्रीय अध्ययन विदिशा नगर के विशेष संदर्भ में

- * मधु जड़िया, मिठाई लाल गोड़, शशांक शेखर ठाकुर एवं ओजस्विनी जौहरी
समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
- * समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, विदिशा (म.प्र.)
- * बायोसाइंस विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

संरांश

संचारणीय बीमारियाँ संक्रमण के कारण फैलती हैं, इसलिए इन्हें संक्रामक बीमारियाँ भी कहते हैं। संक्रमण, रोगाणुओं के माध्यम से होता है जो मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं। जीवाणु, वायरस, प्रोटोजोआ एवं फंगस। ये संक्रामक बीमारियाँ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलती हैं और समाज में पाये जाने वाले किसी एक रोगी से समाज के समस्त स्वस्थ व्यक्तियों को प्रभावित करती हैं, अतः वर्तमान अध्ययन में रोगियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन विदिशा नगर के विशेष संदर्भ में एक प्रयास जो स्पष्ट करता है कि समाज में रह रहे संक्रामक रोगी व पालतू जानवरों का रहन-सहन स्वस्थ व्यक्तियों को संक्रमित करता है। समाज में संक्रामक बीमारियाँ मच्छरों व मक्खियों से भी फैलती हैं जो स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, पीतज्वर, हाथी पाँव जैसी बीमारियाँ पैदा करते हैं। समाज में मलेरिया एवं डेंगू प्रचुर रूप से मिलते हैं, जिनके लिए कहीं न कहीं सामाजिक परिवेश जिम्मेदार होता है, क्योंकि समाज में रह रहे मनुष्यों, पालतू जानवरों का रहन सहन ही समाज को सर्वाधिक प्रभावित करता है।

विशिष्ट शब्द - मलेरिया, संक्रमण, पेस्टीसाइड्स, एण्डेमिक, रोगकारक, संक्रामक, संचारणीय

1 प्रस्तावना

मलेरिया विकासशील देशों की बहुत सामान्य बीमारी है, मलेरिया शब्द की उत्पत्ति बुरी हवा वाली जगह से हुई है जिसका मतलब है कि जहाँ पर गंदगी है, वहाँ पर मच्छर पनपते हैं और उनमें से ही मादा एनफिलीज मच्छर के काटने से मलेरिया होता है। प्रत्येक वर्ष मलेरिया के कारण 300 से 500 मिलियन लोग बीमार पड़ते हैं। प्रत्येक वर्ष एक मिलियन बच्चे मलेरिया के कारण मर जाते हैं। भारत में मलेरिया के कारण सबसे अधिक मध्यप्रदेश में लोग पीड़ित होते हैं। मलेरिया से बचने के लिए रसायन जैसे-पाइरेथ्रम

जो कि घरों में उपयोग होने वाला जहरीला पेस्टीसाइड्स होता है, अतः इसका उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये मच्छरों के साथ-साथ मनुष्यों को भी नुकसान करते हैं अर्थात् टारगेट आर्गेनिज्म के साथ-साथ नॉनटारगेट आर्गेनिज्म को भी नुकसान पहुँचाते हैं। मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती भी शरीर को नुकसान पहुँचाती है। अतः घरों में मच्छरदानी का उपयोग करना सर्वोत्तम उपाय है। सेरेब्रल मलेरिया, प्लाजमोडियम फैल्सीफेरम से होता है जो कि सबसे खतरनाक मलेरिया है।

मनुष्य में मलेरिया रोग एक स्पोरोजोअन प्रोटोजोआ प्लाजमोडियम के द्वारा होता है, इस परजीवी का संचरण मनुष्य में मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से होता है। इस रोग के परजीवी के द्वारा सबसे पहले यकृत की कोशिकाओं को तथा इसके बाद लाल रूधिर कोशिकाओं को नष्ट किया जाता है। इसके साथ ही, ये परजीवी रूधिर में हीमोजोइन नामक विषैला पदार्थ उत्पन्न करते हैं जिसके कारण कँप-कँपी आने पर मलेरिया रोग उत्पन्न होता है जिसमें रोगी को तेज फीवर हो जाता है (आगलावे, 2005)। इस रोग का ज्वर एक निश्चित अंतराल के बाद दोहराता है जो कि मलेरिया परजीवी की विभिन्न जातियों के कारण विभिन्न प्रकार का होता है। जैसे टर्शियन मलेरिया प्लाजमोडियम वाइवैक्स द्वारा होता है जिसमें मनुष्य को हर तीसरे दिन ज्वर आता है, ओवेल मलेरिया प्लाजमोडियम मलेरियाई द्वारा होता है जिसमें भी मनुष्य को ज्वर प्रत्येक तीसरे दिन आता है, क्वार्टन मलेरिया प्लाजमोडियम मलेरियाई द्वारा होता है जिसमें मनुष्य को ज्वर प्रत्येक चौथे दिन आता है एवं मैलिग्नेंट टार्शियन मलेरिया प्लाजमोडियम फैल्सिपेरम द्वारा होता है जिसमें रोगी को ज्वर प्रत्येक तीसरे दिन आता है। मलेरिया के उपचार हेतु कुनैन, ऐटेब्रिन, क्लोरोक्विन, डैराप्राइम आदि औषधियाँ लाभकारी होती हैं। गैरीसन (1910) ने संक्रामक रोगियों में संक्रमण के फैलने, सूक्ष्म जीवों के कारण बीमारियों के होने एवं संक्रामक बीमारियों के संचरण के बारे में बताया। मेहता एवं दास (2006) के अनुसार वर्तमान में मलेरिया के कारण 75% से अधिक मृत्यु होती है जो कि रोगी में मलेरिया को पहचानने में देरी एवं अस्पताल में उनके देरी से पहुँचने के कारण होती है। मलेरिया के रोगियों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक होती है क्योंकि महिलाओं की उचित देखभाल न होना व समय पर इलाज न होना इसका मुख्य कारण है। नाथ एवं कुमारी (2006) ने मलेरिया नियंत्रण हेतु पर्यावरण प्रबंधन करने का तरीका बताया। उन्होंने मच्छरों के प्रजनन आवासों में परिवर्तन किया। मच्छरों के दो प्रकार के प्रजनन आवास होते हैं, मानवीय आवास एवं मवेशीय आवास। अतः इन आवासों में पानी को खुला नहीं छोड़ना चाहिये, ताकि मच्छर उत्पन्न न हो सकें। उन्होंने हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग की सहायता से पर्यावरण प्रबंधन किया और अपने कार्यों में संबंधित क्रियाकलापों जैसे—ड्रेनेज सिस्टम, स्ट्रीम कैनेलाइजेशन, लाइनिंग ऑफ स्ट्रीम एण्ड केनल, लेण्ड लेबेलिंग एण्ड फिलिंग, सीवेज कन्ट्रोल, पाइपड या कवर्ड केनल्स एवं ड्रेन्स, वीड कन्ट्रोल एवं उन्नत पानी प्रबंधन आदि को शामिल किया। सिंह, धिमान एवं दास (2011) ने मलेरिया ऐपिडेमिक के दौरान झारखण्ड राज्य के गौड्डा जिले में मलेरिया के फैलने की परिस्थितियों का विश्लेषण किया और बताया कि गोड्डा जिले के 18 ट्रायवल गाँवों में 9.9% स्लाइड

पॉजीटिव रेट (एस.पी.आर.) की मिली एवं 51.2% स्लाइड पॉजीटिव रेट (एस.पी.आर.) प्लाज्मोडियम फैल्सीफेरम की मिली उन्होंने कुल 416 ब्लड स्लाइड्स संकलित की और सभी पॉजीटिव केसेज को क्लोरोक्वीन एवं प्राइमाक्वीनीन से उपचारित किया। भट्टाचार्य (2012) ने तीन मॉडल का उपयोग करते हुए भारत में एक जिले में मलेरिया से होने वाली मृत्यु दर का आंकलन किया और पाया कि 2010 में 32 मलेरिया संक्रमित मरीजों की मृत्यु हुई। उनके तीन मॉडल में पहला मॉडल गेप फिलिंग, दूसरा मॉडल फीवर सर्वे तथा तीसरा मॉडल बर्बल आटोप्सि था जो कि नेशनल वेक्टर बोर्ड डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम (NVBDCP) के अन्तर्गत मेघालय राज्य के वेस्ट गारो हिल्स के 32 गाँवों में मलेरिया सर्वे हेतु विकसित किए गये। कोहली (2013) ने दिल्ली के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में मच्छर जनित बीमारियों के बारे में जागरूकता फैलाने का कार्य किया और 350 वयस्क प्राणियों का साक्षात्कार किया और पाया कि 65.1% व्यक्ति मलेरिया के बारे में जागरूक थे, 63.3% डेंगू के बारे में जागरूक थे, 10% लोगों को चिकनगुनिया के बारे में जानकारी थी और केवल 1% लोगों को पीतज्वर व जापानी ऐनसेफेलाइटिस की जानकारी थी। इस प्रकार उन्होंने देखा कि मच्छर जनित बीमारियों की जानकारी देने के लिए सबसे सामान्य स्रोत टेलीविजन था, अतः यह स्पष्ट होता है कि गहन सूचना प्रणाली, शिक्षा एवं संचार की क्रियाकलापों की समाज को जागरूक करने हेतु आवश्यकता है, ताकि समाज में संक्रामक रोगियों को बढ़ने से बचाया जा सके। सिंह एवं उनके सहयोगियों (2013) ने बताया कि महाराष्ट्र, राज्य के एक मलेरिया से पीड़ित एण्डेमिक जिला के रोगियों में मलेरिया को पी.सी.आर. (पॉलीमरेज चैन रियक्शन) से टेस्ट करने पर पॉजीटिव पाया गया जबकि माइक्रोस्कोप एवं रेपिड डायग्नोस्टिक किट से टेस्ट करने पर नेगेटिव पाया गया। अतः पी.सी.आर. से मलेरिया को कन्फर्म डिटेक्ट किया जा सकता है। इस टेस्ट के आधार पर उन्होंने 819 ब्लड स्मियर्स का परीक्षण किया और 216 लोगों को मलेरिया कन्फर्म किया जिनमें 33 प्लाज्मोडियम वाइवेक्स के मरीज मिले, 84 प्लाज्मोडियम फैल्सीफेरम के तथा 99 मरीज वाइवेक्स एवं फैल्सीफेरम दोनों स्ट्रेन से पीड़ित पाये गये।

1.2 सामाजिक शोध की उपकल्पनाएं

वर्तमान में संक्रामक रोगियों पर निम्नलिखित उपकल्पनाओं को आधार बनाया गया है :

1. संक्रामक रोगी समाज के लिए वंचित वर्ग होता जा रहा है।
2. स्वास्थ्य विभाग एवं सरकारी और गैर सरकारी कार्यक्रमों की इन रोगियों को ठीक करने में सहभागिता।
3. समाज व परिवार का पूर्ण सहयोग का प्राप्त न होना।
4. संक्रमित रोगियों की बढ़ती दर आर्थिक कमजोरी की धोतक होती है।

1.3 सामाजिक शोध के उद्देश्य

उपरोक्त कल्पनाओं को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को प्रतिपादित किया गया

1. चिकित्सालयों में संक्रामक रोगियों की जानकारी प्राप्त करना ।
2. संक्रामक रोगियों के साथ समाज के लोगों के व्यवहार को जानना ।
3. परिवार में संक्रामक रोगियों की स्थिति को जानना ।
4. प्रशासन व स्वास्थ्य विभागों द्वारा संक्रमित रोगी के उपचार हेतु सुविधाओं व योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना ।
5. संक्रामक रोगियों की सामाजिक व व्यवहार संबंधी स्थितियों को जानना ।
6. संक्रामक रोगियों के प्रति पारिवारिक सदस्यों व सामाजिक प्रतिक्रिया का अध्ययन करना ।
7. संक्रामक रोगी एवं निर्मित पर्यावरण का अध्ययन ।

1.4 सामाजिक शोध का प्रारूप एवं वर्णन

समाज में मनुष्य का मनुष्य के द्वारा अध्ययन एक कठिन कार्य है अतः शोध प्रणाली में इस जटिलता को सुगम बनाने हेतु "शोध का प्रारूप" तैयार करना अति आवश्यक होता है। इस प्रारूप पर ही शोध कार्य का आधार निश्चित होता है। अनुसंधान एक क्रमबद्ध, व्यवस्थित एवं निश्चित प्रक्रिया है जिसकी पूर्णता के लिए आवश्यक है कि उसे शुरु से योजनाबद्धतरीके से ही किया जाये। वर्तमान शोध में शोध प्रारूप को निम्न प्रकार से तैयार किया गया है –

1. प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों को संकलित करना ।
2. प्राथमिक स्रोतों के संकलन हेतु निदर्शन सर्वे अनुसूचि एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। अवलोकन विधि का भी प्रयोग किया है ।
3. प्राप्त तथ्यों का सारणीयों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण कर सरल सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है ।
4. विदिशा नगर की अस्पतालों में आए संक्रामक रोगियों का उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया है ।
5. प्रचुर रूप से पाये जाने वाले संक्रामक रोगियों की अलग-अलग सूचि तैयार की गयी है ।
6. संक्रमित मरीजों के बचाव हेतु आधुनिक तरीकों को अपनाने का सुझाव प्रस्तुत व जागरूक करना है ।

2 सामाजिक शोध में प्रयुक्त तथ्य संग्रह विधियाँ एवं प्रविधियाँ

2.1 अध्ययन विधि –

वर्तमान शोध में संक्रामक रोगियों से उनके रोग के फैलने की जानकारी प्राप्त करने हेतु इस विधि का उपयोग किया गया है। इस विधि में सामान्यतः जनसंख्या या समग्र से चुनी हुई कुछ इकाइयों को लिया जाता है, जिन्हें निदर्श कहते हैं। अतः समग्र में से कुछ इकाइयों को चुनने की प्रक्रिया को निदर्शन कहा जाता है।

अध्ययन क्षेत्र के रूप में विदिशा नगर का मुख्य सरकारी चिकित्सालय को चयनित किया गया है और इस चिकित्सालय में आये 250 रोगियों को उद्देश्य पूर्ण निदर्श के रूप में चयन कर उत्तरदाता के रूप में तथ्यों को एकत्र किया गया ।

2.2. प्रश्नावली

वर्तमान शोध में संक्रामक रोगों की जानकारी एकत्रित करने हेतु प्रश्नावली तैयार की गई। प्रश्नावली में संक्रामक रोगियों से सामाजिक अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सम्मिलित किया गया, जिसमें 33 प्रश्न थे। सर्वप्रथम व्यक्ति का परिचय, सामाजिक अध्ययन संबंधी प्रश्न, चिकित्सालय में उपलब्ध साधन व स्रोत, योजनाएं समाज की प्रतिक्रियां, आदि प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है तथा इन प्रश्नों की लिखित सूची तैयार की गई, जिससे उत्तरदाता से जानकारी लेना आसान हो गया व तथ्यों की जानकारी प्राप्त हुई। प्रश्नों की सूची सहित स्वयं शोधकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से सूचनादाता से मिलकर तथ्यों को एकत्रित किया।

2-3 अध्ययन क्षेत्र

विदिशा भारत के मध्यप्रदेश प्रांत में स्थित एक प्रमुख शहर है यह मालवा की उपजाऊ पठारी क्षेत्र के उत्तर पूर्व हिस्से में स्थित है तथा पश्चिम के मुख्य पठार से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। नगर से दो मील उत्तर में जहां इस समय बेसनगर नामक एक छोटा सा गाँव है, प्राचीन विदिशा बसा हुआ है। यह नगर पहले दो नदियों के संगम पर बसा हुआ था। इन प्राचीन नदियों में एक छोटी सी नदी का नाम बेस नदी है, इसे विदिशा नगर के रूप में जाना जाता है। सत्रहवीं सदी में औरंगजेब के शासनकाल में इसका नाम आलमगीरपुर रखा गया। सन् 1947 ई. तक सरकारी रिकार्ड में इसे "परगणे आलमगीरपुर" लिखा जाता रहा है परन्तु ब्रिटिश काल में लोगो में भेल स्वामी भेलसा नाम ही प्रचलित रहा बाद में सन् 1952 ई. में जनआग्रह पर तत्कालिन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा इस स्थान के पुराने नाम को बदलकर विदिशा नाम घोषित कर दिया। आज विदिशा मण्डल पर्यटकों एवं दर्शकों की रूचि के ऐतिहासिक एवं दार्शनिक प्राचीन स्मारकों से भरा पड़ा है।

विदिशा जिला काफी विस्तृत क्षेत्र में फैला है, यह नगर न केवल एक शहर है बल्कि एक जिला है जिसमें गंजबासौदा, त्योंदा, ग्यारसपुर, कुरवाई, लटेरी, नटेरन, सिरोंज आदि जनपद पंचायत आती हैं। इसके अलावा मध्यप्रदेश सरकार ने प्रदेश समिति गठित की है, जिसको राज्य वाहक जनित रोग नियंत्रण समिति कहते हैं जिसके अन्तर्गत प्रत्येक जिले में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय के माध्यम से जिला मलेरिया विभाग का संचालन होता है जिसके कर्मचारी गाँव-गाँव से संक्रामक रोगियों की पहचान कर उनके उन्मूलन हेतु मौलिक उपचार प्रदान करते हैं। इसके अलावा भारत सरकार ने राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत जिला एवं गाँव के स्तर तक की दो मुख्य शाखाएं बना रखी है जिन्हें राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन एवं राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन कहते हैं। समाज को स्वस्थ व विकासशील बनाने के लिए शासन व विभिन्न संस्थानों द्वारा अभियान चलाए जाते हैं जिससे समाज के लोग जागरूक हो सकें व प्रभावित रोगियों के स्वास्थ्य में सहायक हो सकें। जैसे- आस्था अभियान, ममता

अभियान, संपूर्ण स्वास्थ्य सबके लिए, ग्राम आरोग्य केन्द्र। इन अभियानों के माध्यम से संक्रमित रोगियों की पहचान कर उसका पूर्ण उपचार किया जाना एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं, दवाईयाँ एवं जानकारी दी जाती है तथा आशा कार्यकर्ताओं के द्वारा ऐसे रोगियों की निगरानी की जाती है। इसके अलावा किसी विशेष क्षेत्र में अधिक संख्या में संक्रामक रोगी पाये जाने पर स्वास्थ्य शिविर लगाकर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं। महामारियों के बचाव हेतु सरकार द्वारा ग्रामीण एवं शहरी सभी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के सभी माध्यम अपनाकर रोग नियंत्रण हेतु जानकारी दी जाती है। जैसे- मलेरिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू, डायरिया, खसरा आदि के नियंत्रण हेतु दीवार लेखन, पम्पलेट, बैनर, रेडियो, टेलीविजन एवं चलित वाहन द्वारा स्वास्थ्य नियंत्रण सुविधा (108 एम्बुलेंस) दी जाती है।

शोध कार्य आरंभ करने से पूर्व शोधार्थी उसकी शोध की सीमाएँ निर्धारित करता है जो कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए आवश्यक होती हैं। समाज में फैलती संक्रामक बीमारी के लिए अध्ययन की सीमाओं का निर्धारण शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से किया है-

1. विदिशा नगर के सरकारी चिकित्सालय में संक्रमित रोग से ग्रसित उत्तरदाताओं को उद्देश्य पूर्ण निदर्श के आधार पर चयनित किया गया।
2. चिकित्सालय के कुल 250 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है, इसमें उन्हीं उत्तरदाताओं को शामिल किया गया जो संक्रामक रोग से प्रभावित रोगी हैं।
3. अध्ययन के दौरान पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देने के लिए किसी भी उत्तरदाता को बाध्य नहीं किया गया। शोधार्थी द्वारा जानकारी प्राप्त करने पर उत्तरदाता ने स्वेच्छा से जवाब दिये।
4. अध्ययन के दौरान एवं उनके पश्चात भी उन सभी तथ्यों को गोपनीय रखा गया जो किसी प्रकार से उत्तरदाता (संक्रमित रोगी) पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
5. अध्ययन के दौरान चिकित्सालय से प्राप्त सुविधाएँ दवाईयाँ, स्टाफ द्वारा देखभाल आदि से संबंधित जानकारियों को गोपनीय रखा गया।

3 अध्ययित उपकल्पनाओं व परिणामों का साहित्यिक विश्लेषण

विदिशा नगर की जिला अस्पताल में आने वाले रोगी सबसे अधिक मलेरिया के थे। सारणी क्रमांक (1) एवं ग्राफ (1) को देखने पर स्पष्ट होता है कि वर्ष 2011 में 2754 रोगी एवं वर्ष 2012 में कुल 4618 रोगी मलेरिया के प्रति पाँजिटिव पाये गये। इन आँकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि विदिशा जिले में सबसे अधिक रोगी मलेरिया के ही पाये गये। वर्तमान में मलेरिया रोग के उन्मूलन हेतु कोई स्थायी तरीका नहीं है क्योंकि यह रोग प्लाजमोडियम नामक प्रोटोजोआ के कारण होता है जिसके विरुद्ध आज तक वैक्सीन का निर्माण नहीं हो पाया है। मलेरिया रोग की रोकथाम मलेरिया उत्पन्न करने वाले मच्छरों पर नियंत्रण करके की जा सकती है। हाँलाकि रोकथाम तभी संभव है जब मलेरिया रोग का उचित प्रबंधन हो। मेहता एवं दास (2006) ने भी मलेरिया प्रबंधन पर शोध पत्र प्रस्तुत किया और बताया की मलेरिया का रोगी यदि समय

अभियान, संपूर्ण स्वास्थ्य सबके लिए, ग्राम आरोग्य केन्द्र। इन अभियानों के माध्यम से संक्रमित रोगियों की पहचान कर उसका पूर्ण उपचार किया जाना एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं, दवाईयाँ एवं जानकारी दी जाती है तथा आशा कार्यकर्ताओं के द्वारा ऐसे रोगियों की निगरानी की जाती है। इसके अलावा किसी विशेष क्षेत्र में अधिक संख्या में संक्रामक रोगी पाये जाने पर स्वास्थ्य शिविर लगाकर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं। महामारियों के बचाव हेतु सरकार द्वारा ग्रामीण एवं शहरी सभी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के सभी माध्यम अपनाकर रोग नियंत्रण हेतु जानकारी दी जाती है। जैसे- मलेरिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू, डायरिया, खसरा आदि के नियंत्रण हेतु दीवार लेखन, पम्पलेट, बैनर, रेडियो, टेलीविजन एवं चलित वाहन द्वारा स्वास्थ्य नियंत्रण सुविधा (108 एम्बूलेंस) दी जाती है।

शोध कार्य आरंभ करने से पूर्व शोधार्थी उसकी शोध की सीमाएँ निर्धारित करता है जो कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए आवश्यक होती हैं। समाज में फैलती संक्रामक बीमारी के लिए अध्ययन की सीमाओं का निर्धारण शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से किया है-

1. विदिशा नगर के सरकारी चिकित्सालय में संक्रमित रोग से ग्रसित उत्तरदाताओं को उद्देश्य पूर्ण निदर्श के आधार पर चयनित किया गया।
2. चिकित्सालय के कुल 250 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है, इसमें उन्हीं उत्तरदाताओं को शामिल किया गया जो संक्रामक रोग से प्रभावित रोगी हैं।
3. अध्ययन के दौरान पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देने के लिए किसी भी उत्तरदाता को बाध्य नहीं किया गया। शोधार्थी द्वारा जानकारी प्राप्त करने पर उत्तरदाता ने स्वेच्छा से जवाब दिये।
4. अध्ययन के दौरान एवं उनके पश्चात भी उन सभी तथ्यों को गोपनीय रखा गया जो किसी प्रकार से उत्तरदाता (संक्रमित रोगी) पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
5. अध्ययन के दौरान चिकित्सालय से प्राप्त सुविधाएँ दवाईयाँ, स्टाफ द्वारा देखभाल आदि से संबंधित जानकारियों को गोपनीय रखा गया।

3 अध्ययित उपकल्पनाओं व परिणामों का साहित्यिक विश्लेषण

विदिशा नगर की जिला अस्पताल में आने वाले रोगी सबसे अधिक मलेरिया के थे। सारणी क्रमांक (1) एवं ग्राफ (1) को देखने पर स्पष्ट होता है कि वर्ष 2011 में 2754 रोगी एवं वर्ष 2012 में कुल 4618 रोगी मलेरिया के प्रति पाँजिटिव पाये गये। इन आँकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि विदिशा जिले में सबसे अधिक रोगी मलेरिया के ही पाये गये। वर्तमान में मलेरिया रोग के उन्मूलन हेतु कोई स्थायी तरीका नहीं है क्योंकि यह रोग प्लाजमोडियम नामक प्रोटोजोआ के कारण होता है जिसके विरुद्ध आज तक वैक्सीन का निर्माण नहीं हो पाया है। मलेरिया रोग की रोकथाम मलेरिया उत्पन्न करने वाले मच्छरों पर नियंत्रण करके की जा सकती है। हाँलाकि रोकथाम तभी संभव है जब मलेरिया रोग का उचित प्रबंधन हो। मेहता एवं दास (2006) ने भी मलेरिया प्रबंधन पर शोध पत्र प्रस्तुत किया और बताया की मलेरिया का रोगी यदि समय

पर अस्पताल नहीं पहुँचता और इलाज देरी से होता है तो मलेरिया के कारण मृत्यु की संभावना 75% बढ़ जाती है। इन्होंने यह भी बताया कि अर्टिमिसिनिन आधारित रेक्टल सपोजिटरीज मलेरिया के रोगी को काफी प्रभावी हो सकती है। लेकिन हमारे देश में रेक्टल मार्ग से दवा का उपयोग वर्जित है। हमारे देश में क्विनीन आधारित औषधियाँ जैसे क्लोरोक्विनीन, मैफ्लोक्विनीन आदि दी जाती हैं। मैफ्लोक्विनीन गर्भवती महिला के दूसरे एवं तीसरे तिमाहे हेतु सुरक्षित दवा है। प्लाज्मोडियम फैल्सीपेरम के केश में जब पैरासिटोमिया 10% से अधिक हो जाता है, तो ब्लड ट्रांसफ्यूजन, हीमोफेरेसिस एवं प्लाज्माफेरेसिस नामक नई तकनीक का उपयोग करना सर्वोत्तम उपाय है। वेक्टर कण्ट्रोल के लिए डब्ल्यू.एच.ओ.(1980) ने भी पर्यावरण प्रबंधन के अंतर्गत हाइड्रोलिक इन्जीनियरिंग पर आधारित वाटर सप्लाई सिस्टम का सहारा लिया और मलेरियोजैनिक पोटेण्शियल को कम किया और मुख्य रूप से वाटर ड्रेनेज, स्ट्रीम कैनलाइजेशन, स्ट्रीम एवं कैनल की लाइनिंग, लैण्ड की लेवलिंग एवं गडढों की भराई, सीवेज की उचित निकासी, खरपतवार नियंत्रण आदि का कार्य किया।

सारणी क्रमांक (2) एवं ग्राफ (2) के अनुसार वाइवैक्स मलेरिया के वर्ष 2014 में 881 पॉजिटिव रोगी पाये गये और वर्ष 2015 में 616 पॉजिटिव रोगी वाइवैक्स मलेरिया के पाये गये और वर्ष 2014 में केवल 56 पॉजिटिव रोगी फैल्सीफेरम मलेरिया के पाये गए और वर्ष 2015 में केवल 51 रोगी फैल्सीफेरम मलेरिया के प्रति पॉजिटिव पाये गये जबकि दास एट. ऑल. (2000) ने प्लाज्मोडियम फैल्सीफेरम का उच्चतम प्रतिशत बिहार के राजमहल क्षेत्र में रिपोर्ट किया।

सारणी क्रं (3) के अनुसार संक्रमित रोगियों के रोग की आवृत्ति में सर्वाधिक 122 अर्थात् 48.80 संक्रमित रोगी उत्तरदाता मलेरिया के पाये गये। कर्क रेखा के पास स्थित होने के कारण विदिशा टेम्परेट रीजन में आता है, जहाँ पर तापमान 30 C से 40 C तक रहता है अर्थात् केवल शीत ऋतु को छोड़कर वर्ष के अधिकांश माह में इतना रहता है। इसके अलावा यहाँ पर औसत वर्षा एवं घनी वनस्पति जात मिलती है और 30 से 65% तक मौसम में नमी पायी जाती है और इस प्रकार का वातावरण मलेरिया वैक्टर अर्थात् मच्छर की वृद्धि के लिए अनुकूल होता है। हाल ही में सिंह (2013) ने महाराष्ट्र राज्य के मलेरिया युक्त एण्डेमिक जिले से मलेरिया के उन रोगियों को सर्च किया जो कि माइक्रोस्कोप एवं रेपिड डायग्नोस्टिक टेस्ट किट के परीक्षण अनुसार मलेरिया के रोगी नहीं थे लेकिन जब उनका पी.सी.आर. (पॉलिमरेज चैन रियेक्शन) तकनीकी से परीक्षण कराया गया तो सभी 11 रोगी मलेरिया रोग से ग्रसित थे। अतः पी.सी.आर. तकनीकी मलेरिया के परीक्षण में अधिक विश्वसनीय है। इसमें सायटोक्रोम B को प्लाज्मोडियम की स्पीशीज में अद्वितीय पाया गया अर्थात् प्लाज्मोडियम फैल्सिपेरम के साइटोक्रोम B जीन में 205 बेस पेयर पाए जाते हैं और वाइवैक्स में 110 बेस पेयर पाये जाते हैं (जान्सटन इत्यादि, 2002)।

सारणी क्रं (4) के अनुसार संक्रामक रोगों के गाँव एवं शहर में फैलने की आवृत्ति में सर्वाधिक 168 अर्थात् 67.20% संक्रमित रोगी उत्तरदाता गाँव के और सबसे कम 82 उत्तरदाता अर्थात् 32.80% शहर के

पाये गये। विदिशा जिले में सबसे अधिक मच्छरों से होने वाली बीमारी मलेरिया ग्रामीण क्षेत्र में पायी जाती है। इसके बाद डेंगू व फील पाँव बीमारी पायी जाती है। विदिशा क्षेत्र में तापमान थोड़ा अधिक होता है, जिससे मच्छरों को पनपने के लिए अनुकूल ताप मिल जाता है। सिंह (2011) के अनुसार मच्छरों को पनपने में 41 C से 45 C एवं 28% से 84% आद्रता अनुकूल होती है। डब्ल्यू. एच. ओ. (2009) के अनुसार जब कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो आपदा के कारण पानी के रुकने से, तेज बारिश होने से, बाढ़ से, भुकम्प के आने से, मानव जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है और वैक्टर की ब्रीडिंग साइट्स बढ़ जाती हैं जिसके कारण वैक्टर जनित बीमारियाँ जैसे मलेरिया व डेंगू फैलने लगती हैं।

सारणी क्रं (5) के अनुसार मच्छरों के पनपने वाले स्थानों की जानकारी की आवृत्ति में 16 उत्तरदाताओं ने रूके हुए जल को मच्छरों के पनपने का स्थान बताया, 14 ने टूटे-फूटे बर्तनों को, 4 ने पुराने टायरो को, 28 ने बंद नलियों-नालों को, 38 ने कूलरों को मच्छरों के पनपने का स्थान बताया। कोहली एट. आल. (2013) के परिणाम भी यह स्पष्ट करते हैं कि यदि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोग इस बात के प्रति जागरूक रहते हैं कि मच्छर जनित बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए मच्छरों के पनपने के स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए।

सारणी क्रं (6) के अनुसार मच्छर जनित बीमारियों से बचाव के तरीकों की आवृत्ति में 28.8 उत्तरदाता पानी को इकट्ठा होने से रोकते हैं, 22.4 स्वच्छ जल के बर्तनों को ढककर रखते हैं, 18 प्रतिशत कूलरों की सफाई करते हैं, 19.2 कूड़ेदान की सफाई करते हैं, 11.6 कैरोसिन के तेल का उपयोग करते हैं। कोहली एट. अल. (2013) के परिणाम भी स्पष्ट करते हैं कि 50% लोग पानी को इकट्ठा होने से रोकते हैं। 40% लोग वाटर कण्टेनर को ढककर रखते हैं।

सारणी क्रं (7) के अनुसार मच्छरों से होने वाली बीमारियों की जानकारी की आवृत्ति में 88.8 उत्तरदाता मलेरिया के पाये गये, 4 डेंगू के पाये गये, 2 फाइलेरिया/फीलपाँव के पाये गये, 2 चिकनगुनिया के पाये गये। सबसे अधिक फैलने वाली बीमारी मलेरिया फीमेल एनाफिलीज मच्छर से होती है लेकिन मच्छर के अंदर एक प्रकार का प्रोटोजोअन प्लाज्मोडियम होता है जो मलेरिया रोग फैलाता है। प्लाज्मोडियम की 4 प्रजातियों के कारण 4 प्रकार का मलेरिया होता है। वाइवैक्स, ओवेल, सुप्त एवं फैल्सिपेरम मलेरिया। सिंह, घिमान एवं दास 2011 ने झारखण्ड में प्लाज्मोडियम फैल्सिपेरम एवं वाइवैक्स दोनों का पाया जाना रिपोर्ट किया। विदिशा जिले में भी फैल्सिपेरम एवं वाइवैक्स मलेरिया ही पाया जाता है।

सारणी क्रं (8) के अनुसार विदिशा शहर में पाये जाने वाले मच्छरों की प्रजाति की जानकारी की आवृत्ति में 94.4 उत्तरदाताओं ने एनाफिलीज मच्छर की बताया, 3.2 ने ऐडीज मच्छर की बताया, 2.4 ने क्यूलेक्स मच्छर की बताया। विदिशा में मलेरिया मादा एनाफिलीज की स्टीफेनसाई एवं क्यूलिसिफेशीज प्रजाति के कारण फैलता है। हाँथी पाँव रोग क्यूलेक्स क्विनकेफेशियेटस मच्छर के काटने से फैलता है।

पाये गये। विदिशा जिले में सबसे अधिक मच्छरों से होने वाली बीमारी मलेरिया ग्रामीण क्षेत्र में पायी जाती है। इसके बाद डेंगू व फील पाँव बीमारी पायी जाती है। विदिशा क्षेत्र में तापमान थोड़ा अधिक होता है, जिससे मच्छरों को पनपने के लिए अनुकूल ताप मिल जाता है। सिंह (2011) के अनुसार मच्छरों को पनपने में 41 C से 45 C एवं 28% से 84% आद्रता अनुकूल होती है। डब्ल्यू. एच. ओ. (2009) के अनुसार जब कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो आपदा के कारण पानी के रुकने से, तेज बारिश होने से, बाढ़ से, भुकम्प के आने से, मानव जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है और वैक्टर की ब्रीडिंग साइट्स बढ़ जाती हैं जिसके कारण वैक्टर जनित बीमारियाँ जैसे मलेरिया व डेंगू फैलने लगती हैं।

सारणी क्रं (5) के अनुसार मच्छरों के पनपने वाले स्थानों की जानकारी की आवृत्ति में 16 उत्तरदाताओं ने रूके हुए जल को मच्छरों के पनपने का स्थान बताया, 14 ने टूटे-फूटे बर्तनों को, 4 ने पुराने टायरो को, 28 ने बंद नलियों-नालों को, 38 ने कूलरों को मच्छरों के पनपने का स्थान बताया। कोहली एट. आल. (2013) के परिणाम भी यह स्पष्ट करते हैं कि यदि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोग इस बात के प्रति जागरूक रहते हैं कि मच्छर जनित बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए मच्छरों के पनपने के स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए।

सारणी क्रं (6) के अनुसार मच्छर जनित बीमारियों से बचाव के तरीकों की आवृत्ति में 28.8 उत्तरदाता पानी को इकट्ठा होने से रोकते हैं, 22.4 स्वच्छ जल के बर्तनों को ढककर रखते हैं, 18 प्रतिशत कूलरों की सफाई करते हैं, 19.2 कूड़ेदान की सफाई करते हैं, 11.6 कैरोसिन के तेल का उपयोग करते हैं। कोहली एट. अल. (2013) के परिणाम भी स्पष्ट करते हैं कि 50% लोग पानी को इकट्ठा होने से रोकते हैं। 40% लोग वाटर कण्टेनर को ढककर रखते हैं।

सारणी क्रं (7) के अनुसार मच्छरों से होने वाली बीमारियों की जानकारी की आवृत्ति में 88.8 उत्तरदाता मलेरिया के पाये गये, 4 डेंगू के पाये गये, 2 फाइलेरिया/फीलपाँव के पाये गये, 2 चिकनगुनिया के पाये गये। सबसे अधिक फैलने वाली बीमारी मलेरिया एनाफिलीज मच्छर से होती है लेकिन मच्छर के अंदर एक प्रकार का प्रोटोजोअन प्लाज्मोडियम होता है जो मलेरिया रोग फैलाता है। प्लाज्मोडियम की 4 प्रजातियों के कारण 4 प्रकार का मलेरिया होता है। वाइवैक्स, ओवेल, सुप्त एवं फैल्लिपेरम मलेरिया। सिंह, घिमान एवं दास 2011 ने झारखण्ड में प्लाज्मोडियम फैल्लिपेरम एवं वाइवैक्स दोनों का पाया जाना रिपोर्ट किया। विदिशा जिले में भी फैल्लिपेरम एवं वाइवैक्स मलेरिया ही पाया जाता है।

सारणी क्रं (8) के अनुसार विदिशा शहर में पाये जाने वाले मच्छरों की प्रजाति की जानकारी की आवृत्ति में 94.4 उत्तरदाताओं ने एनाफिलीज मच्छर की बताया, 3.2 ने ऐडीज मच्छर की बताया, 2.4 ने क्यूलेक्स मच्छर की बताया। विदिशा में मलेरिया मादा एनाफिलीज की स्टीफेनसाई एवं क्यूलिसिफेशीज प्रजाति के कारण फैलता है। हाँथी पाँव रोग क्यूलेक्स क्विनकेफेशियेटस मच्छर के काटने से फैलता है।

डेंगू रोग ऐडीज एजिप्टाई मच्छर के काटने से फैलता है। चिकनगुनिया भी ऐडीज एजिप्टाई व एल्वोपिक्टस प्रजाति के कारण होता है। विदिशा में पीतज्वर नहीं रिपोर्ट किया गया। सिंह एट. आल. (2011) ने झारखण्ड में पाये जाने वाली मच्छर एनाफिलीज की विभिन्न प्रजातियों को मानव एवं मवेशी रहवासी आवासों में खोजा एवं उन्हें कुल 11 मच्छर की प्रजाति मिली। सारणी क्रं (9) के अनुसार मलेरिया के संक्रमित रोगियों की उम्र की आवृत्ति में 27.04 उत्तरदाता बच्चे पाये गये, 54.09 उत्तरदाता व्यस्क पाये गये, 18.85 उत्तरदाता वृद्ध पाये गये। विदिशा नगर में एवं संपूर्ण विदिशा जिले में मलेरिया के रोगी सबसे अधिक हैं। सर्वे करने पर संपूर्ण विदिशा जिले से कुल 122 मलेरिया के रोगी मिले। सारणी क्रं (10) के अनुसार मलेरिया के संक्रमित रोगियों में लिंग की आवृत्ति बराबर है अर्थात् 50 महिलायें एवं 50 पुरुष उत्तरदाता हैं। सिंह एट. आल. (2011) ने भी बताया कि तापमान की 41 C से 45 C की अवधि, औसत वर्षा, घनी छोटी वनस्पति जात एवं 28 से 84 आद्रता, मलेरिया के वाहको के गुणन एवं वृद्धि के लिए अनुकूल होती है।

4 निष्कर्ष एवं सुझाव

विदिशा नगर में विभिन्नता में एकता देखी जा सकती है, सभी धर्म के लोग निवास करते हैं। मुख्यतः हिन्दु धर्म के लोग निवास करते हैं, लेकिन इनके अलावा यहाँ अल्पसंख्यक के रूप में सर्वाधिक मुस्लिम एवं जैन धर्म के लोग भी निवास करते हैं, इसके साथ ही यहाँ पर सिक्ख, ईसाई आदि धर्म के लोग भी निवास करते हैं। हिन्दु धर्म में लगभग सभी जाति के लोग जैसे:-ठाकुर, पटेल, रघुवशी, यादव, पंडित, चर्मकार, शिल्पकार, लुहार, सुनार, बढई, बुनकर, श्रीवास्तव, ढीमर, बेड़िया, पादरी, आदि रहते हैं। इन सभी जाति के लोगों में वासुदेव कुटुम्बकम की भावना है तथा सभी लोग भाईचारे से रहते हैं। इस भाईचारे के कारण ही इनका आपस में मेल जोल रहता है और इनके मध्य में एक बार यदि कोई संक्रामक बीमारी प्रवेश कर जाती है तो वह समाज में एक विकराल रूप ले लेती है। प्रत्येक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (ए.एन.एम.) एवं पुरुष स्वास्थ्य कार्यकर्ता (एम.पी.डब्ल्यू.) द्वारा संक्रमित रोगियों एवं बीमारियों की निगरानी की जाती है एवं सूचना देने पर तत्काल उपचार हेतु व्यवस्था की जाती है, जिसके लिए प्रदेश सरकार ने जिला एवं ग्रामीण स्तर पर निःशुल्क वाहन व्यवस्था एवं पूर्ण उपचार (दवाईयाँ एवं परीक्षण) सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध कराते रहते हैं। वर्तमान अध्ययन के सुझाव निम्न प्रकार से प्रस्तुत हैं –

1. संक्रमित पदार्थ जैसे मल-मूत्र आदि से सने पदार्थों को कूड़ेदान में न डालें। ऐसे अवशिष्ट पदार्थों को नष्ट करवाया जाना चाहिए।
2. रोगी के घर में होने पर उसे एक अलग कमरे में रखना चाहिए तथा घर में साफ-सफाई रखना चाहिए।
3. समाज में व्यक्ति को रोग के प्रति जागरूक होना चाहिए, जिससे रोगी व रोग पर नियंत्रण के उपाय किये जा सकें।

4. रोगी द्वारा प्रयोग में लाये गये पदार्थों, बिस्तर आदि को बाहर नहीं लाना चाहिये तथा अन्य लोगों के सम्पर्क में भी नहीं आने देना चाहिये तथा स्वास्थ्य अधिकारियों को संक्रमण के बारे में जल्दी ही सूचना देना चाहिए ।
5. रोगों के फैलाने वाले कारक जैसे भीड़-भाड़, गंदगी, गरीबी, अज्ञानता, अंध विश्वास, निरक्षरता आदि के निवारण के लिए सरकारी योजनायें व प्रयास होते रहना चाहिए ।
6. रोगी व्यक्तियों की बालों की सफाई/कटाई करते रहना चाहिए ताकि बालों के माध्यम से रोगकारक सूक्ष्मजीव एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित न हो सकें ।
7. प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है की आवास के आस-पास कूड़ा करकट जमा नहीं होने देना चाहिये । समय-समय पर अपने घर के आस-पास बढ रहे खरपतवार वाले पौधे जैसे गाजर घास, पुंवार आदि का उन्मूलन नियमित करते रहना चाहिए ताकि रोग के फैलाव वाले मच्छर, मक्खी आदि न पनपने पायें ।
8. व्यक्ति को बाहर से आने पर नाक, मुँह एवं हाथ पैर को साबुन से या सेनीटाइजर से धोना चाहिए व आपसी सम्पर्क, मेलजोल के दौरान बिना हाथ मिलाये भारतीय संस्कृति का पालन करते हुए दोनों हाथ जोड़ कर सादर नमस्कार करना चाहिए ।
9. अंत में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिये किये जाने वाले सभी सेमिनारों/कार्यक्रमों में प्लास्टिक के कप एवं प्लेट्स का उपयोग नहीं करना चाहिए तथा उनकी जगह पर पुरानी पद्धति वाले दौना पत्तलों या कागज के कप-प्लेट्स का उपयोग करना चाहिए । इसके रोकथाम के लिए सरकारी प्रयास होना सतत आवश्यक हो जाता है ।
10. रोग से ग्रसित व्यक्ति को सामाजिक रूप से सहयोग प्रदान करना चाहिए, ताकि वह समाज का एक अंग बना रह कर अपनी बीमारी से संघर्ष कर सके व समाज के विकास के लिए अपनी सहभागिता बना सके ।
11. सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक चिकित्सालयों को खुलवाना चाहिए जिससे गाँव में रह रहे व्यक्तियों को उचित समय पर इलाज प्राप्त हो सके ।
12. प्रशासन, स्थानीय स्वशासन व स्वयंसेवी संगठनों द्वारा समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाना चाहिए व संक्रामक बीमारियों से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन स्थानीय रूप से करना चाहिए, ताकि समाज के लोग अंधविश्वास व बीमारियों से सावधान हो सकें ।

5संदर्भ ग्रंथ सूची

- आगलावे मनोज कुमार (2005). सी.एस.आइ.आर.-यू.जी.सी.-लाइफ साइंसेज, प्रो/जोआ एवं मानव रोग, उपकार प्रकाशन, आगरा पेज नं. 488-494.
- गैरीसन एच. फील्डिंग (1910). फ्रीकास्टोरियस, एथेन्सियस किरचर एण्ड द जर्म थियोरी ऑफ

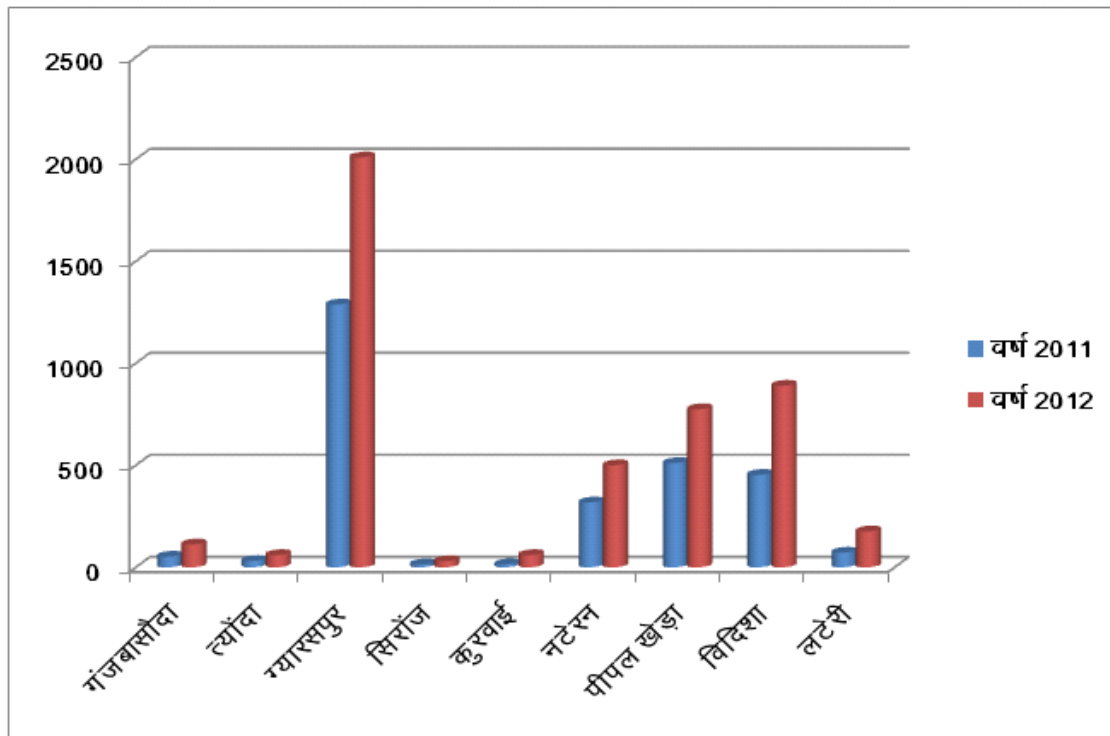
डिसीज, साइन्स 31: 500.

- मेहता, एस. आर. एवं एस. दास (2006) मैनेजमेन्ट ऑफ मलेरिया रेसेण्ट ट्रेण्डस। जर्नल ऑफ कम्प्यूनीकेवल डिसीज 38 (2)रू 130–138.
- सिंह आर.के., घिमान आर. सी. एवं एम. के. दास (2011). सिच्युएशन एनालिसिस ऑफ मलेरिया इन गोड्डा डिस्ट्रिक्ट ऑफ झारखण्ड ड्यूरिंग मलेरिया ऐपीडेमिक, जर्नल ऑफ कम्प्यूनीकेवल डिसीज, 43 (2): 135–142.
- भट्टाचार्य जे., संगमा, बी. एम., धारीवाल, ऐ.सी. एवं एस. बंधोपाध्याय (2012). ऐस्टीमेशन ऑफ मलेरिया ऑफ ए डिस्ट्रिक्ट इन इण्डिया, ड्यूरिंग 2010 वाय यूजिंग श्री मॉडल्स, जर्नल ऑफ कम्प्यूनीकेवल डिसीज 44 (1): 1–7.
- सिंह राजकुमार, मोहंती पल्लवी, कुमार गौरव एवं पूनम सिंह (2013). माइक्रोस्कोपकली एण्ड रेपिड डायग्नोस्टिक किट नेगेटिव बट पी.सी.आर. कन्फर्मड मलेरिया केसेज फ्राम एण्डेमिक डिस्ट्रिक्ट ऑफ महाराष्ट्र स्टेट, इण्डिया, जर्नल ऑफ कम्प्यूनीकेवल डिसीज 45 (3–4): 219–221.
- कोहली सी., कुमार आर., मीना जी. एस., सिंह एम. एम. एवं जी. के. इंगले (2013). अवेयरनेस अवाउट मॉसकीटो बार्न डिसीजेस इन रूरल एण्ड अर्बन एरियाज ऑफ डेल्ही, जर्नल ऑफ कम्प्यूनीकेवल डिसीज 45(3–4) 201–207.
- डब्ल्यू. एच. ओ. (1980). एनवायरोनमेंटल मैनेजमेंट ऑफ वेक्टर कन्ट्रोल। टेक्नीकल रिपोर्ट सीरीज नं. 649.
- दास एन.जी., भुअन एम. एण्ड एस.सी. दास (2000). एण्टोमोलॉजीकल एण्ड एपीडेमियोलॉजीकल स्टडीज ऑन मलेरिया इन राजमहल रनेज, बिहार, इंडियन जर्नल ऑफ मलेरियालॉजी. 37(4): 38–96.
- डब्ल्यू.एच.ओ. (2009). नेचुरल डिसआस्टर्स एण्ड कम्प्यूनीकेवल डिसेजेस. डिसेज कन्ट्रोल इन ह्यूमनीटेरियन इमरजेन्सीज (डी.सी.ई.) 23.
- जान्सटन एस. पी., पायनियाजेक एन. जे., जायावान्ग एम. व्ही., स्लेमेण्डा एस.बी., विलकिन्स पी.पी. एण्ड ए.जे. दासिल्वा (2002). पी.सी. आर. एज. अ कनफर्मेटरी टेकनिक फॉर लेवोरेटरी डायग्नोसिस ऑफ मलेरिया. जर्नल ऑफ क्लीनिकल माइक्रोबायलॉजी, 44:1087 –1089.

सारणी – 1 विदिशा नगर की जिला अस्पताल में आने वाले मलेरिया के रोगियों का विवरण

क्रं.	क्षेत्र का नाम	मलेरिया के रोगियों की संख्या के प्रति पा. जिटिव रोगियों के प्रति पा. जिटिव रोगियों की	
		वर्ष 2011	वर्ष 2012
1	गंजबासौदा	52	112
2	तयोंदा	31	60
3	गयारसपुर	1288	2009
4	थसरोंज	14	30
5	कुरवाई	15	60
6	नटेरन	318	500
7	पीपल खेड़ा	511	775
8	विदिशा	453	890
9	लटेरी	72	176
कुल		2754	4618

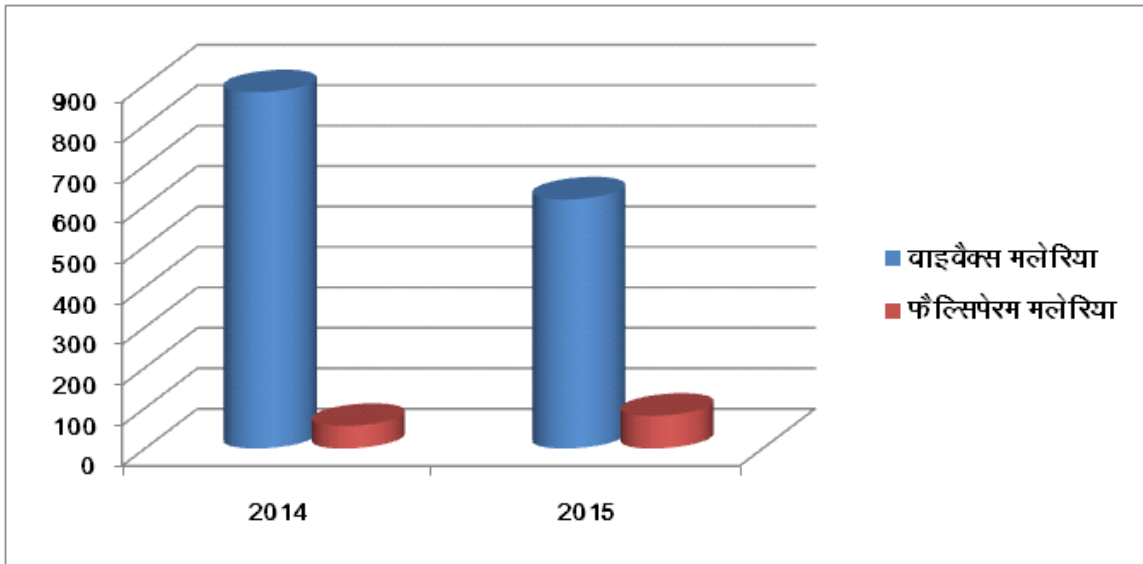
ग्राफ 1 विदिशा नगर की जिला अस्पताल में आने वाले मलेरिया के रोगियों की जानकारी।



सारणी – 2 वर्तमान में मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में मलेरिया की स्थिति ।

वर्ष	परीक्षण किये गए रक्त के नमूनों की संख्या	प्लाजमोडियम वाइवैक्स के प्रति पा ेजिटिव रोगियों की संख्या	प्लाजमोडियम फैल्सिपेरम के प्रति पा ेजिटिव रोगियों की संख्या
2014	108602	881	56
2015	81090	616	51

ग्राफ 2 वर्तमान में मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में मलेरिया की स्थिति ।



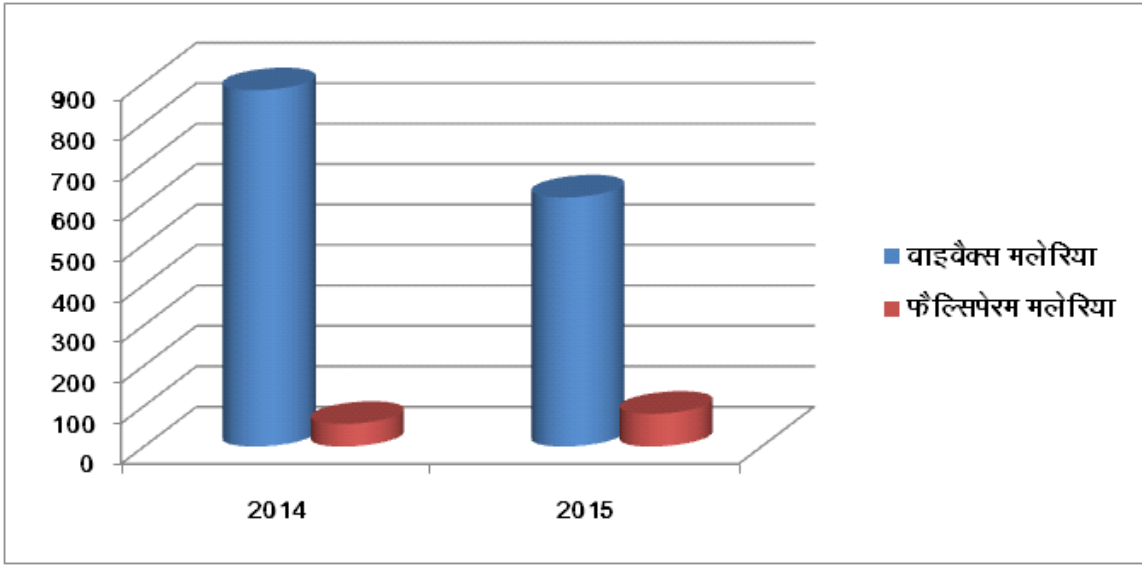
सारणी क्रं 3 संक्रमित रोगियों के रोग की आवृत्ति

क्र.सं.	संक्रमित रोग	आवृत्ति	प्रतिशत
1	इन्फ्लूएन्जा	33	13.20
2	मलेरिया	122	48.80
3	डेंगू	01	0.40
4	क्षय रोगी	62	24.80
5	निमोनिया	32	12.80
कुल		250	100

सारणी – 2 वर्तमान में मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में मलेरिया की स्थिति ।

वर्ष	परीक्षण किये गए रक्त के नमूनों की संख्या	प्लाजमोडियम वाइवैक्स के प्रति पा ेजिटिव रोगियों की संख्या	प्लाजमोडियम फैल्सिपेरम के प्रति पा ेजिटिव रोगियों की संख्या
2014	108602	881	56
2015	81090	616	51

ग्राफ 2 वर्तमान में मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में मलेरिया की स्थिति ।



सारणी क्रं 3 संक्रमित रोगियों के रोग की आवृत्ति

क्र.सं.	संक्रमित रोग	आवृत्ति	प्रतिशत
1	इन्फ्लूएन्जा	33	13.20
2	मलेरिया	122	48.80
3	डेंगू	01	0.40
4	क्षय रोगी	62	24.80
5	निमोनिया	32	12.80
कुल		250	100

सारणी क्रं 4 संक्रामक रोग के फैलने के कारणों की आवृत्ति

क्र.सं.	रोग का कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	आसपास की गंदगी से	80	32
2	गंदा पानी पीने एवं संमित भोजन से	38	15.2
3	मच्छर/मक्खियों/कीड़े मकोड़ों से	30	12
4	एक दूसरे के संपर्क से	20	8
5	प्रदूषित हवा से	32	12.8
6	पालतू जानवरों से	50	20

सारणी क्रं 5 मच्छरों के पनपने वाले स्थानों की जानकारी की आवृत्ति

क्र.सं.	मच्छर पनपने के स्थान	आवृत्ति	प्रतिशत
1	रुके हुए जल में	40	16
2	टूटे-फूटे बर्तनों में	35	14
3	पुराने टायरों में	10	4
4	बंद नलियो, नालो में	70	28
5	कूलर में	95	38
	कुल	250	100

सारणी क्रं 6 मच्छर जनित बीमारियों से बचाव के तरीकों की आवृत्ति

क्र.सं.	बीमारियों से बचाव के तरीके	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पानी को इकट्ठा होने से रोकते हैं।	72	28.8
2	स्वच्छ जल से भरे बर्तनों को ढककर रखते हैं।	56	22.4
3	कूलरों की सफाई करते हैं।	45	18
4	कूड़ेदान की सफाई करते हैं।	48	19.2
5	कैरोसिन के तेल का उपयोग करते हैं।	29	11.6
	कुल	250	100

सारणी क्रं 7 मच्छरों से होने वाली बीमारियों की जानकारी की आवृत्ति

क्र.सं.	मच्छरों से होने वाली बीमारियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	मलेरिया	222	88.8
2	डेंगू	18	4
3	फाइलेरिया / फीलपॉव	5	2
4	चिकनगुनिया	5	2
कुल		250	100

सारणी क्रं 8 विदिशा शहर में पाये जाने वाले मच्छरों की प्रजाति की जानकारी की आवृत्ति

क्र.सं.	मच्छरों की प्रजाति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	एनाफिलीज	236	94.4
2	एडिज	8	3.2
3	क्यूलेक्स	6	2.4
कुल		250	100

सारणी क्रं 9 मलेरिया के संक्रमित रोगियों की उम्र की आवृत्ति

क्र.सं.	मच्छरों की प्रजाति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	एनाफिलीज	236	94.4
2	एडिज	8	3.2
3	क्यूलेक्स	6	2.4
कुल		250	100

सारणी क्रं 10 मलेरिया के संक्रमित रोगियों में लिंग की आवृत्ति

क्र.सं.	मच्छरों की प्रजाति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	एनाफिलीज	236	94.4
2	एडिज	8	3.2
3	क्यूलेक्स	6	2.4
कुल		250	100

“Significance of Universal Values Education”

Dr. Bhawna Thakur,
Assistant Professor
Political Science
Govt. College Rehti, Dist. Sehore

Dr. Rajeev Verma Professor
Economics
Govt. Home Science College
Hoshangabad

Abstract

We are in the conviction that the loss of modern world is education and educator due to the deficiency in the education methods or the methods that are not responding to the needs of the age. The current era is full of controversies; one of the biggest is related with education. All these current problems are reasoning from incorrectly interpreting the needs of century. However, the solution way is hidden in the problem itself i.e. good education. Whenever the minds of young brains are not lit adequately, opinions and beliefs have met with constant dispute that followed hatred among generations and nations. Such vicious circles have reasoned from ignorance and not been educated well.

Introduction:

A value education is a universal value education if it has the same value or worth for all, or almost all, people. Spheres of human value encompass morality, aesthetic preference, human traits, human endeavor, and social order. Whether universal values exist is an unproven conjecture of moral philosophy and cultural anthropology, though it is clear that certain values are found across a great diversity of human cultures, such as primary attributes of physical attractiveness (e.g. youthfulness, symmetry) whereas other attributes (e.g.

slenderness) are subject to aesthetic relativism as governed by cultural norms. This objection is not limited to aesthetics. Relativism concerning morals is known as moral relativism, a philosophical stance opposed to the existence of universal moral values.

In order for values education to become part and parcel of mainstream college, the closest possible links need to be found between it and the world of teachers and college. Teaching has undergone a revolution over the past decade or so. Updated research into the role of the teacher has uncovered the true potential of the teacher (and, through the teachers, the college) to make a difference. Much of this research insight is captured in the notion of 'Quality Teaching', a perspective that speaks of intellectual depth, inter-relational capacity and self-reflection as being among the factors that characterize the kind of learning that makes a difference. There are important synergies between these perspectives and those of values education. Making these links has potential to release the true power of values education and to elevate it to a mainstream issue for all college.

Values are a cognitive structure that describes the ideals of life of individuals, their

preferences, priorities, principles and the behavior of a cognitive. Values are the effective cultural elements which shape the elements around the point of view of individuals, members of a community that holds together. In line with the protection or disregarding of these values by individuals in a society, the values will be lost in time or they will be continued many years by transferring. Continuing and being permanent of these values depends on individuals 'general acceptance and internalizing. But, together with the values that show differences in cultures, there is a case of values which are universal and ethical that are accepted in all cultures.

Conclusion

Hence, to conclude: we live in a time when our understanding of the role of the teacher and the power of Universal Values Education are coalescing. No longer

is Values Education on the periphery of the central roles to be played by the teacher and the college in our society. It is at the very heart of these roles. Unlike the assumptions that seem to underpin so many of our concerns around structures, curriculum and resources, Universal Values Education is more clearly than anything I could point to in contemporary education premised on the power of the teacher to make a difference. While the artifacts of structure, curriculum and resources are not denied, the focus is, appropriate to the insights of the day, on what John Hattie (2003) describes as "... the greatest source of variance that can make a difference." In the case of Values Education, the belief is around the teacher's capacity to make a difference by engaging students in the sophisticated and life-shaping learning of personal moral development. I suggest that the nature, shape and intent of Values Education has potential to re-focus the attention of teachers and their systems on the fundamental item of all effective teaching, namely the teacher her or himself, the quality of the teacher's knowledge, content and pedagogy, and above all on the teacher's capacity to form the kinds of relationships with students which convey their commitment and care and which become the basis of forming personal character and tomorrow's citizenry. I

know it is a challenging thought for many who, rightly or wrongly, were trained to think differently about the role of the teacher and the social agency of the college.

However, Values Education or no Values Education, we live in a society that is shouting out a new charter to us. Values Education is one powerful means by which we might realize this charter.

For humans, some things have always been more important than others. That is why we value people, ideas, activities and objects according to their significance in our life. However, the criteria used to give value to those elements have varied throughout history, and depend on the values each person assumes. Values allow the members of an organization to interact

harmoniously. Values affect their formation and development as individuals, and make it easier to reach goals that would be impossible to achieve individually. For the well-being of a community, it is necessary to have shared rules that guide the behavior of its members; otherwise the community will not function satisfactorily for the majority. When families, schools, companies, and society in general function poorly, many times it is due to a lack of shared values, which is reflected in a lack of consistency between what is said and what is done. For example, it is difficult to teach our children “tolerance” if our leaders and rulers constantly insult those with whom they disagree.

In a company's organizational culture values are the foundation of employee attitudes, motivations and expectations. Values define their behavior. If values don't have the same meaning for all employees, their daily work will be more difficult and cumbersome. The work environment becomes tense, people feel that they are not all moving in the same direction, and clients pay the consequences.

Being a pillar of a company, values not only need to be defined, they must also be maintained, promoted and disseminated. Only then will workers have a better chance of understanding and using them in their daily activities.

References

Adelaide Declaration (1999) National schooling goals for the twenty-first century.

<http://www.curriculum.edu.au/mceetya/nationalgoals/natgoals.htm>

Bloom, B. (ed.) (1956). Taxonomy of educational objectives: Book 1 cognitive domain. London: Longman.

Carnegie (1994). Every child can learn

<http://www.carnegie.org/sub/pubs/execsum.html>

Darling-Hammond, L. (1997) The Right to Learn: a Blueprint for Creating Schools that Work. San Francisco: Jossey-Bass.

Values Education and Teachers' Work: A quality teaching perspective

Teacher Center. (2009). Global Footprints. Retrieved from Global

Footprints.

Benisagar Dam, Jaraha, Rewa with special reference to fish fauna"

(Rekhanjali Pandey)

M.Sc.

Deptt. of Zoology

Govt. S.G.S. P.G. College

Sidhi (M.P.)

Every living organism is surrounded by material and forces which constitutes its environment and from which it derives its needs. A plant, an animal or a microbe can not live completely alior, but requires from its environment a supply of energy, material and removal of wastes. For these basic requirements each living organism has to depend and also interact with the different non living or abiotic and living or biotic component of the environment in which the animal is living. The abiotic environmental components include basic inorganic elements and compounds such as water and CO₂, Calcium, Oxygen, Carbonates, Phosphates etc. and an array of organic compounds, the by products of organisms activity or death. They also include such physical factors as soil, rainfall, temperature, moisture, wind currents and solar radiation with its concomitants of light and heat. The biotic environmental factors comprise plants, animals and madrobes all of which interest in energy dependent fashion. The scientific study of the interactions of organism with their fish productivity with each other is called ecology. It mainly concerns with the direct influence of abiotic and biotic environmental factors over the growth, distribution, behaviour and survival of organisms.

Fishes constitute an important group among vertebrates. Because of their food value, much more attention have been paid by both Government and individual workers. In spite of so many work on various branches of fish

research such as systematics, development, morphology, anatomy, endocrinology, embryology, chromosome studies, respiration, behavioral studies and other researchers on fishery development in India, no work has been done on the fish and fisheries of Benisagar dam, Jaraha, Rewa. With the view in mind and also the advancement in the field of fish researchers in other parts of the country, the problem of studies of fish fauna of dam in relation to their limnological parameters has been taken for present investigation.

More than seventy percent of our earth is covered with water. It is a watery planet. A vast variety of fishes inhabit the water. They play a crucial role in man's existence on land, both as food and as targets for exploitation by man for his industrial advance and for his leisure activities. It is in our interest, therefore, to study them and their natural habitat.

For the present study the Benisagar dam of Jaraha was selected in Gurh Tahsil, Distt. Rewa (M.P.). These are market in map of Rewa district (Pl. 1, Figs. 1-4), the collection of fishes was made from April, 2012 to March 2013. The classification and systematics of fishes followed in the present investigation is after Berg (1947) and the fishes were identified with Day's fish fauna of British India, Burma and Ceylon (1978).

HISTORICAL REVIEW

Significant limnological studies have been made by various limnologists all over the world. Even though majority of these contributions were made initially from temperate aquatic witnessed an explosion in limnological studies. Limnology is the study of both living and non-living components of inland waters. In India the history of limnological research is not very old. Pioneering planktonological research was carried out by Ganpati (1940) who may be regarded as the founder of this discipline in India for his long continued.

Beside these reservoirs enormous data from the fresh water lakes in our country has been efficiently compiled by Jhingran (1984) which

includes reports from Dal lake, Lake Bhimtal, Sat-tal, Ganga, Narmada and Kavery river systems and lake Govind Sagar methews 91976), Amaravathy reservoir, Stanley reservoir and sathanur reservoirs (Sreenivasan 1964-86) where productivity and fish growth data are also given. Benthic studies however could only be undertaken recently as reported in the Jodhpur lakes (Bhargava 1988-90 and Jakhar 1992) and Gandhi Sagar Lake (Rao 1993, Shukla 1996).

In M.P., Rao (1987) made detailed ecological observations in Kshipra river system and selected lenthic habitats in Ujjain area to study water quality with monitoring with reference to fresh water Ectoprocta. Shastry (1970) studied the population of upper lake of Bhopal. Adoni (1975) studied the micro-biology of Sagar lake at Saugar.

Haekel (1974) for the first time defined plankton as those organisms which are carried away by the water currents and which do not have the capacity to move according to their will. With the invention of microscope by Leewenhoek their importance has gradually increased and several Taxonomists have undertaken the task of their classification have added a large number of species belonging to various phyla. The ecological role of plankton as primary and secondary consumer organisms in the fresh water ecosystem was pointed out by Odum (1954). Since then the ecological role of zooplankton as the consumer communities in the trophic level was established by various limnologists like Pennek (1965), Schowerbel (1970), Ruttner (1960), Wefzel (1974, 1980) and Wefzel and Likens (1976). Systematists have established keys for identification of zooplankton of various groups qualitative and quantitative techniques of zooplankton were taken established by various planktonologists like Pennek (1972), Lewis (1976, 82), Goltermann (1980), Odum (1976) and Wefzel (1982).

Hydro-biological studies on rivers and Dam in Indian sub-continent as well as in different parts of the world have been under taken by different workers. Following text presents a brief review on the subject :

1. Edomondson (1959). Fresh water Biology.
2. Mahaderan and Krishnaswamy. Water profile of river Vaigai.
3. Ray (1966). Some limnological aspects of river Ganga and Yamuna.
4. Rao and Shrivastava (1987). "Prospectives in hydro-biology".
5. Rao, *et al.* (1987). Made detailed ecological observations in Kshipra river system, Ujjain (M.P.)
6. Chacko, Abraham and Andal (1953). Surveyed flora and fauna fisheries of Pulicate lake.
7. Shastry *et al.* (1970). Studied the population of upper lake at Bhopal.
8. Adoni (1975) studied the microbiology of Sagar lake.
9. Das and Pandey (1978) reported on some physico-chemical and biological indicators of pollution lake.
10. Ellis (1940) reported the effects of water condition on aquatic life in Elephant Butte reservoir.
11. Needham and Needham (1974) "A guide to the study of fresh water biology".
12. Pennak (1971) Towards a classification on Lotich habitat Biology & list of the published papers of the candidate. **CERTAIN**

PHYTOPLANKTON OF THE BENISAGAR DAM, JARAHA, REWA (M.P.)

Class	:	Chlorophyceae
Order	:	Volvocales
Family	:	Volvocaceae
Genus	:	<i>Volvox</i>
Species	:	<i>V. globater</i>

Diagnosis : The motile coenobium, hollow, spherical/ovoid in shape; 0.5 to 2.0 mm. in diameter; 15,000-20,000 in number; arranged along the periphery of a pin head like ball; coenobium covered by a thin delicate, gelatinous envelop; colony consists of small biflagellate cells; each cell possesses its own sheath; central part of colony is hollow, cellless and filled with water (Pl. 11, Fig. 75).

Order : Chlorococcales
Genus : *Pediastrum* Meyen

Species : *P. duplex* (Meyen, 1829)

Diagnosis : The Number of cells in a colony 8-16, perforate cells are lens shaped. Inner cells are quadrate to angular and with the central portion of the side wall. Marginal cells have two stout truncate processes. The inner margins of the peripheral cells are concave. There are great variations in this form (Pl. 7, Fig. 30).

Genus : *Pediastrum duplex* var

Species : *P. genuinum* (A Braun)

Diagnosis : The colonies contain 32 cells, intercellular spaces are found between the cells outside of marginal cells provided with slightly curved stout processes cell membrane is punctate cells have been observed 5.5 m to 17.5 m.

Genus : *Scenedesmus* Meyen
Species : *Scenedesmus armatus* Smith

Smith, 1916

Diagnosis : The colonies four celled, cells oblong ellipsoidal with acute spines and arranged in a linear series, terminal cells with a single spine from each pole, central cells with a 33 median lateral longitudinal distinct rib, cells 3-6 m in diameter and 12-15 m long, spines 2-3 m long

TAXONOMIC STATUS AND FISH FAUNA OF THE BENISAGAR DAM, JARAHA, REWA (M.P.)

General taxonomy of the fish : Aquatic, either fresh-water or marine; cold blooded vertebrates. The skin is covered with scales, dermal denticles or bony plates. Body usually streamlined but some are elongated snake-like and few are dorso-ventrally compressed. Presence of paired and unpaired fins supported by soft or spiny rays. Dorsal, caudal and anal fins are unpaired, while the pectorals and pelvics (ventrals) are paired. Tail is muscular and used for propulsion. Nostrils are paired but do not open into pharynx except lungs

fishes. Presence of barbules (excellent tactile organs) in some Teleostomi.

The endoskeleton is cartilaginous or bony. Organs of respiration are gills but accessory respiratory organs may also be present. Gills are borne by true gill-arches. They open outside by gill-slits which are covered by operculum in Teleostomi. The gill-slits are never more than seven pairs. Usually five pairs are present. A swim-bladder or air-bladder is usually present but secondarily lost in some species. Lateral line system is well-developed. Heart is venous and two chambered, i.e., one auricle and one ventricle. Ten pairs of cranial nerves are present. Only internal ear is present. The kidney is mesonephros. The gonads possess true gonoducts. Sexes are separate and development is indirect. Amnion and allantois are absent in the embryonic stages.

Before, proper diagnosis of collected fishes from the Benisagar dam, Jaraha, Rewa it is essential to give the outline taxonomic status of the fishes of India. Fishes are lower aquatic vertebrates. Skin is usually embedded with dermal scales such as ganoid, cycloid, ctenoid, placoid etc. Some are scale less also. Generally locomotion is by both median and paired fins. Nostrils are paired. Respiration is by means of gills. In Dipnoi, air or swim-bladder functions as lung for aerial respiration. Fishes are called Pisces or Ichthys and the study of fishes is called Ichthyology.

DISCUSSION, SUGGESTIONS AND RECOMMENDATIONS

After vivid description and analysis of various chapters of the present investigation here author has discussed on the problem "**Limnological studies of Benisagar Dam, Jaraha, Rewa with special reference to fish fauna**". The present thesis of the author includes seven chapters as introduction, historical review, material and methods, limnological observations, biological observations, discussion, suggestions and recommendations and summary followed by bibliography. It is well established fact that the life in water depends upon the physico-chemical conditions prevailing in that water. In the present research work, a number of

physico-chemical parameters of water and soil were studied in Benisagar dam, Khour Kothi, Rewa (M.P.) such as temperature, dissolved oxygen, pH, alkalinity, turbidity, total hardness, chlorides, DO, BOD, COD, etc. Fluctuation in these parameters often create an adverse environment to organisms limiting their production. These also interfere their physiological process which reduce their ability to compete with the other populations within the environment. Life in waters is influenced by a number of physicochemical factors.

summary

Benisagar dam, Jaraha, Rewa (M.P.) is situated towards the east-south part of Gurh Tahsil, Distt. Rewa and is about 42 kms. from Rewa. It is a perennial dam of the Distt. Rewa and is about 10500 hectare in area. It is a life line water dam for the Villagers of the area. Water of the dam is used for drinking, bathing, irrigation and cattle use. The name of the dam originates in honour of Shri Beni Prasad Upadhyya who had constructed the dam and was very popular in whole of Distt. Rewa (M.P.).

A periodical survey of physical, chemical and biological parameters was made during 2012 to 2013. Five sampling sites S_1 - S_5 were selected for the study and 3-5 samples were collected monthly from each sites at different depths i.e. surface, 1 meter, 2 meters and 3 meters.

Regarding the climate at study site was semitropical and four seasons are recognized. The main monsoonal rain fall mid June to September. A short autumn September to October is followed by a mid winter until about February. The summer from March to June is hot and dry. Maximum temperatures often reach 45°C but humidity is low. Annual rainfall in the study area is generally around 1,000 mm for much of the year winds are light and predominantly from the north west quadrant wind speed are generally higher pre monsoon. During the monsoon period, winds blow mostly from the west-south west.

This man made Benisagar dam at Jaraha, Rewa (M.P.) opened up

a new vista of agricultural development in the region. It is also
the lifeline of many agricultural and piscicultural activities in this area.

Reference

- American Public Health Association (1973). Standard methods for the examination of water and waste water. 13th ed. *Amer. Public Health Assoc.*, New York, p. 874.
- Amin, M. Akbar, M. Amin, S. (2007). *Rev. Advmater Sci.* 16 : 10-26.
- Anderson, R.S. and R.B. Green (1976). Limnological and Planktonic studies in the water on lakes, Alberta. *Canadian Wild Life Service.* **27** : 1-41.
- APHA-AWWA and WPCF (1976). Standard method for the examination of water and waste water 16th edition. *Amer. Publ. Assoc. Inc. New York.* P.P. 1268.
- APHA (1995). Standard method for the examination of water and waste water (19th edition). *American public Health Association*, New York.
- Armitage, P.D., D., Moss, J.f. Wright and M.T. Furse (1983). The performance of a new biological water quality score based on macroinvertebrates over a wide range of unpolluted running-water sites. *Wat. Res.* **17** : 333-347.
- Arora, H.C. (1963). Studies on Indian Rotifers (Part : II). *J. Zool. Soc. India.* **15** : 112-121.
- Atkins, W.R.G. (1923). The phosphate contents of fresh and salt water in its relationship to the growth of algal plankton. *J. Mar. Biol. Assoc. U.K.* **13** : 119-150.
- Atkins, W.R.G. (1926). Seasonal variations in phosphate and silicate contents of sea water during 1926 and 1927 in relation to phytoplankton crop. *Ibid.* **15** : 191-205.

युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति

नारायाण अहिरवार

सहायक प्राध्यापक

समाजशास्त्र विभाग

एस.एस.एल पी.जी विद्यालय

यफवा लोगों में शराब पीने की लत तो बढ़ ही रही थी अब पीकर बेहोश होने का नया चलन शुरू हो गया है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ओईसीडी ने एक ताजा रिपोर्ट में पश्चिमी देशों के युवाओं में इस बढ़ते चलन पर चिंता जताई है। प्रमुख औद्योगिक देशों के संगठन ओईसीडी के 34 सदस्य देशों में पिछले दो दशकों से अल्कोहल के इस्तेमाल में थोड़ी कमी आई है लेकिन खासकर युवाओं और महिलाओं में ज्यादा शराब पीने की आदत बढ़ रही है। संगठन ने अल्कोहल के दुरुपयोग को रोकने के लिए लक्षित कदमों की मांग की है।

बिंगे ड्रिंकिंग का चलन

आनन फानन में पांच से आठ ग्लास अल्कोहल पीने को बिंगे ड्रिंकिंग का नाम दिया गया है। इसका मकसद जल्द से जल्द नशे में आना होता है। जल्दबादी में किक पाने की बढ़ती रुझान के पीछे ओईसीडी यह वजह मानती है कि अल्कोहल पश्चिमी देशों में पहले के मुकाबले आसानी से उपलब्ध है और अक्सर युवा लोगों को ध्यान में रखकर ही बनाया जाता है और उसकी मार्केटिंग की जाती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि संभवतः इसी का नतीजा है कि अल्कोहल के प्रति युवा पीढ़ी का रवैया बदल रहा है।

थाई विधि

थामक्राबोक मठ में नशे की लत से छुटकारा पाने के इच्छुक लोग बौद्ध भिक्षुओं के बीच रहते हैं। वे सीखते हैं कि शरीर को हानिकारक तत्वों से कैसे मुक्त किया जाए। इस कार्यक्रम में शारीरिक और मानसिक परेशानियों को आध्यात्मिक तरीके से ठीक करने का दावा किया जाता है।

मौत का पांचवा प्रमुख कारण

ओईसीडी के अनुसार दुनिया भर में इस बीच शराब पीना मौत और अपाहिज होने का पांचवा

सबसे प्रमुख कारण बन गया है। एड्स ए हिंसा और क्षय रोग की वजह से जितनी जानें जा रही हैं उनसे ज्यादा जानें शराब पीने की वजह से जा रही हैं। ओईसीडी के महासचिव आंखेल गुरिया ने कहा है कि अत्यधिक अल्कोहल के इस्तेमाल से समाज और अर्थव्यवस्था को दुनिया भर में भारी नुकसान हो रहा है। एं आंकड़ों के अनुसार ओईसीडी के इलाके में 15 साल से अधिक उम्र का हर व्यक्ति औसत 91 लीटर शुद्ध अल्कोहल का इस्तेमाल करता है। जिसका मतलब 100 बोटल वाइन या 200 बोटल बीयर है। एं शराब के उपभोग का वैश्विक औसत 6.2 लीटर विशुद्ध अल्कोहल है।

दूसरे देशों की तरह जर्मनी में भी बहुत ज्यादा पीने वालों का एक छोटा दल अल्कोहल का इस्तेमाल करता है। सकल उपभोग का 60 फीसदी अधिक पीने वाले 20 फीसदी लोग गटक जाते हैं। 2010 में 43 फीसदी 15 वर्षीय नौजवानों और 41 फीसदी लड़कियों ने माना था कि वे कम से कम एक बार पीकर टल्ली हो गए थे। 2002 में यह हालत 30 फीसदी लड़कों और 26 फीसदी लड़कियों की हुई थी।

युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति

वजवइमत 3ए 2017 मई पदह श्रक्कै। ड् ज्ञप् रू म्क्ज्त्।स्

समाज में नशे का आकर्षण और उसकी सामाजिक स्वीकार्यता विगत कुछ दशकों में तेजी से बढ़ी है। संचार माध्यमों और प्सेलिब्रिटीष् संस्कृति से मिल रहे बढ़ावे को सामाजिक रूप से खारिज करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। किशोर अधिकांशतरु विद्यालयों में या बाहर अपने साथियों से नशाखोरी सीखते हैं। इसके लिए जरूरी है कि स्कूलों में नशाखोरी के दुष्प्रभावों के विषय में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयास किए जाएं।

इस बात से हम सभी वाकिफ हैं कि नशे की प्रवृत्ति जानलेवा होती है। इससे गंभीर बीमारियां होती हैं। बावजूद नशाखोरी के आंकड़े घटने के बजाए बढ़ते जा रहे हैं। ऐसा भी नहीं है कि धूमपान या नशाखोरी के लिए जागरूकता अभियान नहीं चलाया जा रहा है। टीवी रेडियो अखबारों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के लिए प्रयास किया जा रहा है। फिर भी किशोरों में नशे की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह बहुत ही दुखद है कि इतनी जागरूकता के बावजूद इससे कोई सबक नहीं ले रहा है। पिछले दिनों भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद यआईसीएमआरद्व द्वारा कराए जा रहे शोध में यह बात सामने आई है कि तंबाकू का सेवन युवाओं के दिल का सबसे बड़ा दुश्मन है। लगभग 40 फीसद युवाओं में हार्ट अटैक का कारण तंबाकू सेवन बताया जा रहा है। निश्चित रूप से यह स्थिति चिंताजनक है। डॉक्टर कहते हैं कि यदि युवा नहीं संभले और धूमपान के प्रति जागरूक नहीं हुए तो आने वाले दिनों में परिणाम और घातक होगा।

नशाखोरी सभी समस्याओं की जननी है। सरोज बालाए दातारपुर रू हर बुराई की जड़ नशा ही है। चाहे वह शराब का नशा हो। दौलत का या कोई अन्य नशा हो। बिहार में शराब पर रोक लगाने का निर्णय सराहनीय है। क्योंकि हर मामले में राजस्व को ही नहीं देखा जा सकता। नववर्ष के अवसर पर जागरण

परिचर्चा में भाग लेते हुए कमाही के डॉण् रविंद्र ठोसह ने उक्त चर्चा करते हुए कहा कि भले ही सरकार ऐसे फैसलों के जरिए राजस्व के बड़े लक्ष्य हासिल कर लेए लेकिन इस नशे से उपजने वाली विकृतियों का क्या किया जाए क्या समाज को इस नशे के कारण अशांत होने के लिए छोड़ दिया जाए। हाजीपुर के पंडित संतोष शर्मा का कहना है कि सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक लोग भी नशे के विरुद्ध आवाज बुलंद कर रहे हैं। और जागरूकता बढ़ी है पर इस दिशा में और ज्यादा प्रयास करने की जरूरत है यह एक अलग विषय है कि इस कल्याणकारी पहल में सरकार भी पूर्ण नशाबंदी कर अपना योगदान दें। उन्होंने कहा नशे से ही आत्महत्याए घरेलू लोहसाए दुष्कर्मए हत्याए चोरी.डकैती जैसे अपराधिक मामले बढ़ रहे हैं। प्रिंसिपल दिनकर पराशर ने कहा युवा नशे के जाल में फंसते चले जा रहे हैं। आतंकी भी नशे का लालच देकर युवाओं को जाल में फंसाकर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी नशे व आत्महत्या पर लगाम लगाने के लिए प्रयास तेज करने होंगे। हालांकि श्मन की बातश् में इस मुद्दे पर वह अपने विचार व्यक्त करके इस समस्या के प्रति अपनी गंभीरता व चिंताएं जाहिर कर चुके हैंए लेकिन इससे बढ़कर नशाखोरी से देश को बचाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक कार्यक्रम चलाना होगा।

नशे की लत में डूबा बचपन

राष्ट्र का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों में नशाखोरी की लत इस तेजी से बढ़ रही है कि दस वर्ष की आयु में प्रवेश करते ही ज्यादातर बच्चे विभिन्न प्रकार के नशीले और मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं संयुक्त राष्ट्र संघ के नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड की वर्ष 2009 की रिपोर्ट में बताया गया है कि दस से ग्यारह वर्ष की आयु के 37 प्रतिशत स्कूली विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं और वे नशाखोरी की आदत के शिकार हो जाते हैंए सबसे ज्यादा चिंता की बात है अति गरीब और गरीब वर्ग के बच्चों कीए जो सबसे ज्यादा नशे की गिरफ्त में आ रहे हैंए संयुक्त राष्ट्र संघ के नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड की वर्ष 2009 की रिपोर्ट में बताया गया है कि दस से ग्यारह वर्ष की आयु के 37 प्रतिशत स्कूली विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं और वे नशाखोरी की आदत के शिकार हो जाते हैंए टब यह बात किसी से छुपी नहीं है कि ये बच्चे तंबाखूए गुटखा से लेकर गांजाए अघ्फीमए चरसए हेरोईन जैसे घातक मादक पदार्थों का सेवन करते हैंए इन बच्चों के माता.पिता और वयस्क परिवारजन रोजी.रोटी की जुगाड़ में व्यस्त रहते हैं और वे बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देते हैंए यहां तक कि दस वर्ष की उम्र में ही बच्चे भी स्कूल छोड़कर कचरा बीननेए होटलोंए ढाबों में मजदूरी करने या बाजार में फेरी लगाकर सामान बेचने का काम करने लगते हैं और वे अपनी कमाई से मादक पदार्थ खरीदने में सक्षम हो जाते हैंए नशे की गिरफ्त में युवा पीढ़ी

आज नशा सबके सिर चढ़ कर बोल रहा है। आम आदमी इसकी गिरफ्त में जकड़ा हुआ है। आजकल नशे की गिरफ्त में सिर्फ युवक ही नहीं बच्चे व नवयुवतियां भी आ चुकी है। क्यों करते हैं नशारू. बच्चों में नशा करने वाले वे बच्चे होते हैं जो कबाड़ या पोलिथिन कचरों के ढेर से इकट्ठा करते हैं और उन्हें कबाड़ियों के पास बेचने के बाद नशे के आइटम जैसे तंबाकू युक्त गुटके, बीड़ी सिगरेट, शराब, यकच्ची, बोनफिक्स टायर, टयूब के पंचर जोड़ने वाले एडहेसिव या फिर खांसी की दवा टालुईन, यडरेजर का घोल, इस्तेमाल करते हैं। पूछने पर ये बच्चे बताते हैं कि नशा करने के बाद उन्हें खूब आनंद आता है हालांकि बच्चे नशे के नुकसान से अनजान होते हैं। उन्हें तात्कालिक आनंद प्राप्त होता है। उसमें वे मस्त रहते हैं। इसी तरह पढ़ने वाले युवक एवं युवतियां जो सामान्य गरीब व धनाढ्य परिवारों के होते हैं तनाव, बेरोजगारी, पैसे की कमी या फिर जीवन में आनंद उठाने के लिए नशे का इस्तेमाल करते हैं। क्या लेते हैं नशे में, तंबाकू नशे के रूप में नींद की दवाइयां जैसे नाइटरसिट, एलेप्रेस्कस, काम्पोज, वेलियम, प्राक्सम, विभिन्न सीरप में खांसी की दवाइयां, बेनाड्रिल, कोरेक्स व एलोपैथिक दवाएं जिन्हें में असंतुलित मात्रा में ग्रहण कर मस्त हो जाते हैं जिससे इनका तनाव कम होता है और चिंता इत्यादि से मुक्ति मिल जाती है।

बाद में यही आदत का रूप ले लेती है। इसके अलावा नशे के पदार्थ में शराब, गांजा, अफीम, रासायनिक ड्रग जैसे ब्राउन शुगर इत्यादि का प्रचलन भी खूब बढ़ा। छोटी-बड़ी जगहों में इनके एजेंट आसानी से अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराते हैं। नशेडियों में कौन-से लक्षण उभरते हैं, नशा करने वाले में कुछ असामान्य लक्षण सामने आते हैं जैसे चिड़चिड़ाना, हकलाना, लोगों में अरुचि, उत्पन्न होना, अध्ययन के प्रति विरक्ति, याददाश्त कमजोर होना, बात बात पर क्रोधित होना, रक्तचाप में असामान्य वृद्धि, अंगों का कंपकंपाना, नशा न लेने की स्थिति में बेचौनी, बढना, हिंसात्मक व्यवहार, बहकी-बहकी बातें करना, नजरों के कमजोर होने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

नशा आसानी से उपलब्ध है, दवा की दुकानों में बिना डॉक्टर की पर्ची दिखाये दवाइयां उपलब्ध हो जाती हैं। इसके लिए दुकानदार देने में सहमति दिखा देते हैं। इसका कारण यह है कि उन्हें अधिक से अधिक लाभ कमाना है क्योंकि नशेड़ी बेचौनी की स्थिति में दवा के रेट पर बहस नहीं करता बल्कि उपलब्धता की जल्दी में रहता है। क्या कहता है विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि विश्व की करीब 95 प्रतिशत आबादी ऐसी है जो धूम्रपान विरोधी कानून अस्तित्व में न होने के कारण अब तक असुरक्षित है।

संगठन का कहना है कि यह खतरा उन देशों में और भी अधिक है जहां धूम्रपान या तंबाकू उत्पादों के

उपयोग के लिए लोगों को हतोत्साहित नहीं किया जाता। तंबाकू संगठन का कहना यह भी है कि अगर समय रहते कदम नहीं उठाए गए तो 2030 तक हर साल 80 लाख लोग मौत के गाल में समाते रहेंगे। हमें क्या करना चाहिए? माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार पर नजर रखें।

नशे की गिरफ्त में युवा

हमारे समाज में नशे को सदा बुराइयों का प्रतीक माना और स्वीकार किया गया है। लेकिन आजकल नशा यानी शराब पीना फैशन बनता जा रहा है। जबकि शराब को सभी बुराइयों का जड़ माना गया है। शराब के सेवन से मानव के विवेक के साथ सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। वह अपने हित-अहित और भले-बुरे का अंतर नहीं समझ पाता। गांधीजी ने कहा था कि शराब के सेवन से मनुष्य के शरीर और बुद्धि के साथ-साथ आत्मा का भी नाश हो जाता है। शराबी अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है।

आंकड़े बताते हैं कि कुछ सालों में शराब सेवन में काफी इजाफा हुआ है। अमीर से गरीब और बच्चे से बुजुर्ग तक इस लत के शिकार हो रहे हैं। शराब के अतिरिक्त गांजाएँ अफीम और दूसरी नशीली चीजें भी काफी प्रचलन में हैं। शराब कानूनी रूप से प्रचलित है तो गांजा-अफीम आदि प्रतिबंधित होने के बावजूद चलन में है। देश में करीब 21% प्रतिशत लोग शराब के नशे के शिकार हैं। तीन प्रतिशत लोग भांग-गांजे का सेवन करते हैं। 0.7% प्रतिशत लोग अफीम और 3.6% प्रतिशत लोग प्रतिबंधित ड्रग लेते हैं। 0.1% प्रतिशत लोग इंजेक्शन के जरिए जानलेवा ड्रग के शिकार हैं।

युवा पीढ़ी नशे के आगोश में क्यों

युवा पीढ़ी पर नशीले पदार्थों की पकड़ लगातार मजबूत हो रही है। युवतियों में भी ड्रग्स स्टेटस सिंबल बन जाने से इस बुराई की समाप्ति और भी मुश्किल होती जा रही है। स्कूलकालेज भी नशे से अछूते नहीं रहे। नशीले पदार्थों को आमतौर पर 4 भागों में बांटा जाता है। अफीम व अफीम से बने मारफिनए कोडीनए हेरोइन व ब्राउन शुगरए गांजा व गांजे से बने चरस व हशीशए कोकीनए सैन्कोटिक ड्रग्स जैसे एलएसडीए मेंड्रोक्स व पीसीपीए ये सभी बेहद खतरनाक हैं। छोटे नगरों व गांवों में सुल्फे गांजे ने अपने पैर पसार रखे हैं तो बड़े नगरों में हेरोइन व ब्राउन शुगर ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। मुंबई में इन का सेवन करने वालों में 14 से 25 आयुवर्ग के युवक-युवतियों की संख्या सब से अधिक है।

दांपत्य जीवन में दरार

शरीर में मादकता की अधिकता रक्तचाप व विक्षिप्तता को जन्म देती है। जिस से आंखों में मोतियाबिंद की शिकायत अंधत्व में बदल सकती है। महिला की कार्यक्षमता कम हो जाती है। मादक पदार्थों के सेवन से दांपत्य जीवन में दरार पैदा हो जाती है। पति-सास-ससुर व बच्चों आदि के साथ

मनमुटाव घर को नर्क बना देता हैण् दक्षता प्रभावित होने से कार्य क्षेत्र से जुड़ी महिलाएं दफ्तर व संस्थानों में उपहास व क्रोध का पात्र बनती हैंण् सरकार ने जनसामान्य के स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कर्तव्यों में शामिल करते हुए संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार चिकित्सीय प्रयोग के अतिरिक्त स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नशीले पदार्थों व वस्तुओं के उपयोग को निषिद्ध करने के लिए 1985 में नशीली दवाएं व मनोविकारी पदार्थ कानून. एनडीपीएस ऐक्स बनायाण् इस कानून को लागू करने के साथ ही मादक पदार्थों का सेवन करने वालों की पहचानए इलाजए शिक्षाए बीमारी के बाद देखरेखए पुनर्वास व समाज में पुनर्स्थापना के लिए जोरदार प्रयास किए जा रहे हैंण् किंतु समाज में नशाखोरों की बढ़ती संख्या इन पर पानी फेर रही ह।

सन्दर्भ:-

<https://m.dailyhunt.in/news/india/hindi/royal?bulletin-epaper-https://www.kzansatta.com/sunday-magazine/intoxicant-youth-cigarette-smoking-drugs/56227/>

<http://www.grihshobha.in/society/social-infrastructure/youth-india-3759>

उजाले की ओर यकेन्द्रीय मनश्चिकित्सा संस्थानए राँचीद्व

मध्यप्रदेश के वाणिज्यिक आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र के विकास में समाचार पत्रों की भूमिका

डॉ.मेघा पाठक

अतिथि विद्वान (वाणिज्य)

Daazk

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कॉलेज

कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

P`astavan .

स्वतंत्रता के पूर्व से ही म.प्र. में अनगित संख्या में समाचार पत्र प्रकाशित किये गये थे जिनकी आजादी दिलाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साथ साथ ही आजादी के बाद भी असंख्य समाचार प्रतिदिन चाहे वह पाक्षिक, मासिक, दैनिक, साध्यकालिक इत्यादि समाचार पत्र म.प्र. से बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित किये जा रहे हैं साथ ही ग्राहकों का भी समाचारों को भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। म.प्र. से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र हैं जैसे – दैनिक भास्कर, नई दुनिया, नवभारत, चौथा संसार, पत्रिका जागरण, सेन्ट्रल क्रॉनिकल, देशबंधु, जबलपुर एक्सप्रेस, मी मराठी, पीपुल्स समाचार, संध्या प्रकाश, देखो भोपाल, मोल तोल, बिजनेस स्टेण्डर्ड, तहलका हिन्दी, सीमा संदेश, विशेष समाचार, हिन्दी मिलाप, अग्निबाण इत्यादि कई समाचार पत्र म.प्र. से प्रतिदिन प्रकाशित हो रहे हैं। वे राज्य एवं राष्ट्र के आर्थिक विकास में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। साथ ही जन सामान्य के मार्ग दर्शन वर्तमान में जो घटनाएं चाहे वह अच्छी हो या बुरी जनता को इससे अवगत कराते हैं। 4.1 आर्थिक विकास में :-

किसी भी देश में अर्थिक विकास की अवधारणा कहा उद्देश्यों, उद्देश्यों एवं व्यवहारों पर निर्भर करती है के व्यापक एवं गतिशील धारणाओं से सम्बंधित होती है। यह अतीत से मानव कल्याण या कोक कल्याणकारी प्राकृतिक व भौतिक ससाधनों की प्रमुक्ति व क्षमता विकास की प्रक्रियाओं से अपने अस्तित्व को आगे बढ़ाती है। सामान्यतः किसी भी अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की एक ऐसी अनवरत प्रक्रिया है जिससे जन सामान्य का सर्वांगीण विकास हो सके।

आर्थिक विकास में पत्रकारिता या समाचार पत्र :-

सम्प्रति जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अर्थ से प्रभावित है। सर्वे गुणा :- काचनमाश्रयन्ति के अनुसार सभी अर्थोपार्जन के पीछे दिवाने है अर्थ से सम्बंधित समस्त किया – कलापो को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता विकसित हो रही है। मुद्र, बाजार, पूँजी बाजार वस्तु बाजार प्रंचवर्षीय योजना बैंक गामोउद्योग

श्रम बजट और राष्ट्रीय आप के समाचार अब पाठको को अधिक आकर्षक प्रतीत हो रहे हैं।

महत्वपूर्ण अर्थ – जगत के पत्रों द्वारा उद्योग व्यवसाय क जानकारी दी जा रही है जो आर्थिक पत्रकारिता को पुष्ट करने वाले है। अर्थशास्त्र वाणिज्य और तकनीकी ज्ञान वाले इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते है।

विश्व में पत्रकारिता का उदय आर्थिक – व्यापारिक गतिविधियों के संदर्भ में हुआ। भारत में भी पत्रकारिता का आरंभ व्यापारिक सूचनाओं के आदान प्रदान के लिये हुआ था। 29 जनवरी सन् 1780 को कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले भारत के प्रथम अखबार का नाम "हिम्की गजर" अथवा "कलकत्ता" जनरल एडवाइजर था। यह नाम स्वयं इस बात का सूचक है कि इस अखबार में विज्ञापन भी छापे जाते थे। हिम्की ने आने पत्र के उद्देश्यों के विषय में लिखा था "राजनीतिक और व्यापारिक साप्ताहिक सभी पार्टियों के लिए खुला है लेकिन किसी से भी प्रभावित नहीं है। इससे स्पष्ट है कि इस अखबार का उद्देश्य व्यापारिक गतिविधियों की सूचना देना ही था।

सन् 1910 में कलकत्ता से कॉमर्स का प्रकाशन आरम्भ हुआ। बाद में इसे बम्बई से प्रकाशित किया जाने लगा। ब्रिटेन का एक व्यापारी के.के. जोसेफ बम्बई आया और इस अखबार का स्वामित्व उसके हाथ में आ गया। कामर्स की खसिमत थी कि इसमें उद्योग और व्यापार से सम्बंधित सूचनाये खबरों के रूप में छपती थी। आर.वी. मुर्ति एवं एस.जी.स्मन के सम्पादकत्व में यह प्रवृत्ति कली-फुली।

आर्थिक विकास बल्कि इससे जुड़ें लोगो के हितों की वकालत से भी सम्बंधित थी। "द कैपिटल" एवं कामर्स में कोयला जुट विदेशी मुद्रा बैंकिंग कपड़ा कपास उद्योग शैयर एवं सर्राफा बाजार से सम्बंधित समाचारों तका प्रकाशन होता था। आर्थिक पत्रकारिता के क्षेत्र में पहला विशुद्ध भारतीय प्रयास था "इंडियन कायनेंस का 1928 में प्रकाशन। यह पहला आर्थिक अखबार था औद्योगिक घराने से नहीं था। इसके सम्पादक सी.एस. रगोस्वमी था जिन्होंने केवल भारतीय व्यापारियों को इसके साथ जोड़ा जिसमें प्रमुख थे बिरला जालान नदीदास गोयनका तथा कलकत्ता एवं मद्रास के कुछ छोटे व्यापारी। इस पत्र ने अपने सम्पादकीय में भारतीय परिप्रक्ष्य में सामाजिक आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्दों का गहन विश्लेषण द ईस्टर्न इकनामिस्ट द्वितीय विश्व युद्ध के दौर में आरम्भी हुआ इसका प्रकाशन बिरला घराने द्वारा 1943 में आरम्भ किया गया।

विश्व युद्ध के दौरान राजनितिक और अर्थ में बहुत घनिष्ठता हो गयी थी। भारत सरकार एवं व्यापारी मिलकर देश की आर्थिक योजनाओं पर विचार विमर्श कर रहे थे। ऐसे समय में द ईस्टर्न

इकनामिस्ट को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय घटनाकयाके किा प्रकाशित करने वाले पहले आर्थिक विकास से सम्बधित समस्याओ को अधिक महत्व दिया ।

श्री नरसिंह राव एवं डॉ मनमोहन सिंह की नयी आर्थिक नीति के तरत्त् निजीकरण विदेशी निवेश एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों को जबर्दस्त प्रोत्साहन मिला । आर्थ और व्यापार की इस तीव्र प्रगति के युग में आर्थिक सूचनाओं का आदान प्रदान आर्थिक विकास के लिये अनिवार्य हो गया ।

इसी के चलते पत्रकारिता की एक नयी विधा विकास पत्रकारिता इसका एक अंग बन गयी । इसके फलस्वरूप प्रिंट मिडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भी आर्थिक समाचारों और उससे जुडे कार्यक्रमों को बहुत महत्व दिया । आज आर्थिक मुददे लोंगो के दैनन्दिन जीवन में अत्मत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है । इसके कारण न सिर्फ अंग्रेजी बाल्कि हिन्दी में भी आर्थिक पत्रों का प्रकाशन आरम्भ हो गया है । इस समय देश के विभिन्न भागों से जो आर्थिक दैनिक सात्ताहिक अथवा मासिक प्रकाशित हो रहे है उनमें प्रमुख है बिजनेस इंडिया बिजनेस टुडे बिजनेस वर्ल्ड फिनान्शियल वर्ल्ड मनी दलाल स्ट्रीट कैपिटल मार्केट बिजनेस स्टैण्डर्ड बिजनेस टाइम्स व्यापार कारोबार इत्यादि ।

व्यापारिक कियाओ में :-

व्यवसाय :-व्यवसाय का शाब्दिक अर्थ है व्यस्त रहने की अवस्था ;जंजम व इिमपदह इनेलद्ध किन्तु प्रत्येक मानवीय कार्य को व्यवसाय रहना उचित नही है । मानवीय कार्यों को दो भागो में बाटा जा सकता है – आर्थिक कार्य एवं अनार्थिक कार्य । आर्थिक कार्य घनोपार्जन के लिये किये जाते है और इनका सम्बंध वस्तुओ तथा सेवाओं को उत्पादन विनिमय तथा उपभोग से होता होता है । अतः व्यवसाय वह आर्थिक किया है जिसके द्वारा वस्तुओ और सेवाओ का उत्पादन तथा वितरण किया जाता है व्यवसाय का उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि करके लाभ जमाना होता है । ढिक उसी प्रकार व्यवसाय मे व्यापारिक कियाओ को पत्रो का होता है जिस प्रकार आर्थिक विकास में समाचार पत्रो की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है ढिक उसी प्रकार व्यापारिक कियाँए भी बगैर समाचार पत्रो क संचालित नही कि जा सकती है व्यापारी कियाओ के कियान्वमन यें समाचार पत्रो की अहम् । भूमिका परिलज्जित होती है । पूँकि आर्थिक कियाओ को सम्पन्न करने के लिये एक राज्य से दुसरे राज्य एक देश से दुसरे देशो में भी आना जाना पड़ता है तथा व्यापार के सबंध में देश की क्या नीति है अन्य देशो की क्या नीतियाँ यह सभी बगैर समाचार पत्रिकाओ के पता करना असंभव है

क्योकि व्यापार और कारोबार भी एक बडे साहस और जोखिम का काम है । इस मैदान में भी

सिकन्दर महान और नेपोलिमन बोनापार्ट जैसी विभूतियाँ होती हैं केवल रणक्षेत्र में ही नहीं।

वस्तुतः कीमतों भावों और दरों का संग्रह करना ही करना ही व्यापार समाचार संकलन नहीं कहलाता वे समाचार पाठकों के लिए उपयोगी तथा लगते हैं जब इनका विवेचन भी साथ-साथ प्रस्तुत किया जाये जिससे पाठक या व्यापारी कहा मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

उद्योग समाचार :-

नाईलीन के प्रयोग ने सुती कपड़े की मार्केट पर किस तरह कब्जा कर लिया, दुध के यन्त्रों के लग जाने से डेयरी उद्योग को कितना प्रोत्साहन मिला अम्बर चर्खे के अधिकार से खादी के उत्पादन में कितनी वृद्धि हुई। ऐसी सभी समस्याओं की जाँच-परख व्यापारिक सवाददाता करते हैं, क्योंकि माल के उत्पादक और उपभोक्ता सभी के हित में हैं कि वे स्थिति से चली प्रकार अवगत रहे हैं।

उद्योगो सम्बन्धी पत्रिकाएँ :-

आजादी मिलते ही उद्योग धर्मों की बढ़ोत्तरी की ओर पत्रकारों का ध्यान गया। व्यापारी साइकार, बैंक, दुकानदार, शैयर होल्डर तथा उपभोक्ता के हित साधन के लिए पत्र पत्रिकाएँ निकाली गयीं। जनतात्रिक देशों में दैनिक जीवन के रानीतिक, आर्थिक, सामाजिक पक्षों पर प्रकाश डालने वाले पत्रों में व्यावसायिक पत्रों का प्रमुख हाथ होता है। व्यापारिक राष्ट्र की आर्थिक गतिविधियों का दर्पण सिद्ध होता है। उधम खादी ग्रामोद्योग व्यापार सन्देश 'व्यापार उद्योग समाचार' "योजना" आदि पत्रों में दैनन्दिन बाजार-भाव उसकी समीक्षा विविध व्यावसायिक गतिविधिया अर्थ एवं मुद्रा सम्बंधी समस्या कराधान अधिनियम आदि प्रकाशित कर भारत के उद्योगों को समृद्ध किया। उद्योग पत्रकारिता की महत्ता इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक और मासिक पत्र में उद्योग-व्यवसायों से संदर्भित स्तरथ निकले।

बैंक बहुत से व्यक्तियों द्वारा एकत्रित किए गए सामुहिक कोष घटक है। बैंक ऐसी संस्था है जो मुद्रा में व्यवहार करती है। जहाँ धन जमा, संरक्षण तथा निर्गमन होता है। जहाँ ऋण एवं कटौती के साथ धन के अन्तरण की व्यवस्था भी की जाती है।

बैंकों द्वारा परियोजना लागत की सभी मदों, जैसे-भूमि भवन टलान्ट व मशीनरी परिचालन पूर्व के व्यय व कार्यशील पूँजी आदि हेतु ऋण प्रदान किया जाता है। बैंकों में कार्यशील पूँजी हेतु ऋण लेना अत्यन्त सुविधाजनक रहता है।

सामाजिक विकास के संबंध में :-

सामाजिक एवं व्यक्तिगत श्रेणी के समाचार पत्रों के भी हमारे जीवन में विशेष स्थान है। अमेरिका या अन्य विकसित देशों में समाचार-पत्र इन समाचारों को विशेष महत्व देते हैं और स्थानीय अथवा जिला स्तर पर प्रचलित समाचार-पत्रों की विशेषता तो ये समाचार ही होते हैं, क्योंकि उन देशों में ईर्द-गिर्द के इलाके की जात-बिरादरियों द्वारा अपने और अपने परिवार या सगे – सम्बन्धियों के बारे में जानकारी को समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवाना एक खाज ही बन गया है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत समाचार इकट्ठे करने के लिये सवांददाताओं का विशेष रूप से चयन किया जाता है। और उन्हें इस काम के लिये बाकामदा ट्रेनिंग दी जाती है। सामान्यतः इस स्तम्भ के लिये महिला सवांददाता को चुना जाता है।

हमारे यहाँ दैनिक समाचार पत्रों में “ सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तम्भ रखा जाता है। लघु समाचार-पत्रों और आंचलिक पत्र-पत्रिकाओं की तो बात ही अलग है, वे इस शीर्षक के समाचारों पर विशेष ध्यान देते हैं क्योंकि उनके ग्राहक इसकी मांग करते हैं।

इस प्रकार क समाचारों का अपना ही अकर्षक और महत्व है। में समाचार-पत्र के प्रसार को बढ़ाते हैं और उसे पक्का करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति किसी अच्छे सन्दर्भ में अपना नाम समाचार-पत्र में छपा हुआ देखना चाहता है, क्योंकि वह बात उसकी प्रतिष्ठा की निशानी है और वह उस पत्र की कतरन अपने पास हमेशा रखेगा या दूसरों को दिखायेगा जिसमें उसके अपने या उसके किसी इष्टजन के विवाह के समाचार या चित्र छपे हो। तरह कई व्यक्ति कई-कई वर्ष तक समाचार-पत्रों के ग्राहक बने रहते हैं। छोटी बड़ी सभी सोसायटीयों के कार्यकर्ता को बड़े नेता तो होते नह कि उनका नाम प्रतिदिन समाचार-पत्रों में छापता रहे इसलिए उन्हें इस दिन की प्रतिज्ञा रहती है कि कब उनका वार्षिक अधिवेशन या चुनाव हो तो उनके नाम और चित्र भी जनता के सामने आये।

सामाजिक विकास में समाचार पत्रों का दषित्व :-

श्राष्ट्र के कोने-कोने में जागरण, नवस्कुर्ति और नव-निर्माण के मंत्र को फुँकना ही पत्रकारिता का पावन लक्ष्य है। यह एक रचनाशील विधा है जिससे समाज का आमूल-पूल परिवर्तन सम्भव है। समाज का आमूल-पूल परिवर्तन सम्भव है। समाज के विस्तृत क्षेत्र के संदर्भ में पत्रकारिता के नित्न्लिखित दषित्व है :-

1. सामाजिक जनमत को अधिव्यक्ति देना।

2. समाज को उचित दिशा निर्देशित करना ।
3. जन-जन को स्वस्थ मनोरंतन की समाग्री देना ।
4. सामाजिक करोतियों (बाल-विवाह, विधवा उपेक्षा, दहेज, बहु-हत्या, वेश्यावृत्ति, अंधविश्वास को मिटाने की दिशा में प्रभारी कदम उठाना,
5. धार्मिक और सारंकृति पक्षों का दो दुक विवेचन करना ।
6. सामान्य जन को उनकी ही भाषा में उनके अधिकारे को समझाना,
7. कृषि जगत् की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाना,
8. उद्योग जगत् की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाना,
9. सरकारी नीतियों का विश्लेषण एवं प्रसारण,
10. महिला-जगत् बाल-जगत् क्रीड़ा-जगत् चलचित्र-जगत्के विविध कार्यक्रमों का प्रसार
11. स्वास्थ्य-जगत् परिवार-कल्याण के प्रति नागरिकों के स्वाचेत करना,
12. शिक्षा शिक्षक विधार्थी वर्ग को सभी चीन मार्ग बतलाना,
13. सर्वधर्मसमभाव एवं सौहार्द-भाव को पुष्ट करना,
14. संकटकालिन परिस्थितियों में राष्ट्र का मनोवल बढ़ाना,

इस प्रकार अत्यात का प्रतिरोधकर मित्रविहीन लोगो को मित्रवत् मार्ग दिखाना ही पत्रकारिता है । समाज में मानव-मुल्यों की स्थापना के साथ-साथ जन-जीवन को विकासोन्मुख बनाना भी पत्रकारिता का दापित्व है ।

संदर्भ ग्रंथ पाठक:—

- 1 समाचार पत्र एवं समाचार
- 2 इंटरनेट पत्रकारिता
- 3 सम्पूर्ण पत्रकारिता
- 4 समाचार और संवाददाता
- 5 पत्र पत्रकार और संवाददाता

नवीन सामाजिक शोध

अन्तरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका के दसवें वर्ष में प्रवेश के उपलब्ध में नवीन सामाजिक शोध पत्रिका के सलहाकार मण्डल, सम्पादक मण्डल व शोध अधिकारियों का पुर्नगठन किया जा रहा है।

सभी वृद्धि-जीवियों शोधार्थियों, वैज्ञानिकों प्रोफसरों आदि से विनम्र निवेदन है कि हमारी इस पुर्नगठन की प्रक्रिया में सहयोग करें व अपने अमूल्य सुझाव दें।

सहयोग के लिये धन्यवाद

-सम्पादक
सविता सक्सेना

UNCOVERING VALUE LESSIONS IN CHEMISTRY

**DR. USHA K. NAIR, PROFESSOR OF CHEMISTRY,
CSA GOVT. PG.COLLEGE,
SEHORE**

Abstract

Education has increasingly become secularized and the focus of educational institutions has shifted more and more towards equipping students with technical skills to enable them to earn their livelihood in an aggressively-competitive world facing information explosion. At this time the colleges and universities should not look like places to which students turn merely to quench anxiety for livelihood. In fact, the educational process must cater to a steady blossoming and awakening of inner resources of strength, endurance, peace and love so that the student becomes capable of facing the challenges of life with equanimity and joy which can be greatly achieved through integrated value education

In spite of the ever growing wonders of Science and Technology, we are living in a turbulent and stressful world under the dark shadow of Industrialization, Urbanization, Consumerism, Peer group rivalry, fierce cut throat competition and the like. So Value crisis has become a global phenomenon in our times. It has unfortunately taken the form of an epidemic as a result of which human beings are facing the devils of intolerance, emotional imbalance, stressful outbreaks leading to more and more shameful episodes

and acts of suicides, murders and other beast like actions. In this run for the top place man has put his Humaneness, his Divine roots at stake and has totally lost track of his true nature which is Divine.

To correct this situation and to usher in an era of Value Based Society the educators of the present times will have to focus on integrating values in their teaching pedagogy. The teachers, educators must uncover the values present in each and every aspect of the subject and topics dealt by them.

The Word 'Value' means 'Worth', a major factor which determines what sort of a human being we are. Values are a special kind of attitudes functioning as standards by which choices are evaluated. Value is a belief upon which a man acts by preference. Value is a quality of anything that renders it desirable or something that is prized, held in respect, deemed worthy or esteemed.

Will Durant rightly observed, “ Education should help us to nurture greater hearts, strong minds, true faith and willing hands, men whom lust of office cannot kill, men who have an opinion and a will.” Education is the process of blossoming of human excellence which has its roots in the Divine nature of man.

“Teachers are the sculptors of personality. A sculptor takes up a block of stone. He mentally visualizes the beauty within the stone. By carefully chiseling he uncovers a beautiful charming idol of God.” This is precisely the role of a teacher.

The present day world needs a harmonious blend of secular and spiritual education. Every form of knowledge and capacity is latent in man. He is endowed with all types of potentialities- physical, mental, spiritual and ethical. The true aim of education is to make explicit the innate powers of man. The formal education furnishes mostly bookish knowledge which the students pursue meticulously for acquiring marks and degrees, whereas the spiritual education develops practical knowledge which are absorbed by them to make it their way of life so that life becomes meaningful. The former caters to

information whereas the latter brings about the much awaited transformation, which enables one to achieve refinement and renders oneself cultured. The formal system speaks volumes of external things while the latter equips one with inner strength. The organ that manifests the powers of the former is the Head-which inflates one's ego, at the same time the organ that enables one to bring out the inner knowledge is the HEART- the seat of all values and which is the reservoir of LOVE, the undercurrent of all values. The formal system enables one to eke a livelihood, whereas the latter is for life. The former renders one literate while the latter renders one to blossom as a nobly educated human being. Life will become ideal only when both these types of knowledge are made to manifest in harmony.

The students of Chemistry often wonder as to why or what is the use of studying topics like Chemical Kinetics, Thermodynamics, Quantum mechanics, Electrochemistry or Photochemistry and their complexities in their future life. How can branches of Chemistry like Inorganic, Organic, Environmental or Green Chemistry help them in achieving human excellence? This is where the Teacher's role as a sculptor comes in. It is for the teacher to relate what is taught, to the day to day life, to explain and highlight the underlying message, its applicability in practical life and thus uncover the dwelling values in that particular topic so that learning becomes meaningful, worthwhile and a treasure that the students can preserve and bank upon to deal with challenges that they may come across at various stages of life.

Following are a few examples of the latent Values in topics of Chemistry:

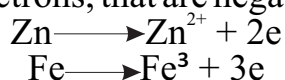
1. We all know that Volume is inversely proportional to Concentration.

$$\text{VOLUME} \propto \frac{1}{\text{CONCENTRATION}}$$

If volume is increased, concentration decreases and vice-versa. In our life too if unwanted issues are allowed to pile up thereby increasing the

volume our concentration level slides down. If on the contrary we follow the dictum of 'Less luggage More comfort' that is discard unwanted thoughts, desires and issues we would be able to concentrate better and perform better. For that we need to master our mind. 'Master your mind and you will be Mastermind'.

2. Oxidation is defined as the process in which electrons are lost. So when a metal species loses electrons, that are negatively electrons lost.



In the above equations the metal atom of Zinc lost two electrons and has acquired two positive charges. Similarly the metal atom Iron lost three electrons and has gained three positive charges.

Reduction is defined as the reverse of Oxidation, in which electrons are gained by a species and therefore loses its acquired positive charge equal to the number of electrons gained.

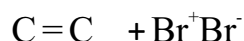


3. Similarly, when one extricates and shuns negative habits or behavior, Chemical Bonding is another very interesting topic where one learns about the force that holds atoms together in a molecule.

'Man is born to Share and Care not to Grab and Grieve'

Globalization is similar to Chemical Bonding. Earlier when countries were on their own there was slackness in progress. But globalization has shortened distance and enhanced progress and growth.

4. Addition Reactions in Alkenes:



Double bond in alkenes are a source of electrons due to the π -electrons, electrons are loosely bound. When it comes in contact with Br₂ molecule,

which is otherwise symmetrical gets partially polarized. One Br atom becomes +ve and the other ve and the addition reaction takes place.

In a similar manner if human beings contact negative attitudes, ideas, bad company, unwanted books, it will leave us polarized, disturbed, will break our unity, harmony and peace.

5. Just as Internal Energy 'E' is the sum total of all types of energies in a system so also Values like Truth, Righteous Conduct, Love, Peace, Non-violence can be said to be the sum total of all good and positive attitudes, attributes which makes one a good Human being.

Mahatma Gandhi said “Education is the development of body, mind and soul.”

Swami Vivekananda said “Education is the process of manifestation of the Perfection in One self.”

True Education must aim at developing a Spontaneous Value Behavior i.e. the response should not be analytical (involvement of the head) but from the heart.

The End of Education is Character.

THE STUDY ON ISSUE & CHALLENGE OF WOMEN EMPOWERMENT

Dr. Amruta Muley
Asst. Prof. Department of Commerce & Management
RajivGandhi College Bhopal.

Abstract Women Empowerment in India and highlight the issue and challenge of women empowerment. Today empowerment of women one most important concerns of 21st century. It is the resources and to make strategic life choices the study reveals that women of India are relatively disempowered and they enjoy somewhat lower status than that of men in spite of many efforts undertaken by God. It is found that acceptance of unequal gender names by women are still prevaty in the society.

Keywords Women's empowerment, education, policy implication, Health.

INTRODUCTION

Women empowered refer to increasing the spirited, political, social, educational, gender or economic strengths of individual and communication of women. Women's empowerment in India is heavily status (caste & class) a large policies on women's empowered exist at the national.

OBEJECTIVES OF STUDY

1. To know need of women Empowered.
2. To study the Govt. schemes for women Empowered.
3. To analysis the factor influencing the economic Empowered of women.
4. This paper is basically discipline & analytical in nature.
5. Crime Against women-

Crime head wise details 2009 to 2013

International Research Journal		UGC JOURNAL No. - 44299		ISSN-0975-4431		
S.No.	Crime Head	2009	2010	2011	2012	2013
1.	Rape (Sec. 376 IPC)	25	45	59	80	59
2	Kidnapping (Sec. 363-373 IPC)	33	40	45	89	93
3.	Dowry Death	45	55	60	55	85
4.	Cruelty by Husband or his relatives (Sec 498)					

State and local (panchayat) levels in many sectors including health, education, economic opportunities, gender based violence and political participation, In our country women have got equal right and status with men in all welters of life. Gender disabilities and discriminations are found in India even today.

Review of literature

M. bharmani Sankam Rao (2011) has highlighted that health of women members of SHG have certainly taken a turn to better it clearly shows that health of women members discuss among themselves about health related problems of other member and then children and make them aware of various Govt. provisions specially meant for them.

Venkata Rai and Venkatraman (2005) focus on the efforts of SHG on women participation and exercising control over decision making both in family matters and in group activities.

Women Empowerment

Reflecting into the “Vedas Purana” of Indian culture women is being worship such a laxmi maa. Goddess wealth saraswati maa for wisdom, Durga Maa for power the status of women in India particularly in rural areas need to address the issue of empowering women. About 66% of the female population in rural area is unutilized. This is mainly due to existing social customs. In agriculture and Animal care the women contribute 90% of the total workforce women contribute almost half of the population perform nearly 2/3 of its work homes, receive 1/10th the world's income and own less than 1/10th the world property 70% of people living poverty are women, The main problem that were faced by women

1. Gender discriminations
2. Lack of education
3. Female Infanticide
4. Family Responsibility
5. Low mobility
6. Low need for achievement
7. Social status
8. Dowry
9. Marriage in some caste and child Marriage
10. Atrocities on women (Rapped, Kicked, Killed subdued, humiliated almost daily)

Need for women Empowered

1. Decision making power
2. Freedom of movement
3. Access to Education
4. Exposure to media
5. Domestic violence
6. Access to Employment

Ways to Empower women

1. Changes in women mobility
2. Changes in women's labour pattern
3. Providing Education
4. Self employment & self helpgroup
5. Encouraging women to develop in the fields they are good at and make a career.

Govt. Schemes for women Empowered

The Govt. programme for women development as early as 1954 in India but the actual participation began only in 1974. At present Govt. of India has over 34 schemes for women operated by different deposit and ministers some as follows.

1. Rastria Mahila Kosh (RMK) 1992-93
2. Mahila Samsidhi Yojana (MSY) oct. 93
3. Indira Mahila Yojana (IMY) 1995
4. Support to Training and Employment programme for women (STEP)
5. Swalamban
6. National Mission for Empowerment of women
7. Rajiv Gandhi Scheme for Empowerment of Adolescence Girl (RGSEAG) 2010
8. Integrated Rural Development Programme (IRDP)
9. Training of Rural youth for self Employment (TRYSEM)
10. Prime minister Rojgar Yojana (PMRY)
11. Khadi and Village Industries Commission
12. SIDBI's Mahila Udyam Nidhi Mahila Vikas Nidhi
13. NGOS Credit Schemes.
14. National Bank's for Agriculture & Rural Development's Schemes

CHALLENGES

The issue will directly benefit the Empowerment of women in India.

1. Education
2. Poverty
3. Health & safety
4. Professional in equality
5. Morality and inequality
6. Household inequality sharing burden of homework childcare, mental work by so called worked division.

Constitutional provision for Empowering in India

1. Reservation of not less than 1/3 of total such for women in direct election to local bodies, Panchayats and Municipalities (Article 343(&) and 343(T)
2. State policy to be directed to securing for men and women equally the right to an adequate means of livelihood (Article 39(a); (V) equal pay for equal work for both men & women (Article 39(d).
3. Equality of opportunity for all citizens relating to employment or appointment to any office under the state (Article 16).
4. Equality before law for all person (Article-14)
5. Prohibition of discrimination on grounds of religion; race; caste; or place of birth (Article 15(1).

FINDING

1. Still quite a few areas where women employment is largely lacking
2. Employment of women could only be achieved if their economic and social status is improved.
3. There are several govt. programmer and NGO on the country there is still a wide gap that exists between those under protection and those not
4. Poverty and illiteracy add to these complications the empowerment of women begin with a guarantee of their health & safety.

SUGGESTIONS:-

- 1- Awareness programmes need to be organised.
- 2- Women should be allowed to work and should be provided enough safety and support to work. They should be provided with proper wages and work at par with men so that their status can be elevated in the society.
- 3- Education of women in first priority.
- 4- Strict Implantation of programmes and acts should be there to curb the practices prevalent in the society

Conclusion:-

When women moves forward family moves, the village moves, the nation moves . It is essential for development of a good family & good society.

It effect on their income and property so that they may stand on their feet and build up their identity.

In the society.

Women have full opportunity of self decision making and participating a social, political and economic life of the country with the since of equality.

Reference

1. Sugura M (2011) education empowerment in India ZENITH. International Journal of Multi disciplinary Research (8) 19-21
2. Dr. Dasarti Bhuyan “Empowerment of Indian women A Challenge of 21st centeury
3. Goswami L (2013) Education for women Empowerment ABHIBYAKTI Annual Journal 1/17-18.

The Role of NGO Promoting self help Group in BPL.

Dr. Amruta Muley

**Asst. Pro. DEPT. Commerce & Mgt. Rajiv Gandhi
College Bhopal**

-To and the role of NGOs in promoting SHG in India

-To Compare the NGO with other Promoting Agencies on performance and functions in the function of NGO

II. Methodology

The India has been conducted with the help of both primary and secondary data. Primary data have been collided from the beneficiaries who have availed loan and other benefits from NGO.

Age composition women SHG members

No.	Age grope	No of respond	%
1-	18-30	50	50
2-	31-40	200	33
3-	41-50	52	10
4-	51-60	48	7
		350	100

Skill Traning Programme by NGOs.

NGOS conduct produced traning to it is SHG members to promote leadership qualities & Income generating activities , SHG that are getting traning from

NGO performing better than other NGO, Conduct two types of training 1. training to SHG members 2. Training to SHG leaders

Through training they provide.

1. Orientating and social awareness.
2. Motivation 3. Leadership
3. Marketing SHG Product
4. SHG Federation

Reason SHG preferring NGO

3. Reasons For SHG preferring NGO

S no.	Reasons for SHG Prefer NGOS	No of frequencies	%
1.	Facilitates in formation	150	42.8
2.	Getting Loan Bank.	40	11.4
3.	Leadership & skill training	60	17.14
4.	Coordination in conduct meeting	30	8.57
5.	Helping in Marketing SHG product	43	12.28
6.	Survey & Repayment	17	4.85
7.	Early Access to bank	12	3.42
8.	Record maintain /A/cing/ Auditing	8	5.14

SOURCES : Primary Data .

3. caste wise distributing of Respondents

S no.	Caste	NO of responds	%
1.	SC	200	57.14
2.	ST	44	12.57
3.	Others	16	4.57
		350	100%

Source : Widen role in helping the SHGS. It help the SHGS in formation and Function and Taker them to the banks. And helps them in building confidence in group activator It guiders them into right path to be successful SHGS. NGO trading really help the SHGS to got motivating and empowerment

Women's Economic role:

Unequal wages between man & wormer higher un employment due to loss of jobs in traditional sector like textiles , manning. Manifesting and household in dither 40% to above Indian do not have bank alc. Employment generation empowerment of women and human development are indispensable

1. Politically
2. Educationally
3. Economically
4. Leanly

Impact of SHG members lifestyle:-

1. Improvement in Quality life
2. Improvement in Economic Status
3. Improvement in decision making
4. Improvement in leadership Quality
5. Improvement in Social participation

NGO Supported SHG member lifelike unpinned in total quality of life.

ANGO's Entrepreneurship:-

Women Should be imported Technical Knowledge Skill Training & Marketing technique in the process of establng enterprise by them for more sustainability .

A NGO's capacity Planning:-

They take special care and provide various training programmes for the SHG'S Members to improve their skills and ability but their financial position is..... Financial Banks under SHG and SHGS Movement is the counting argue that one of the serious problem of all the livelihood promotion programs in that they assure that the poor do not have livelihood strategies of their own and they start with zero.

Their financial needs such as
Education, Purchase livestock. Land development , family venture business.
Jewellery, medical exp.
Purchase of land, house repairs, house construction, L.P.G. connection etc.

Structure issue:-

1. Lack of follow up by the NGO is an unique failure in the system.
2. There was no dedicated authority to take care of need of the SHG's
3. Absence of effective leadership in SHG's
4. Lack of motivation.
5. Lack of wider market prospects. SHG's sell their product only local market.
6. Transaction cost is vary from one NSO's to another.

Recommendation to NGO's

- Transaction cost may be reduced.
- NGO should examine whether the loan amt. has been used for good purpose.
- NGO's should give more priority for capacity Planning
- “Saving First & Credit later”- concept adopted
- Leadership development activates are essential

Conclusion

The govt . Micro finance in India (MNIs) and NGOS should impart entrepreneurship skill. In SHGs for more sustainability and rural economic growth. Economic development will not complete unless women are economically self retain and development. The study emphasize that development of women alone will banish the intensity of poverty.

Reference:-

WWW. Shy

WWW. Nabard

Cantillon. Richard: In kuby peter : Entrepreneurship and Economic development.

Akhouri, M.M.P and S.V.S Sharma :”Small Entrepreneurship development in North Eastern India SIET Institute, Hydrabad, 1978.

A Comparative Study on Merger & Acquisition of SBI & ICICI With Respect to Employees' Perspective

Dr. Sapna Kasliwal Jain
Asst. Professor
Choithram College of Professional Studies,
Indore
spnjain3gmail.com

ABSTRACT

The banking sector is one of the most important instruments of the national development, occupies a unique place in a nation's economy. Economic development of the country is evident through the soundness of the banking system. Banking industry had witnessed deregulation in the financial market, liberalization, economic reforms and astonishing changes leading to implausible competitiveness and technological erudition leading to a new era. The Indian banking industry reveals that Merger & Acquisition as an imperative due to factors like stability, return to shareholders, obeying to regulatory norms, etc. Merger & Acquisition gives an opportunity to these Indian banks of creating a universal bank. Mergers can be used as a strategic tool and also there is a possibility of strategic investments where traditional M & A are not possible. In the changing economic and business environment characterized by speed, flexibility and responsiveness to customers, size has a lot to contribute to staying ahead in the competition. In this study the perception of employees of SBI & ICICI were measured towards the effectiveness of services, working climate and customer awareness. The Paired T-Test was applied to find out the difference between pre-merger and post-merger from the employees'

perspective.

Keywords: effectiveness of services, working climate and customer awareness, performance.

INTRODUCTION

The Banking system of India started in 1770 and the first Bank was the Indian Bank known as the Bank of Hindustan. Later on, some more banks like the Bank of Bombay-1840, the Bank of Madras-1843 and the Bank of Calcutta-1840 were established under the charter of British East India Company. These Banks were merged in 1921 and took the form of a new bank known as the Imperial Bank of India. In the rural areas the Imperial Bank of India partially nationalized on 1 July 1955, for the development of banking facilities and named as the State Bank of India along with its 8 associate banks (at present 5). Later on, the State Bank of Bikaner and the State Bank of Jaipur merged and formed the State Bank of Bikaner and Jaipur. The Indian banking sector can be divided into two eras, the pre liberalization era and the post liberalization era. The government of India had nationalized 14 Banks on 19 July 1969 in pre liberalization era and on 15 April 1980, 6 more commercial Banks were nationalized. The New Bank of India and The Punjab National Bank were merged in 1993 and it was the only merger between nationalized Banks, after that the numbers of nationalized Banks reduced from 20 to 19. The government had introduced the policy of liberalization in post liberalization administration and authorisations were dispensed to the private banks, which led to the growth of Indian Banking sector.

The second Narasimham Committee (1998) had suggested about mergers both in the public and private sectors banks. The facts and figures of mergers in Indian banking sector is as follows. From 1961 to 1968, during pre-nationalization

period, 46 mergers have taken place, from 1969 to 1992, in the nationalized period, the number of mergers were 13. 24 mergers have taken place out of which 16 were forced mergers, 5 were voluntary merger, 2 were conjunction of financial institution in to bank and 1 was due other supervisorycoercions during the post reform period i.e. starting from 1993 to 2016.

SIGNIFICANCE OF THE STUDY

After the global crisis in 2008-09, the Indian Banking Industry shows a sign of improvement in performance and efficiency. At the time of crisis, the Indian Banking Industry is having far better position. Various ingenuities were taken by the Government to strengthen the financial system. The economic recovery gained strength on the back of various monetary policy initiatives taken by the Reserve Bank of India. In a survey among Indian corporate managers across various industry sectors, in 2006, by Grant Thomson, it was observed that M&A are a significant form of business strategy today for Indian corporate. The two main objective behind any M&A transaction, are found to be

Improving revenues and profitability and

Faster growth in scale and quicker time to market.

Hence, this study was undertaken to examine the efficiency and effectiveness of Indian banks after the Mergers. Through the analysis it has been explored that significant changes in the working climate of banking sector, customer awareness about the services provided, and the financial performance of Banks is satisfactory after the mergers and also it provides a platform for employees to improve their performance and increase their level of satisfaction. Customers also get a service quality.

MERGER OF BANK OF RAJASTHAN LTD. IN ICICI BANK LTD

It is apparent that the Bank of Rajasthan had deep saturation with gigantic brand value in the State of Rajasthan where it had 294 branches with a market share of 9.3% in total deposits of scheduled commercial banks. This merger would pointedly add 463 branches in branch network of ICICI Bank along with increase in retail deposit base in rural market and therefore, ICICI Bank would get sustainable competitive advantage over its competitors in Indian Banking.

MERGER OF STATE BANK OF INDORE IN STATE BANK OF INDIA

SBI played an extremely important role in developing India's rural regions, providing the financing needed to modernize the country's agricultural industry and develop new irrigation methods and cattle breeding techniques, and backing the creation of airy farming, as well as pork and poultry industries. The bank also provided backing for the development of the country's infrastructure, particularly on a local level, where it provided credit coverage and development assistance to villages. The nationalization of the banking sector itself, an occurrence that happened under the government led by Indira Gandhi in 1969, provided SBI a new performance as the country's leading bank. SBI has five associate banks that with SBI constitute the State Bank Group. All use the same logo of a blue keyhole and all the associates use the 'SBI' name followed by the regional headquarters' name. Originally, the then seven banks that became the associate banks belonged to princely states until the government nationalized them between October, 1959 and May, 1960. In tune with the first five year plan, the government integrated these banks for development of rural India into State Bank of India to expand its rural outreach. There has been proposed to merge all the associate banks into SBI to create a 'mega bank' and streamline operations.

REVIEW OF LITERATURE

V. Radha Naga Sai and Syed Tabassum Sultan (2017) in their study have made an attempt to evaluate financial performance of the selected two banks based on the financial ratios from the perspective of pre and post- merger. To analyze the impact of merger paired t-test was applied to the various financial ratios for before and after merger data relating to Indian overseas bank and HDFC bank. An Indian banking sector plays a significance role in the mergers and Acquisitions (M&A).

Pawan Sharma and D. P. Warne (2016) in their study made a brief attempt to analyze the impact of merger with reference to successful movements of merger in between two banks. The main objective of this paper is to analyze the pre and post-merger impact of share price fluctuations on selected sample of study. This study is exploratory and descriptive in nature. Secondary source for data and information has been used in the study. The data were taken from the website of NSE (National Stock Exchange) according to the requirement of research study. This paper investigated the impact of merger on ICICI Bank Ltd.

Devarajappa S. (2015) in his study has made attempt explore various motives of merger in Indian banking industry covering various aspects of bank merger. In his paper, he has carried out a comparative study of select financial parameters during the pre and post period. He has used independent T-test to test out statistically significance. He legitimately concludes that banks have been positively affected by the event of merger.

K.A. Goyal and Vijay Joshi (2014) in their research work entitled to “Merger and Acquisition in Banking Industry: A Case Study of ICICI Bank Ltd, the largest private sector bank in India, which has acquired nine financial firms to make

the steps of the ladder of success. Therefore, the aim of this study is to study the growth of ICICI Bank Ltd. through mergers, acquisitions, and amalgamations. This study is divided into four parts. The first part includes introduction and conceptual framework of mergers and acquisition. The second part deliberates followed by literature review the historic background of ICICI Bank Ltd. The third part reveals consolidations in detail about all the mergers, acquisitions, and consolidations. Finally, the study concludes that a firm must formulate a strategy in three phases i.e. Premerger phase, acquisition phase and post-merger phase. The study will be helpful for policy makers, strategy makers, HR people, bankers, researchers, and scholars.

OBJECTIVES OF THE STUDY

- To study the effectiveness of services after merger of SBI & ICICI.
- To study the changes occurred in working climate of banks after merger of SBI & ICICI.
- To examine the customer awareness after merger of SBI & ICICI.

H₀₁: There is no significant difference in the employees' perception towards effectiveness of services provided by banks between pre-merger and post-merger period.

H₀₂: There is no significant difference in the employees' perception towards working climate of banks between pre-merger and post-merger period.

H₀₃: There is no significant difference in the employees' perception towards customer awareness between pre-merger and post-merger period.

RESEARCH METHODOLOGY

Research Design: The study is based on primary data collected from the questionnaire based on five point likert scale for the employees related to effects after merger and secondary data that is collected from the websites, journals. The

reliability and validity of the questionnaire is .890.

Sampling Plan: 200 employees of the merged banks (SBI & ICICI).

Sampling Unit: The sample was collected from SBI & ICICI in Indore.

Sampling Method: For data collection 'Purposive Sampling Technique' is used.

Tools for Data Analysis: Once the response is collected it was converted into the useful data that can be used for statistical analysis by using SPSS software. For this study Paired T Test was applied.

RESULTS OF HYPOTHESES

Table 1 : Paired T-Test

Factors	Pre-Merger	Post-Merger	T-Test	Df	*Sig.
Effectiveness of Services	29.6	35.8	2.707	199	.007
Working Climate	26.9	33.8	5.865	199	.002
Customer Awareness	28.7	36.5	6.789	199	.011

*significant at 5% level

From the table this can be observed that T-value for Effectiveness of Services is 2.707, which is significant at 5% level ($.007 < .05$). In this factor null hypothesis not accepted. For the factor of working climate the T-value is 5.865 at .002 significance level so in this factor also null hypothesis is not accepted and for the last factor customer awareness, the T-value is 6.789 at .011 significance level, hence, in this context also null hypothesis is not accepted.

FINDINGS OF THE STUDY

The hypothesis there is no significant difference in the employees' perception towards effectiveness of services provided by banks between pre-merger and post-merger period has been tested and found that the mean value of pre-merger is 29.6 and the post merger is 35.8 and the value of t-test is 2.707 (higher than the tabulated value of T-Test) at .007 significant level which is lesser than p-value ($<.005$). Hence, the alternative hypothesis is not rejected and the null hypothesis is not accepted at 5% level of significance.

The hypothesis that there is no significant difference in the employees' perception towards working climate of banks between pre-merger and post-merger period is rejected at 5 per cent level of significance, which means that there is a difference in the perception of customer towards working climate during pre and post-merger period. From the means of two groups of pre and post-merger, it is clear that there is a difference between these two groups, the mean value of pre-merger is 26.9 and the post-merger is 33.8 and the value of t-test is 5.865 (higher than the tabulated value of T-Test) at .002 significant level.

From the results of the t-test, there is no significant difference in the employees' perception towards customer awareness of banks between pre-merger and post-merger period, it is evident that the null hypothesis is rejected at 5 per cent level of significance, which means that there is a difference in the perception of customer towards customer awareness of banks during pre and post-merger period. From the means of two groups of pre and post-merger, it is clear that there is a difference between these two groups, the mean value of pre-merger is 28.7 and the post-merger is 36.5 and the value of t-test is 6.789 (higher than the tabulated value of T-Test) at .011 significant level.

CONCLUSION:

The banking sector is one of the speedily mounting industries in India. It has changed itself from a lethargic business unit to an energetic industry. The Banking sector has become the most chosen banking destinations for international investors as the growth rate in this sector is outstanding. There have been model shift in Indian banking industries was observed in the last two decades. At an astounding pace, the Indian banking sector is growing rapidly. A relatively new dimension through mergers and acquisitions in the Indian banking industry has augmented.

Mergers in banking sector are a form of horizontal merger because the merging entities are involved in the same kind of activity. The banks can achieve significant growth in their operations by the way of mergers and acquisitions in the banking sector, minimize their expenses to a considerable extent and also competition is reduced because merger eradicates competitors from the banking industry.

This study also concluded that the employees have been motivated to provide the service quality of services to their customers and perceive the working environment healthy for task accomplishment. On the other hand, customers are satisfied with the quality of services as well as the policies and schemes of the banks.

RECOMMENDATIONS

As per the above discussion, we can say that the biggest challenge for banking industry is to serve the mass market of India. Banks have shifted their focus from product to customer. The better we understand our customers, the more successful we will be in meeting their needs.

In order to mitigate above mentioned challenges Indian banks must cut their cost of their services. Another aspect to encounter the challenges is product differentiation. Indian banks must adopt some product innovation apart from traditional banking services so that they can compete in gamut of competition. Technology upgradation is

a predictable aspect to face challenges.

The level of consumer awareness is significantly higher as compared to previous years after merger of banks. Now-a-days they need internet banking, mobile banking and ATM services. Expansion of branch size in order to increase market share is another tool to combat competitors. Therefore, Indian nationalized and private sector banks must spread their wings towards global markets as some of them have already done it. In Indian market banks are trustworthy brands; therefore, as a valuable asset these banks must utilize their brand equity.

REFERENCES

- **Devarajappa S. (2015)** Mergers and Acquisitions in the Banking Sector- The Indian Scenario. S. Viswanathan (Printers & Publishers) Pvt. Ltd.
- **K.A. Goyal and Vijay Joshi (2014)** “Mergers in Banking Industry of India: Some Emerging Issues”, Asian Journal of Business and Management Sciences, , Vol. 1No. 2,
- **Pawan Sharma and D. P. Warne (2016)** “Strategic Move of ICICI Bank: A Case of ICICI Bank & Bank of Rajasthan”, **International Journal of Multidisciplinary Research Vol.2 Issue 5.**
- **V. Radha Naga Sai and Syed Tabassum Sultan (2017)** **Financial Performance Analysis in Banking Sector a Pre & Post Merger Perspective International Monthly Refereed Journal of Research In Management & Technology. Volume II, April pp. 56-66.**
- Vardhana Pawaskar, (2001), Effect of Mergers on Corporate Performance in India. *Vikalpa*, 26 (1): 19-32.
- Vanitha, S. 2006. Mergers and Acquisitions in the Manufacturing Sector: An Evaluation Study, PhD Dissertation, Bharathidasan University, Tiruchirappalli.
- Vanitha, S. and M. Selvam, 2007. Financial Performance of Indian Manufacturing Companies during Pre and Post Merger. International

शासकीय एव अशासकीय संस्थाओं का महिला उद्यमिता विकास में योगदान

डॉ. टीना जैन
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शासकीय कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय

प्रशिक्षण मुख्यतः उद्यमीय क्षमताओं के विकास हेतु किया जाता है। इसके अंतर्गत संस्थाओं द्वारा उद्यमियों को मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे अपनी रुचियों तथा क्षमताओं के अनुरूप उपयुक्त इकाई का चयन कर सकें तथा इसके विभिन्न पहलुओं पर जानकारी एकत्रित कर सकें।

परंतु महिलाओं को इकाई विशेष के संचालन की भी जानकारी हो। इस हेतु मध्यप्रदेश में प्रशिक्षण प्रदान करने वाली कुछ प्रमुख प्रशिक्षण संस्थाएँ निम्न हैं –

(1) जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र

जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्रों के माध्यम से राष्ट्र में ग्रामीण औद्योगीकरण की क्रान्ति को बल मिला है जिससे औद्योगिक विकास को पर्याप्त गति प्राप्त हुई है। इसका प्रमुख कार्य उद्यमियों को उद्यम की स्थापना व संचालन में सभी सुविधाएँ सुलभ करना है। उद्यमी को उद्योगों की स्थापना से संबंधित समस्त जानकारी तथा सुविधाएँ एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराने हेतु सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई है।

जिला उद्योग केन्द्र को जिले के "औद्योगिक विकास की धुरी" कहा जाता है। उद्यमिता विकास में जिला उद्योग केन्द्र का अपूर्व योगदान होता है। उद्योगों के तेजी से विकास के लिए देश भर में जिला उद्योग केन्द्रों की स्थापना 1978 में की गई। जिला उद्योग केन्द्र उद्यमियों को निम्न सुविधाएँ प्रदान करता है—

- (1) भूमि शेड आवंटन
- (2) सूचना एवं मार्गदर्शन
- (3) पंजीयन
- (4) विपणन सुविधा

(2) मध्यप्रदेश हस्तशिल्प विभाग एवं हस्तकरघा निगम

मध्यप्रदेश हस्तशिल्प विभाग एवं हथकरघा निगम लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1981 में की गई । हस्तशिल्प विकास निगम का प्रमुख कार्य एवं उद्देश्य हस्तशिल्प एवं हथकरघा में विकासात्मक प्रोत्साहनात्मक गतिविधियों को संचालन कर हस्तशिल्प के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाना । यह निगम शिल्पियों को निम्न प्रकार की प्रमुख सुविधाएँ उपलब्ध कराता है –

- (1) डिजाइन डेवलपमेंट, कलाकारों को पुरस्कार, अनुदान आदि ।
- (2) हस्तशिल्प कॉम्प्लेक्स का विकास ।
- (3) ग्रामीण कार्यशालाओं का निर्माण ।
- (4) प्रशिक्षण कार्यक्रम ।
- (5) हस्तशिल्पों का विपणन, प्रदर्शन, प्रचार, एम्पोरियम, विक्रय केन्द्र में छूट आदि की व्यवस्था करना ।

(3) उद्यमिता विकास केन्द्र (सेडमेप)

उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश एक स्वायत्तशासी संस्था है । इसके प्रवर्तन में मध्यप्रदेश शासन अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान, राज्य निगम, तथा राज्य के अग्रणी बैंकों से सहायता प्राप्त हुई है । इस संस्था के प्रमुख कार्य निम्न हैं –

- (1) उद्यमिता विकास संबंधित जानकारियों को स्वरोजगार हेतु प्रचारित करना ।
- (2) उद्योगों की स्थापना के लिए नए उद्यमियों को प्रशिक्षण प्रदान करना ।
- (3) कार्यरत उद्यमियों की कार्यकुशलता में वृद्धि करना ।
- (4) उद्यमिता के लिए उचित वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से उद्योग स्थापना से संबंधित विभागों/संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण प्रदान करना ।
- (5) युवाओं व समाज के विभिन्न वर्गों के लिए उद्यमिता जागरूकता शिविर आयोजित करना ।

(4) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रदेश में उद्यमिता विकास कार्यों के लिए अनेक सेवाएँ दी जा रही हैं । यह कार्यक्रम मुख्य रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग की महिलाओं के लिए संचालित किए जा रहे हैं । प्रशिक्षित उद्यमियों को बैंक द्वारा ऋण भी प्रदान किया जाता है ।

(5) मध्यप्रदेश कन्सलटेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड

मध्यप्रदेश कन्सलटेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड की स्थापना राष्ट्रीयकृत बैंकों, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान व राज्य शासन की नीतियों के अंतर्गत की गई है । मध्यप्रदेश कन्सलटेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड के माध्यम से मध्यप्रदेश के उद्यमियों को प्रशिक्षण सहायता एवं मार्गदर्शन दिया जाता है । संस्थान के प्रमुख कार्य निम्न हैं –

- (1) विभिन्न वर्गों व श्रेणियों के उद्यमियों के लिए परियोजना प्रपत्र का निर्माण करना ।
- (2) उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना ।
- (3) किसी वस्तु की बाजार में माँग और पूर्ति के आधार पर बाजार की तलाश करना ।
- (4) आर्थिक व औद्योगिक मजबूती का सर्वेक्षण करना, प्रबंध सलाह सेवा देना ।
- (5) बीमार इकाइयों की पुनर्स्थापना हेतु जाँच करना ।
- (6) उद्योग परियोजनाओं की जाँच करना ।

(6) मध्यप्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड

वर्ष 1957 में भारत सरकार द्वारा खादी और ग्रामोद्योग आयोग का मुख्य कार्यालय मुम्बई विले पार्ले में स्थापित करने के पश्चात् वर्ष 1960 में मध्यप्रदेश में खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड का राज्य कार्यालय भोपाल में स्थापित किया गया जिन कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा किया जाता है उन्हें प्रादेशिक स्तर पर राज्य कार्यालय द्वारा किया जाने लगा ।

मध्यप्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विक्रय योग्य वस्तुओं का उत्पादन कराकर विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देना है एवं ग्रामीण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित कर शोषण रहित एवं समतामूलक समाज की संरचना का व्यापक उद्देश्य रहा है । बोर्ड के मुख्य कार्य निम्न हैं –

- (1) खादी तथा ग्रामोद्योग की स्थापना, विकास एवं संवर्द्धन में सहयोग एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना ।
- (2) खादी तथा ग्रामोद्योग की स्थापना हेतु उद्यमी भावना को प्रोत्साहित करना ।
- (3) खादी तथा ग्रामोद्योग में नवीन तकनीक, प्रशिक्षण तथा विपणन की सुविधा उपलब्ध कराना ।
- (4) खादी तथा ग्रामोद्योग के लिए संयंत्र मशीन उपकरणों का प्रदाय एवं कच्चे माल की आपूर्ति करना ।

(7) स्वयंसेवी संस्थानों द्वारा

प्रदेश में उद्यमिता विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए और औद्योगिक वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से स्वयंसेवी संगठन द्वारा विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं । अंबेडकर संस्थान, राष्ट्रीय सामाजिक संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक क्लब, आदि द्वारा उद्यमिता जागरूक शिविर, गोष्ठी,

मध्यप्रदेश कन्सलटेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड की स्थापना राष्ट्रीयकृत बैंकों, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान व राज्य शासन की नीतियों के अंतर्गत की गई है । मध्यप्रदेश कन्सलटेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड के माध्यम से मध्यप्रदेश के उद्यमियों को प्रशिक्षण सहायता एवं मार्गदर्शन दिया जाता है । संस्थान के प्रमुख कार्य निम्न हैं –

- (1) विभिन्न वर्गों व श्रेणियों के उद्यमियों के लिए परियोजना प्रपत्र का निर्माण करना ।
- (2) उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना ।
- (3) किसी वस्तु की बाजार में माँग और पूर्ति के आधार पर बाजार की तलाश करना ।
- (4) आर्थिक व औद्योगिक मजबूती का सर्वेक्षण करना, प्रबंध सलाह सेवा देना ।
- (5) बीमार इकाइयों की पुनर्स्थापना हेतु जाँच करना ।
- (6) उद्योग परियोजनाओं की जाँच करना ।

(6) मध्यप्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड

वर्ष 1957 में भारत सरकार द्वारा खादी और ग्रामोद्योग आयोग का मुख्य कार्यालय मुम्बई विले पार्ले में स्थापित करने के पश्चात् वर्ष 1960 में मध्यप्रदेश में खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड का राज्य कार्यालय भोपाल में स्थापित किया गया जिन कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा किया जाता है उन्हें प्रादेशिक स्तर पर राज्य कार्यालय द्वारा किया जाने लगा ।

मध्यप्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विक्रय योग्य वस्तुओं का उत्पादन कराकर विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देना है एवं ग्रामीण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित कर शोषण रहित एवं समतामूलक समाज की संरचना का व्यापक उद्देश्य रहा है । बोर्ड के मुख्य कार्य निम्न हैं –

- (1) खादी तथा ग्रामोद्योग की स्थापना, विकास एवं संवर्द्धन में सहयोग एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना ।
- (2) खादी तथा ग्रामोद्योग की स्थापना हेतु उद्यमी भावना को प्रोत्साहित करना ।
- (3) खादी तथा ग्रामोद्योग में नवीन तकनीक, प्रशिक्षण तथा विपणन की सुविधा उपलब्ध कराना ।
- (4) खादी तथा ग्रामोद्योग के लिए संयंत्र मशीन उपकरणों का प्रदाय एवं कच्चे माल की आपूर्ति करना ।

(7) स्वयंसेवी संस्थानों द्वारा

प्रदेश में उद्यमिता विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए और औद्योगिक वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से स्वयंसेवी संगठन द्वारा विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं । अंबेडकर संस्थान, राष्ट्रीय सामाजिक संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक क्लब, आदि द्वारा उद्यमिता जागरूक शिविर, गोष्ठी, ता सुधार

कार्यशालाएँ, सेमिनार, कार्यक्षमता सुधार कार्यक्रम, प्रबंध विकास कार्यक्रम, नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर आदि का आयोजन किया जाता है ।

महिला उद्यमिता विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का स्वरूप

डॉ. टीना जैन
श्री अटल बिहारी वाजपेयी
शासकीय कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय

स्वतंत्रता के पश्चात् से ही लगभग प्रत्येक पंचवर्षीय योजना का प्रमुख लक्ष्य महिलाओं को अधिकार, प्रोत्साहन एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का रखा गया है। वर्तमान समय में महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए शासन विशेष रूप से प्रयासरत् है। उद्यमिता एवं उद्योग संचालन के क्षेत्र में अभी तक सामान्यतया पुरुषों का वर्चस्व ही देखने में आया है एवं महिलाओं का योगदान लगभग नगण्य रहा है। उद्योगों के क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी को बढ़ाने के लिए शासन द्वारा अनेक प्रकार के मौद्रिक एवं वित्तीय प्रोत्साहन दिये जा रहे हैं। इसके अलावा वित्तीय संस्थाओं, बैंकों तथा स्थानीय सत्ताओं द्वारा भी महिलाओं को कई प्रकार की सहायताएँ दी जा रही हैं। महिला उद्यमी के विकास हेतु विभिन्न संस्थाओं द्वारा संचालित योजनाएँ निम्न प्रकार हैं –

उद्देश्य – महिला उद्यमिता विकास हेतु विभिन्न शासकीय तथा अशासकीय योजनाओं का योगदान का अध्ययन करना है,

परिकल्पना – विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिला उद्यमिता विकास हुआ है।

महिलाओं हेतु विभिन्न शासकीय योजनाएँ

(1) पंचधारा योजना

मध्यप्रदेश सरकार ने 1 नवंबर 1991 से मुख्यतः ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्र की महिलाओं के कल्याण एवं विकास हेतु पंचधारा योजना प्रारंभ की है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पाँच योजनाओं को सम्मिलित किया गया है। ये निम्न हैं –

(क) वात्सल्य योजना

प्रसवकाल के दौरान महिलाओं को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने हेतु यह योजना संचालित की गई है।

- (ख) ग्राम्या योजना
ग्रामीण महिलाओं को लघु व्यवसाय आरंभ करने हेतु तथा कार्यशील पूँजी उपलब्ध कराने हेतु यह योजना लागू की गई है ।
- (ग) आयुष्यमति योजना
इस योजना के अंतर्गत अतिनिर्धन महिलाओं के बीमार होने पर उनके इलाज व पौष्टिक आहार का समुचित प्रबंध करने में सरकार सहायता प्रदान करती है ।
- (घ) सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना
इस योजना द्वारा निराश्रित विधवाओं के सामाजिक कल्याण हेतु उन्हें पेंशन दी जाती है ।
- (ङ) कल्पवृक्ष योजना
इस योजना के अंतर्गत आदिवासी क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों

व जनजातियों की महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हितग्राहियों को निजी भूमि पर फलोद्यान स्थापित करने हेतु आर्थिक सहायता दी जाती है ।

- (2) अपनी बेटी अपना धन योजना
इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के परिवारों की नवजात बालिकाओं के नाम से 2500 रुपये सरकार द्वारा इंदिरा विकास पत्र के माध्यम से निवेश कर दिया जाता है । जो कि 18 वर्षों के बाद लगभग 25000 रूपयों के रूप में देय होता है । केन्द्र सरकार द्वारा इस योजना को संपूर्ण राष्ट्र में लागू करने की योजना बनाई जा रही है ।
- (3) कामधेनु योजना
महाराष्ट्र में लागू इस योजना के तहत अपंग, परित्यक्ता व निराश्रित महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने की दृष्टि से सहायता प्रदान की जाती है । बालिकाओं के लिए 30: आरक्षण की भी व्यवस्था है ।

८ बैंकों द्वारा संचालित विशेष योजनाएँ
महिलाओं की स्वरोजगार के क्षेत्र में अधिकाधिक सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न बैंकों व वित्तीय संस्थाओं द्वारा महिलाओं हेतु कुछ विशेष योजनाएँ आरंभ की गई हैं । इन योजनाओं का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है –

- (1) प्रियदर्शिनी योजना

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा संचालित प्रियदर्शिनी योजना का उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार की स्थापना हेतु प्रोत्साहित करना है। इस योजना में महिलाओं को ऋण एवं सहायता प्रदान करने के लिए निम्नलिखित योजनाएँ क्रियावित हैं –

- (प) व्यवसायिक स्वरोजगार इकाइयों की स्थापना के लिए
- (पप) लघु तथा ग्रामीण-कुटीर उद्योगों की स्थापना के लिए।
- (पपप) लघु सड़क यातायात इकाइयों की स्थापना के लिए।
- (पअ) कृषि व कृषि से संबंधित इकाइयों की स्थापना के लिए।
- (अ) लघु व्यवसाय स्थापित करने के लिए।
- (अप) फुटकर व्यापार से संबंधित इकाइयों की स्थापना करने के लिए।

इस योजना के तहत बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा उपर्युक्त इकाइयों या उद्योगों की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता एवं ऋण उपलब्ध कराये जाते हैं।

(2) सेंट कल्याणी योजना

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा महिलाओं हेतु अत्यंत महत्वाकांक्षी योजना सेंट कल्याणी योजना क्रियान्वित की गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को लघु उद्योगों व व्यवसायों की स्थापना हेतु तथा स्वरोजगार एवं अन्य व्यवसायिक कार्यों हेतु आसान शर्तों पर वित्तीय सहायता प्रदान करना है। जिससे स्वरोजगार स्थापित कर वे स्वावलंबी बन सकें।

(3) 'स्त्री-शक्ति पैकेज' योजना

भारतीय स्टेट बैंक व इसके सहयोगी बैंकों द्वारा यह योजना 19 नवंबर 1988 से लागू की गई है। इसका उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस योजना द्वारा महिला उद्यमियों को इक्विटी फंड योजना के अंतर्गत अंशदान सहायता हेतु ब्याज मुक्त ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

(4) सिडबी योजना

लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा सिडबी योजना लागू की गई है। इसमें महिला उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं व रियायती दरों एवं आसान शर्तों पर वित्तीय सहायता दी जाती है।

राष्ट्रीय महिला कोष

राष्ट्रीय महिला कोष भारत सरकार महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संस्थापित एक संस्था है जो महिलाओं की विभिन्न गतिविधियों हेतु लघु ऋण उपलब्ध कराती है। राष्ट्रीय महिला कोष द्वारा यह ऋण सुविधाएँ स्वयंसेवी संस्थाओं, महिला सहकारी संस्था समितियों, महिला विकास निगमों एवं स्वायत्त शासन संस्थानों को स्वीकृत की जाती है। कोष की विभिन्न योजनाएँ निम्न हैं –

(1) **मुख्य ऋण योजना**

राष्ट्रीय महिला कोष द्वारा उन स्व-सहायता समूहों को ऋण सुविधा प्रदान की जाती है जिनको लघु ऋण कार्यक्रम चलाने का कम से कम तीन साल का अनुभव हो ।

(2) **ऋण प्रोत्साहन योजना**

जिन संस्थाओं को बचत एवं ऋण प्रबंधन में कम से कम तीन साल का अनुभव है राष्ट्रीय महिला कोष द्वारा पाँच लाख रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाता है ।

(3) **स्व-सहायता समूह योजना**

जो स्वयंसेवी संस्थाएँ स्व-सहायता समूहों के माध्यम से बचत एवं ऋण कार्यक्रम को चलाने के क्षेत्र में कार्य करना चाहती हैं उनको प्रोत्साहन देने के लिए यह योजना चलायी जा रही है । राष्ट्रीय महिला कोष द्वारा भिन्न प्रदेशों में कार्यशालाओं के आयोजन किये जाते हैं । जिससे गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाली जरूरतमंद महिलाओं को कोष की योजनाओं व गतिविधियों की जानकारी हो और उनको उसका लाभ प्राप्त हो सके ।

तालिका

लघु तथा कुटीर उद्योगों के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के माध्यम से
लाभांविता महिला उद्यमियों की स्थिति

क्र.सं.	विवरण	लघु उद्योग		कुटीर उद्योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	योजनाओं से लाभांविता	15	60	15	20
2.	योजनाओं से अलाभांविता	10	40	60	80
	कुल योग -	25	100	75	100

स्रोत : सर्वेक्षण से प्राप्त समंक

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग संचालित करने वाली क्रमशः 60: तथा 20: महिला उद्यमी ऋण

योजनाओं का लाभ प्राप्त कर पाई हैं शेष लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग संचालित करने वाले क्रमशः 40: तथा 80: महिला उद्यमी ऋण योजनाओं से अलाभांविता रही हैं ।

लघु उद्योग संचालित करने वाली महिलाएँ अधिकांश शिक्षित तथा जागरूक रहती हैं इस कारण योजनाओं से लाभांवित रही हैं । कुटीर उद्योग संचालित करने वाली महिलाएँ अशिक्षित तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं अतः उन्हें योजनाओं की जानकारी का अभाव रहता है । अतः सरकार तथा विभिन्न संस्थाओं को महिला उद्यमियों को ऋण योजनाओं की जानकारी प्रदान करनी चाहिए । ताकि महिलाएँ योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें ।

विरांगना महारानी दुर्गावती एक विश्लेषण

डी.एस पवार

सहायक प्राध्यापक इतिहास

शा. महाविद्यालय, नसरुल्लागंज (म.प्र.)

जीवन परिचय

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था।

विरांगना महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। महोबा के राठ गांव में 1524 ई. की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर राजा संग्राम शाह ने अपने पुत्र दलपतशाह से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था। दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मंदिर, मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया। ख, शौर्य और पराक्रम की देवी

रानी दुर्गावती रानी दुर्गावती (अंग्रेजीरू तंदप क्ततहूंजप, जन्मरू 5 अक्टूबर, 1524 – मृत्युरू 24 जून, 1564) गोंडवाना की शासक थीं, जो भारतीय इतिहास की सर्वाधिक प्रसिद्ध रानियों में गिनी जाती हैं। दुर्गावती ने 16 वर्ष तक जिस कुशलता से राज संभाला, उसकी प्रशस्ति इतिहासकारों ने की है। आइना-ए-अकबरी में अबुल फजल ने लिखा है- दुर्गावती के शासनकाल में गोंडवाना इतना सुव्यवस्थित और समृद्ध था कि प्रजा लगान की अदायगी स्वर्णमुद्राओं और हाथियों से करती थी।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से रानी दुर्गावती का शौर्य किसी भी प्रकार से कम नहीं रहा है, दुर्गावती के वीरतापूर्ण चरित्र को लम्बे समय तक इसलिए दबाये रखा कि उसने मुस्लिम शासकों के विरुद्ध संघर्ष किया और उन्हें अनेकों बार पराजित किया। देर से ही सही मगर आज वे तथ्य सम्पूर्ण विश्व के सामने हैं। धन्य है रानी का पराक्रम जिसने अपने मान सम्मान, धर्म की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए युद्ध भूमि को चुना और अनेकों बार शत्रुओं को पराजित करते हुए बलिदान दे दिया।

**रानी दुर्गावती प्रतिमा
जन जन में रानी ही रानी
वह तीर थी, तलवार थी,
भालों और तोपों का वार थी,
फुफकार थी, हुंकार थी,
शत्रु का संहार थी! खू,
दुर्गावती का शासन**

दुर्गावती ने 16 वर्ष तक जिस कुशलता से राज संभाला, उसकी प्रशस्ति इतिहासकारों ने की। आइना-ए-अकबरी में अबुल फजल ने लिखा है, दुर्गावती के शासनकाल में गोंडवाना इतना सुव्यवस्थित और समृद्ध था कि प्रजा लगान की अदायगी स्वर्णमुद्राओं और हाथियों से करती थीं। मंडला में दुर्गावती के हाथीखाने में उन दिनों 1400 हाथी थे। मालवांचल शांत और संपन्न क्षेत्र माना जाता रहा है, पर वहां का सूबेदार स्त्री लोलुप बाजबहादुर, जो कि सिर्फ रूपमती से आंख लड़ाने के कारण प्रसिद्ध हुआ है, दुर्गावती की संपदा पर आंखें गड़ा बैठा। पहले ही युद्ध में दुर्गावती ने उसके छक्के छुड़ा दिए और उसका चाचा फतेहा खां युद्ध में मारा गया, पर इस पर भी बाजबहादुर की छाती ठंडी नहीं हुई और जब दुबारा उसने रानी दुर्गावती पर आक्रमण किया, तो रानी ने कटंगी-घाटी के युद्ध में उसकी सेना को ऐसा रौंदा कि बाजबहादुर की पूरी सेना का सफाया हो गया। फलतः दुर्गावती सम्राज्ञी के रूप में स्थापित हुई। खू,

अकबर से संघर्ष और बलिदान

अकबर के कडा मानिकपुर का सूबेदार ख्वाजा अब्दुल मजीद खां जो आसफ खां के नाम से जाना जाता था, ने रानी दुर्गावती के विरुद्ध अकबर को उकसाया, अकबर अन्य राजपूत घरानों की तरह दुर्गावती को भी रनवासे की शोभा बनाना चाहता था। रानी दुर्गावती ने अपने धर्म और देश की दृढ़ता पूर्वक रक्षा की ओर रणक्षेत्र में अपना बलिदान 1564 में कर दिया, उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका देवर चन्द्रशाह शासक बना व उसने मुगलों की आधीनता स्वीकार कर ली, जिसकी हत्या उन्हीं के पुत्र मधुकरशाह ने कर दी। अकबर को कर नहीं चुका पाने के कारण मधुकर शाह के दो पुत्र प्रेमनारायण और हदयेश शाह बंधक थे। मधुकरशाह की मृत्यु के पश्चात् 1617 में प्रेमनारायणशाह को राजा बनाया गया।

थर-थर दुश्मन कांपे,
पग-पग भागे अत्याचार,
नरमुण्डों की झडी लगाई,
लाशें बिछाई कई हजार,
जब विपदा घिर आई चहुंओर,
सीने मे खंजर लिया उतार।,
चौरागढ़ का जौहर

टासफ खर्च रानी की मृत्यु से बौखला गया, वह उन्हें अकबर के दरबार में पेश करना चाहता था, उसने राजधानी चौरागढ़ (हाल में जिला नरसिंहपुर में) पर आक्रमण किया, रानी के पुत्र राजा वीरनारायण ने वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की, इसके साथ ही चौरागढ़ में पवित्रता को बचाये रखने का महान् जौहर हुआ, जिसमें हिन्दुओं के साथ-साथ मुस्लिममहिलाओं ने भी जौहर के अग्नि कुंड में छलांग लगा दी थी। किंवदंतियों में है कि आसफ खर्च ने अकबर को खुश करने के लिये दो महिलाओं को यह कहते हुए भेंट किया कि एक राजा वीरनारायण की पत्नी है तथा दूसरी दुर्गावती की बहिन कलावती है। राजा वीरनारायण की पत्नी ने जौहर का नेतृत्व करते हुए बलिदान किया था और रानी दुर्गावती की कोई बहिन थी ही नहीं, वे एक मात्र संतान थीं। बाद में आसफ खर्च से अकबर नराज भी रहा, मगर मेवाड़ के युद्ध में वह मुस्लिम एकता नहीं तोड़ना चाहता था।, अकबर और दुर्गावती

रानी दुर्गावती

तथाकथित महान् मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी। इस पर अकबर ने

अपने एक रिश्तेदार आसफ खर्घ के नेतृत्व में गोंडवाना पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खर्घ पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दोगुनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास श्नरई नालेश के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी। अगले दिन 24 जून, 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को बेध दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था।

सम्मान

रानी दुर्गावती कीर्ति स्तम्भ, रानी दुर्गावती पर डाकचित्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, रानी दुर्गावती अभ्यारण्य, रानी दुर्गावती सहायता योजना, रानी दुर्गावती संग्रहालय एवं मेमोरियल, रानी दुर्गावती महिला पुलिस बटालियन आदि न जाने कितनी कीर्ति आज बुन्देलखण्ड से फैलते हुए सम्पूर्ण देश को प्रकाशित कर रही हैं।

चन्देलों की बेटी थी,
गोंडवाने की रानी थी,
चण्डी थी रणचण्डी थी,
वह दुर्गावती भवानी थी।

स्वतंत्रता संग्राम की महान् महिला सेनानी व ष्ठूब लडी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी की शौर्यगाथा काव्य को लिखने वाली, वीररस की महान् कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के ये शब्द ही, अद्वितीय शौर्य का प्रदर्शन करते हुए अमर बलिदान करने वाली रानी दुर्गावती की सच्ची कहानी कहते हुए महसूस होते हैं।

नमन कर रहा है।
सुनूगीं माता की आवाज,
रहूगीं मरने को तैयार।

कभी भी इस वेदी पर देव,
न होने दूंगी अत्याचार।
मातृ मंदिर में हुई पुकार,
चलो मैं तो हो जाऊँ बलिदान,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान!,

इस रानी से हारा था बादशाह अकबर, मारे गए थे 3000 मुगल सैनिक इतिहास दमूँ छ रेंज
डवकपपिमक – व्वज 04, 2015, 09:56 PM IST

अंत समय निकट देख अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंक कर आत्म बलिदान दे दिया था।

मुगल बादशाह अकबर की 10,000 सैनिकों की सेना को रानी दुर्गावती ने तीन बार हरा दिया था।
हार से अकबर बौखला गया, उसने रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधार
सिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी। इस पर अकबर ने अपने
एक रिश्तेदार आसिफ खां के नेतृत्व में सेना भेज दी। जबलपुर के पास नरई नाले के पास हुए युद्ध में 3000
हजार मुगल सैनिक मारे गए थे। 5 अक्टूबर को रानी दुर्गावती की जयंती है। कंपदपाईति.बवउ इस मौके
पर एक विशेष सीरीज के तहत बताने जा रहा है इस वीरांगना की पूरी कहानी।

टकबर की सल्तनत के अधीन मालवा के शासक बाज बहादुर और कड़ा मानिकपुर का सूबेदार
आसिफ खां ने अकबर के कहने पर 10 हजार घुड़सवार, सशस्त्र सेना और तोपखाने के साथ आक्रमण
किया। रानी दुर्गावती ने 2000 सैनिकों के साथ उसका सामना किया। इस युद्ध में 3000 हजार मुगल
सैनिक मारे गए थे। आसिफ खां ने पहले भी रानी के राज्य पर हमला कर चुका था। हर बार वह बुरी तरह
हारा। इसके बाद उसने दोगुनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत
कम सैनिक थे। रानी उसी दिन अंतिम निर्णय कर लेना चाहती थीं। अतः भागती हुई मुगल सेना का पीछा
करते हुए वे उस दुर्गम क्षेत्र से बाहर निकल गयीं। अगले दिन 24 जून, 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला
बोला। ज्यादा घायल होने पर रानी ने अंत समय निकट देख अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंक कर
आत्म बलिदान दे दिया था।

रानी दुर्गावती एक वीरांगना के रूप में

टंजप रानी दुर्गावती ने अपने पहले ही युद्ध में भारत वर्ष में अपना नाम रोशन कर लिया था।
शेरशाह की मौत के बाद सुरत खान ने उसका कार्यभार सम्भाला जो उस समय मालवा गणराज्य पर
शासन कर रहा था। सुरत खान के बाद उसके पुत्र बाजबहादुर ने कमान अपने हाथ में ली जो रानी
रूपमती से प्रेम के लिए प्रसिद्ध हुआ था छ सिंहासन पर बैठते ही बाजबहादुर को एक महिला शासक को
हराना बहुत आसान लग रहा था इसलिए उसने रानी दुर्गावती के गोंड साम्राज्य पर धावा बोल दिया।

बाज बहादुर की रानी दुर्गावती को कमजोर समझने की भूल के कारण उसे भारी हार का सामना करना पड़ा और उसके कई सैनिक घायल हो गये थे । बाजबहादुर के खिलाफ इस जंग में जीत के कारण अडोस पडोस के राज्यों में रानी दुर्गावती का डंका बज गया था । अब रानी दुर्गावती के राज्य को पाने की हर कोई कामना करने लगा था जिसमे से एक मुगल सूबेदार अब्दुल माजिद खान भी था । ख्वाजा अब्दुल मजिद आसफ खान कारा मणिकपुर का शाषक था जो रानी का नजदीकी साम्राज्य था । जब उसने रानी के खजाने के बारे में सुना तो उसने आक्रमण करने का विचार बनाया ।

अकबर से आज्ञा मिलने के बाद आसफ खान भारी फौज के साथ गर्हा की ओर निकल पड़ा द्य जब मुगल सेना दमोह के नजदीक पहुची तो मुगल सूबेदार ने रानी दुर्गावती से अकबर की अधीनता स्वीकार करने को कहा द्य तब रानी दुर्गावती ने कहा "कलंक के साथ जीने से अच्छा गौरव के साथ मर जाना बेहतर है द्य मैंने लम्बे समय तक अपनी मातृभूमि की सेवा की है और अब इस तरह मैं अपनी मातृभूमि पर धब्बा नहीं लगाने दूंगी । अब युद्ध के अलावा कोई उपाय नहीं है " घरानी ने अपने 2000सैनिको को युद्ध के लिए तैयार किया द्य

अंजप रानी दुर्गावती के सलाहकारो ने रानी को किसी सुरक्षित स्थान पर छिपने को कहा जब तक कि उसकी सारी सेना एकत्रित नहीं हो जाती है द्य सलाहकारों का मशहोरा मानते हुए रानी नराई के जंगलो की तरफ रवाना हो गयी द्य इस दौरान असफ खान गर्हा पहुच गया था और गणराज्यो को हथियाने का काम उसने शुरू कर दिया था द्य जब उसने रानी के बारे में खबर सूनी तो वो अपनी सेना को गर्हा में छोडकर उसके पीछे रवाना हो गया द्य आसफ खान की हलचल को सुनते हुए रानी ने अपने सलाहकारों और सैनिको को समझाते हुए कहा "हम कब तक इस तरह जंगलो में शरण लेते रहेंगे " द्य इस तरह रानी दुर्गावती ने एलन किया कि या तो वो जीतेंगे या वीरो की तरह लड़ते हुए शहीद हो जायेंगे द्य अब रानी दुर्गावती ने युद्ध वस्त्र धारण कर सरमन हाथे पर सवार हो गयी द्य अब भीषण युद्ध छिड गया जिसमे दोनों तरफ के सैनिको को काफी क्षति पहुची द्य इस युद्ध में रानी विजयी हुयी और उसने भगोडो का पीछा किया द्य दिन के अंत तक उसने अपने सलाहकारों से बात की द्य उसने दुश्मन पर रात को आक्रमण करने की योजना बनाई क्योंकि सुबह होते ही आसफ खान फिर आक्रमण बोल देगा लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं मानी । लेकिन सुबह उसने जैसा सोचा वैसा ही हुआ और आसफ खान ने हमला बोल दिया द्य रानी अपने हाथी सरमन के साथ रणभूमि में उतर गयी और युद्ध के लिए तैयार हो गयी । तीन बार उसने अकबर की सेना को धुल चटाकर हरा दिया था लेकिन इस युद्ध में उनका पुत्र राजा वीर बुरी तरह घायल हो गया था जो मुगलों के साथ वीरता से लड़ रहा था द्य जब रानी ने ये खबर सूनी तो

उसने तुरंत अपने भरोसेमंद आदमियों के साथ अपने पुत्र को सुरक्षित स्थान पर ले जाने को कहा लेकिन इस प्रक्रिया में कई सैनिक राजा वीर के साथ चले गये थे द्य रेंज डवउमदजे (24 श्रनदम 1564) अब भी रानी बाहादुरी के साथ लड़ रही थी तभी अचानक एक तीर रानी दुर्गावती की गर्दन के एक तरफ घुस गया द्य रानी दुर्गावती ने बाहुदुरी के साथ वो तीर बाहर निकाल दिया लेकिन उस जगह पर भारी घाव बन गया था द्य इस तरह एक ओर तीर उनकी गर्दन के अंदर घुस गया जिसको भी रानी दुर्गावती ने बाहर निकाल दिया लेकिन वो बेहोश हो गयी द्यजब उसे होश आया तो पता चला कि उनकी सेना युद्ध हार चुकी थी द्य उसने महावत से कहा "मैंने हमेशा से तुम्हारा विश्वास किया है और हर बार की तरह आज भी हार के मौके पर तुम मुझे दुश्मनों के हाथ मत लगने दो और वफादार सेवक की तरह इस तेज छुरे से मुझे खत्म कर दो

संदर्भ:-

- भारतीय इतिहास कोश द्यलेखकरु सच्चिदानन्द भट्टाचार्य द्यप्रकाशकरु उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्यपृष्ठ संख्यारु 208
1. :1.0 1.1 1.2 महारानी दुर्गावती (हिंदी) अम भ्पदकनपेउ । अभिगमन तिथिरु 24 जून, 2013 ।
 2. 2.0 2.1 2.2 2.3 शौर्य और पराक्रम की शौर्यगाथा रानी दुर्गावती (हिंदी) जय जय भारत । अभिगमन तिथिरु 24 जून, 2013 ।

भारतीय बजट एक विश्लेषण

मनोज कुमार सिन्हा

सहायक प्राध्यापक

शा. महाविद्यालय, नसरुल्लागंज (म.प्र.)

भारतीय बजट का इतिहास

भारत में बजट होने का इतिहास डेढ़ सौ साल से अधिक पुराना है। इतने वर्षों में बजट पेश किए जाने के समय से लेकर तौर तरीकों में बड़े स्तर पर बदलाव हुआ कई नई परंपराएं अस्तित्व में आईं और कई कीर्तिमान भी स्थापित हुए बजट से जुड़ी रोचक बातों पर एक नजर।

यह सरकारों के बजट पेश करने का महीना है। हमें लगता है कि हमारी सरकार का बजट कोई विशेषज्ञ किसी बहुत ही तकनीकी प्रक्रिया के आधार पर बनाते हैं, पर बजट आंकलन करने वाले विशेषज्ञ बताते हैं कि वास्तव में बजट तो विभाग के बाबू बनाते हैं। हमारे यहाँ कभी एक बार बजट बनाया गया और उसके बाद हर साल उसने एक निश्चित दर से बढ़ती-घटती करने की व्यवस्था बना दी गयी। एक प्रारूप तय कर दिया गया। बस पिछले साल की तुलना में राशि बढ़ा या घटा कर आंकड़े भरने का काम किया जाने लगा। इसे इतना गोपनीय रखा गया कि किसी को इसकी प्रक्रिया ही पता न चली। यह बजट एक तात्कालिक सिद्धांत पर चलता है। आजकल सिद्धांत यह है कि सरकार का बजट घाटे का नहीं फायदे का होना चाहिए, जैसे एक निजी कंपनी का होता है। हमारा बजट यह कभी नहीं देखता कि संविधान क्या कहता है? हमारा बजट असमानता बढ़ाता है क्योंकि बुनियादी सेवाओं और मौलिक अधिकारों के लिए सरकार खर्चा कम करके अपना घाटा पूरा करती है। बस इसी के आधार पर हम देखते हैं कि गैस, पेट्रोल और डीजल पर 4 से 7 तरह के टेक्स हैं, कर प्रणाली में कोई एकरूपता नहीं है, क्योंकि सरकार अब कंपनी बनना चाहती है। हमारी संसद में बजट दो भागों में पेश किया जाता है, रेलवे वित्त के विषय में रेल बजट और अन्य विभागों के विषय में सामान्य बजट। रेलवे के लिए अलग बजट पेश करने के पीछे मूल विचार

यह है कि रेलवे द्वारा निश्चित अंशदान की व्यवस्था होने से सिविल अनुदानों में स्थिरता आए और रेलवे वित्त के प्रशासन में स्थिरता आए।

यल सरकारों के बजट पेश करने का महीना है. हमें लगता है कि हमारी सरकार का बजट कोई विशेषज्ञ किसी बहुत ही तकनीकी प्रक्रिया के आधार पर बनाते हैं, पर बजट आंकलन करने वाले विशेषज्ञ बताते हैं कि वास्तव में बजट तो विभाग के बाबू बनाते हैं. हमारे यहाँ कभी एक बार बजट बनाया गया और उसके बाद हर साल उसने एक निश्चित दर से बढ़ाती करने की व्यवस्था बना दी गयी. एक प्रारूप तय कर दिया गया. बस पिछले साल की तुलना में राशि बढ़ा या घटा कर आंकड़े भरने का काम किया जाने लगा. इसे इतना गोपनीय रखा गया कि किसी को इसकी प्रक्रिया ही पता न चली. यह बजट एक तात्कालिक सिद्धांत पर चलता है. आजकल सिद्धांत यह है कि सरकार का बजट घाटे का नहीं फायदे का होना चाहिए, जैसे एक निजी कंपनी का होता है. हमारा बजट यह कभी नहीं देखता कि संविधान क्या कहता है? हमारा बजट असमानता बढ़ाता है क्योंकि बुनियादी सेवाओं और मौलिक अधिकारों के लिए सरकार खर्चा कम करके अपना घाटा पूरा करती है. बस इसी के आधार पर हम देखते हैं कि गैस, पेट्रोल और डीजल पर 4 से 7 तरह के टेक्स हैं, कर प्रणाली में कोई एकरूपता नहीं है, क्योंकि सरकार अब कंपनी बनना चाहती है.

प्रधानमंत्री द्वारा बजट पेश

1958-59 में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने बजट पेश किया उस समय वित्त मंत्रालय उनके पास था ऐसा करने वाले वे देश के पहले प्रधानमंत्री बने इंदिरा गांधी ने भी प्रधानमंत्री रहते बजट पेश किया अब तक बजट पेश करने वाली और वित्त मंत्री का पद संभालने वाली वे देश की इकलौती महिला है।

सर्वाधिक बजट पेश करने का रिकार्ड

मोरारजी देसाई ने अब तक सर्वाधिक दस बार बजट पेश किया है छह बार वित्त मंत्री और चार बार उप प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने ऐसा किया अपने जन्मदिन पर भी बजट पेश करने वाले भी वह एकमात्र मंत्री है।

हलवा खाने की रस्म

बजट छपने के लिए भेजे जाने से पहले वित्त मंत्रालय में हलवा खाने की रस्म निभाई जाती है। इस रस्म के बाद बजट पेश होने तक वित्त मंत्रालय के संबंधित अधिकारी किसी के संपर्क में नहीं रहते परिवार से दूर उन्हें वित्त मंत्रालय में ही रुकना पड़ता है। काला धन बाहर लाने की कोशिशें

ध्वत्त मंत्री टीटी कृष्णमाचारी ने 1964–65 में पहली बार वीडिआइएस स्कीम के जरिए छुपे हुए धन को बाहर निकालने की कोशिश की

1965–66 के बजट में काला धन निकासी के लिए पहली बार स्कीम लांच की गई।

1973–74 के बजट को ब्लैक बजट का नाम दिया गया क्योंकि इसमें बजटीय घाटा 550 करोड़ रुपयें था।

यह लेख एक आधार है। जानकारी जोड़कर इसे बढ़ाने में विकिपीडिया की मदद करें।

हमारा बजट, किसका बजट!

सवाल यह भी है कि क्या वास्तव में हमारा बजट (राज्य और केंद्र सरकार का) देश और प्रदेश की जरूरतों के सही विश्लेषण के आधार पर बनाया जाता है? सच तो यह है कि हमारे बजट निर्माता आज भी यह आंकलन कर ही नहीं पाते हैं कि उनकी वास्तविक प्राथमिकताएं क्या होना चाहिए, इसके लिए उन्हें कितने धन की जरूरत होगी और उन्हें वास्तव में कितना धन या संसाधन उपलब्ध होगा। इस एक उदाहरण को देखिये। वर्ष 2011–12 के लिए बजट आंकलन यानी एस्टीमेट यह था कि सरकार की कुल प्राप्ति रूपए 65931 करोड़ रूपए की होगी पर वास्तविक प्राप्ति 83267 करोड़ रूपए की हुई। उनके अनुमान और वास्तविक प्राप्ति में 17336 करोड़ रूपए (लगभग 26 प्रतिशत) का अंतर रहा। क्या बजट आंकलन करना अंधेरे में तीर चलाने जैसा काम है! इससे यह संकेत मिलता है कि बजट का निर्माण किसी ठोस समझ और योजना के मुताबिक न होकर अव्यवहारिक अनुमानों पर हो रहा है। आयोजना और आयोजनेतर आवंटन की प्रक्रिया पर भी सवाल हैं। हमारे यहाँ बजट के आवंटन में लगभग 70 फीसदी हिस्सा आयोजनेतर (नॉन प्लान) के लिए आवंटित होता है। यह आवंटन विभाग के संचालन के लिए ज्यादा होता है, विकास के जरिए और समाज की प्राथमिकताओं को पूरा करने की मंशा इसमें कम ही होती है। इसके विपरीत आयोजना (प्लान) के लिए लगभग 30 फीसदी हिस्सा ही आवंटित होता है। भारत में आम लोगों के लि

ज्यादातर प्रावधान आयोजना मद में ही किये जाते हैं। अब ये प्रावधान लंबी अवधि के विकास या बदलाव के लिए नहीं होते हैं। इनसे योजनाएं बनती हैं, जिनके बारे में यह कोई भरोसा नहीं कि उन्हें कब बंद कर दिया जाएगा। यही कारण है कि सरकार स्वास्थ्य मिशन तो बनाती है, पर उसमें स्थाई ढांचे के लिए प्रावधान नहीं करती। अस्पतालों में स्थायी डाक्टर और स्कूलों में स्थाई शिक्षकों के बजाये संविदा या ठेके पर नियुक्तियां की जाती हैं। सरकार अब स्थायी हक की नहीं, अस्थायी रूप से योजनाओं का हितग्राही

की व्यवस्था बना रही है. सरकार की योजनागत प्राथमिकताएं इसलिए भी पूरी नहीं हो पाती हैं, क्योंकि हमारा योजना आयोग जब योजना बना कर सामने लाता है, तब तक सरकार का बजट बन चुका होता है. पिछले तीन वर्षों से योजना आयोग का योजना दस्तावेज 15 जनवरी तक सामने ही नहीं आ पाया, और इस तारीख तक सरकार का बजट लगभग पूरा चुका था. और जब तक आयोग का दस्तावेज अंतिम रूप में सामने आया तब तक सरकार आयोजना (प्लान) मद के लिए बजट ही आवंटित कर चुकी थी. सच पूछा जाए तो देश की बजट बनाने की प्रक्रिया ही अपारदर्शी और संदेहास्पद है. वर्ष 1997 तक हमारे देश का बजट संसद के शाम पांच बजे पेश होता था, क्योंकि इंग्लैंड में इसे सुना जाना होता था. इसका मतलब समझते हैं? मतलब यह कि अंग्रेजों के देश से चले जाने के 40 साल बाद तक हम उस मानसिकता और उनकी भय से मुक्त न हो पाए थे. उन्होंने भारत के बजट बनाने की प्रक्रिया तय की. स्वाभाविक है कि अँगरेज इसे गोपनीय रखते थे. आखिर इसे गोपनीय क्यों रखा जाना चाहिए? क्या बजट के हर हिस्से का व्यावसायिक पक्ष है जिससे कालाबाजारी, जमा खोरी या आर्थिक उथल पुथल हो जायेगी? विभाग के हर उस व्यक्ति से ताकीद की जाती है कि वह बजट से सम्बंधित हर सूचना गोपनीय रखेगा. आखिर क्यों? यदि देश यह जान ले कि स्वास्थ्य विभाग कितने बजट की मांग कर रहा है या बच्चों के पोषण आहार और शिक्षा के लिए कितने संसाधनों की मांग की गयी है तो क्या देश में अस्थिरता आ जायेगी? सच तो यह है कि हमारी व्यवस्था बजट आवंटन और आर्थिक व्यवस्था से जुड़े सवालों का जवाब देना नहीं चाहती है. इस गोपनीयता का राज्य के गैर जवाबदेय होने से बहुत सीधा जुड़ाव है.

यह बात भी समझ नहीं आती कि क्या बजट इतना सरल नहीं हो सकता कि एक सामान्य व्यक्ति उसे समझ सके और जान सके कि आखिर देश और प्रदेश की व्यवस्था को चलाने के लिए किस तरह से संसाधनों का बंटवारा किया गया है. जिस तरह के प्रारूप और भाषा का उपयोग इसमें किया जाता है उसके लिए आपको अनिवार्यतः अर्थशास्त्री होना पड़ेगा. आप समाज के जानकार और समाज की जरूरतों के जानकार होकर भी इसे न तो पढ़ सकेंगे न ही समझ सकेंगे. वास्तव में राय की व्यवस्था, उसकी प्राथमिकताओं और चरित्र को समझने के लिए हर व्यक्ति को बजट को समझना जरूरी है. क्या सरकार यह मानक नहीं

क्यों जरूरी है बजट

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 में भारत के केंद्रीय बजट को वार्षिक वित्तीय विवरण के रूप में निर्दिष्ट किया गया है. जो कि भारतीय गणराज्य का वार्षिक बजट होता है. जिसे प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम कार्य-दिवस को भारत के वित्त मंत्री संसद में पेश करते रहे हैं. यह बात दीगर है कि 2017 से इसे फरवरी के पहले दिन पेश किया जा रहा है. भारतीय वित्त वर्ष की शुरुआत 1 अप्रैल से होती है. संविधान के

अनुसार बजट को लागू करने से पूर्व संसद द्वारा पास करना आवश्यक होता है।

सन्दर्भ:—

वम पदजमतमेजपदह बिजे इवनज जीमीपेजवतल व्दिदकपंद इनकहमज खभारतीय वित्तपत्र के कुछ रामंचक ऐतिहासिक तथ्य, ४ (अंग्रेजी में). पृष्ठ: अभिगमन तिथिरू 13 दिसम्बर 2017.

सामाजिक उपन्यासों की परम्परा में प्रेमचंद की विरासत का प्रश्न

डॉ. नगमा खान

व्याख्याता—विषय हिन्दी

कॅरियर हा.से.वि.होशंगाबाद म.प्र.

प्रेमचंद का उत्तराधिकार सही दिशा

प्रेमचंद हिन्दी कथा साहित्य के सम्राट हैं। हिन्दी कथा साहित्य में उनका व्यक्तित्व सूर्य की तरह भासमान रहा है! प्रेमचन्द सामाजिक उपन्यासों की परम्परा के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार है। क्योंकि प्रेमचन्द ने सदा अपना ध्यान सामाजिक यथार्थ पर केन्द्रित रखा है। सामाजिक समस्याओं को उठाया है और समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचन्द हिन्दी कथा—साहित्य के सुमेरु थे। इसलिये उनकी विरासत के बारे में आमतौर से जिज्ञासा होती है क्योंकि जो बड़ा होता है उसी से किसी विरासत की उम्मीद की जाती है और लोगों को उसकी विरासत में दिलचस्पी होती है। प्रेमचन्द की विरासत की बात करने समय निश्चय ही हमारा ध्यान उनकी भौतिक सम्पत्ति पर कतई नहीं बल्कि हमारी दिलचस्पी प्रेमचन्द की साहित्यिक विरासत में है, जिसे वह कृतियों के रूप में छोड़ गये हैं, और जो आज असंख्य पाठकों की प्रेरणा बनी हुई है। प्रेमचन्द की औपन्यासिक कृतियों सामाजिक हैं। जिनमें प्रेमचन्द ने सदा अपना ध्यान सामाजिक यथार्थ पर केन्द्रित रखा है! और उन्होंने लगातार इस बात पर बल दिया है कि साहित्य का मूल उद्देश्य मानव—जीवन और समाज के सार्थक पक्षों को रेखांकित करना है!

“प्रेमचन्द की विरासत पर गहराई से विचार करने की जरूरत आज इसलिये भी ज्यादा हो रही है, क्योंकि इसे लेकर दो खेमों में काफी हंगामा मचा हुआ है, दोनों खेमों के लोग चिल्ला—चिल्ला कर उनके असली वारिस होने का दावा पेश कर रहे हैं। दोनों अपने को उनकी विरासत का सही हकदार मान रहे हैं। साधारण पाठक इस हंगामे को हत्प्रभ होकर देख रहा है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि दावेदारों में कौन सा चेहरा असली है कौन सा नकली। प्रेमचन्द शताब्दी समारोह में

उनकी वसीयत के दावे जोरदार शब्दों में व्यक्त किये जाते रहे हैं। अलग-अलग खेमों में प्रेमचन्द के मार्क्सवादी और गांधीवादी होने की घोषणा होती रहती है। दोनों खेमों के लोग अपने-अपने पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत करते रहे हैं। यहां तक कि प्रेमचन्द के वक्तव्यों को और लेखों को तोड़-मरोड़कर प्रमाण के रूप में पेश किया जाता रहा है। और ये लोग अपने-अपने दावे इस मुखर ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि असलियत का अन्दाजा लगाना काफी कठिन हो जाता है।”

प्रेमचन्द सम्बन्धी विवेचन करने वालों का एक ऐसा समूह भी सामने आया है। जिनके लोग करते हैं कि प्रेमचन्द ना तो मार्क्सवादी थे ना गांधीवादी थे बल्कि वे हिन्दु थे, उनकी विचारधारा के केन्द्र में हिन्दुत्व था और उसी के परिचालित होकर उन्होंने कथा विस्तार और उसकी परिणति दिखाई। इस प्रकार प्रेमचन्द मूल्यांकन हेतु कई खेमों बन चुके हैं जो अपनी-अपनी दृष्टि से उन्हें देखते हैं, और प्रस्तुत करते हैं! लेकिन प्रेमचन्द किसी एक खेमे से बंधे नहीं हैं। उनके साहित्य में गांधीवाद, मार्क्सवाद, हिन्दुत्व की भावना समाजवाद यत्र-तत्र लक्षित होता है पर वे लेखक की वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं है। प्रेमचन्द का सही मूल्यांकन उनकी समग्रता में है। उनकी रचना के केन्द्र में परिस्थितियों से जूझता आदमी बैठा है उसे टुकड़ों में बांटकर नहीं देखा जा सकता।

प्रेमचन्द उर्दू से हिन्दी में आये थे। यदि कलाबाजी उनका ध्येय होता तो इसके लिये उर्दू में काफी गुजाइश थी और माहौल भी उनके अनुरूप मिलता। परन्तु उन्हें यह माहौल पसन्द नहीं था। क्योंकि वह कल्पना के द्वारा चित्रण नहीं करना चाहते थे। बल्कि मानव जीवन का यथार्थ चित्रण करना चाहते थे, और उन्होंने किया। उर्दू में जो कल्पना की शेरवानियां टांगी जाती थी। उनकी जगह जिन्दगी रख दी। जाहिर है कि जिन्दगी को अहमियत देने के पीछे उनके निश्चित विचार थे। क्योंकि मनुष्य के विचार उसके जीवन का दर्पण होते हैं। जीवन जिस कर्मक्षेत्र में प्रवेश करता है वैसे ही उसके विचार बनते हैं। प्रेमचन्द कहते हैं—“जिन्दगी मेरे लिये हमेशा काम न रही है, काम, काम, काम। मैं जब सरकारी नौकरी में था तब भी अपना सारा समय साहित्य को देता था।.....मस्ती के क्षण है, जब तब पैसे की समस्या आ खड़ी होती वरना मैं अपने भाग्य से बहुत संतुष्ट हूँ।

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में समाज को महत्व दिया। उनका विचार था समाज की भी एक इकाई है। उसका समाज में उतना ही महत्व है जितना कि अन्य समूह प्राणियों का। इस कारण प्रत्येक मनुष्य के सुख-दुख राग द्वेष का समाज पर प्रभाव पड़ता है। प्रेमचन्द को अपने युग और समाज का यथार्थ ज्ञान था। वे भली प्रकार जानते थे कि हमारा समाज कुरूप और विकृत हो चुका है। ऊँच-नीच, आपसी कलह, मनमुटाव, लालच, झूठ, और अमानुषिक व्यवहार इतने बढ़ गये हैं कि उनका प्रतिरोध करना कठिन हो गया

है। प्रेमचन्द ने अपनी साहित्यिक प्रेरणा से जीवन के वातावरण को प्रभावित किया। प्रेमचन्द ने जिन पीड़ित वर्गों के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की उनमें समाज के सभी वर्गों के शोषित प्राणी हैं। प्रेमचन्द ने अपने युग के अनुरूप जैसा समाज को देखा वैसा चित्रित किया। उनकी कला स्वतन्त्र नहीं विचारों का अनुसरण करती चलती है। प्रेमचन्द की विचार दृष्टि ही उनकी विरासत है।

सन्दर्भ:-

- 1-प्रगतिशील समाज-प्रेमचन्द, विशेषांक, प्रेमचन्द, विशेषांक, प्र.55/1995
- 2-अमृतराय, चिट्ठी पत्री भाग-2 पृष्ठ-235/1995
- 3-प्रेमचन्द की विरासत: अत्तराधिकारी का सही संदर्भ: शिवकुमार
- 4- हिन्दी उपन्यास -डा. सुरेश सिन्हा पृ.236
- 5- प्रेमचन्द की प्रांसगिकता-देवकी नन्दन श्रीवास्तव पृ 119

Acquisition of language skills on Children: Preschool Impact

Nivedita Ganawa
(Asso. Professor)
Govt.MLB Girls College, Bhopal

During the first year of life, children undergo major developmental changes across the range of domains. In particular, the entry into the formal language is one of the most important and heralded achievements of early development. Language enables children to share meanings with others and to participate in cultural learning in unprecedented ways. Moreover, language is foundational to children's school readiness and achievements. Children enter school with different levels of skills and these initial differences often affect child's subsequent language growth; cognitive development, literacy and academic achievements. New language tools means new opportunities for social understanding, sharing experiences, pleasure and needs. When children have difficulty understanding weathers and expressing themselves it is not surprising that psychosocial and emotional adjustment problems ensue, children with delayed language are therefore at increased risk of social, emotional and behavioral problems.

“Children most at risk for reading difficulties in first grade are those who began school with less verbal skill, less phonological awareness , less letter knowledge and less formality with the basic purposes and mechanisms of reading” Catherine Snow. Most children gradually become sensitive to sounds of spoken words during their preschool years. They notice rhymes, enjoy poems, make up silly names for things by substitution one sound for another. They begin using plural and

possessive forms of nouns, putting appropriate endings on verbs, preposition, articles and various forms of verbs. The early years of child comprise the most impressionable and crucial period. The foundation for the maximum mental development is laid during the early formatting years. The home environment and the interaction of the child with its mother and other significant people are the important factors in molding the child's life. Research study show that children especially those coming from deprived homes can be beneficially exposed to instructional process even before the formal school system begins to operate. In order to enrich the experimental repertoire of such children, it is essential that the preschool program should contain a variety of objects and activities wherein the child is able to label the objects and experiment and interact with the environment. Thus the preschool can make up for the child's deprivation and promote his language development. This study reveals language development of preschoolers (2^{1/2} to 5 years) on a comparative basis, to determine whether going or not going to preschool has any effect on language development of children so that the preschool curriculum could be enriched for the children living in backward areas.

Difference in environments in which children are raised and other issues affecting the development of language skills will ultimately affect the child's capacity to further developing language skills and acquire literacy, emotional and social skills as they are exposed to other social environments.

According to R.Murlidharan, Updesh Bevli in "A Study of Motor Adaptive Social Personal and Language of Indian Children" the result indicated that the urban children are faster in their development compared to the rural and industrial children. The industrial children were found to be better than their rural counterparts.

Objectives: To examine whether preschool helps in the learning of language skills.

Adequate facilities in preschool help increase vocabulary in children.

Methodology: To find out the role of preschool experiences in the acquisition of language skills by children from rural and urban areas, three preschools from Bhopal (urban), and 5 preschools from rural areas near Bhopal were selected. The total

sample size was 150 each from rural and urban schools. The children were observed in different situations like

- While playing with peer group
- In the company of adults and story telling
- Their response to set pictures, objects, toys etc. and narrate sentences

The first two situations were observed for 15 minutes each child individually. A running record of their speeches were made. In the third situation, in order to stimulate the child to speak some stimulus objects were like common animals, insects, birds, vegetables, flowers, vehicles, household equipments and a big doll were used to identify the different parts of body etc. were given them to observe their speaking skills.

S.No	Language Aspect	Rural	%	Urban	%
1.	Nouns	122	81.3	143	95.3
2.	Verbs	126	84	140	93.3
3.	Numerals	111	74	123	82
4.	Sentence	128	84.6	140	93.3

Result and Discussion:

Use of Noun It is observed that the children of urban area preschool used more nouns i.e. 95.3% than the rural preschool children with 81.3%. Finding also corroborates that the rural children are slower in language development due to lack of stimulation from the environment.

Use of Verbs To analyze the use of verbs by children of preschool, it was observed that the children from urban preschool used more verbs in their speech with 93.3% and the rural preschool used 84% of verbs. The finding here indicates that since the child in urban areas are exposed to many activities and experiences, their use of verbs is greeted than the children in rural areas.

Use of Numerals It was observed that 82% of urban preschoolers identified numbers correctly without hesitation whereas 74% of rural preschoolers

took much time to identify numerals. This indicates that preschool children are indirectly exposed to numbers which might be the reason for the numeral development.

Use of Sentence It could be inferred from the result that about 93.3% of urban preschool children at the age of 4-5 seem to have gained a greater skill in the use of complete sentence whereas 84.6% children from rural preschool were able to use complete sentence. This indicates the influence of environment as well as bilingualism. The vocabulary of children who attended preschool in urban areas was higher compared to the vocabulary of children in rural areas. To conclude, it may be said that the preschools with adequate facilities and good programs, especially in rural areas definitely plays a prominent role in language development of children. This asserts the value of preschools and the necessity of strengthening of preschool education.

Reference-:

Susan Rvachew Ph.D McGill utd. ' Language development and literacy. Canada PDF- www.childencyclopedia.com

- Catherine S. Tamis- LeMonda, Eileen T. 'Parents role in fostering young children's learning and language development' New York utd., USA Nov 2009
- Eric Pakulak, Hellen Neville, 'Biological Bases of language Development' Rev. utd. of organ, USA April 2010.
- Owens, Robert E (2012) Language Development: an introduction; Boston Pearson
- Bevli, U. (1983) development norms of Indian children(2-5 years) part-4 NCERT New Delhi.
- Bhogle Shalini (1979) parent child relations and process of socialization, in E.G. Parmeshwaran and Shalini Bhogle(ed) Developmental psychology, light and life publicatoion, New Delhi

Literature Review Of Investors Perception Regarding Risk And Return In Stock Market

Submitted By-

Dr.N.C Jain

Ex Director

Bhoj University BHOPAL,

And

Research Scholar

Minakshi Ingle

Assistant Professor

IES College, BHOPAL.

Abstract:

The Indian capital market has changed dramatically over the last few years, especially since 1990. Changes have also been taking place in government regulations and technology. The expectations of the investors are also changing. The only inherent feature of the capital market, which has not changed is the 'risk' involved in investing in corporate securities. Managing the risk is emerging as an important function of both large scale and small-scale investors. A general rule of thumb when investing in the stock market is that the greater the risk, the greater the potential reward, but the key word here is "potential."

Introduction

Return and risk are inseparable in investment decision. Scrip's return depends on many variables and risk is also associated with the variables which influence the return on the scrip. Any research should address the variables with which the research is carried out and once the variables are identified then the research gap can be found out. The review of literature of this study will help the researcher to identify the factors influencing the risk and return and also the

importance of systematic risk in evaluating investment decision. Since the concept of systematic risk stems from developed market and developing market the literature review covers the study with respect to foreign context as well as Indian context.

The work in this area can be classified into three broad categories:

(a) Those dealing with functioning of stock markets and financial institutions operating in these markets, (b) those pertaining to the investment decision making process of individuals, and (c) empirical work on Indian stock market.

In 1979 the work was done by Simha, Hemlata and Balkrishnan on functioning of stock markets and financial institutions. Bhole (1982) wrote a comprehensive book on the growth and changes in the structure of Indian capital markets and financial institutions. The book was subsequently updated and revised in 1992. Several books have been written on security analysis and investment in Indian stock markets: Bhalla (1983); Jain (1983) Sahni (1986), Singh (1986), Chandra (1990a), Raghunathan (1991), Avadhani (1992); Yaraswamy (1985, 91, 92a, 92b) and Barua et al (1992). These books are primarily written for initiating lay investors to techniques for security analysis and management of investment portfolio. Basu & Dalal (1993a) and Ramachandra (1993) have critically examined various facets of the great securities scam of 1992.

The investment decision making process of individuals has been explored through experiments by Barua and Srinivasan (1986, 1987a, 1991). They conclude that the risk perceptions of individuals are significantly influenced by the skewness of the return distribution. This implies that while taking investment decisions, investors are concerned about the possibility of maximum losses in addition to the variability of returns. Thus the mean variance framework does not fully explain the investment decision making process of individuals. Gupta (1991b) argues that designing a portfolio for a client is much more than merely picking up securities for investment. Barua and Raghunathan (1990a) use the Gordon's dividend growth model to show that the prevailing P/E multiples in the Indian capital market around the second and

third quarter of 1990 are on the higher side. Sinha (1992) argues that the high P/E ratio observed in March 1992 is partly attributable to abnormally low earnings during 1991-92 and partly to the high P/E ratio of MNCs. Even after adjusting for these two factors, he finds the P/E ratio to be relatively high.

Accordingly to most of these studies, significant reforms are required if the stock exchange are to be geared up to the envisaged growth in the Indian capital market.

L.C. Gupta (1992) concludes that, a) Indian stock market is highly speculative; b) Indian investors are dissatisfied with the service provided to them by the brokers; c) Margins levied by the stock exchanges are inadequate and d) Liquidity in a large number of stocks in the Indian markets is very low. While evidently a painstaking work, the conclusions except 'c' above seem to be built on wrong or questionable arguments. There is considerable evidence to suggest that the market assimilates information regarding bonus issues rapidly and efficiently.

In an efficient market, the share starts rising in anticipation of the bonus announcement and completes its rise immediately after the announcement. Ramachandran (1985) and Ramachandran (1992) both provide evidence that this is so. Obaidullah (1992) also concludes that there is no evidence to suggest that learning lags exist or that the assimilation of information is slow

Bhole and Rao (1987) examined a study to identify and analyze the rate of return on equity shares in India during the period 1953 to 1987 on 32 industries listed in five stock exchanges in India. The study made an attempt to test the risk-return relationship and found that there was an association between the return and risk

Sreenivasan (1988) empirically tested the validity of CAPM in India with stock prices of 85 firms selected from Calcutta and Bombay Stock Exchanges from the period July 1982 to October 1985. Economic Times Index of ordinary shares were considered as market proxy and found that CAPM relationship was valid.

Yalawar(1988) made an attempt to study in Indian environment. The study has tested the excess returns version of the market model by way of considering the

monthly returns for 20 years from 1963 to 1982 relating to 239 stocks regularly traded in Bombay Stock Exchange.

period of 1976 to 1980, based on Bombay Stock Exchange. The study identified share price as dependent variable by transforming it into log linear function and the variables like dividend pay-out, growth, capitalization rate and size were taken as independent variables and by applying regression to find out the influence of predictor variables on market price of equity, the outcome of the result showed that the dividend payout, growth and size of the firm emerged as significant variables. In the study of Ramachandran(1989) he took 132 scrips of Bombay Stock Exchange from January 1979 to December 1986 to test the validity of CAPM in Indian market. He found that there was no evidence to prove that the model holds well in Indian context

Handa and Others (1989) conducted a study on the estimation of beta and its relationship between the time intervals. The study further assessed the size of the portfolio were sensitive to beta estimation. The study analysed the sample of data which were taken from CRSP from the period of 1964 to 1982 and created 20 portfolios on which the effect was estimated. The study revealed that the estimation of beta in terms of individual level and portfolio level showed substantial difference with respect to time intervals.

The study conducted by Zahir (1992) to find out the possibilities of influencing certain internal factors and external factors on market price of selected scrips of Indian stock market. To carry out the study, the researcher took 140 scrips from the period of 1985 to 1987 span of two years. The result showed that the model of regression could explain the independent variables to the extent of 67% in terms of higher volatility stocks whereas the same variables were explained by the model to the extent of only 29% with respect to low volatility group of shares.

Gupta and Sehgal (1993) tested the CAPM in Indian context by way of taking

30 scrips constitute BSE 30 index from the year 1979 to 1989 span of 10 years. The 30 stocks were divided into three equal portfolios by engaging different weights. The study ended with the result that there was chance of exploring non linearity in terms of explaining the returns and therefore it was concluded that the CAPM was not likely to be the good indicator of asset pricing in the Indian capital market during the study period. Though there was a relation with risk and return but at insignificant level.

The study was under taken by Ray (1994) to explore the applicability of CAPM in Indian context for which the study traced 170 scrips from Bombay Stock Exchange spanning the period of more than 10 years. But the result was as such expected that CAPM was not a reliable source to explore the risk return relationship.

The study of Rao and Jose (1996) made an attempt to find out the influence of different risk variables on security return for which 71 companies were taken from the period of 1975 to 1991, a span of more than 15 years. The study tried to explore the possibility of showing evidence in supporting the CAPM and Arbitrage Pricing Technique models in India.

In India some of the studies explored the stability of beta. Mallick & Gupta (1996) have found the evidence of year wise variability in beta in a sample of 150 companies of Bombay Stock Exchange from the period of April 1991 to March 1996.

An empirical study was carried out by Kwon and Others (1997) to infer the impact of macroeconomic variables on the behavior of South Korean stock markets. The study used Kospi Composite Price Index as a proxy for stock market behavior and the key variables with which the study dealt in terms of economic indicators were Industrial Production Index, trade balance, foreign exchange rate, oil price and money supply. The study concluded that the above variables had a significant impact on performance of stock market.

Vipul (1998) examined the impact of size of company, Industry group and liquidity on Beta. From the study he came out with the result that the size had an impact on beta value whereas industry group and liquidity had no impact on the systematic risk.

Philip R.Daves Michael.C and Robert A.Kundel (2000) examined the four return

intervals and eight estimation periods to determine the usage of return intervals and estimation periods to calculate beta. The study used four return intervals in the form of daily, weekly, fortnight and monthly returns. The estimation period varied from one year to eight years from 1982 to 1989. As far as the outcome of the study is concerned with respect to return interval, for any given estimation period, the daily return interval provided a more precise estimate of beta.

Research Gap

Most of the studies emphasized the relationship between risk and return. Since beta coefficient is the most important parameter to estimate the expected rate of return under Capital Asset Pricing Model (CAPM), it becomes vital to estimate the beta co-efficient and its stability in Indian context because Indian Stock Market is emerged as Second best market in the world.

